[illegible]

[illegible]

[illegible]

बाप-बेटे

बाप बेटे

- इवान तुर्गनेव

प्रगति प्रकाशन
दिल्ली ।

अनुवादक—रामगोपाल सिंह चौहान

प्रोग्रेसिव पब्लिशर्ज़, ७/२३ दरियागंज दिल्ली, द्वारा प्रकाशित तथा
हिन्दी-मन्दिर प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली, द्वारा मुद्रित।

: १ :

"क्यों प्योतर ? अभी तक उनका कोई चिन्ह नहीं दिखाई पड़ा ?" २० मई १८५९ को अ-राजमार्ग पर एक देहाती सराय के दरवाजे से प्रगट होते हुए एक सम्भ्रान्त व्यक्ति ने, जिसकी आयु चालीस वर्ष से कुछ अधिक होगी, और जो एक धूल-धूसरित कोट और चारखाने का पाजामा पहने था और नंगे सिर था, अपने नौकर से पूछा। नौकर एक नौजवान था जिसके गाल गोल गोल, ठुड्डी सफेद और आँखें छोटी छोटी बुझी हुई सी थीं, जिनसे कोई लालसा प्रगट न होती थी।

नौकर का सारा चेहरा-मुहरा, पहिनावा-उढ़ावा, चमकीले बिखरे बाल, आसमानी रंग के पत्थर के कुँडल, सब उसके विनम्र व्यवहारों की उपयुक्तता सिद्ध करते थे। वह नई पीढ़ी का पहले से सोचा समझा और निर्मित सटीक नमूना लगता था। उसने सड़क पर आँखों की पहुँच तक दृष्टि दौड़ाते हुए उत्तर दिया :

"नहीं सरकार, अभी तो कोई चिन्ह नहीं दिखाई देता।"

"कुछ भी नहीं ?" मालिक ने फिर पूछा।

"नहीं मालिक" उसने उत्तर दिया।

सम्भ्रान्त व्यक्ति दीर्घ निःश्वास लेते हुए पास पड़ी एक छोटी सी बेंच पर बैठ गया। जब तक वह पैर पर पैर रखे चिन्ता में निमग्न बैठा है, आइए तब तक हम आप से उसका परिचय करादें।

उसका नाम निकोलाई पैट्रोविच-किर्सानोव था। सराय से करीब पन्द्रह वैर्स्टस* की दूरी पर उसकी अच्छी खासी जागीर थी, जिसमें दो सौ प्राणी काम करते थे। उसने अपने किसानों को काश्तकारी का हक़ दे दिया था और अपना एक फॉर्म भी खोल दिया था, इसलिए

*रूसी मील जो ३५०० फीट का होता है और अंग्रेजी मील का २/३—अनु

वह उसे दो हजार डेसोटिन* जमीन की जायदाद भी कहता था। उसका बाप एक फौजी जनरल था जिसने १८१२ के युद्ध में भी सक्रिय हिस्सा लिया था। वह एक नीरस, रूखी प्रकृति का अपढ़ रूसी था, किन्तु स्वभाव का खोटा न था। उसने अपना सारा जीवन पहले एक ब्रिगेड और फिर एक डिवीज़न का नायकत्व करते हुए घोड़े की पीठ पर ही काटा था। वह सदैव ऐसे सूबों में ही तैनात रहा, जहाँ वह सेना में अपने उच्च पद के कारण एक महत्व का व्यक्ति समझा जाता था। अपने भाई पैवेल की ही तरह उसका भी जन्म दक्षिणी रूस में ही हुआ था। शेखीखोर किन्तु विनीत, चापलूस मातहत सैनिक अफसरों तथा अन्य सैनिक अफसरों के बीच घिरे रह कर, सस्ते शिक्षकों से उसने चौदह वर्षों की आयु तक घर पर ही रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। उसकी माँ (उपनाम कोलपाज़िना)को जब तक वह बच्ची थी अगेथ कहा जाता था, और जब वह जनरल की पत्नी हो गई तो उसे आगा-फ़ोक्लेया कुज़्मिनश्ना किर्सानोवा कहा जाने लगा था। वह उन परोपकारी और सैनिक स्त्रियों में थी, जो अपने पति और सरकारी मामलों की लगाम अपने हाथ में रखती थीं। वह एक बनी ठुनी दिखाऊ अलंकृत टोपी और सुन्दर रेशमी गाउन पहनती थी। गिर्जाघर में वह सबसे पहिले आगे बढ़कर सलीब के पास जाती। ज़ोर से बोलती। सबेरे सबेरे ही अपने बच्चों को अपना हाथ चूमने देती, रात को उन्हें आशीर्वाद देती, और इस तरह उसका समय बड़े मजे में कट जाता था। एक जनरल का बेटा होने के नाते निकोलाई पैट्रोविच से भी अपने भाई पैवेल की ही तरह सैनिक बनने की आशा की जाती थी, हालाँ कि उसमें साहस की कमी थी और उसे 'भीरु हृदय' कहा जाता था। जिस दिन सेना में उसके भरती होने की खबर आई, उसी दिन उसने अपनी एक टाँग तोड़ ली और दो महीने तक चारपाई पर पड़े रहने के बाद भी

---

* ज़मीन की रूसी नाप, १ डेसोटिन=२.७ एकड़—अनु

उसकी टांग में लँग रह गई। उसके पिता ने निराश होकर उसे सैनिक बनाने का विचार छोड़ नागरिक-जीवन के पथ पर बढ़ने के लिए छोड़ दिया। जब वह अठारह वर्ष का हो गया तो उसका पिता उसे सेंट पीटर्स बर्ग ले गया और उसे विश्वविद्यालय में भरती करा दिया। लग भग इसी समय उसका भाई एक सैनिक अफसर हो गया। दोनों युवक मामा इलिया कोल्याज़िन की देख रेख में साथ साथ रहने लगे। उनका मामा एक ऊंचा सैनिक अफसर था। उसका पिता अपनी सेना और पत्नी के पास लौट आया और कभी कभी अपने बेटों के पास भूरे कागज पर पत्र भेजता जिनके ऊपर एक क्लर्क के बड़े सुस्पष्ट लेख में बड़े चमक दमक के साथ लिखा रहता "प्योतर किर्सानोव मेजर जनरल।" निकोलाई पैट्रोविच १८३५ में विश्वविद्यालय से सम्मान पूर्वक ग्रेजुएट हो गया और उसी वर्ष जनरल किर्सानोव एक दुर्भाग्य-पूर्ण घटना से सैनिक सेवा से रिटायर कर दिया गया और वह अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए सेंटपीटर्सबर्ग चला गया। वह तेवरी चेस्की बाग में एक मकान लेकर रहने लगा और अंग्रेजी क्लब का सदस्य भी बन गया, पर तभी एक दुर्घटना से उसकी मृत्यु हो गई। अगाफोक्लेया कुज्मिनश्ना ने भी थोड़े दिन पीछे उसका साथ दिया। उसके लिए नागरिक जीवन का एकाकीपन दूभर हो गया था। निकोलाई पैट्रोविच अपने माँ बाप के जीवन-काल में ही उनकी आशा के विपरीत अपने पहले के जमींदार और सिविल सर्विस के एक व्यक्ति प्रेमोलोविन्स्की की बेटी के प्रेम में पड़ गया था। वह उन्नत विचारों की एक सुन्दर लड़की थी, और 'विज्ञान' के कालमों में प्रकाशित गम्भीर लेखों को पढ़ा करती थी। जैसे ही माता पिता की मृत्यु के दुःख के बादल हटे उसने उससे विवाह कर लिया और जागीर-विभाग-मंत्रिमंडल में से नौकरी छोड़ दी, जहां वह अपने पिता के प्रभाव से नियुक्त हो गया था। पहले उसने कुछ दिन जंगलात-गृह के पास ग्रीष्मवास में अपनी

माशा❀ के साथ परम आनन्द के दिन बिताए और फिर शहर के छोटे, पर साफ सुथरे हवादार सुन्दर सुसज्जित मकान में, और अन्त में गाँव में जाकर वह सदा के लिए बस गया। वहीं थोड़े दिन बाद उसके एक लड़का आर्केडी पैदा हुआ। यह दम्पति बिना किसी खटपट के परस्पर प्रगाढ़ प्रेम का जीवन व्यतीत करता था। वे एक दूसरे के जीवन में दूध में पानी की तरह घुल मिल गए थे। साथ साथ पढ़ते, साथ साथ पिआनो बजाते, गाना गाते और हंसी-खुशी से जीवन व्यतीत करते थे। वह फूलों की देख भाल करती और मुर्गियां पालती। वह कभी कभी शिकार खेलने जाता और जागीर की व्यवस्था करने कभी कभी बाहर चला जाता। उस प्रेमसिक्त वातावरण में आर्केडी बड़ा होता गया। दस वर्ष स्वप्न की तरह बीत गए। तभी उनके जीवन पर दुःख की काली घटा घहर उठी। सन् १८४७ में किर्सानोव की पत्नी की मृत्यु हो गयी। इस दुर्घटना ने उसके जीवन को मसल दिया, थोड़े हफ्तों में ही उसके बाल पक गए। वह अपनी व्यथा को शान्त करने के लिए विदेश जाने वाला ही था कि १८४८ का साल+ बाधक सिद्ध हुआ और ···· उसे गांव वापस लौट आना पड़ा। लम्बी सुस्ती से बोझिल व्यथा पूर्ण नीरस एकाकी जीवन के दम घोट वातारण से निकल भागने के लिए अपनी जागीर की सुव्यवस्था करने में समय देने लगा। १८५५ में वह अपने लड़के को सेंटपीटर्सबर्ग के विश्वविद्यालय में ले गया, जहां उसने उसके साथ तीन जाड़े व्यतीत किए। वह शायद ही कभी आर्केडी के साथ बाहर घूमने जाता और उसके नौजवान दोस्तों से दोस्ती करने की कोशिश करता। पिछले जाड़े

❀ पत्नी—अनु

+ इस वर्ष फ्रांस में क्रांति हुई थी जिसमें सर्व हारा ने भाग लिया, और सारे योरप की आर्थिक सामाजिक स्थिति में एक उथल पुथल मची हुई थी।

वह नहीं जा पाया था इसलिए हम १८५९ के मई महीने में उसे यहां देख रहे हैं। उसके बाल बिल्कुल सफेद हो गए हैं, शरीर थुल थुल हो गया है, और जीवन के बोझ ने उसकी कमर झुका दी है। उसके बेटे ने डिग्री प्राप्त की है जैसी उसने भी एक बार की थी। वह उसी के आने की प्रतीक्षा कर रहा है।

नौकर मालिक के सम्मान में अथवा यूँ कहा जाय कि मालिक की आँख बचाने के लिए बाहर दरवाजे की ओर चला गया और अपना पाइप जलाकर पीने लगा। निकोलाई पैट्रोविच सिर झुकाए चिकनी सीढ़ियों पर आँखें गड़ाए था। एक चित्तीदार मुर्गी का बच्चा गर्व के साथ ड्योढ़ी की सीढ़ियों पर अपने पैरों को पटपटाते हुए चढ़ रहा था। एक बिल्ली उसकी ओर क्रूर दृष्टि से घूर रही थी। धूप बड़ी तेज थी। गलियारे के धूमिल साये से गर्म हवा आ रही थी। निकोलाई पैट्रोविच विचारों में डूब गया था। "मेरा बेटा—एक ग्रेजुएट——......अर्काशा .... " उसके दिमाग में विचार चक्कर काटते रहे। उसने विचारधारा को दूसरी ओर मोड़ने का प्रयास किया, लेकिन घूम फिर कर वही विचार दिमाग में चक्कर काटने लगते। उसने अपनी स्वर्गीय पत्नी के बारे में सोचा .. "वह यह दिन देखने को जीवित न रही।" वह दुःखी मन से फुसफुसाया। .. एक मोटा कबूतर सड़क पर कुँए के पास पानी के गड्ढे में पानी पीने उतरा। पास आती पहियों की आवाज जब निकोलाई पैट्रविच के कानों में पड़ी तो वह अपने विचारों में ही डूबा हुआ था। ...

"ऐसा लगता है कि वे लोग आ रहे हैं, श्रीमान्," दरवाजे पर से आते हुए नौकर ने कहा।

निकोलाई पैट्रोविच उछल पड़ा और सड़क पर आँखें गड़ाकर देखने लगा। तीन घोड़ों की एक गाड़ी बढ़ी आ रही थी। उसे विश्ववि-

यालय की नीली टोपी की कलंगी और प्रिय परिचित चेहरे की झलक दीख पड़ी।—

"अर्काशा! अर्काशा!" किर्सानोव चिल्लाया, और ऊपर हवा में हाथ हिलाता हुआ दौड़ पड़ा। —थोड़ी देर बाद उसके ओंठ नौजवान ग्रेजुएट को दाढ़ी रहित धूल से भरे गालों से सट गए।

: २ :

"मुझे पहले अपने को झाड़कर साफ तो कर लेने दीजिए, पापा," आर्कैडी ने कहा। उसकी आवाज यात्रा के कारण कुछ भरी हुई थी, किंतु उसकी आवाज में बच्चों का सा सुरीलापन और ताजगी थी, उसने प्रश्न से अपने पिता के प्यार का प्रत्युत्तर दिया: "मैं आपको धूल से भर दूंगा।"

"ठीक है, ठीक है," निकोलाई पैट्रोविच ने विभोर मुस्कराहट से उसके तथा अपने कोट के कालर को झाड़ते हुए उत्तर दिया, "मुझे जरा अपने को देखने तो दो, जरा देखने तो दो," पीछे हटते हुए उसने कहा और कहते हुए जल्दी से सराय की ओर बढ़ा "इधर से, इधर से, आओ, शीघ्र ही घोड़े सुस्ता लेंगे और फिर हम चलेंगे।"

निकोलाई पैट्रोविच अपने बेटे से भी अधिक व्यग्र दीख पड़ रहा था, वह कुछ व्याकुल और घबड़ाया सा भी लग रहा था। आर्कैडी ने बीच में ही टोक दिया।

"पापा," उसने कहा, "आइए, मैं आपसे अपने एक बहुत अच्छे दोस्त बैजारोव का परिचय कराऊं। इनके सम्बन्ध में मैं आपको प्रायः लिखता रहा हूं। इन्होंने बड़ी कृपा कर थोड़े दिनों के लिए हमारा अतिथि होना स्वीकार कर लिया है।"

निकोलाई पैट्रोविच तेजी से घूम कर एक लम्बे व्यक्ति के पास आया जो अभी ही गाड़ी में से उतरा था और एक लम्बा यात्रा के समय पहना जाने वाला फुंदनेदार कोट पहने था।

"मुझे सच ही बड़ी खुशी हुई," उसने कहना शुरु किया, "और मैं आपका बड़ा ही कृतज्ञ हूँ कि आपने हमारा अतिथि होना स्वीकार कर लिया है, मुझे आशा है—मैं आपका नाम और वंश पूछ सकता हूं!"

"एवजेनी वेस्लिविच," बैजारोव ने मन्द किन्तु भारी आवाज में उत्तर दिया, और अपने कोट का कालर पीछे करते हुए उसने अपना सम्पूर्ण चेहरा निकोलाई पैट्रोविच के सामने प्रकट कर दिया। लम्बा और पतला, चौड़ा ललाट, नाक चपटी और गावदुम आकार की, बड़ी बड़ी हरी आँखें और खुरदरी झुकी मूंछें, चेहरे पर शान्त, गम्भीर प्रसन्न मुस्कराहट की चमक, उसके आत्म-विश्वास और प्रखर बुद्धि के परिचायक थे।

"मैं आशा करता हूं, मेरे प्रिय एवजेनी वेसिलेविच, कि आप हमारे साथ रहकर उदासी का अनुभव नहीं करेंगे," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा।

बैजोरोव के पतले ओठों में थोड़ा सा कम्पन हुआ, पर उसने कुछ कहा नहीं, केवल अपनी टोपी ऊपर उठा दी। उसके भूरे लम्बे घने बाल उसके विशाल उन्नत कपाल को छिपा नहीं पा रहे थे।

"क्या कहते हो आर्केडी," निकोलाई पैट्रोविच ने अपने लड़के की ओर घूमते हुए कहा," क्या अभी घोड़े जुतवाये जायं, या तुम कुछ आराम करना चाहोगे ?"

"घर पहुँच कर ही आराम करेंगे, पापा; घोड़े जुतवाइए।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा," उसके पिता ने सहमति प्रकट

की। "ए, प्योतर, तुम सुन रहे हो? अरे भले आदमी जरा चैतन्य रहो, चलो, जल्दी करो।"

प्योतर ने, जो एक नए ढंग का नौकर था, अपने नये मालिक का हाथ नहीं चूमा, केवल दूर से थोड़ा झुककर सम्मान प्रगट किया और दरवाजे के बाहर चला गया।

"मैं टमटम में ही आया था, पर तुम्हारी बग्घी के लिए तीन घोड़ों का प्रबन्ध भी हो जायगा," निकोलाई पैट्रोविच ने जल्दी से और व्यग्रता के साथ कहा। सराय मालिक की बीवी तब तक पानी ले आई थी। आर्केडी ने उसमें से पानी पिया। बैजारोव ने अपना पाइप सुलगा लिया और कोचवान के पास चला गया, जो घोड़ों का साज उतार रहा था, "इसमें सिर्फ दो सवारियां ही बैठ सकती हैं, और मैं नहीं जानता कि कैसे तुम्हारा मित्र—"

"वह बग्घी में चला चलेगा," आर्केडी ने बीच में ही धीमें स्वर में कहा।

"आपको उसके साथ तकल्लुफ करने की कोई जरूरत नहीं है। वह बड़ा ही प्यारा और अजीबोगरीब आदमी है, बहुत ही सीधा और सरल""आप स्वयं जान ही जो लेंगे।"

निकोलाई पैट्रोविच का कोचवान घोड़े ले आया।

"ए, तुम अपनी गाड़ी बढ़ाओ, दढ़ियल" बैजारोव ने टमटम के कोचवान से कहा।

"सुनो, मित्या!" पास खड़े उसके साथी ने अपने भेड़ के कोट में हाथ डालते हुए चिल्लाकर कहा; "सुनो सरकार क्या कह रहे हैं? दढ़ियल—तुम यहां हो कि नहीं हो?

मित्या ने सिर्फ अपना सिर हिलाया और उत्तेजित घोड़े की बागें खींचीं।

"जरा फुर्तीले नजर आओ मेरे बच्चो, जरा फुर्तीले नजर आओ", निकोलाई पैट्रोविच ने कहा, "तुमको इनाम मिलेगा।"

थोड़ी देर में ही घोड़े जुत गए; बाप–बेटे टमटम में गए, प्योतर कोचवान की सीट पर बैठ गया; बैजारोव बग्घी में उछल कर चढ़ गया और चमड़े की गद्दी में धंस गया—और दोनों गाड़ियां चल पड़ीं।

: ३ :

"तो तुमने डिग्री पा ही ली और अन्ततः घर भी वापस आ ही गये।" निकोलाई पैट्रोविच ने आर्केडी के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, और फिर—उसके घुटनों पर हाथ रख कर कहा, "आखिर कार!"

"चाचा जी का क्या हाल है? वह ठीक तो है न?" आर्केडी ने पूछा। उसके मन में बच्चे की सी आनन्द विभोरता भरी हुई थी, किन्तु वह भावुक विषयों से बात चीत को अधिक ठोस-वस्तु सत्यों की ओर मोड़ने को उत्सुक था।

"वह ठीक हैं। तुमसे मिलने को मेरे साथ ही आने वाले थे, लेकिन बाद में किसी कारण से उन्होंने अपना इरादा बदल दिया।"

"क्या आपको देर तक मेरी प्रतीक्षा करनी पड़ी?" आर्केडी ने पूछा।

"ओह, लगभग पांच घन्टे।"

"मेरे अच्छे पापा!"

आर्केडी ने भावातिरेक से अपने पिता की ओर घूम कर उसके

गाल को चूम लिया। निकोलाई पैट्रोविच के ओठों पर मधुर स्निग्ध मुस्कान खिल उठी।

"मैंने तुम्हारे लिए बड़ा बढ़िया घोड़ा लिया है," उसने कहना शुरु किया, "तुम देखना! और तुम्हारा कमरा भी फिर से बनवाया गया है।"

"बैजारोव के लिए भी कोई कमरा है न?"

"उसके लिए भी प्रबन्ध हो जायेगा, तुम चिन्ता मत करो।"

"कृपया उसे अपना स्नेह दीजिए, पापा। मैं आप से व्यक्त नहीं कर सकता कि मैं उसकी मित्रता का कितना सम्मान करता हूँ!"

"क्या तुम उसे काफी दिनों से जानते हो?"

"नहीं बहुत ज्यादा दिनों से तो नहीं।"

"ओह, समझा, तभी तो कहूँ, मैंने उसे पिछले जाड़ों में वहाँ नहीं देखा था। भला करता क्या है?"

"उसका प्रधान विषय प्रकृति-विज्ञान है पर वह सब कुछ जानता है। वह अगले वर्ष डाक्टर की डिग्री लेना चहता है।"

"ओह, तो वह डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रहा है," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा और चुप हो गया। "प्योतर," उसने अपना हाथ बाहर निकालते हुए पूछा, "क्या वे हमारे ही किसान नहीं?"

प्योतर ने उस ओर देखा जिधर उसका मालिक संकेत कर रहा था। कई गाड़ियों को घोड़े देहाती संकरे डगरे में तेजी से खींचे लिए जा रहे थे। हर गाड़ी में एक या अधिक से अधिक दो किसान, अपने ऊपर भेड़ के चमड़े का कोट डाले बैठे थे।

"जी हां मालिक, वे अपने ही किसान हैं," प्योतर ने उत्तर दिया।

"वे कहां जा रहे हैं—शहर?"

"मुझे लगता तो ऐसा ही है। शायद वे शराब खाने में जा रहे

हैं,'' उसने तिरस्कार युक्त स्वर में कोचवान की ओर ऐसे देखते हुए कहा, मानो वह उससे अपनी बात की पुष्टि कराना चाहता हो। लेकिन कोचवान मूर्तिवत बना रहा, वह पुराने विचारों का व्यक्ति था और उसे आधुनिक विचार मान्य नहीं थे।

"मैं इस वर्ष किसानों से बड़ा तंग रहा हूँ," निकोलाई पैट्रोविच ने अपने लड़के की ओर उन्मुख होकर कहा। "वे अपना लगान नहीं चुकाते। समझ में नहीं आता कोई क्या करे?"

"क्या आप अपने मजदूरों से संतुष्ट हैं?"

"हां," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा, "गड़बड़ यह है कि उन्हें भड़काया जा रहा है; वे अभी ठीक तौर से काम पर जमे नहीं हैं वे खेती बिगाड़ देते हैं। हालांकि कहा जाय तो वे कुछ ज्यादा बुरी जुताई नहीं करते। मेरा ख्याल है कि अन्ततः सब ठीक हो जाएगा लेकिन तुम्हारी तो खेती में अब रुचि नहीं है, क्यों, है क्या?"

"यह बुरा है कि आपने यहां अभी तक कोई सायबान नहीं बनवाया," उसके अन्तिम प्रश्न का उत्तर दिए बिना ही आर्केडी ने कहा।

"बरामदे की उत्तरी ओर मैंने एक बड़ा सा सायबान बनवाया है," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा, "अब हम खुले में भोजन कर सकते हैं।"

"क्या वह बहुत ज्यादा बंगलानुमा और कुछ अजीब सा नहीं हो जायगा?—खैर, इससे कुछ नहीं बिगड़ता। मेरा,—लेकिन यहां हवा बड़ी अच्छी है? इसकी गन्ध कितनी प्यारी है? कितनी भीनी है। सच ही मुझे विश्वास नहीं होता कि और किसी स्थान पर यहां जैसी और इतनी सुगंधित वायु होगी? और आकाश भी—"

आर्केडी चुप हो गया और विभोर हो दूसरी ओर देखने लगा।

"सचमुच," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा, "यह तुम्हारी जन्म-भूमि है। यहां की हर चीज तुम्हें अच्छी लगना स्वाभाविक ही है।"

"नहीं पापा, जन्म भूमि होने से इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता।"

"फिर भी"

"नहीं, बिल्कुल भी अन्तर नहीं पड़ता।"

निकोलाई पैट्रोविच ने अपने लड़के की ओर अपांगों से देखा। आधे मील के बाद फिर दोनों में बातें आरम्भ हुईं।

"मुझे याद नहीं, मैंने तुम्हें लिखा था या नहीं," निकोलाई पैट्रोविच ने कहना प्रारम्भ किया," तुम्हारी बूढ़ी धाय का देहान्त हो गया है।"

"क्या ? बेचारी बुढ़िया ! लेकिन प्रोकोफिच तो जीवित है न !"

"हां, और अब भी बिल्कुल वैसा ही है हर बात में असन्तोष प्रगट करने वाला। वैसे तो वास्तव में मैरिनो में तुम बहुत अधिक परिवर्तन नहीं पाओगे।

"क्या वही पुराना कारिन्दा अब भी है ?"

"सिर्फ यही मैंने एक परिवर्तन किया है। मैं ने अपनी नौकरी में किसी भी आज़ाद हुए काश्तकार का न रखने को निश्चय कर लिया है और जो पहिले मेरे घर का काम करते थे उन्हें भी किसी कीमत पर जिम्मेदारी का काम नहीं सौंपूंगा।" (आर्केडी ने प्योतर की ओर देखा)

"हर रूप में स्वतन्त्र"

निकोलाई पैट्रोविच ने धीमी आवाज में कहा, "लेकिन वह सिर्फ एक नौकर ही तो है। मेरा नया कारिन्दा शहरी है। ऐसा लगता है कि वह अपना काम बखूबी जानता है। मैं उसे दो सौ पचास रूबल प्रति वर्ष देता हूँ। लेकिन" उसने अपने माथे और भौंहों को रगड़ते हुए, जो सदैव उसकी आन्तरिक व्यग्रता के लक्षण होते, कहा, "मैंने

तुम्हें अभी बताया कि तुम मैरिनो में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे यह बिल्कुल सही नहीं है। मुझे पहले ही तुम्हें बता देना चाहिए, हालाँकि......"

थोड़ी देर तक हिचकिचाने के बाद उसने फ्रेंच भाषा में कहना आरम्भ किया :

"एक कट्टर अति नैतिक व्यक्ति मेरे आचरण को गलत कहेगा; लेकिन पहले तो बात गुप्त न रखी जा सकती, और दूसरे, तुम जानते हो पिता-पुत्र के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में मेरे अपने विचार रहे हैं, फिर भी तुम्हें मेरे आचरण से असहमति प्रकट करने का पूरा अधिकार है। मेरी उमर में तुम जानते हो......संक्षेप में, यह......यह लड़की, जिसके सम्बन्ध में तुम सम्भवतः पहिले ही सुन चुके हो......"

"फेनिच्का ?" आर्केडी ने बेपरवाही से पूछा। निकोलाई पैट्रोविच लाल पड़ गया।

"कृपया उसका नाम जोर से मत लो...। हां, वह अब मेरे साथ रह रही है। मैंने उसे घर में रख लिया है......वहां छोटे छोटे दो कमरे थे न। खैर, वह सब बदला जा सकता है।"

"ओह, पापा, किसलिए ?"

"तुम्हारा मित्र हमारे साथ ठहर रहा है न।......जरा बुरा सा लगता है।......"

"जहां तक बैजारोव का सम्बन्ध है, कृपया आप उसके बारे में तनिक भी चिंता न करें। वह उस सबसे ऊपर है।"

"तो फिर तुम अपने लिए बताओ" निकोलाई पैट्रोविच कहता गया। "वह छोटा सा हिस्सा तो ठीक नहीं। बड़ी-निकम्मी जगह है।"

"ओह, पापा," आर्केडी ने बीच में ही टोक कर कहा। "कोई

समझेगा कि आप माफी सी माँग रहे हैं, आपको अपने पर शर्म आनी चाहिए !"

"मुझे सचमुच शर्म आनी चाहिए !" निकोलाई पैट्रविच ने शर्म से लगभग लाल होते हुए कहा।

"जाने भी दीजिए, कैसी बात करते हैं !" और आर्केडी स्नेह सिक्त मुस्कराया। "ऐसी माफी सी मांगने की कौनसी बात हैं इसमें?" उसने अपने मन में सोचा और अपने पिता की दयालु हृदयता और बड़प्पन से उसका हृदय विगलित हो उठा और आर्द्रता और स्निग्धता से भर गया।" "यह कैसी बात करते हैं आप," उसने अपनी बुद्धिमत्ता और स्वतंत्रता का अनुभव करते हुए सस्वर कहा।

निकोलाई पैट्रोविच फिर अपने ललाट को रगड़ने लगा, और अपनी उंगलियों की संध में से उस पर एक दृष्टि डाली। उसके आन्तरिक मर्म पर चोट पहुंची थी, पर उसने अपने को तुरन्त ही संयत कर लिया।

"यहां से हमारे खेत शुरु हो जाते हैं," उसने लम्बी चुप्पी के बाद कहा।

"और वह आगे हमारा जंगल है शायद?" आर्केडी ने पूछा।

"हां। पर मैंने उसे बेच दिया है। इस वर्ष वह कट जायगा।"

"क्यों, आपने उसे बेच क्यों दिया?"

"मुझे पैसे की जरूरत थी, और फिर वह जमीन किसानों के पास जा रही है।"

"जो आपको लगान नहीं देते?"

"यह उनके समझने की बात है; और फिर कभी न कभी वो देंगे ही।"

"लेकिन यह बुरा हुआ," आर्केडी ने कहा।

जहां हो कर वे लोग गुजर रहे थे, उसे सुहाना तो जरा मुश्किल से ही कहा जा सकता है। जहां धरती और आसमान एक दूसरे का स्नेह चुम्बन कर रहे थे वहां तक एक के बाद एक मिले हुए खेतों का अंचल फैला हुआ था। कहीं ढलाव के कारण वे आंखों से ओझल हो जाते और फिर आगे उठ कर दिखाई देने लगते। यत्र तत्र जंगल की पाँतें थीं, और खड्ड तथा कन्दराएं थीं, जिन पर झाड़ियां उग आई थीं। ये ऐसी लगती थीं जैसी कैथराइन महान् समय के पुराने ढंग के नकशों में दिखाई जाती थीं। वे लोग नालों के किनारे से, जिनके किनारों पर कटान और दरारें पड़ गई थीं, टूटे-फूटे बाँधों वाले तालाबों, ज़मीन से सटी हुई दरबानुमा झोंपड़ियों, जिनकी छतें आधी खुली हुई थीं, और जिनमें अंधेरा छाया हुआ था, के पास से होकर; गन्दे खलिहानों में से होकर जहां सरपत की घनी झाड़ियों की बाड़ सी लगी हुई थी और टूटे-फूटे जीर्ण दरवाजों के सामने से होकर; और गिर्जाघर, जहां ईंटें इधर उधर बिखरी पड़ी थीं, जिनका पलस्तर झड़ रहा था, और कब्रिस्तान जिनका सलीब उखड़ कर टेढ़ा हो गया था, के पास से होकर गुजरे। आर्केडी का दिल अन्दर ही अन्दर बैठा जा रहा था। किस्मत के मारे जो किसान रास्ते में उन्हें मिले वे पतले-दुबले, फटे हाल दयनीय थे, सरपत के सरकंडों पर से छिलका उतर रहा था और उनकी शाखें टूटी हुई थीं और जो जीर्णशीर्ण भिखारी की तरह रास्ते के किनारे खड़े थे, भूखी दुबली-पतली गायें गड्ढों के किनारे घास चर रही थीं। वे ऐसी लग रही थीं मानों अभी अभी किसी भयंकर खूंखार दरिन्दे से उनके प्राण बचे हों। सुहाने बसन्त में इन दुर्बल जानवरों का दृश्य तूफानों और बर्फ के अंधड़ों से भरे हुए असीम सुनसान जाड़े के पीले भूत का दृश्य प्रतीत होता था।—"नहीं", आर्केडी ने सोचा, यह उपजाऊ क्षेत्र नहीं है, कोई भी इसे देख कर यह नहीं समझ सकता कि क्षेत्र समृद्धि-

शाली है, इस तरह सब मामला नहीं चलते रहना चाहिए, इस तरह से नहीं चलते रहना चाहिए, सुधार आवश्यक हैं—पर वे कैसे किये जायं, उन्हें कैसे आरम्भ किया जाय ?—"

भाव आर्केडी के अन्तस में उमड़ रहे थे—और जब भाव उमड़ रहे थे, उसके अन्तरतम में बसन्त आ रहा था। उसके चारों तरफ बसन्ती स्वर्णाभा और हरीतिमा व्याप्त हो रही थी, हर चीज—वृक्ष, झाड़ियाँ, घास—जगमगा रही थी और मदिर, मधुर ऊष्म वायु के झोंके से स्पन्दित हो रही थी, हर जगह लवा पक्षी तेज जलधाराओं में फुदकते हुए मधुर संगीत गुंजार रहे थे। टिटिहिरियाँ नीचे फैले मैदानों पर उड़ते हुए टीस भरा स्वर अलाप रही थीं। या छोटी पहाड़ियों पर निशब्द उड़ती थीं। बसन्त के अन्कुरित छोटे-छोटे हरे मुलायम पौधों के बीच कौए गर्व से चलते हुए बड़े सुहाने लग रहे थे, सफेद हो गई राई के बीच वे गायब हो जाते और जब तब रह रह कर स्फटिक लहरों के बीच उनके सिर हिल उठते। आर्केडी देर तक इस विमोहन दृश्य को देखता रहा और देखते देखते उसके अन्तर में उमड़ी भाव-धारा तिरोहित होती हुई समाप्त हो गई।—उसने अपना कोट उतार फेंका और पिता की ओर ऐसी शिशु सरल दृष्टि से देखा कि उसके पिता ने फिर से स्नेहाभूत होकर उसे गोद में भर लिया।

"अब हम पहुंच ही गए समझो," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा—"इस पहाड़ी के वक्ष पर आते ही घर दिखाई पड़ने लगेगा। हम लोग साथ साथ अत्यन्त मधुर जीवन व्यतीत करेंगे, आर्केडी, तुम खेती में मेरा हाथ बटाओगे, अगर वह तुम्हें नीरस न लगी तो! हम एक दूसरे के मित्र हो जायेंगे और एक दूसरे को अच्छी तरह समझेंगे, क्यों, ठीक है न ?"

"अवश्य", आर्केडी ने कहा। "लेकिन यह दिन कितना सुहाना और सुन्दर है।"

"हाँ, तुम्हारे स्वागत में मेरे लाडले ! अपने समस्त वैभव से पूर्ण है यह बसन्त। फिर भी मैं पुश्किन से सहमत हूँ, तुम्हें यूजीन ओनेगिन का वह हिस्सा याद है :

"ओ बसन्त, ओ प्रेम की बेला, तेरा आगमन कितना दुखद है मेरे लिए। क्या——।"

"आर्केडी !" टमटम से बैजारोव की आवाज आई। "जरा दियासलाई तो भेजना, पाइप जलाने को मेरे पास कुछ भी नहीं।"

निकोलाई पैट्रोविच रुक गया, आर्केडी ने जो उसे सहानुभूति मिश्रित आश्चर्य से सुन रहा था जेब से चाँदी की दियासलाई की डिबिया निकाली और प्योतर के हाथ बैजारोव के पास भेजी।

"क्या तुम्हें चुरट चाहिए ?" बैजारोव ने फिर चिल्लाकर पूछा।

"नेकी और पूछ पूछ," आर्केडी ने उत्तर दिया।

प्योतर दियासलाई और एक मोटा काला चुरट लेकर वापस आया जिसे आर्केडी ने उसी समय जला लिया, और ऐसा गाढ़ा, घना, तीखा धुंआ छोड़ने लगा कि निकोलाई पैट्रोविच ने, जिसने अपने जीवन में कभी तम्बाखू नहीं पी थी, अपनी नाक चुपचाप उधर से हटा ली ताकि उसके बेटे की भावनाओं को ठेस न लगे।

पंद्रह मिनट में ही गाड़ियाँ लकड़ी के नए बने मकान की सीढ़ियों के पास जाकर रुक गईं। मकान भूरे रंग से पुता हुआ था, और उसकी छतों में लोहे की लाल चद्दरें लगी हुई थीं। यह मैरिनो था, जिसे नया पुरवा, या फिर किसानों के शब्दों में निर्जन फार्म भी कहा जाता था।

: ४ :

ड्योढ़ी में मालिकों का अभिनन्दन करने के लिए दासों का झुन्ड नहीं प्रगट हुआ, केवल बारह वर्ष की एक लड़की दिखाई पड़ी और उसके पीछे एक लड़का, जिसकी शक्ल प्योतर से मिलती जुलती थी। उसने वर्दी की भूरी जाकिट पहन रखी थी जिसमें कवच की तरह निशान बना हुआ था और उस पर बटन लगे हुए थे। वह पवेल पैट्रोविच का नौकर था। उसने निःशब्द रह बग्घी का दरवाजा खोला और टमटम का पर्दा हटाया। निकोलाई पैट्रोविच अपने लड़के और बैजारोव को साथ लेकर एक अंधेरे और लगभग खाली बड़े कमरे में दाखिल हुआ जिसके दरवाजे पर एक नौजवान स्त्री की झलक दिखाई पड़ी। वहां से होते हुए ये लोग एक बैठक में पहुंचे जो आधुनिक ढंग से सजी हुई थी।

"तो, आखिर हम लोग घर आ ही पहुँचे," निकोलाई पैट्रोविच ने अपना टोप उतारते हुए कहा और अपने बालों को पीछे उछालते हुए ठीक किया। फिर बोला, "अब कुछ खाने पीने की बात की जाय और फिर आराम।"

"विचार तो बुरा नहीं है, हां कुछ खाया तो जाना ही चाहिए," बैजारोव ने सोफा में धंसते हुए कहा।

"ठीक है," निकोलाई पैट्रोविच ने एकाएक अपना पैर पटक कर जमाते हुए कहा, "ओह, यह तुम हो प्रोकोफिच! हम तुम्हारी ही तो याद कर रहे थे।"

सफेद दाढ़ी वाला, पतला-दुबला, साँवले रंग का, बीच में फटा कत्थई कोट पहने हुए जिसमें पीतल के बटन लगे हुए थे और गले में गुलाबी रंग का मफलर डाले लगभग ६० वर्ष की आयु के एक व्यक्ति

ने प्रवेश किया। वह हंसते हुए ऐसे दाँत निकाले हुए था, जिससे मूर्खता टपकती थी। उसने आर्केडी के पास जाकर उसका हाथ चूमा और अतिथि के सामने उसके प्रति सम्मान प्रगट करने के हेतु थोड़ा सा विनत हुआ और वापस आकर दरवाजे के पास पीठ पीछे हाथ बाँधकर खड़ा हो गया।

"ऐ प्रोकोफ़िच, यह आखिर आ ही गया," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा। "तुम्हें यह कैसा लगता है?"

"छोटे मालिक बड़े अच्छे लग रहे हैं, श्रीमान्," बूढ़े आदमी ने कहा और लम्बे बालों वाली अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए उसने फिर खीस निपोर दी। "श्रीमान्, क्या मैं मेज पर खाना सजाऊं।" उसने मोटे भारी स्वर में पूछा।

"हां, हां। एवजेनी वेसिलिचव, लेकिन क्या इसके पहले तुम अपने कमरे में नहीं जाना चाहोगे?"

"जी नहीं, धन्यवाद, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। सिर्फ मेरा सूटकेस और लबादा ले आने को कह दीजिये।" कहते हुए उसने अपना यात्रा—कोट उतारा।

"बहुत अच्छा। प्रोकोफिच इन महाशय का कोट ले लेलो।" (प्रोकोफिच ने सकपकाते हुए बैजारोव का 'लम्बा कोट' ले लिया और दोनों हाथों में उसे सम्भालते हुए पंजे के बल बिना आहट किए लौट गया।) "और आर्केडी तुम? क्या तुम जाओगे अपने कमरे में, थोड़ी देर के लिए?"

'हाँ, मैं जरा अपने को धो-पोंछ लूं," आर्केडी ने उठकर दरवाजे की ओर जाते हुए कहा, लेकिन उसी समय औसत कद का एक व्यक्ति काला अंग्रेजी सूट पहने, फैशनेबुल मफलर लगाए और पेटेन्ट चमड़े का जूता पहने बैठक में दाखिल हुआ। यह पैवेल पैट्रोविच किर्सानोव था। उसकी आयु लगभग पैंतालीस वर्ष होगी। उसके संवारे हुए भूरे

बाल कलछौंही चमक से कच्ची चांदी से लग रहे थे। उसका चेहरा भारी था, किन्तु उस पर झुर्रियां नहीं थीं; और मुखाकृति सुडौल, सरल और स्निग्ध थी; मानों उसे किसी ने बड़े मनोयोग से गढ़ा हो। उसके चेहरे पर असाधारण सौंदर्य के चिन्ह थे। उसकी बादाम जैसी निर्मल काली आंखें विशेष रूप से आकर्षक थीं। आर्केडी के चाचा की सम्पूर्ण मुख-छवि इतनी सुन्दर, कुलीन और शिष्ट थी, और उस पर युवाकालीन मृदुता और इस धरती से ऊपर स्वप्निल जीवन की कल्पनाओं में विचरने की आकांक्षा के भाव विद्यमान थे। ऐसे भाव जो साधारणतः मनुष्य की बीस वर्ष की आयु के बाद तिरोहित हो जाते हैं।

पैवेल पैट्रोविच ने अपने पाजामे की जेब से अपने सुन्दर सुगढ़ हाथ निकाले। उसके नाखून नुकीले थे, जो निर्मल श्वेत कफ के साथ में, जिनमें मूल्यवान दूधिया पत्थर के बटन लगे हुए थे, और भी मोहक लग रहे थे। उसने अपने हाथ भतीजे की ओर बढ़ाए। योरोपीय ढंग से हाथ मिला चुकने के बाद उसने उसे रूसी ढंग से चूमा, अथवा यों कहें कि उसने अपनी सुगंधित मूंछों से उसके गाल पोंछे और कहा: "स्वागतम्।"

निकोलाई पैट्रोविच ने बैजारोव से उसका परिचय कराया। पैवेल पैट्रोविच ने अपने लचीले शरीर को थोड़ा बल देते हुए मन्द मुस्कान से उसका अभिनन्दन किया, किन्तु अपना हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ाया, जिसे उसने अपनी जेब में रख लिया था।

"मैं सोचता था कि तुम आज नहीं आओगे," उसने शिष्टता से अपने शरीर को हिलाते हुए, अपने कंधों को सिकोड़ते हुए और अपने मनोहर दांत चमकाते हुए मधुर स्वर में कहा। "रास्ते में कोई कष्ट तो नहीं हुआ?"

"नहीं, हमें थोड़ा रास्ते में रुकना पड़ा था, बस। लेकिन इस

समय तो हम भेड़िए की तरह भूखे हैं। प्रोकोफिच से जरा शीघ्रता करने को कहिए न पापा! मैं अभी एक मिनट में आया," आर्केडी कहता हुआ जाने को उठा।

"एक मिनट रुको, मैं भी चलता हूं," बैजारोव ने एकाएक सोफा पर से उठते हुए कहा। दोनों युवक बाहर चले गए।

"वह कौन है?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"आर्केडी अपना दोस्त बताता है। कहता है बड़ा गुणज्ञ है।"

"क्या वह यहीं रहेगा?"

"हाँ।"

"क्या, वह रीछ जैसा व्यक्ति?"

"हाँ, क्यों क्या हुआ?"

पैवेल पैट्रोविच अपनी उंगलियों के पोरे मेज पर बजाने लगा।

"मैं सोचता हूं आर्केडी—कुछ चैतन्य दिखता है," उसने कहा। "मैं बड़ा प्रसन्न हूं कि वह वापस आ गया है।"

भोजन के समय अनेक विषयों पर बातें हुईं। बैजारोव विशेष रूप से कम बोला, पर उसने खाया अधिक। निकोलाई पैट्रोविच ने अपने कृषि-जीवन की अनेक घटनाएं बताईं, सरकारी योजनाओं की चर्चा की, कमेटियों, प्रतिनिधि मंडलों, मशीनीकरण की आवश्यकता आदि की बातें कीं। पैवेल पैट्रोविच भोजन-गृह में धीरे धीरे इधर उधर टहलता रहा (वह रात को कभी भोजन नहीं करता था) कभी-कभी बस वह गिलास से लाल शराब का घूंट भर लेता था। बातचीत के दौरान में उसने शायद एकाध बात की हो और "अह! आह! हूँ!" का विस्मयादिबोधन किया हो। आर्केडी ने सेंटपीटर्सबर्ग के ताजे समाचार सुनाये। वह ऐसे भावों से अभिभूत था जो साधारणतः एक युवक को, जिसने अपना शैशव काल अभी ही समाप्त किया है, अभिभूत कर लेते हैं। जब वह ऐसी जगह पर आता है, जहां वह सदैव बच्चे

के रूप में देखा गया है। वह धीरे धीरे बोला, "पापा" शब्द को उस ने बराया, फिर भी एक बार "पिता" शब्द का प्रयोग किया—हाँ, स्पष्ट कहने की अपेक्षा उसने फुसफुसाया; और भावातिरेक की व्यग्रता में उसे जितनी शराब पीनी चाहिए थी उससे अधिक पी गया। प्रोकोफिच ने अपनी आंखें उस पर से नहीं हटाईं, उसका मुंह लगातार चलता रहा और फुसफुसाता रहा। भोजन समाप्त होते ही सब लोग अलग अलग हो गये।

"तुम्हारे चाचा बड़े ही आश्चर्यजनक व्यक्ति हैं," बैजारोव ने अपना ड्रैसिंग गाउन पहनकर उसके बिस्तर के किनारे पर बैठते हुए, अपने छोटे पाइप का कश खींचते हुए आर्कैडी से कहा, "कहाँ यह देहात और कहां यह छैलापन! सोचो तो जरा! और फिर उनके वे नाखून! उनकी तो नुमाइश की जा सकती है। क्यों है न ठीक बात!"

"वास्तव में तुम उन्हें जानते नहीं," आर्केडी ने उत्तर दिया। "वह अपनी जवानी में कन्हैया थे। मैं किसी दिन तुमको उनकी कहानी सुनाऊंगा, वह अनुपमेय सुन्दर थे और स्त्रियां उनके लिए उन्मत्त रहती थीं।"

"ओह, तो यह बात है! तो यह सब बीते दिनों की खातिर है। यहां कोई भी आकर्षित होने वाला नहीं है यह और भी दयनीय है। उनके सुन्दर कालर ने जो दफ्ती की तरह कड़ा था और चिकनी बनी हुई दाढ़ी ने तो मेरे ऊपर सम्मोहन सा कर दिया था। क्या तुम इस सबको अत्यंत ही हास्यास्पद नहीं समझते, आर्केडी?"

"मैं क्या कहूं? लेकिन वास्तव में वह हैं बड़े ही भले।"

"वह पुरानी चालढाल के व्यक्ति हैं? लेकिन तुम्हारे पिता अच्छे व्यक्ति हैं। वे कविता पढ़ने की अपेक्षा खेती अच्छी कर सकते हैं।

लेकिन मैं नहीं समझता कि उन्हें खेती बाड़ी के सम्बन्ध में भी अधिक ज्ञान है। लेकिन वह हैं एक सुआत्मा।"

"मेरे पिता तो निरे पत्थर हैं।"

"वह जरा व्यग्र दीख पड़ रहे थे, क्या तुमने ध्यान दिया था?" आर्केडी ने सहमति में सिर हिलाया, जैसे मानो वह स्वयं व्यग्र न हो।

बैजारोव ने कहा, "अजीब बात है! ये रूमानी विचारों के बुजुर्ग।—ये लोग अपने विचार स्नायुओं पर इतना अधिक जोर देते हैं कि उत्तेजना की स्थिति तक पहुँच जाते हैं, और फिर स्वभावतः सन्तुलन बिगड़ जाता है। खैर जी,——रात बड़ी सुहानी है।—और हां, मेरे कमरे में हाथ मुंह धोने का तसला रखने की जो तिपाई हैं न, वह अंग्रेजी ढंग की है, पर वह दरवाजा बन्द ही नहीं होता। जो भी हो, इससे यह तो प्रगट ही है कि वह विकास के पक्षपाती हैं। और हमें उन्हें उत्साहित करना चाहिए।"

बैजारोव चला गया, और आर्केडी आनन्दातिरेक में विभोर हो गया। अपने घर में, अपने चिर परिचित बिस्तर पर अपने प्रिय के हाथों, सम्भवतः अपनी प्रिय धाय के दयालु, कोमल अथक हाथों से संवारी शैया पर रजाई ओढ़कर सोना कितना मधुर था। आर्केडी को एगोरोवना का ध्यान हो आया और अनायास ही उस के मुंह से एक आह निकल गई। उसने उसकी आत्मा की शान्ति के लिए शुभ कामना की। ... पर अपने लिए उसने कोई कामना नहीं की।

वह और बैजारोव तो जल्दी ही सो गए, पर घर के और लोग जल्दी न सो सके। अपने पुत्र के घर आने पर निकोलाई पैट्रोविच तो फूला नहीं समा रहा था और उसे तो एक प्रकार से आनन्दोन्माद हो गया था। वह अपने बिस्तर पर तो गया, पर सोया नहीं, और न बत्ती ही उसने बुझाई। हथेलियों पर सिर को ऊंचा उठाये वह बड़ी देर

तक विचार-सागर में गोते लगाता रहा। उसका भाई पैवेल पैट्रोविच अपनी अध्ययन शाला में बड़ी रात गये तक अंगीठी के सामने एक आराम कुर्सी पर बैठा सोचता रहा। अंगीठी के कोयले जलते-जलते अंदर ही अन्दर कन्दरा गये थे। उसने अपने कपड़े भी नहीं बदले थे, सिर्फ पेटेन्ट चमड़े के जूतों का स्थान, लाल चीनी चप्पलों ने ले लिया था। उसके हाथ में, गेलो गनेनी का मेंसेजर' नामक पत्रिका का ताजा अंक था, लेकिन वह उसे पढ़ नहीं रहा था, बस अंगीठी की जाली की ओर टकटकी बाँधे देख रहा था। जहां नीली लौ टिमटिमा रही थी,—ईश्वर ही जानता है उसकी विचार धारा कहां विचर रही थी, लेकिन वह मात्र प्राचीन स्मृतियों में ही नहीं विचार रही थीं, उसके चेहरे पर एकाग्रता और उग्रता के चिन्ह थे जो उस आदमी के चेहरे पर नहीं होते जो केवल प्राचीन स्मृतियों में ही डूबा हुआ हो। और पीछे के एक छोटे कमरे में एक बड़े संदूक पर नीली बिना आस्तीनों की वास्कट पहने अपने काले बालों पर सफेद रूमाल डाले एक युवती बैठी थी। कभी कुछ सुनने लगती, कभी ऊंघती, कभी खुले दरवाजे की ओर देखती जिसमें होकर एक बच्चे की चारपाई दीख पड़ती थी और सोते हुए बच्चे की सांस सुनाई दे रही थी। वह फेनिच्का थी।

: ५ :

दूसरे दिन सवेरे बैजारोव और सबसे पहिले जग गया और बाहर चला गया। "हूं," अपने आस पड़ोस की चीजों को देखते हुए उसने सोचा, कोई ज्यादा देखने योग्य जगह तो नहीं है।" जब निकोलाई पैट्रो-

चिच ने किसानों की सब जमीनों की हदबन्दी करदी तो उसने अपना नया घर बनाने के लिए चार डेसेटिन जमीन छोड़दी थी। उसने अपना मकान और सारें बनवाई', एक बाग लगवाया, एक तालाब खुदवाया और दो कुएं खुदवाये। लेकिन बाग सरसब्ज नहीं हुआ क्यों कि तालाब में बहुत कम पानी था और कुएं खारी निकले। केवल बकायन कर एक कुंज और बबूल उग आए थे। यहां पर कुछ अवसरों पर चाय पी जाती और कभी कभी भोजन भी किया जाता था। बैजारोव ने चन्द मिनटों में ही सारा बगीचा खखोल डाला। उसने पशुशाला और अस्तबल भी देखा। वहां उसे दो लड़के मिले जिनसे उसने तुरन्त दोस्ती करली और घर से एक मील दूर मेंढकों का शिकार करने के लिए उन्हें साथ ले गया।

"आप मेंढकों का क्या करेंगे, श्रीमान् ?" एक लड़के ने पूछा।

"बताऊंगा," बैजारोव ने उत्तर दिया। उसमें निम्न श्रेणी के लोगों में अपने प्रति विश्वास पैदा कर लेने की अद्भुत शक्ति थी। यद्यपि वह उन पर कोई कृपा न करता था। बल्कि उनसे रूखा व्यवहार ही करता था। "मैं मेंढकों को चीरता फाड़ता हूँ, और देखता हूं, कि उनके भीतर क्या हो रहा है। हम और तुम भी मेंढकों की ही तरह हैं, अन्तर सिर्फ इतना है कि हम दो पैरों पर चलते हैं, मैं इससे यह पता लगाऊंगा कि हमारे शरीर के भीतर भी क्या हो रहा है।"

"आप यह जानकर क्या करेंगे ?"

"यह, कि अगर तुम बीमार पड़ जाओ और मुझे तुम्हारा इलाज करना पड़े तो मैं गलती न करूं।"

"क्यों, क्या आप डाक्टर हैं ?"

"हां,"

"वास्का, सुनते हो, यह महाशय कहते हैं कि तुम, और मैं मेंढक

की ही तरह हैं। क्या यह मजाक नहीं हैं ?"

"मैं मेंढकों से डरता हूँ," नंगे पैर और सुनहरे बालों वाले सात वर्ष के बालक वास्का ने कहा। वह उठे हुए कालर वाला भूरे रंग का कोट पहने हुए था।

"इसमें डरने की क्या बात है ? वे काटते थोड़े ही हैं !"

"अच्छा दर्शनिको, पानी के भीतर घुसो," बैजारोव ने कहा।

इतने में निकोलाई पैट्रोविच भी जग गया और आर्केडी को देखने गया। आर्केडी उठकर कपड़े भी बदल चुका था। बाप-बेटे दोनों ही ओसारे के नीचे चबूतरे पर गये। बकायन के कुंज में जंगले के नीचे सेमोवर* पहले से ही उबल रहा था। एक लड़की जो उन्हें पहले मिली थी सुरीली आवाज में बोली :

"फेदोस्या निकोलेवना की तबियत ठीक नहीं है और वह नहीं आ सकतीं, और उन्होंने मुझसे कहा है कि आप अपने आप चाय बना लें या कहिये तो फिर वह दुन्याशा को भेजें ?"

"ठीक है, मैं अपने आप बना लूंगा।" निकोलाई पैट्रोविच ने जल्दी से कहा। "तुम क्या चाहोगे अपनी चाय में 'आर्केडी' क्रीम या नीबू ?"

"क्रीम," आर्केडी ने उत्तर दिया और थोड़ी देर की चुप्पी के बाद प्रश्नवाचक स्वर में कहा—"पापा" ?

निकोलाई पैट्रोविच ने कुछ व्यग्रता से उसकी ओर देखा।

"क्या बात है ?"

आर्केडी ने अपनी आँखें नीची करलीं।

"क्षमा कीजियेगा, पापा, अगर मेरे प्रश्न से आपको कुछ चोट पहुँचे," उसने सकुचाते सकुचाते कहना आरम्भ किया। "लेकिन आप की कल की स्पष्टवादिता मुझ से भी वैसी ही स्पष्टवादिता की अपेक्षा

*एक प्रकार की चाय बनाने वाला बर्त्तन—अनु

करती है ।— आप नाराज नहीं होंगे न, क्या होंगे ?"

"कहो, तुम जो कहना चाहते हो ?"

"आपने मुझे पूछने का साहस दिया है ।—क्या यह कारण नहीं है, फेन—क्या यह नहीं है कि वह मेरे यहाँ होने के कारण चाय बनाने आना नहीं चाहतीं ?"

निकोलाई पैट्रोविच ने धीरे से अपना सिर घुमा लिया ।

"शायद," उसने तुरन्त उत्तर दिया । "सोचती है—वह शर्माती है —"

आर्केडी ने तेजी से आंखें उठाकर अपने पिता के चेहरे पर गढ़ा दीं ।

"वास्तव में उनके लिये शर्माने की तो कोई बात नहीं है । पहली बात तो यह कि आप जानते हैं कि उस विषय में मेरे क्या विचार हैं" (आर्केडी को अपने शब्द पसन्द आए)।" और दूसरी बात यह कि मैं दुनिया की किसी चीज के लिए भी आपके रहन सहन के रंग-ढंग और आदतों में दखल नहीं दूंगा । इसके अतिरिक्त, मुझे विश्वास है कि आपने कभी गलत पसन्द नहीं की होगी; अगर आप उसे अपने साथ एक ही छत के नीचे रहने देते हैं तो निश्चय ही वह इसके योग्य होगी, जो भी हो, किसी भी हालत में एक बेटा अपने बाप का (न्याय कर्त्ता नहीं हो सकता है और विशेषकर मैं, और वह भी आप जैसे पिता के साथ जिसने किसी भी तरह कभी भी मेरी स्वतन्त्रता की सीमाएं नहीं बनाई ।"

आर्केडी ने कल्पित स्वर में बात आरम्भ की थी, उसने अनुभव किया कि वह बड़ा भावुक हो रहा है, और साथ ही उसने अनुभव किया कि वह अपने पिता से धार्मिक उपदेश जैसी बातें कर रहा है। अपनी आवाज की ध्वनि का एक व्यक्ति पर काफी प्रभाव पड़ता है, आर्केडी ने अन्तिम शब्द दृढता और प्रभावशाली ढंग से कहे थे ।

"धन्यवाद, आर्केडी," निकोलाई पैट्रोविच ने दबी हुई आवाज में कहा और उसकी उंगलियां फिर एक बार भौंह और ललाट पर चलने लगीं। तुम्हारा कहना सही है। सच ही अगर लड़की योग्य होती-——यह कोई मेरी मूर्खतापूर्ण सनक नहीं है। इसके सम्बन्ध में मेरा तुमसे बात करना भद्दा सा है, लेकिन तुम समझते हो कि वह तुम्हारी मौजूदगी में शर्माती है, विशेषकर इसलिए कि अभी यहां आए तुम्हारा पहला ही दिन तो है।"

"अगर ऐसी बात है तो मैं स्वयं ही उनके पास जाऊंगा।" आर्केडी भावना की नई लहर में आवेश में चिल्ला उठा और कुर्सी पर से उछल पड़ा। "मैं उनको यह स्पष्ट कर दूंगा कि उन्हें मुझसे शर्माने का कोई कारण नहीं है।"

"आर्केडी," उसने कहा, "कृपया ऐसा मत करो—वास्तव में—वहां ... मुझे तुम्हें बता देना चाहिए था।"

लेकिन सुन्दरता कौन है, वह दौड़ गया था। निकोलाई पैट्रोविच उसको देखता रहा और घबड़ाहट में कुर्सी में धंस गया। उसका दिल धड़क रहा था।——क्या उसने उस समय अनुभव किया कि अपने बेटे के साथ उसके भावी सम्बन्ध निश्चय ही कितने अद्‌भुत होंगे? क्या उसने अनुभव किया कि आर्केडी इस मामले से अपने को अलग रखते हुए, उसके प्रति सम्भवतः अधिक सम्मान प्रदर्शन करेगा? क्या उसने अपने को अत्यधिक कमजोर होने के लिए धिक्कारा? यह कहना कठिन है। वह इन सारे चित्तावेगों का अनुभव कर रहा था, लेकिन केवल भावनाओं के रूप में और वे भी अत्यंत धुंधली। उसका चेहरा अब भी लटका हुआ था, उसका दिल अब भी धड़क रहा था।

जल्दी जल्दी आने की पद चाप हुई और आर्केडी चबूतरे पर लौट कर आगया।

"हम एक दूसरे से परिचित हो गए, पिताजी !" उसने कहा, उसके चेहरे पर कोमल और सुखप्रद विजय के भाव थे। "फेदोस्या निकोलेवन की सच ही आज तबियत कुछ ठीक नहीं है और वह ज़रा देर से बाहर निकलेगी। लेकिन आपने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि मेरे एक भाई भी है ? मैंने उसे पिछली रात ही प्यार किया होता, जैसा मैंने अभी किया।"

निकोलाई पैट्रोविच कुछ कहना चाहता था, और अपने हाथ फैलाने के लिए उठना चाहता था। पर आर्केडी पहिले ही उसकी गर्दन से लिपट गया।

"ओहो फिर प्रेमालिंगन हो रहा है ?" उन्होंने अपने पीछे पैवेल पैट्रोविच की आवाज सुनी।

इस अवसर पर उसके आने से बाप-बेटे दोनों को ही समान रूप से चैन मिला। ऐसी भाववेग की स्थितियाँ होती हैं जिनसे मनुष्य अपने को प्रसन्नता पूर्वक मुक्त करना चाहता है।

"क्या तुम्हें इससे अचम्भा हुआ ?" निकोलाई पैट्रोविच ने हर्ष से पूछा।" मैं युगों से आर्केडी के घर वापस आने का स्वप्न देख रहा था।——जब से वह आया है मैं उसे जी भरकर देख भी नहीं पाया हूँ।"

"नहीं, मुझे जरा भी अचम्भा नहीं हुआ," पैवेल पैट्रोविच ने कहा। "मैं भी उसका एक आलिंगन करना चाहूंगा।"

आर्केडी अपने चाचा के पास गया और उसने फिर अपने गालों पर उसकी सुवासित मूँछों का अनुभव किया। पैवेल पैट्रोविच भी बैठ गया। वह अंग्रेजी ढंग का सवेरे पहने जाने वाला स्फूर्तिदायक सूट पहने था और झब्बेदार तुर्की टोपी उसके सिर पर शोभा पा रही थी। उसकी तुर्की टोपी और लापरवाही से गले में बँधा छोटा सा मफलर उस पर देहाती जीवन की प्रभावहीनता प्रदर्शित कर रहे थे। उसकी

कमीज का कड़ा कालर, जो इस बार रंगीन था, और जो सबेरे के समय का उचित पहनावा था, उसकी चिकनी बनी दाढ़ी को सदैव की तरह निर्दयता पूर्वक सहारा दिए हुए था।

"वह तुम्हारा नया दोस्त कहाँ है?" उसने आर्केडी से पूछा।

"वह घूमने चला गया है। वह ज़रा जल्दी जग जाता है।——इसे शिष्टाचार का दिखावा पसन्द नहीं है।"

"हाँ, यह तो स्पष्ट ही है," और पैवेल पैट्रोविच धीरे धीरे रोटी पर मक्खन लगाने लगा। "क्या वह यहाँ काफी दिन तक ठहरेगा?"

"यह तो उस पर निर्भर करता है। वह अपने पिता के पास वापस जारहा था कि यहाँ रास्ते में कुछ दिनों के लिए ठहर गया है।"

"उसके पिता कहाँ रहते हैं?"

"हमारे इसी ग्यूबर्नियाँ क्षेत्र में यहाँ से लगभग अस्सी वेर्स्टस पर एक छोटी सी उनकी जागीर है। वह एक फौजी डाक्टर थे।"

"ओहो! तभी तो मैं ताज्जुब कर रहा था कि मैंने यह नाम बैजारोव कहाँ सुना है? निकोलाई, अगर मैं ग़लती नहीं करता, हमारे पिता के डिवीज़न में एक डाक्टर था जिसका नाम बैजारोव था, कुछ याद पड़ता है तुम्हें!"

"हाँ, कुछ ख्याल तो मेरा भी ऐसा ही है।"

"ठीक, ठीक वह डाक्टर उसका पिता है। हूँ?" पैवेल पैट्रोविच ने अपनी मूछें सिकोड़ीं "भला बैजारोव खुद क्या करता है?"

"बैजारोव क्या करता है? चाचा, मैं आपको क्या बताऊं कि वह क्या करता है?" आर्केडी ने हर्षित होते हुए कहा।

"फिर भी तो?"

"वह निहिलिस्ट* है।"

---

*वास्तव में किसी की सत्ता नहीं है-के दार्शनिक सिद्धान्त के अनुयायी, रूसी क्रान्ति कारी जो वैधानिक सत्ता के विरोधी थे —अनु

"क्या ?" निकोलाई पैट्रोविच ने पूछा। पैवेल पैट्रोविच स्तम्भित हो गया और उसके हाथ में मक्खन लगी छुरी हवा में उठी की उठी रह गई।

"वह निहिलिस्ट है।" आर्केडी ने फिर दुहराया।

"निहिलिस्ट," निकोलाई पैट्रोविच ने एक एक अक्षर को अलग अलग स्पष्ट रूप से उच्चारित किया। "यह, जहाँ तक मैं समझता हूँ लैटिन निहिल, शून्य से सम्बन्धित है; क्या इसके अर्थ हैं—एक आदमी जो—जो किसी चीज में विश्वास नहीं करता ?"

"कहो, जो किसी का सम्मान नहीं करता, फिर से रोटी पर मक्खन लगाते हुए पैट्रोविच ने कहा।

"—जो हर चीज को अलोच्य दृष्टि से परखता है," आर्केडी ने कहा।

"क्या यह एक ही बात नहीं है ?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। निहिलिस्ट वह व्यक्ति है जो किसी बात को ब्रह्म वाक्य के रूप में नहीं स्वीकार करता, जो किसी भी सिद्धान्त को चाहे वह कितना ही महान हो नहीं मान लेता है।"

"भला, तो क्या यह कोई अच्छी बात है ?" पैवेल पैट्रोविच ने कहा।

"यह तो अपनी रुचि की बात है, चाचा, कुछ लोगों के लिए यह अच्छा भी हो सकता है और कुछ के लिए बुरा भी।"

"ठीक है, पर मैं तो इतना जानता हूं कि यह हमारी परम्परा में नहीं है। हम पुरानी सभ्यता के लोग हैं—हम विश्वास करते हैं कि बिना सिद्धान्तों के कोई एक कदम भी नहीं चल सकता या सांस तक भी नहीं ले सकता, उन सिद्धान्तों के बिना जो तुम्हारे शब्दों में विश्वास का रूप धारण कर लेते हैं। सारा जीवन तुम्हारे सामने ही कटे, ईश्वर तुम्हें स्वास्थ्य प्रदान करे और तुम सम्मान पाओ लेकिन

हम तो बस उन्हें देखने और प्रसन्न होने पर से ही सन्तुष्ट हैं—तुम उन्हें क्या कहते हो ?"

"निहिलिस्ट," आर्केडी ने फिर दुहराया।

"हां। पहिले हीगलवादी होते थे अब लोग निहिलिस्ट होने लगे हैं। हम देखेंगे कि तुम निसत्व में, शून्य में कैसे रह लोगे, और भाई निकोलाई पैट्रोविच, अब जरा घंटी बजाओ—यह मेरे कोको लेने का समय है।

निकोलाई पैट्रोविच ने घंटी बजाई और पुकारा—"दुन्याशा!" लेकिन दुन्याशा के बजाय फेनिच्का स्वयं बरामदे में आ गई। वह तेईस वर्ष की युवती थी उसका शरीर गोरा और मसृण था। उसकी आँखें रसीली और केश भंवराये थे। अधरपुट बच्चों के से स्निग्ध और गुलाबी थे। हाथ कोमल, सुघड़, सुडौल थे। वह एक स्वच्छ छपी पोशाक पहने हुए थी; एक नीला नया दुपट्टा उसके गोल सुढार कन्धों पर फहरा रहा था। वह हाथ में कोको से भरा हुआ एक प्याला लिये थी। उसे पैवेल पैट्रोविच के सामने मेज पर रख कर वह लाज से सहमी सकुची खड़ी हो गई। उसके सुन्दर मुख की स्निग्ध कोमल चिक्कण त्वचा के भीतर ऊष्ण रक्त प्रवाहित हो रहा था। उसने अपनी आंखें झुकालीं, और मेज के सहारे अपनी अंगुलियों पर बल दिए झुकी खड़ी रही। वह आने पर मानों शर्मा रही थी, फिर भी ऐसा लग रहा था कि साथ ही वह ऐसा भी अनुभव कर रही थी कि वहाँ आने का उसका अधिकार था।

पैवेल पैट्रोविच ने कठोरता से अपनी भृकुटी सिकोड़ी और निकोलाई पैट्रोविच सकपकाहट और व्यग्रता का अनुभव कर रहा था।

"नमस्ते, फेनिच्का," उसने फुस फुसाया।

"नमस्ते, श्रीमान्," उसने स्पष्ट और शान्त स्वर में उत्तर दिया। और आर्केडी की ओर कनखियों से देखते हुए वापस चली गई।

आर्केडी प्रत्युत्तर में मित्र-भाव से मुस्करा दिया। वापस जाते समय उसके पैर लड़खड़ा रहे थे लेकिन वह चाल भी उसे फब रही थी।

थोड़ी देर के लिए बरामदे में निस्तब्धता छा गई। पैवेल पैट्रोविच ने कोको की चुस्की ली और यकायक सिर ऊपर उठाया।

"यह आ रहे हैं मिस्टर निहिलिस्ट," उसने कहा। सचमुच बैजारोव बाग में होकर (फूल की क्यारियों के बीच से होता हुआ आ रहा था) उसका बगुलिया कोट और पाजामा मैला हो गया था; उसके पुराने गोल हैट में दलदल की घास लगी हुई थी। अपने दाहिने हाथ में वह एक थैला लिए हुए था, जिसमें कोई जिन्दा चीज कुलकुला रही थी। वह तेज कदम रखता हुआ बरामदे में पहुँचा और झुकते हुए उसने कहा।

"नमस्ते, महाशयो; मुझे दुःख है, चाय पर आने में मुझे देर हो गई। मैं अभी एक क्षण में वापस आता हूं। जरा इन कैदियों के लिए जगह का प्रबन्ध कर दूं।"

"उसमें क्या है, जोंकें?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"नहीं, मेंढक।"

"तुम उन्हें खाते हो या पालते हो?"

"मैं अपने प्रयोगों में इनका उपयोग करता हूं," बैजारोव ने उदासीनता से उत्तर दिया और मकान के भीतर चला गया।

"वह उनकी चीर फाड़ करेगा," पैवेल पैट्रोविच ने कहा।" वह सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करता पर मेंढकों में विश्वास करता है।

आर्केडी ने अपने चाचा की ओर दया-भाव से देखा, और निकोलाई पैट्रोविच ने स्वयं समझ लिया कि उसका व्यंग व्यर्थ गया, उसने खेती बाड़ी और नए कारिन्दे की बात छेड़ दी, जो अभी शिकायत करता हुआ आया था कि फोमा नाम का एक मजूर बड़ा ही उत्पाती है और बिलकुल ही काबू से बाहर हो गया है।

: ६ :

बैजारोव वापस आया और मेज पर बैठकर तुरन्त चाय पीने लगा। दोनों भाई चुपचाप उसकी ओर देखते रहे और आर्केडी की आँखें उन दोनों के चेहरों पर बारी बारी से दौड़ रही थीं।

"क्या तुम दूर तक चले गए थे?" निकोलाई पैट्रोविच ने बैजारोव से पूछा।

"यहाँ थोड़ा सा दलदल है, आस्पिन ※ वृक्षों के झुन्ड के पास। मैंने पाँच चाहा पक्षी पकड़े हैं। तुम चाहो तो उन्हें ज़िबह कर सकते हो, आर्केडी।"

"शिकार खेलने के लिए क्या तुम दूर तक नहीं जाते?"

"नहीं।"

"मैं समझता हूँ तुम फिजिक्स का अध्ययन कर रहे हो?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"हाँ, फिज़िक्स, साधारणतः प्रकृति-विज्ञान।"

"सुनते हैं जर्मनों ने इस क्षेत्र में काफी प्रगति करली है।"

"हाँ, इस विषय में जर्मन हमारे गुरु हैं," बैजारोव ने लापरवाही से उत्तर दिया।

पैवेल पैट्रोविच ने जर्मन के स्थान पर दैत स्लेंदर का प्रयोग व्यंग से किया था; लेकिन इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

"क्या जर्मन लोगों के बारे में तुम्हारी राय इतनी ही ऊँची है?" पैवेल पैट्रोविच ने उसके भाव पढ़ते हुए पूछा। वह अन्दर ही अन्दर उत्तेजना का अनुभव कर रहा था। बैजारोव की महज़ असावधानी के

※ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ सदा हिलती रहती हैं।

कारण उसकी अभिजातीय प्रकृति भड़क उठी थी। एक सैनिक डाक्टर के इस निर्लज्ज लड़के ने लट्ठ मार और असंतोषपूर्ण स्वर में उत्तर दिया था और उसके स्वर में कुछ अशिष्टता भी थी।

"उनके वैज्ञानिक अत्यंत ही व्यवहारिक होते हैं।"

"ऐसा ! मैं समझता हूँ रूसी वैज्ञानिकों के सम्बन्ध में तुम्हारी कोई ऐसी प्रशंसनीय राय नहीं है, क्यों ?"

"जी हाँ।"

"ऐसी निस्वार्थता प्रशंसनीय है," पैवेल पैट्रोविच ने अपने को सतर्क करते हुए और अपने सिर को पीछे झटका देते हुये व्यंग किया।" लेकिन आर्केडी निकोलाइच अभी हमें बता रहा था कि तुम किसी शास्त्रज्ञ को नहीं मानते। क्या तुम उन पर विश्वास नहीं करते ?

"मैं उन्हें क्यों मानूँ ? और मैं किस बात का विश्वास करूं ? जब कोई बुद्धिमानी की बात करता है, तो मैं उससे सहमत हो जाता हूँ—बस।"

"क्या सभी जर्मन बुद्धिमानी की बात करते हैं ?" पैवेल पैट्रोविच ने बुदबुदाते हुए कहा, उसके चेहरे पर विरक्ति के भाव झलकने लगे मानों उसके विचार व्यर्थ चले गये हों।"

"नहीं, सभी तो नहीं।" जम्भाई को दबाते हुए बैजारोव ने उत्तर दिया। प्रकट था कि वह शब्दों के इस खिलवाड़ को जारी रखने के पक्ष में न था।

पैवेल पैट्रोविच ने आर्केडी की ओर देखा मानों कहना चाहता हो; "तुम्हारा मित्र विनीत है।"

"रही मेरी बात," वह बिना किसी हिचकिचाहट के कहता गया, "मैं जर्मनों को नापसन्द करने का दोषी तो हूँ, इसमें संदेह नहीं। मैं रूसी जर्मनों की तो बात ही नहीं करता। हम उस तरह के लोगों को खूब जानते हैं। लेकिन मैं जर्मनी में रहने वाले जर्मनों को सहन नहीं

कर सकता। वह पुराने समय के लोग अच्छे थे—उनसे तो कोई प्रेरणा ले सकता था। तब वहाँ महान लोग थे, शिलर, गेटे आदि, तुम तो जानते ही हो······मेरा भाई उनके बारे में बड़े अच्छे ख्याल रखता है······अब वे रसायनिक और भौतिकवादी हो गए हैं।···"

"एक अच्छा रसायनिक एक कवि की अपेक्षा बीस गुना अधिक उपयोगी है," बैजारोव ने कहा।

"अच्छा, ऐसी बात है?" पैवेल पैट्रोविच ने आँख की पलकें थोड़ा ऊपर उठाते हुए कहा जैसे वह ऊंघ रहा हो। "तब तुम, मेरा विचार है, कला में भी विश्वास नहीं करते?"

"पैसा पैदा करने और मस्त पड़े रहने की कला!" बैजारोव ने व्यंग से कहा।

"तो, जनाब मजाक कर रहे हैं, और हर बात हंसी में उड़ा देते हैं। यही बात है न? ठीक है। क्या इसके अर्थ है कि तुम सिर्फ विज्ञान में ही विश्वास करते हो?"

"मैंने आपसे पहिले ही बताया कि मैं किसी में विश्वास नहीं करता, और विज्ञान क्या है, एक साधारण विज्ञान? जैसे और व्यापार धन्धे हैं वैसे ही विज्ञान भी है। लेकिन साधारणतौर पर विज्ञान का कोई अस्तित्व ही नहीं।"

"बहुत खूब कहा जनाब ने! लेकिन और रीति-रस्मों के सम्बन्ध में आपका क्या मत है, जिन्हें समाज मानता है? क्या उनके बारे में भी आपका ऐसा ही नकारात्मक दृष्टिकोण है?"

"यह सब क्या है, क्या जिरह है?" बैजारोव ने पूछा।

पैवेल पैट्रोविच का रंग फीका पड़ गया···निकोलाई पैट्रोविच ने बीच में दखल देना आवश्यक समझा।

'किसी दूसरे दिन हम तुम्हारे साथ इस विषय पर विस्तार से बहस करेंगे, मेरे प्यारे बन्धु एवज़ैनी वेस्लिच; हम तुम्हारे विचार सम-

रूँगी और अप नेतुम्हें बतायेंगे। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं तो यह जान कर कि तुम प्रकृति विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो, अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं। मैंने सुना है कि लीविग ने जमीन को उपजाऊ बनाने के सम्बन्ध में कुछ अत्यन्त ही महत्व पूर्ण खोजें की हैं। तुम सम्भवतः मेरे खेती के काम में मेरी कुछ सहायता कर सकते हो, शायद मुझे कुछ उपयोगी सुझाव भी दे सकते हो।"

'मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ, निकोलाई पैट्रोविच, लेकिन लीविग की बाक तो दूर की है। पढ़ना आरम्भ करने से पहले एक आदमी को क ख ग सीखना होता है, जब कि हमने अभी अपने ही ककहरे पर ध्यान नहीं दिया।"

"मैं देखता हूँ, कि तुम सचमुच ही निहिलिस्ट हो, नकारवादी हो।" निकोलाई पैट्रोविच ने सोचा।

"फिर भी, मुझे आशा है कि अवसर पड़ने पर तुम मुझे अपने को कष्ट देने दोगे।" उसने सस्वर कहा। "और अब भाई साहब, मेरा ख्याल है कि कारिन्दे से बात करने का समय हो गया है।"

पैट्रोविच अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ।

"हाँ," उसने किसी की ओर विशेष रूप से न देखते हुए कहा, "युग के किसी महान व्यक्ति से वार्तालाप का सुख बिना प्राप्त किए हमारी तरह देहात में पांच वर्ष तक रहना अत्यन्त दुःखदाई है। आदमी, इससे पहिले कि वह चेत पाये बज्र मूढ़ हो जाता है, और जब तक तुम यहां जो कुछ तुमने सीखा है उसे याद रखने की कोशिश में लगे हो तब तक वह पिछड़ा हुआ और व्यर्थ का हो जाता है और पता लगता है कि ऐसी व्यर्थ की बातों पर अब बुद्धिमान लोग अपना समय नष्ट नहीं करते और तुम स्वयं एक पिछड़े हुए व्यक्ति हो गए हो। ओह, लगता है जवान लोग हमसे अधिक चतुर हैं।"

पैवेल पैट्रोविच धीरे धीरे घूम कर बाहर चला गया; निकोलाई पैट्रोविच भी उसके पीछे ही चला गया।

"क्या वह सदैव ऐसे ही रहते हैं?" जैसे ही दोनों भाइयों के चले जाने के बाद दरवाज़ा बन्द हुआ; बैजारोव ने सुस्थिर हो पूछा।

"देखो, एवजेनी, तुमने सचमुच ही बड़ा रूखा व्यवहार किया है," आर्कैडी ने कहा। "तुमने उनका अपमान किया है।"

"कैसी बात करते हो! मेरा बुरा हो, अगर मैंने इन जंग खाये अभिजात्यों का मजाक बनाया हो? यह सिवाय अहंकार, अकड़ और छैलापन के कुछ नहीं है। अगर उनके जीवन का ढंग यही हो गया तो वे सेंटपीटर्स बर्ग में ही क्यों नहीं बस गए।...अच्छा, अब बहुत हो लिया उनके बारे में। मुझे एक टिड्डा मिला है जो अपनी तरह का निराला है...डाइटिस्कस मार्जिनेटस तुम जानते हो? मैं तुम्हें दिखाऊंगा।

"मैंने तुम्हें उनको कहानी सुनाने का वादा किया था..."आर्कैडी ने कहा।

"ठिड्डों की कहानी?"

"नहीं, नहीं, एवजेनी। अपने चाचा की कहानी। तुम देखोगे कि तुम जैसा सोचते हो, वे वैसे नहीं। उन्हें उपहास की नहीं सहानुभूति की दरकार है।"

"मैं इससे मना तो नहीं करता, लेकिन तुम इस पर इतना जोर क्यों दे रहे हो?"

"मनुष्य को न्यायशील होना चाहिए, एवजेनी।"

"इसका अभिप्राय क्या है?"

"टोको मत केवल सुनो।..."

और आर्कैडी ने अपने चाचा की जो कहानी उसे सुनाई पाठक उसे आगामी अध्याय में पढ़ेंगे।

पैवेल पैट्रोविच किर्सानोव ने अपनी आरंभिक शिक्षा अपने छोटे भाई निकोलाई के समान घर पर ही प्राप्त की थी, और उसके बाद अनुचरों ❀ की पलटन में। वह बचपन से ही बहुत सुन्दर था, आत्म-विश्वासी और विनोदप्रिय था। वह सभी का चित्त-विनोदन करने में सफल होता था। जैसे ही उसे सैनिक अफसरी का पद मिला वह ऊंची सभा सोसाइटियों में बैठने लगा। उसकी हर बात पर लोग ध्यान देते थे। वह अपनी हर इच्छा पूरी करता था। उसकी मूर्खता भी उसे शोभा देती थीं। स्त्रियाँ उसे देखकर उन्मत्त हो जाती थीं; और पुरुष उसे दम्भी कहते थे और उससे ईर्ष्या करते थे। वह अपने भाई के साथ ही रहता था और उसे बड़ा प्यार करता था, यद्यपि उन दोनों में कोई साम्य न था। निकोलाई पैट्रोविच जरा लंगड़ाता था, उसका कद, चेहरा-मुहरा और आकृति छोटी और आकर्षक थी पर कुछ जरा विषाद पूर्ण थी। उसकी आंखें छोटी और काली थीं, उसके बाल मुलायम और महीन थे, वह सरल जीवन पसन्द करता था लेकिन पढ़ने का शौकीन था और सभा सोसाइटी से अलग रहता था। पैवेल पैट्रोविच ने कभी भी शाम घर पर नहीं बिताई। वह अपने साहस, चंचलता तथा फुर्ती के लिए प्रसिद्ध था। (उसने युवकों में कसरत के प्रति रुचि उत्पन्न कर दी थी) उसने पांच या छः फ्रेंच भाषा की किताबों से अधिक नहीं पढ़ीं। अट्ठाइस वर्ष की आयु में वह कप्तान हो गया था और जीवन का शानदार भविष्य उसके सामने था। पर एकाएक सभी कुछ बदल गया।

उस समय सेंटपीटर्सबर्ग के समाज में एक राजकुमारी—र— थी। उसे अभी तक बहुत लोग याद करते हैं; उसका पति अच्छे

❀ बड़े २ सामंतों के लड़के लड़की, महाराज और महारानी की अनुचर सेना में होते थे।

खान्दान का व्यक्ति था, पर ठंडा और मूर्ख था। उनके कोई बच्चा न था; वह यकायक विदेश चली जाती वैसे ही यकायक रूस वापस आ जाती। सब मिलाकर वह बड़ा आश्चर्यजनक जीवन व्यतीत करती थी। वह तिरिया चरित्र वाली चपल चोचलेबाज, आनन्द की भँवर में गर्त रहने वाली स्त्री थी। वह नाचते नाचते शिथिल हो जाती और उन नौजवानों के साथ हँसी-ठिठोली और चुहल करती जिनका वह बैठक की हल्की रोशनी की छटा में भोजन से पहिले दिल बहलाव करती थी। रात को वह रोती और प्रार्थना करती थी; वह शान्ति के लिए बैचेन हो जाती, पर उसे शान्ति न मिलती और कभी कभी तो सारी रात सबेरा हो जाने तक कमरे में बैचेनी में और व्यग्रता से अपने हाथों को मलते मरोड़ते हुए टहलती रहती; या किसी धर्म-गीतों की पुस्तक लेकर पीली और एक दम ठंडी हो बैठ जाती। दिन का प्रकाश फूटते ही वह फिर फैशन की पुतली हो जाती, अपने चारों ओर जमघट जमाती, चहकती, किलकारी भरती और हर उस बात में कूद पड़ने को उतावली रहती जो उसे जरा भी विस्मृति प्रदान कर सके। उसकी सूरत बड़ी लुभावनी थी; उसके झबरारे सुनहरे बाल घुटने तक सुनहले गोटे से लटकते थे। लेकिन कोई भी उसे सुन्दरी नहीं कह सकता था। उसके चेहरे पर सबसे सुंदर बस उसकी आँखें ही थीं, और आंखें भी उतनी नहीं थीं—वे भूरी थीं, और बड़ी नहीं थीं—जितनी उनकी दृष्टि, जो चंचल और गहरी थी जो शैतानी, उपेक्षा चिंता, घोर नैराश्य और गूढ़ पहेली से भरी हुई थीं। जब वह व्यर्थ की बातें करती होती तब भी उसकी आंखों में एक अजीब तरह की चमक रहती। वह बड़े ही तड़क भड़कीले और सुन्दर कपड़े पहनती थी। पैवेल पैट्रोविच से उसकी भेंट एक नाच घर में हुई। उसने उसके साथ मजूर ॐ का नाच नाचा। नाच के बीच में उसने कोई संगत बात

ॐ रूसी नृत्य—अनु

नहीं की। पैवेल उससे तीव्र प्रेम करने लगे। वह बड़ी जल्दी हर किसी को जीत लिया करता था। यहाँ भी वही बात हुई, किन्तु उसकी विजय से उसकी ऊष्णता ठंडी न हुई, और परिणाम में वह और भी उन्मत्त व्यग्रता से इस स्त्री के प्रेम-जाल में आबद्ध हो गया, किन्तु उसे सम्पूर्ण समर्पण के अवसर पर भी ऐसा लगता था मानों उसमें कुछ ऐसा पवित्र और अगम्य है जिसे…कोई भी नहीं प्राप्त कर सकता। उसके दिल का राज सभी के लिए रहस्य था, सिवाय परमात्मा के। ऐसा प्रतीत होता था कि उस पर किसी जादुई शक्ति का प्रभाव है जिसकी थाह वह स्वयं नहीं जानती थी। उस जादुई शक्ति की इच्छा ही उस पर हावी रहती थी, जिसकी झलकों के सामने वह बेचारी अवश हो जाती थी। उसके असंगत और अनुपयुक्त कार्यों की कोई गिनती न थी। सिर्फ वे पत्र ही जो उसके पति के सन्देह को जाग्रत करने को पर्याप्त थे, उसने जब उसके प्रेम पर दुःख की बदरी छाई हुई थी एक ऐसे व्यक्ति को लिखे थे, जो उसके लिए नितान्त अजनबी था। वह उस व्यक्ति से जिसे वह पसन्द करती थी कभी भी हंसी-मजाक नहीं करती थी, सिर्फ उद्भ्रान्तता से उसकी ओर देखती रहती थी, और उसे सुनती रहती थी। कभी कभी, और अधिकतर एकाएक इस घबड़ाहट की स्थिति में ही उसे भय पूर्ण कंपकंपी आ जाती, उसके चेहरे पर मुर्दनी छा जाती और चेहरा वहशियाना हो जाता, वह अपने को अपने सोने के कमरे में बन्द कर लेती और उसकी नौकरानी दरवाजे की सांकल के छेद से कान लगाकर सुनती कि वह सिसक रही है, बार बार जब भी किर्सानोव उसके साथ आनंददायक सहवास के बाद अपने कमरे में वापस आता तो वह दिल में उठी असफलता की चोट के आवेगों से व्यथित हो उठता। "मैं और अधिक क्या चाहता हूं ?" वह अपने से पूछता जब कि उसका दिल दर्द से अवश्य चेतनाहीन हुआ रहता था। पैवेल ने एक बार उसे एक अंगूठी दी जिसके नग पर स्फिंक्स की तस्वीर खुदी थी।

"यह क्या है ?" उसने पूछा। "*स्फिंक्स ?"

"हां," उन्होंने उत्तर दिया और वह स्फिंक्स तुम हो ?"

"मैं ?" उसने अचम्भित हो पूछा, और उसके चेहरे पर पैनी आंखें डालीं। "यह तो चापलूसी की बात है, समझे।", उसने ठिठोली करने के स्वर में कहा, पर उसकी आंखों की दृष्टि वैसी ही रही।

पैवेल पैट्रोविच को तब भी बड़ी पीड़ा सहन करनी पड़ी जबकि राजकुमारी उसे प्रेम करती थी। लेकिन जब राजकुमारी का पैवेल के प्रति प्यार ठंडा हो गया—और जो शीघ्र ही हो गया, तो वह लगभग पागल ही हो गया। वह प्रेम और ईर्षा से उद्भ्रान्त था। उसने उसे धमकाया, और उसके पीछे-पीछे लगा फिरा, वह उसकी इन हरकतों से परेशान हो गई और विदेश चली गई। उसने अपने मित्रों और अफसरों के समाने बुझाने के बावजूद भी सैनिक पद से इस्तीफा दे दिया और राजकुमारी के पीछे चल पड़ा। उसने विदेश में चार वर्ष काटे। कभी तो राजकुमारी के आसपास ही मंडराता और कभी जान-बूझ कर उसे दृष्टि से ओझल हो जाने देता। वह अपनी नजरों में स्वयं ही गिर गया। उसने अपनी भीरुता को धिक्कारा।" "लेकिन सब व्यर्थ रहा। उसको व्यग्रता पैदा करने वाली और लगभग मूर्खता पूर्ण लेकिन अवश करने वाली मूर्ति उसके दिल में बड़ी गहरी बस गई थी। बेडेन में होनी ने उन्हें फिर एक दूसरे के नजदीक ला दिया; ऐसा प्रतीत होता था कि उतनी उन्मत्तता से उसने उसे कभी प्यार नहीं किया था। लेकिन मुश्किल से एक महीना ही बीता था कि सब खेल फिर समाप्त हो गया। अन्तिम बार लौ चमकी और सदैव के लिए बुझ गई। यह समझते हुए कि अलग होना अनिवार्य है, वह चाहता था कि उससे उसकी मित्रता बनी रहे, मानो ऐसी औरत से

---

*एक कल्पित प्राणी जिसका कपाल स्त्री का तथा शरीर सिंह का माना जाता था—अनु

मित्रता सम्भव ही थी।...बेडेन में उसने उसे गच्चा दिया और फिर उससे मिलना जानबूझकर बढ़ाती रही। किर्सानोव रूस लौट आया। और फिर से उसने अपना पुराना जीवन आरम्भ करने का प्रयास किया, लेकिन कुछ हो नहीं पाया, वह जगह जगह मारा मारा फिरा। अब भी वह सभा समाजों में आता और संसारी ऐश को अपनी पौरुष प्रसिद्धि को उसने कायम रखा, और वह अब भी दो या तीन नई विजयों का गर्व कर सकता था। लेकिन उसे अब न अपने लिए और न अन्यों के लिए ही कोई आशाएं थीं और न उसने अपनी स्थिति में सुधार करने की ही कोशिश की। उस पर बुढ़ापा अपना जाल फैलाता गया, उसके बाल सफेद हो गये। शाम को अविवाहित मित्रों की चिड़चिड़ी उबासी और उदासीनतापूर्ण बकवाद के बीच क्लब में बैठना उनके जीवन की आवश्यकता बन गई। निःसन्देह यह बुरे संकेत थे। विवाह को छोड़कर और कोई बात उसकी कल्पना से परे न थी। इस तरह दस नीरस, निर्जन, वेगवान, अति वेगवान वर्ष बीत गए। समय जैसे वेग से रूस में व्यतीत होता है वैसा और कहीं नहीं होता, जेल में कहते हैं उससे भी वेग से समय बीतता है। एक दिन क्लब में भोजन के समय पैवेल पट्रोविच ने राजकुमारी की मृत्यु का समाचार सुना। पेरिस में उन्माद की अवस्था में उसकी मृत्यु हुई थी। वह भोजन की मेज पर से उठ गया और बड़ी देर तक क्लब के कमरे में इधर उधर घूमता रहा और तब थोड़ी देर के लिए ताश खेलने वालों के पास पत्थर की मूर्ती की तरह बुत बनकर खड़ा हो गया। और फिर चला गया। थोड़ी देर बाद उसे एक पारसल मिला जिसमें वही अंगूठी थी जो उसने राजकुमारी को दी थी। उसने उस स्फिंक्स पर क्रास बना दिया था और उसे बताने को कहा था कि पहेली का उत्तर क्रास ही है।

यह सन् १८४८ की बात है। तभी निकोलाई पैट्रोविच अपनी

पत्नी की मृत्यु के बाद सेंटपीटर्सबर्ग आया था। पैवेल पैट्रोविच ने अपने भाई के बारे में उसके देहात में बस जाने के बाद से कोई समाचार नहीं सुना था। निकोलाई पैट्रोविच के विवाह तथा पैवेल पैट्रोविच का राजकुमारी से परिचय का समय एक मिल गया। विदेश में घूमने फिरने के बाद वह अपने भाई के पास कुछ दिन साथ रहकर उसके पारिवारिक जीवन के सुख में अपने दिन व्यतीत करने की अभिलाषा से गया। लेकिन वह एक हफ्ते से अधिक वहां नहीं रह सका। दोनों भाइयों की स्थिति का अन्तर अत्यन्त स्पष्ट था। १८४८ में अन्तर कम मालूम होता था, निकोलाई पैट्रोविच की पत्नी का देहान्त हो चुका था और पैवेल पैट्रोविच की स्मृतियां धुंधली हो चली थीं। राजकुमारी की मृत्यु के बाद उसने उसे अपने विचारों में से निकालने का बड़ा प्रयास किया था। लेकिन जब कि निकोलाई को सन्तोष था। कि उसका जीवन सफल रहा है और अब उसकी जवान पुत्र उसकी आँखों के सामने बढ़ रहा था; पैवेल इसके विपरीत एकाकी था, रंडुआ था, उसका जीवन धुंधले अवसान की ओर बढ़ रहा था; क्षोभ, आशा और आशा, क्षोभ से भरा हुआ था। जवानी बीत गई और बुढ़ापा भी अभी नहीं आया था।

पैवेल पट्रोविच के जीवन के ये दिन उसके लिए इतने कठिन थे कि और किसी के क्या होंगे। उसके भूत जीवन की समाप्ति के साथ साथ उसका सब ही कुछ समाप्त हो गया।

"मैं तुम्हें मैरिनो आने की दावत नहीं दे रहा हूँ, "एक बार निकोलाई पैट्रोविच ने उससे कहा (उसने अपनी जागीर का यह नाम अपनी पत्नी के सम्मान में रखा था), "जब मेरी पत्नी जीवित थी तब तुम्हारा मन वहाँ नहीं लगा था और अब तो मुझे डर है कि वहाँ की उदासी तुम्हारे लिए मौत ही साबित होगी।"

"तब मैं मूर्ख और बेचैन था," पैवेल पैट्रोविच ने उत्तर दिया, "अब अगर मैं बुद्धिमान नहीं तो गम्भीर तो अधिक हो ही गया हूँ अब यदि तुम्हें आपत्ति न हो तो मैं सदैव के लिए तुम्हारे साथ रहना पसन्द करूंगा।"

उत्तर में निकोलाई पैट्रोविच ने उसे गले से चिपटा लिया। पर उसकी इच्छा को कार्यान्वित होने में डेढ़ साल लग गए। किन्तु जब वह एक बार आकर देहात में बस गया, फिर वहाँ से उसने एक दिन भी बाहर कदम नहीं रखा; उन तीन जाड़ों में भी नहीं, जिनमें निकोलाई पैट्रोविच अपने बेटे के साथ सेंटपीटर्स बर्ग में जाकर रहा था। उसका प्रधान शगल अध्ययन हो गया था, विशेषकर अंग्रेजी। उसका सारा जीवन ही अंग्रेजी ढंग के तौर तरीकों में ही निर्मित हुआ था। वह शायद ही कभी पड़ौसियों से मिलता और केवल चुनाव के अवसर पर ही बाहर निकलता था, और आम तौर चुप ही रहता था, जब तक कि पुरान-पन्थी देहातियों पर कोई फबती ही न कसनी हो। ऐसे अवसर पर भी वह अपने को युवकों से अलग रखता था। बूढ़े और जवान दोनों ही श्रेणियां उसे घमंडी समझतीं थीं। लेकिन दोनों ही श्रेणियां उसकी सांस्कृतिक सुरुचि के लिए उसका सन्मान भी करतीं थीं, उसकी प्रेम अखाड़े में विजयों की प्रसिद्धि के लिए उसकी बढ़िया प्रभावशाली पोशाक के लिए, उसकी बढ़िया से बढ़िया होटल के कमरे में ठहरने की आदत के लिए, उसके भोजन करने के अनुपम ढंग के लिए, और इस बात के लिए कि उसने एक बार लुइ फिलिप की मेज पर वेलिंगटन के साथ भोजन किया था; और इसलिए कि वह सदैव अपने साथ एक चाँदी की शृंगार मन्जूषा और एक हल्का स्नान करने का टब रखता है; कि वह बढ़िया से बढ़िया इत्र को पानी की तरह बहाता था कि वह एक विशेष प्रकार का ताश का खेल खेलता था और सदा ही उसमें हारता भी था, और उसकी सत्यवादिता के लिए; उसका सम्मान

करते थे। स्त्रियां उसे मनोहर विषादपूर्ण व्यक्ति मानतीं, लेकिन उसने फिर कभी उनके समाज को प्रश्रय नहीं दिया...

× × +

"तो यह बात है, एवजेनी", कहानी कहना बन्द करते हुए आर्केडी ने कहा, "अब तुम स्वयं ही विचार करलो कि मेरे चाचा के साथ तुम्हारा व्यवहार कितना अनुचित था। उन्होंने अनेक बार मेरे पिता को कष्टों से उबारा है। अपना सारा धन उन्हें दे दिया है—तुम नहीं जानते, अभी जागीर का बटवारा नहीं हुआ है; अब भी वह हर किसी की सहायता करने को उद्यत रहते हैं, और सदैव किसानों का पक्ष लेते हैं, हाँ, यह सच है कि जब वे किसानों से बात करते हैं तो ऐंठ कर और नाक भौंह सिकोड़ कर करते हैं और यूडी क्लोन सूंघते हैं..."

"अपनी चेतना बनाए रखने के लिए," बैजारोव ने कहा।

"शायद, लेकिन इनका दिल बड़ा अच्छा है। और वह किसी भी तरह मूर्ख नहीं हैं। उन्होंने मुझे बहुत अच्छी अच्छी सलाह दी है... विशेषकर—विशेषकर...स्त्रियों के सम्बन्ध में।"

"आह! खुदरा फजीहत—दीगरा नसीहत। हम खूब जानते हैं।"

"संक्षेप में," आर्केडी कहता रहा, "विश्वास करो वह बहुत दुःखी हैं। उन्हें तिरस्कृत करना लज्जा जनक है।"

"लेकिन उन्हें तिरस्कृत करता कौन है?" बैजारोव ने विरोध किया। "मैं यह तो कहूंगा कि जिस आदमी ने अपना सारा जीवन एक स्त्री के प्रेम के दाँव पर लगा दिया और जब पांसा विपरीत पड़ा तो अपना सारा जीवन धूल में मिला दिया—वह आदमी आदमी नहीं है—नर नहीं। तुम कहते हो वह दुःखी हैं; तुम भली प्रकार जानते होगे; लेकिन अब भी उन सारी मूर्खताओं के प्रभाव से उनका

दिल-दिमाग साफ नहीं हुआ है। मेरा ख्याल है कि वह सचमुच ही अपने को बड़ा सचेतन मनुष्य समझते हैं, क्योंकि वह गलिग्नेनी का सारा कूड़ा पढ़ते हैं और कभी कभी एक-आध किसान का पक्ष लेकर उसे दंड से बचा लेते हैं।"

"लेकिन यह याद रखो कि उन्होंने कैसी शिक्षा पाई है, और वह समय कैसा था," आर्केडी ने कहा।

"शिक्षा?" बैजारोव ने कहा। "हर किसी को अपने को शिक्षित करना चाहिए--मिसाल के लिए मेरी तरह।...रही समय की बात, उस पर निर्भर ही क्यों रहा जाय। नहीं, मेरे प्रिय मित्र, यह सब भ्रष्टता है, शून्यता है! और मैं जानना चाहूँगा कि कहाँ स्त्री-पुरुष के रहस्यात्मक सम्बन्ध बीच में आड़े आ जाते हैं? हम शरीर विज्ञानी इन सब सम्बन्धों के बारे में अच्छी तरह जानते हैं। तुम जरा आँख की रचना के बारे में अध्ययन करो: कहां है वह अनबूझ दृष्टि, जिसके बारे में तुम बातें करते हो? यह सब रूमानी भावनाएं हैं, कमजोर और सड़ी हुई हैं, और सब छलावा हैं, अच्छा हो, अब हम चलकर जरा टिड्डे को देखें।"

और वे दोनों बैजारोव के कमरे में गए, जिसमें एक अजीब तरह की चीर-फाड़ और उससे सम्बन्धित दवाइयों तथा सस्ती तम्बाकू मिश्रित गन्ध बसी हुई थी।

: ८ :

पैवेल पट्रोविच अपने भाई के साथ कारिन्दे से बातचीत करने के दौरान में अधिक देर तक नहीं रुका। कारिन्दा एक लम्बे कद का आदमी था, उसकी आवाज मधुर और स्पष्ट थी और आँखें धूर्तता पूर्ण थीं। वह अपने मालिक के हर प्रश्न का उत्तर देता : "क्यों, निश्चय ही, श्रीमान, निश्चय श्रीमान," और उसने सभी किसानों को शराबी और चोर सिद्ध करने का प्रयास किया। फार्म जिसे अभी हाल में ही नये ढंग से व्यवस्थित किया गया था, बैलगाड़ी के बिना ओंगे पहिये की तरह और रद्दी लकड़ी के घर बने फर्नीचर की तरह उखड़-पुखड़ कर बिखर गया। फिर भी निकोलाई पैट्रोविच ने साहस नहीं छोड़ा, लेकिन कभी कभी वह आह भरता और चिन्तित हो जाता था। उसने जान लिया था कि बिना धन के गाड़ी नहीं चल सकती, लेकिन उसका सारा धन समाप्त हो चला था। आर्केडी ने सच ही कहा था: पैवेल पैट्रोविच ने कई बार अपने भाई की सहायता की थी, प्रायः जब उसे अपनी कठिनाइयों का हल ढूंढने में अधिक चिन्तित, उद्विग्न और दुविधा में देखता तो पैवेल पैट्रोविच धीरे धीरे टहलता हुआ खिड़की के पास चला जाता और अपनी जेब में हाथ डालकर कहता : "सब चाँदी की माया है," और उसे कुछ धन दे देता; लेकिन उस दिन उसके हाथ स्वयं ही खाली थे, इसलिए उसने वहाँ से हट आना ही उचित समझा। व्यवसायिक चिन्ताओं ने उसके लिए जीवन दूभर कर दिया था और उसे शंका रहने लगी थी कि निकोलाई पैट्रोविच अपने उत्साह और उद्यमों के बावजूद भी ठीक तरह से देख भाल नहीं कर पाता, हालाँकि वह स्वयं यह सुझाने में असमर्थ था कि चूक कहां है।" मेरा भाई पर्याप्त व्यवहारिक नहीं है," वह अपने से कहता; "उसे धोखे

से लूटा जा रहा है।" निकोलाई पैट्रोविच सदा अपने भाई की सम्मतियों का सम्मान करता था और सदैव उससे सलाह लिया करता था। "मैं आसानी से पिघल जाने वाला और कमजोर इच्छा शक्ति का व्यक्ति हूँ, मैंने पिछड़ा हुआ जीवन व्यतीत किया है," वह कहता; "तुम ने असंख्यों आदमी देखे हैं, उनके बीच में रहे हो और उन्हें अच्छी तरह समझते हो, तुम्हारी आंखें गरुड़ की सी पैनी हैं।" पैवेल पैट्रोविच उत्तर में वहां से हट जाता, पर अपने भाई की बुद्धि को कोसता नहीं था।

निकोलाई पैट्रोविच को कमरे में छोड़ कर वह उस मार्ग से गया जो मकान के आगे वाले भाग को पीछे वाले से अलग करता था और विचारों में डूबा हुआ एक नीचे से दरवाजे पर रुक गया और दरवाजे पर थपकी दी।

"कौन है? भीतर आओ," फेचिन्का का स्वर सुनाई पड़ा।

"मैं हूँ," पैवेल पैट्रोविच ने दरवाजा खोलते हुए कहा।

फेन्चिका बच्चे को गोद में लिए कुर्सी पर बैठी थी। वह जल्दी से उठ खड़ी हुई, और बच्चा एक लड़की के हाथ में थमा दिया, और जल्दी से अपना दुपट्टा ठीक किया। लड़की बच्चे को लेकर जल्दी से बाहर चली गई।

"दुख है, अगर मैंने आकर तुम्हें परेशान किया है," पैवेल पैट्रोविच ने बिना उसकी ओर देखे हुए कहा; "मैं तो तुमसे सिर्फ यह पूछना चाहता था...मैंने सुना है कि कोई आदमी आज शहर जा रहा है...क्या तुम कृपया मेरे लिए हरी चाय लाने की आज्ञा दोगी।"

"अच्छी बात है श्रीमान्;" फेनिच्का ने उत्तर दिया, "कितनी चाहिए?"

"ओह, मेरा ख्याल है सिर्फ आधा पौंड काफी होगी। मैं देखता हूं तुमने यहां परिवर्तन कर लिया है, "उसने फेचिन्का के चेहरे तथा

कमरे में सब तरफ दृष्टि डालते हुए कहा। "ये पर्दे," उसने कहा यह देखते हुए कि उसने इसकी बात नहीं समझी है।

"ओह, हां, यह पर्दे श्रीमान्, निकोलाई पैट्रोविच ने ये मुझे दिए थे, लेकिन यह तो काफी दिनों से टंगे हैं।"

"हां, और मैं भी तो बहुत दिन बाद तुम्हारे कमरे में आया हूं। अब तो यहां बड़ा अच्छा हो गया है।"

"निकोलाई पैट्रोविच की कृपा को धन्यवाद है," फेनिच्का ने कहा।

"क्या तुम अपने पहिले कमरे की अपेक्षा यहां अधिक आराम से हो?" पैवेल पैट्रोविच ने कोमल स्वर में पूछा पर उसके चेहरे पर मुस्कुराहट का नाम भी न था।

"ओह, हां, श्रीमान्।"

"तुम्हारे पुराने कमरे में अब कौन है।"

"कपड़ा धोने वाली दासियाँ।"

"ओह।"

पैवेल पैट्रोविच चुप हो गया। "वह अब जा रहे हैं" फेनिच्का ने सोचा; लेकिन वह नहीं गया। वह उसके सामने ऐसी खड़ी रही जैसे मानों उसे वहां गाड़ दिया गया हो, और खड़ी खड़ी अपनी उंग-लियां उमेठती रही।

"तुमने बच्चे को क्यों बाहर भेज दिया?" पैवेल पैट्रोविच ने अन्त में कहा ही। "मैं बच्चों को बहुत पसन्द करता हूं, उसे मुझे देखने दो।"

फेनिच्का के चेहरे पर उलझन और खुशी की लालिमा दौड़ गई। वह पैवेल पैट्रोविच से डरती थी। वह उससे बहुत कम ही और वह भी कभी कभी बोलता था।

"दुन्याशा," उसने पुकारा, "मित्या को जरा भीतर तो ले आना" (वह घर में किसी को तू नहीं कहती थी)। "नहीं, एक मिनट रुको, पहले उसके कपड़े बदल दो।"

फेचिच्का दरवाजे की ओर बढ़ी।

"कोई बात नहीं है," पैवेल पैट्रोविच ने कहा।

"सिर्फ एक मिनट फेचिच्का," ने कहा, और चली गई थी।

अकेले रह जाने पर पैवेल पट्रोविच ने अच्छी तरह कमरे को देखा। छोटा और नीचे पटाव का कमरा बड़ा आनन्द दायक और साफ था। फर्श से ताजी पालिश की गंध आ रही थी। वीणा के आकार की पीठ वाली कुर्सियां दीवार के सहारे लगी थीं। उन्हें स्वर्गीय जनरल ने पोलैंड में युद्ध के समय खरीदा था। एक कोने में एक पलंग बिछा हुआ था, जिस पर मखमल का महराबदार चंदोवा तना हुआ था। उसके सामने वाले कोने में सन्त निकोलस की काली प्रतिमा के सामने लैम्प जल रहा था। चीनी मिट्टी का एक अंडा लाल फीते से सधा हुआ सन्त के प्रभामंडल से सधा हुआ उसकी छाती पर लटक रहा था। खिड़की के हरे चमकते दासे पर गत वर्ष के मुरब्बे के इमर्तबान रखे हुए थे, जिनके ऊपर कौशल से लगाए गए कागजों पर फेचिच्का के हाथों से *"गजबेरी" लिखा हुआ था। निकोलाई पेट्रोविच विशेषरूप से इस मुरब्बे का शौकीन था। छत से लटकी एक लम्बी रस्सी से एक गाने वाली चिड़िया सिस्किन का पिंजड़ा लटक रहा था। वह चहचहा रही थी और इधर उधर फुदक रही थी जिसकी वजह से लगातार पिंजड़ा हिल रहा था, और पिंजड़े में उसके चुगने के लिए रखे पटुये के बीज फर्श पर पटर पटर गिर रहे थे। खिड़कियों के बीच में दराज के ऊपर दीवाल पर निकोलाई पैट्रोविच की रद्दी सी अनेक पोज में खिंची तस्वीरें टंगी हुई थीं

---

*मुरब्बे का नाम —अनु

जिन्हें किसी भ्रमणशील फोटोग्राफर ने खींचा था। उनके बाद में फेनिच्का की तस्वीर थी जो बड़ी ही भद्दी थी। भोंडा चेहरा बनावटी हंसी जो छोटे काले चौखटे में से निकली सी पड़ रही थी। फेनिच्का की तस्वीर के ऊपर जनरल यामोव की तस्वीर थी जो एक सरकेशियन अंगरखा पहने हुए थे और आंखों पर जूते की शकल की रेशमी पिन खोस के गद्दी से आड़ किए दूरस्त काकेशी पर्वतों की ओर भौंह सिकोड़े गौर से देख रहे थे।

पांच मिनट बीत गये। दूसरे कमरे में कुछ फुसफुसाहट और घुसर-पुसर की आवाज आ रही थी। पैवेल पैट्रोविच ने मैसेलस्की की रो आयल रूसलस्सी नामक एक अजीब सी किताब दराजों के ऊपर से उठाली और उसके कई पेज पलटे। दरवाजा खुला और फेनिच्का गोद में मित्या को लिये हुए भीतर आई। उसने उसे एक लाल कमीज पहना दी थी जिस के कालर पर कशीदा का काम हो रहा था। उसने बच्चे का मुंह धोकर बाल काढ़ दिए थे। वह तेज सांस ले रहा था और अपने शरीर को इधर उधर मरोड़ कर हाथ पैर चलाता हुआ किलोलें कर रहा था जैसा सब स्वस्थ बच्चे करते हैं। वह साफ सुन्दर कमीज से प्रसन्न हो रहा था। उसके स्वस्थ गदराये शरीर पर प्रसन्नता अङ्कित थी। फेनिच्का ने भी अपने बाल संवार लिये थे और दुपट्टा बदल लिया था, लेकिन वह ऐसा न करती तो भी कोई बात नहीं थी, क्यों कि संसार में अपने स्वस्थ बच्चे को गोदी में लिये जवान सुन्दर मां से अधिक सुन्दर और मनोहर क्या और कोई वस्तु हो सकती है?

"यह नन्हा-मुन्ना कैसा गुलगुला सा है," पैवेल पैट्रोविच ने प्रसन्न होते हुए कहा, और मित्या के गुलाबी मासूम कोमल गालों को अपने लम्बे नाखूनों के सिरे से गुदगुदाया; बच्चा सिस्किन चिड़िया की ओर घूर कर देखते हुए किलकने लगा।

"यह तेरे चाचा हैं," फेनिच्का ने बच्चे का मुंह पैवेल की तरफ करते हुए और उसे थोड़ा झकझोरते हुए कहा। डुन्याशा ने इसी बीच चुपचाप खिड़की के ताखे पर ताँबे के धूपदान में धूप बत्ती जलाकर रख दी।

"कितने दिनों का है?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"छः महीने का हो गया, सातवां लगा है, पूरा होने में अभी ग्यारह दिन बाकी हैं।"

"क्या आठ का नहीं होगा, फिदोस्या निकोलेवना?" डुन्याशा ने शरारत से कहा।

"नहीं, निश्चय ही सात का है।" बच्चा फिर चुलबुलाया और इसने सीने पर आँखें गड़ाईं और यकायक मां की नाक और ओंठ अपनी पांचों उंगलियों से बकोट लिए। "दुष्ट, अरे दुष्ट," फेनिच्का ने बिना अपना मुंह हटाये कहा।

"यह तो हूबहू मेरे भाई सा ही लगता है," पैवेल पैट्रोविच ने कहा।

"फिर और किसका सा लगेगा?" फैनिच्का ने सोचा।

"हां," पैवेल पैट्रोविच कहता रहा, जैसे अपने से ही कह रहा हो, "निश्चित एक रूपता?"

उसने गौर से फेनिच्का को देखा। उसके मन में एक अव्यक्त व्यथा की टीसें उठ रही थीं।

"यह तेरे चाचा हैं," उसने फिर दुहराया, उस बार लगभग फुसफुसाते हुये।

"ओह! पैवेल! तुम यहाँ हो!" एकाएक निकोलाई पैट्रोविच की आवाज आई।

पैवेल पैट्रोविच व्यग्र हो उसकी ओर घूमा, लेकिन उसके भाई ने उस पर ऐसी आनन्दावेश और कृतज्ञ दृष्टि डाली, कि वह मुस्कराते हुए उत्तर दिए बिना न रह सका।

"यह तुम्हारा नन्हा-मुन्ना बड़ा ही सुन्दर है," उसने कहा और अपनी घड़ी की ओर देखा; "मैं थोड़ी चाय के लिए कहने आया था।"

और वस्तु स्थिति को समझ कर पैवेल पैट्रोविच तुरन्त वहाँ से चला गया।

"क्या वह यहां अपने आप आये थे?" निकोलाई पैट्रोविच ने फेनिच्का से पूछा।

"हां, उन्होंने दरवाजे पर थपकी दी और भीतर आ गये।"

"ठीक, और क्या आर्केडी फिर तुमसे मिलने आया था?"

"नहीं, क्या यह ठीक न होगा, निकोलाई, कि मैं पिछले हिस्से में चली जाऊं?"

"किस लिए?"

"मैं सोच रही थी कि थोड़े दिन के लिए यही ठीक होगा।"

"नहीं...नहीं," निकोलाई ने अपने ललाट पर उंगली रगड़ते हुये और थोड़ा हकलाते हुए कहा। "हमें पहले ही इसे सोच लेना चाहिए था...अरे, पकौड़ी;" उसने त्वरित उत्साह के साथ कहा, और बच्चे के पास जाकर उसके गाल चूम लिए और थोड़ा झुककर फेनिच्का के हाथों को भी चूम लिया जो मक्खन की तरह श्वेत थे और बच्चे की लाल कमीज के सहारे लगे हुए थे।

"निकोलाई पैट्रोविच! यह तुम क्या कर रहे हो?" उसने सकुचाते हुए कहा और आंखें नीची कर लीं और फिर धीरे धीरे ऊपर उठाईं। जब वह अपनी शर्माई हुई आँखों से देख रही थी और विभोरता और थोड़ी विमूढ़ता से मुस्करा रही थी उस समय उसकी आँखों का भाव अत्यन्त मधुर और विमोहन था।

निम्नलिखित परिस्थितियों में निकोलाई पैट्रोविच और फेनिच्का का मिलन हुआ था। तीन साल हुए कि एक दिन उसे एक दूरस्थ प्रान्तीय नगर की एक सराय में एक रात बिताने का मौका हुआ।

अपने कमरे की तथा कमरे के कपड़ों की स्वच्छता तथा सुथराई देख कर उसका चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। "इसकी मालकिन निश्चय ही जर्मन होगी," उसने सोचा, लेकिन वह रूसी निकली, उसकी आयु लगभग पचास वर्ष के होगी, वह साफ कपड़े पहने थी, उसका चेहरा प्रसन्न था और उससे उसकी बुद्धि की कुशाग्रता प्रकट होती थी, उसके स्वर में गम्भीरता थी। दोनों ने चाय के समय बातें कीं, उसने निकोलाई की रुचि समझ ली। निकोलाई पैट्रोविच ने उसी समय अपने नये मकान में प्रवेश किया था, और चूंकि वह दास नहीं रखना चाहता था इसलिए मजूरों की तलाश में था। सराय की मालकिन ने यात्रियों की कमी और अपने मुश्किल दिनों की शिकायत की। निकोलाई ने उससे अपने घर की देखभाल करने का काम सम्हालने की बात कही। वह सहमत हो गई। उसका पति एक लड़की फेनिच्का को छोड़कर बहुत दिन पहले ही मर गया था। एक पखवारे के बाद अरिना सेविश्ना (यह उसका गृह प्रबन्धिका का नया नाम था) अपनी लड़की के साथ मैरिनो में मकान के पिछले भाग में आकर रहने लगी। निकोलाई पैट्रोविच की पसन्द अच्छी निकली। थोड़े ही दिनों में घर की हर चीज़ बस्त करीने से हो गई। उस समय फेनिच्का की आयु लगभग सत्रह वर्ष की थी। वह बहुत कम दीख पड़ती और न कभी उसकी कोई चरचा ही होती। वह चुपचाप एकाकी जीवन व्यतीत करती थी और सिर्फ इतवार के दिन ही गिर्जाघर में थोड़ी देर के लिए निकोलाई पैट्रोविच को उसके सुन्दर कोमल मुखड़े की एक झलक दिखाई पड़ जाती थी। इसी तरह एक वर्ष बीत गया।

एक दिन सबेरे अरिना निकोलाई के कमरे में आई और सदैव की तरह थोड़ी झुक कर उसने पूछा कि क्या वह उसकी लड़की की सहायता कर सकता है जिसकी आंख में स्टोव की लपट लग गई है। निको-

लाई पैट्रोविच ने घर बैठे बैठे थोड़ी बहुत डाक्टरी की प्रैक्टिस कर ली थी। और होम्योपैथी का एक बक्स भी ले लिया था। उसने लड़की को तुरन्त ले आने का आदेश दिया। यह जानकर कि मालिक ने उसे बुलाया है फेनिच्का भयभीत हो गई, लेकिन फिर भी मां के साथ वह उसके पास गई। निकोलाई पैट्रोविच उसे खिड़की के पास ले गया और उसका सिर अपने दोनों हाथों से थाम लिया। उसकी झुलसी आंखों की भली प्रकार परीक्षा कर चुकने के बाद उसने अपने हाथों से बनाया एक मलहम उसकी आंखों में लगा दिया, और अपने रूमाल की पट्टी फाड़कर उसने उसे उसका उपयोग करना समझाया। फेनिच्का ने सुना और घूम कर जाने लगी। "मालिक का हाथ चूम, मूर्ख छोकरी," अरिना ने कहा। निकोलाई पैट्रोविच ने अपना हाथ नहीं बढ़ाया, और स्वयं उलझन में पड़ गया। उसने उसके जाते समय झुके हुए सिर को पीछे से चूम लिया। फेनिच्का की आंखें जल्दी ही ठीक हो गईं, लेकिन उसने निकोलाई पैट्रोविच पर जो प्रभाव डाला वह शीघ्र नहीं समाप्त हुआ। उसके मन में सदैव उसका पवित्र, मासूम, मधुर, कातर घूमा हुआ चेहरा टीसें मारा करता। वह उसके कोमल बालों का अपनी हथेलियों पर स्पर्श अनुभव करता। वह स्मृति में उसके सुगढ़ थोड़ा खुले ओठों को देखता जिनमें होकर उसके मोतिया दांत सूरज में तरलता से चमकते थे। वह गिर्जाघर में उसे और ध्यान से देखने लगा, उसे बात-चीत में लगाने का प्रयास करता। पहले तो वह अत्यधिक शर्माती थी और एक सन्ध्या को जब उसने उसे राई के खेतों की पगडंडी से दौड़ते हुए आते देखा तो वह अनाज के बड़े और घने पौधों में जिन पर फूल आ गए थे छिप गई ताकि उससे आमने सामने भेंट न हो जाय। उसने जंगली जानवरों की तरह पैनी आंखों से झांकते हुए राई के सुनहले फूलों के बीच उसके सिर की झलक पा ली, और कोमल स्वर में उसे पुकारा—

"नमस्ते फेनिच्का ! तुम जानती हो मैं काटता नहीं हूँ ।"

"नमस्ते," उसने अपने स्थान से ही हांफते हुए कहा ।

धीरे धीरे वह उसके नजदीक आई लेकिन फिर भी उसके सामने वह शर्माती थी । एकाएक उसकी माँ अरिना का हैजे से देहान्त हो गया । अब वह क्या करती ? उसने उत्तराधिकार में अपनी मां से आदेश को प्रेम करना, साधारण बुद्धि और गम्भीरता पाई थी; लेकिन वह इतनी कम उम्र थी, इतनी एकाकी थी और निकोलाई पैट्रोविच उसके प्रति इतना कृपालु और उदार था···कि अब आगे और कहने की आवश्यकता नहीं है···

"तो, वास्तव में मेरे भाई तुम्हें देखने आये थे ?" निकोलाई पैट्रोविच ने उससे पूछा । "सिर्फ थपथपाया और अन्दर आ गए ?"

"हां, श्रीमान् ।"

"अच्छा, यह तो बड़ा ही अच्छा है । लाओ जरा मुझे मित्या से खेलने दो ।"

और निकोलाई पैट्रोविच उसे छत तक ऊपर उछाल देता । बच्चा इससे बड़ा प्रसन्न होता लेकिन माँ इससे इतना घबड़ा जाती कि वह हर बार जब वह ऊपर उछाला जाता तो लपक कर अपने हाथ उसके खुले पैरों की ओर बढ़ा देती ।

\+ \+ \+

और पैवेल पैट्रोविच लौट कर अपने अति सुसज्जित कमरे में गया, जिसकी दीवालों पर भूरे ललित काग़ज मढ़े हुए थे, पर्शियन रंग के पर्दे टंगे हुए थे, जिसमें अखरोट का फर्नीचर, गाढ़े हरी मखमल से मढ़े पलंग इत्यादि करीने से सजे हुए थे, पुराने काले आबनूस की किताब रखने की अलमारी शोभा दे रही थी, अति सुन्दर मेज पर कांसे की मूर्तियां रखी हुई थीं और सुखकर अंगीठी सी थी । वह आकर सोफा पर गिर पड़ा और सिर के पीछे हाथों का सहारा लगा कर निश्चेष्ट

पड़ा निराशा भरी शून्य आंखों से एक टक छत की ओर देखता रहा। पता नहीं, दीवालों से ही अपने दिल के भावों को छिपाने के लिए, जिन्हें उसका चेहरा प्रगट किए दे रहा था या कुछ और बात हो, वह उठ बैठा, खिड़की के भारी पर्दे गिराए और फिर आकर सोफ़ा पर पड़ रहा।

: ६ :

उसी दिन बैजारोव का भी फ़ेनिच्का से परिचय हुआ। वह बाग में घूमता हुआ आर्केडी को बता रहा था कि कुछ पेड़, विशेषकर छोटे आबनूस, क्यों ठीक से नहीं उगे।

"तुम्हें कुछ श्वेत चिनार और देवदार के पेड़ लगाने चाहिए और कुछ नीबू और उनमें कुछ चिकनी उपजाऊ मिट्टी डालनी चाहिए। लताएं अच्छी उपजी हैं," उसने कहा, "क्योंकि बबूल और बकाइन अपने को हर धरती के योग्य बना लेने की शक्ति रखते हैं और उन्हें अधिक देखभाल की भी जरूरत नहीं होती। मैं कहता हूं ! यहां कोई है।"

लतागृह में फेनिच्का दुन्याशा और मित्या के साथ बैठी थी। बैजारोव रुक गया, आर्केडी ने फेनिच्का के प्रति सिर हिलाया जैसे किसी पुराने परिचित से किया जाता है।

"वह कौन है ?" जब वे आगे बढ़ गए तो बैजारोव ने आर्केडी से पूछा। "कितनी सुन्दर लड़की है ?"

"कौन ?"

"यह तो काफी साफ है; वही सुन्दर लड़की जो वहां थी।"

आर्केडी ने बिना किसी हिचकिचाहट के संक्षेप में फेनिच्का का परिचय दे दिया।

"ओहो!" बैजारोव ने कहा। "तुम्हारे पिता जानते हैं कौन कैसा है। मुझे वे अच्छे लगते हैं। वह वहां हैं। जो भी हो हमें परस्पर एक दूसरे से परिचित होना चाहिए," उसने आगे कहा, और लतागृह की ओर कदम बढ़ाए।

"एवजेनी!" आर्केडी उद्विग्नता से चिल्लाया," परमात्मा के वास्ते तुम वहां मत जाओ।"

"तुम चिंता मत करो," बैजारोव ने कहा; "हम मूर्ख युवक नहीं हैं, हम शहरी हैं।"

फेनिच्का के पास आकर उसने अपनी टोपी उतार कर अभिवादन किया।

"मुझे अपना परिचय देने की आज्ञा दीजिए," उसने विनम्रता से विनत होते हुए कहा, "आर्केडी निकोलेविच का अंतरंग मित्र, और सीधा सादा मिलनसार व्यक्ति जिससे किसी को कोई खतरा नहीं हो सकता।"

फेनिच्का बेंच से उठकर खड़ी हो गई और चुपचाप उसकी ओर देखती रही।

"कितना सुन्दर बालक है?" बैजारोव कहता गया। "चिंता मत कीजिए, मेरी आंखें शैतानी नहीं हैं। उसके गाल इतने लाल क्यों हैं? क्या उसके दांत निकल रहे हैं?"

"हां, श्रीमान्," फेनिच्का ने धीमे स्वर में कहा। "उसके चार दाँत तो निकल भी आए हैं, और अब उसके मसूढ़े फिर सूज गये हैं।"

"जरा दीजिए तो मुझे, देखूं...डरिये मत, मैं एक डाक्टर हूं।"

बैजारोव ने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया। फेनिच्का और

दुन्याशा दोनों को ही इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बच्चे ने न तो जरा भी आनाकानी की और न वह डरा ही।

"ठीक है, ठीक है।...सब ठीक है। इसके बड़े सुन्दर दांत निकलेंगे। अगर कोई बात हो, तो मुझे बताइयेगा। और आपका स्वास्थ्य कैसा रहता है?"

"बहुत अच्छा, ईश्वर की दया है।"

"ईश्वर की दया है—वह बड़ी चीज है। और आप?" उसने दुन्याशा की ओर मुड़ते हुये पूछा।

दुन्याशा ने, जो घर के भीतर बड़ी ही सीधी दासी थी और घर के बाहर बड़ी शैतान, उत्तर में सिर्फ दाँत निपोर दिये।

"अति सुन्दर। यह लीजिए, अपने नन्हे-मुन्ने को।"

फेनिच्का ने बच्चे को उसके हाथ से ले लिया।

"वह आपकी गोद में कितना शान्त था," फेनिच्का ने धीमे स्वर में कहा।

"सभी बच्चे मेरे पास शान्त रहते हैं," बैजारोव ने उत्तर दिया। "एक छोटी सी चिड़िया ने मुझे इसका रहस्य बताया था।"

"बच्चों में भी उनके प्रति एक स्नेहानुभूति होती है जो उन्हें प्यार करते हैं," दुन्याशा ने कहा।

"यह तो है ही," फेनिच्का ने उसकी बात का समर्थन किया। "मित्या कुछ लोगों के पास तो किसी तरह नहीं जायगा।"

"क्या वह मेरे पास आयगा?" आर्केडी ने पूछा। वह थोड़ी देर तक तो दूर खड़ा रहा था और अब उनके पास ही आ गया।

उसने बच्चे को गोद में लेने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन मित्या ने अपना सिर पीछे लटका दिया और कुनमुनाने लगा। इससे फेनिच्का को बड़ा क्लेश हुआ।

"फिर कभी देखा जायगा—जब वह मुझसे अच्छी तरह हिल मिल जायगा," आर्केडी ने कोमल स्वर में कहा, और दोनों दोस्त आगे बढ़ गए।

"उनका नाम क्या बताया था तुमने ?" बैजारोव ने पूछा।

"फेनिच्का···फिदोस्या," आर्केडी ने उत्तर दिया।

"और उसका पितृ नाम क्या है ? उसे भी तो जानना चाहिए।"

"निकोलेवना।"

"मुझे जो उनकी सबसे अच्छी बात लगती है वह है कि वह उद्विग्न नहीं हो उठतीं। कोई उन्हें इसके लिए दोष दे सकता है। कैसी मूर्खता है। वह क्यों उद्विग्न हो उठें ? वह एक माँ हैं, उनका पक्ष सही है।"

"उनका पक्ष काफी सही है," आर्केडी ने कहा, "लेकिन मेरे पिता, तुम जानते हो···"

"और, वह भी सही हैं," बैजारोव ने कहा।

"मैं ऐसा नहीं कहूँगा।

"एक और उत्तराधिकारी का विचार तुम्हें पसन्द नहीं है, मैं देखता हूँ ?"

क्या मुझे ऐसे विचारों का समझते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती ?" आर्केडी ने नाराजी से कहा। "इस वजह से मैं अपने पिता को गलत नहीं मानता बल्कि मैं समझता हूँ कि उन्हें उससे विवाह कर लेना चाहिए था।"

"ओहो !" बैजारोव ने निरुद्विग्नता से कहा। "तो बस, ऐसी ही है हमारी उदारता ! तुम अब भी विवाह के सम्बन्ध में सोचते हो ! मुझे तुमसे ऐसी आशा न थी !"

मित्र थोड़ी दूर तक शान्त टहलते रहे।

"मैंने तुम्हारे पिता के कारोबार को देख समझ लिया है," बैजारोव

ने फिर कहना आरम्भ किया। "फार्म के जानवर बहुत कमजोर हैं; सभी घोड़े ऐसे हैं जैसे टट्टू हों, मकान ऐसा लगता है कि मानों कभी उसने भी अच्छे दिन देखे थे, और नौकर सभी लोफर हैं। कारिन्दा या तो धूर्त है या मूर्ख है।"

"एवजेनी वैस्लिच, लगता है, आज तुम सभी में दोष निकालने को तुले हो।"

"और वे भोले भाले से भले दिखने वाले किसान, निश्चय जानो, तुम्हारे पिता को लूट लेंगे; उतना ही निश्चय जितना यह कि अंडा, अंडा है। तुम यह कहावत जानते हो। "रूसी किसान ईश्वर के भी धकेल डाल देंगे।"

"मैं भी अपने चाचा से सहमत होता जा रहा हूं कि तुम हर रूसी चीज को निन्दनीय समझते हो।"

"इसमें भी कुछ सन्देह है। रूसी के सम्बन्ध में बस एक ही बात अच्छी है कि वह अपने ही बारे में अपनी बुरी राय रखता है। काम की बात तो यह है कि दो और दो मिल कर चार होते हैं, बाकी सब तो बेकार बात है।"

"और क्या प्रकृति भी व्यर्थ है? "आर्केडी ने, आकाश में नीचे की ओर जाते सूर्य के कोमल आलोक के स्नात दूर तक विस्तृत रंग बिरंगे खेतों की ओर ध्यान निमग्न दृष्टि से देखते हुए कहा।

"हां, जिस रूप में तुम उसे समझते हो प्रकृति भी व्यर्थ की चीज है। प्रकृति कोई मन्दिर नहीं है बल्कि एक कारखाना है, और मनुष्य उसमें एक कारीगर है।"

उसी समय मकान के भीतर से बेला बजने की ध्वनि आई। कोई करुण रागिनी बजा रहा था। और उसकी मधुर राग-लहरी हवा में गूंज रही थी।

"कौन बजा रहा है? "बैजारोव ने आश्चर्य से कहा।"

"मेरे पिता हैं।"

"क्या तुम्हारे पिता बेला बजाते हैं?"

"हां।"

"उनकी आयु क्या है?"

"पैंतालीस वर्ष।"

बैजारोव एकाएक जोर से हंसने लगा।

"किस पर हंस रहे हैं?"

"अपने शब्दों पर! एक आदमी पैंतालीस वर्ष की आयु में, एक कुटुम्बपति, जो देहात में रहता है, बेला बजा रहा है।"

बैजारोव अब भी हंस रहा था। लेकिन आर्केडी अपने विश्वसनीय मित्र को भौंचक्का सा देखता हुआ सकते की स्थिति में खड़ा रहा। इस बार वह मुस्कराया भी नहीं।

: १० :

दो सप्ताह गुजर गए। मेरिनो में जीवन साधारण गति से प्रवाहित होता रहा। आर्केडी विलासी जीवन बिताता था, बैजारोव काम करता था। घर वाले उससे हिल मिल गए थे; उसकी आदतों, तीखे और असभ्य बात करने के तरीकों के सब आदी हो गए थे। फेनिच्का और उसका अब तक तो बस इतना सम्बन्ध हुआ था कि एक दिन रात को जब बच्चे को ऐंठन उठी थी तो उसने उसे जाकर जगाया था, और वह लगभग दो घंटे तक कभी हंसता बोलता, कभी जम्हाई लेता, जैसी उसकी आदत थी बैठा रहा, और बच्चे को उसने ठीक कर दिया। पैवेल पैट्रोविच ने पूरी शक्ति के साथ उसे विमुख करना

चाहा, वह उसे मिथ्याभिमानी, उद्धत, दुरात्मा और साधारण मनुष्य समझता था। उसे सन्देह था कि बैजारोव उसका सम्मान नहीं करता और उसका तिरस्कार करता है—उसका, पैवेल किर्सानोव का! निकोलाई पैट्रोविच भी इस युवा निहिलिस्ट को कुछ आश्चर्य की दृष्टि से देखता था और उसे शंका थी कि उसके लड़के आर्केडी पर उसका कितना प्रभाव है, फिर भी वह उसकी सुनता, और उसके शारीरिक तथा रसायनिक प्रयोगों को देखता था। बैजारोव अपने साथ एक अणुवीक्षण यंत्र लाया था और उस पर घंटों समय व्यतीत करता था। नौकर भी उससे हिल मिल गए, हालांकि वह उन्हें तंग करना पसन्द करता था। नौकर उसे अपने ही ढैने का समझते थे, शरीफ लोगों के बीच का नहीं। डुन्याशा ने उसके साथ दांत निकालना नहीं छोड़ा और जब उसके पास होकर गुजरती तो अर्थपूर्ण कटाक्षों से उसकी ओर देखती जाती। प्योतर भी जो निहायत झूठा और मूर्ख था, जिसकी भौहों में हर दम बल पड़े रहते, विनीत व्यवहार अ, आ, इ, ई, पढ़ने का ज्ञान, तथा प्रायः अपने छोटे कोट को कपड़े के ब्रुश से झाड़ना उसके मात्र गुण थे—उस प्योतर की भी जब बैजारोव उसकी ओर देखता था, तो दंतुली खुल जाती। फारम पर के बच्चे उसके पीछे झुंड बना कर लग लेते थे। अकेले वृद्ध प्रोकोफिच को वह फूटी आंख भी न भाता था। भोजन के समय उसके लिए मेज पर वह फूले हुए मुंह से खाना लगाता था। वह उसे 'दुरात्मा' और 'शठ' कहता था और उसकी मूंछों की समता ब्रुश में लगे सूअर के बालों से करता। प्रोकोफिच अपने तरीके से अभिजात्य था, और पैवेल पैट्रोविच से किसी तरह कम न था।

वर्ष का सबसे सुहाना समय शुरू हुआ—जून का आरम्भ। मौसम अतिशय सुहाना था, हां फिर से हैजा फैलने का डर अवश्य था, लेकिन वहां के निवासी इसके आदी हो गए थे। बैजारोव सोकर

बड़े तड़के उठता और दो-तीन वेस्टर्स बाहर निकल जाता—घूमने के लिए नहीं, क्योंकि वह निरुद्देश्य घूमने का आदी न था—बल्कि जड़ी-बूटी और कीड़े जमा करने के लिए। कभी कभी वह अपने साथ आर्केडी को भी ले जाता। वापस लौटते समय प्रायः उनमें आपस में किसी न किसी बात पर बहस छिड़ जाती। आर्केडी इसमें पिछड़ जाता था क्योंकि वह बोलता बहुत ज्यादा था।

एक दिन उन्हें वापस आने में कुछ देर हो रही थी; निकोलाई पैट्रोविच उनसे मिलने के लिए बाग में बाहर निकल आया, और लतागृह के पास पहुँचते पहुंचते उसे दोनों युवकों के तेजी से आने के पदचाप सुनाई पड़े। वे लोग लतागृह की दूसरी ओर से आ रहे थे। वे उसे नहीं देख पाए। वे बात कर रहे थे।

"तुम मेरे पिता को अच्छी तरह नहीं जानते," आर्केडी कह रहा था।

निकोलाई पैट्रोविच मूर्तिवत खड़ा रहा।

"तुम्हारे पिता अच्छे आदमी हैं," बैजारोव ने कहा, "लेकिन उनके दिन पिछड़ गए, उनके राग-रंग के दिन समाप्त हो गए।"

निकोलाई पैट्रोविच ने ध्यान से अपने कान लगाए...आर्केडी ने कुछ नहीं कहा।

निकोलाई पैट्रोविच थोड़ी देर तक तो निश्चल खड़ा रहा, फिर उसने धीरे-धीरे अपने कदम बढ़ाए।

"अभी उस दिन मैंने उन्हें पुश्किन पढ़ते हुए पाया," बैजारोव ने कहा। "बताओ उन्हें भला, कि समय की कितनी निरर्थक बरबादी है यह। आखिरकार वह कोई लड़के तो नहीं हैं—यह समय है जब उन्हें यह सब बेवकूफियां छोड़ देनी चाहिए। इस समय काल्पनिक होना रूमानी होता है! उन्हें कुछ काम की चीज पढ़ने को दो।"

"तुम उन्हें क्या दोगे ?" आर्केडी ने पूछा ।

"क्या बताऊं, मैं तो उन्हे आरम्भ में ब्यूखनर का स्टौफ अन्ड् क्राफ्ट पढ़ने को देने की सलाह दूंगा ।"

"मैं भी यही ठीक समझता हूं," आर्केडी ने सहमति दी," "स्टौफ अन्ड् क्राफ्ट सरल चलताऊ शैली में भी लिखा हुआ है ।"

× × ×

"तो यह है हमारी स्थिति, मेरी और तुम्हारी," भोजन के बाद उसी दिन अपने भाई की बैठक में बैठा निकोलाई पैट्रोविच अपने भाई से कह रहा था । "अब हम लोग पिछड़े हुए लोग हो गये, हमारे राग-रंग के दिन बीत गये । क्या खूब ? शायद बैजारोव सही है; लेकिन मुझे मानना पड़ेगा कि एक ऐसी बात है जिसके लिए मुझे बड़ा दुख है। मैं आशा करता था कि यही समय है जब मैं और आर्केडी निकट मित्र बन जायगे, लेकिन ऐसा मालूम होता है कि मैं पिछड़ गया हूँ और वह आगे बढ़ गया है और हम एक दूसरे को नहीं समझ सकते ।"

"यह तुमने कैसे समझा कि वह आगे बढ़ गया है ? और वह हमसे भिन्न कैसे है ?" पैवेल पैट्रोविच ने व्यग्रता से पूछा । "यह सब उसके दिमाग में उस निहिलिस्ट ने ही भरा है । मैं उससे नफरत करता हूँ । अगर मुझसे पूछते हो तो वह एक धूर्त डाक्टर है; और मुझे विश्वास है कि वह शरीर विज्ञान भी ठीक से नहीं जानता ।

"नहीं, भाई साहब, आप ऐसा कह कर उसे टाल नहीं सकते । बैजारोव बड़ा होशियार और जानकार आदमी है ।"

"वह हद दर्जे का अहंकारी है," पैवेल पैट्रोविच ने फिर कहा ।

"हां," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा, "वह अहंकारी तो है । लेकिन एक बात मैं फिर भी नहीं समझ पाता । मैं समय के साथ रहने के लिए हर सम्भव प्रयास करता हूं, मैंने किसानों को व्यवस्थित कर

दिया है, एक फारम खोला, सभी मुझे क्रान्तिकारी कहते हैं। मैंने पढ़ा, अध्ययन किया और आम तौर से जो भी आधुनिक है उसे ग्रहण करने के लिए तैयार रहता हूं, तब भी वे कहते हैं मेरे राग-रंग के दिन बीत गये। क्यों, भाई साहब, मैं वास्तव में सोचने लगा हूं कि यह ठीक है।''

''तुम यह कैसे समझते हो?''

''अच्छा, आप स्वयं ही निर्णय कीजिए। आज मैं बैठा पुश्किन पढ़ रहा था।...मुझे जिप्सीज (कंजर) याद है वह थी।...एकाएक आर्केडी मेरे पास आया, और बिना एक शब्द भी कहे और मेरी ओर सकरुण दृष्टि से देखते हुए, उसने धीरे से वह किताब मेरे हाथ से ले ली, जैसे मैं कोई बच्चा हूं, और एक जर्मन किताब मेरे सामने रख दी और मुस्कुराते हुए चला गया और पुश्किन की किताब अपने साथ लेता गया।''

''मेरे प्रिय! और उसने कौन सी किताब दी?''

''यह रही।''

और निकोलाई पैट्रोविच ने अपनी लम्बी जेब में से ब्यूखनर की कुख्यात पुस्तक का नौवां संस्करण निकाला।

पैवेल पैट्रोविच ने किताब हाथ में लेकर उलटी पलटी।

''हूं।'' उसने शंकाकुल स्वर में गुर्राते हुए कहा। ''आर्केडी निकोलाइच वास्तव में तुम्हारी शिक्षा के बारे में उत्कंठित है। भला, तुमने इसे पढ़ा?''

''हां।''

''अच्छा?''

''या तो मैं मूर्ख हूँ, या यह सब बकवाद है। मैं समझता हूँ कि मैं मूर्ख ही हूँ।''

"तुम जर्मन भाषा भूल तो नहीं गए, क्यों?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"नहीं मैं जर्मन भाषा समझ लेता हूं।"

पैवेल पैट्रोविच ने फिर किताब उलट पुलट कर देखी और अपने भाई पर एक छिपी दृष्टि डाली। किसी ने कुछ कहा नहीं।

निकोलाई पैट्रोविच विषय बदलने के लिए उत्सुक था। उसने निस्तब्धता को तोड़ते हुए कहा।" मुझे कोल्याजिन का एक पत्र मिला है।"

"मैत्वी इलिच का ?"

"हाँ वह अवर्निया क्षेत्र की जांच करने के लिए शहर आया है। वह अब बड़ा आदमी हो गया है, और उसने लिखा है कि उसे हम सबसे मिलने की बड़ी इच्छा है। उसने हम दोनों और आर्केडी को शहर में मिलने के लिए बुलाया है।"

"क्या तुम जा रहे हो ? पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"नहीं और तुम ?"

"मैं भी नहीं जाऊंगा। व्यर्थ ये पचास वेर्स्ट्स की यात्रा में तो मेरा कचूमर ही निकल जायेगा। मैथ्यु हमें अपना समस्त वैभव दिखाना चाहता है। हमारे अतिरिक्त अनेक स्थानीय व्यक्ति उसकी प्रशंसा करने वाले मिल जायेंगे। वास्तव में वह एक बड़ा आदमी है प्रीवी काउन्सिल का मेम्बर है! अगर मैं मूर्खता पूर्ण नौकरी पर बना रहता तो मैं अब तक सेना का सहायक जनरल हो जाता। फिर यह मत भूलो कि मैं और तुम पिछड़े हुए लोग है।"

"हाँ, भाई साहब, अब तो हमारी क़ब्र बनाने वालों को बुलाने का समय है कि वे आकर हमारी नाप ले लें," निकोलाई पैट्रोविच ने एक लम्बी आह भरते हुये कहा।

"कोई डर नहीं, मैं तो इतनी जल्दी झाग देने वाला नहीं हूँ,"

उसके भाई ने कहा। "मुझे ऐसा लग रहा है कि हम सब के अभी डाक्टर से दो दो हाथ होंगे।"

और उसी दिन शाम को वास्तव में उनके दो दो हाथ हो ही गए। पैवेल पैट्रोविच दोष निकालने का निश्चय करके बैठक में आया था। वह दुश्मन को पकड़ में लेने की घात में था। पर अवसर अभी दूर था। बैजारोव बुजुर्ग चौधरियों, के सामने आमतौर पर अधिक नहीं बोलता था। (वह किर्सानोव बंधुओं को इसी नाम से पुकारता था) और उस शाम को भी चुपचाप बैठा प्याले पर प्याले चाय पिए जा रहा था। पैवेल पैट्रोविच व्यग्रता के कारण अत्यंत उत्तेजित हो रहा था। अन्त में उसे अवसर मिल गया।

बातचीत के दौरान में पड़ौस के एक जागीरदार का नाम आ गया। "एक समय बरबाद करने वाला निकृष्ट अभिजात्य," बैजारोव ने बिना झिझक टिप्पणी दी। वह उससे सेंटपीटर्सबर्ग में मिल चुका था।

"क्या मैं पूछ सकता हूं," पैवेल पैट्रोविच ने कहना आरम्भ किया, उसके ओंठ कांप रहे थे, "तुम्हारे कहने अनुसार—'निठल्लू' और 'अभिजात्य' शब्द पर्यायवाची हैं?"

"मैंने कहा 'निकम्मे अभिजात्य," बैजारोव ने चाय की चुस्की लेते हुए लापरवाही से कहा।

"ठीक, मैं समझता हूं कि 'अभिजात्यों' के बारे में भी तुम्हारी वही राय है जो 'निकम्मे अभिजात्यों' के बारे में है। मैं तुम्हें यह बताना अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि मेरी यह राय नहीं है। मैं यह कह सकता हूं और हर कोई यह जानता है कि मेरे विचार बड़े उदार हैं··· और मैं प्रगति का पक्षधर हूं; लेकिन मैं ठीक इसी लिए सच्चे अभिजात्यों का आदर करता हूं। याद रखो, मेरे प्रिय महाशय, (इन शब्दों पर बैजारोव ने पैवेल पैट्रोविच के चेहरे पर

आँखें उठाईं) याद रखो, मेरे प्रिय महाशय," उसने जोर देते हुए दुहराया, "अंग्रेजी अभिजात्य। वे जर्रा बराबर भी अपने अधिकार नहीं छोड़ेंगे। और इसी लिए वे दूसरों के अधिकारों का सम्मान करते हैं, वे ये चाहते हैं कि लोग उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों को पूरा करें और इसी कारण वे दूसरों के प्रति अपके कर्तव्यों को पूरा करते हैं। अभिजातीयता ने ही इन्गलैंड को स्वतंत्रता दिलाई और स्वतंत्रता को स्थाई भी वही बनाए हुए हैं।"

"हमने यह रागिनी पहले भी सुनी है," बैजारोव ने कहा, "लेकिन आप इससे सिद्ध क्या करना चाहते हैं?

"मैं इससे क्या सिद्ध करना चाहता हूं, मेरे प्रिय महाशय, वह यह है" (जब पैवेल पैट्रोविच नाराज हो जाता था तो जान बूझकर गलत व्याकरण बोलता था। यह सनक अलैक्जेंडर कालीन परम्परा का अवशेष थी। उस जमाने के बड़े लोग जब कभी अपनी मातृ भाषा में बोलते थे तो उसमें जान बूझकर कुछ गलतियां करते थे जैसे जाता रहे हों कि हैं तो हम सभी रूसी लेकिन हम बड़े लोग हैं जिन्हें व्याकरण के नियमों की उपेक्षा करने का अधिकार है) "मैं जो सिद्ध करना चाहता हूँ वह यह है कि जब तक एक व्यक्ति में आत्म सम्मान और आत्व गौरव की भावना नहीं होती, यह भावनायें एक अभिजात्य में अति विकसित होती हैं। सामाजिक व्यवस्था का कोई दृढ़ स्थाई आधार नहीं हो सकता। व्यक्तित्व, मेरे प्रिय श्रीमान्—मुख्य वस्तु है, व्यक्तित्व को चट्टान की तरह दृढ होना चाहिए, क्योंकि यह वह आधार शिला है जिस पर जिन्दगी की सारी इमारत खड़ी होती है। मैं अच्छी तरह जानता हूं, जैसे कि तुम मेरी आदतें, मेरा पहनावा और यहां तक कि मेरी व्यक्तिगत उपेक्षा बुद्धि तुम्हारे उपहास का विषय है। लेकिन तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि ये चीजें आत्मसम्मान का विषय हैं, एक कर्तव्य का विषय हैं, जी हां, श्रीमान, कर्त्तव्य। मैं

देहात में रहता हूँ, जंगल में जाहिल जगह पर, किन्तु मैं अपने आत्मसम्मान अपनी आत्म गौरव की भावना को नहीं छोड़ूंगा।"

"आप अपने मन से, पैवेल पैट्रोविच," बैजारोव ने कहा; "आत्म-सम्मान की बात करते हैं, लेकिन आप निठल्ले बैठे बैठे समय बरबाद करते रहते हैं। उससे समाज का क्या लाभ होता है? आप आत्म-सम्मान के बगैर भी तो वही कर सकते हैं।"

पैवेल पैट्रोविच का चेहरा उतर गया।

"यह बिल्कुल अलग बात है। मैं इस समय तुम्हें यह बताने के लिये विवश नहीं हूं कि मैं क्यों निठल्ला बैठा समय बरबाद करता हूं, जैसा कि तुम कहते हो। मैं तो सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि अभिजातियता एक सिद्धान्त है। आर्केडी को यहां आने के साथ ही मैंने यह बात बताई थी और अब मैं तुम्हें बता रहा हूं। क्यों क्या ऐसी बात नहीं है, निकोलाई?"

निकोलाई पैट्रोविच ने समर्थन में सिर हिलाया।

"अभिजातियता, उदारवाद, प्रगति, सिद्धान्त," बैजारोव कह रहा था, "अच्छाई, कितने विदेशी...और व्यर्थ के शब्द हैं। एक रूसी को उनकी मुफ्त भी जरूरत नहीं है।"

"तो फिर उसे आवश्यकता किस बात की है जनाब! आपके अनुसार तो हम मानवता के बाहर हैं, उसके नियमों से बाहर। मुझे ऐसा लगता है कि इतिहास के तर्क का तकाजा है..."

"कौन चाहता है उस तर्क को? हम बिना उसके भी आगे बढ़ते हैं।"

"तुम्हारा मतलब क्या है?"

"मैं कहता हूं—आपको, मुझे विश्वास है, जब भूख लगती है तो वह रोटी का कौर मुंह में रखने में तर्क की आवश्यकता नहीं होती यह हवाई काल्पनिक विचार किस उपयोग के हैं?"

पैवेल पैट्रोविच ने अपने हाथ फेंके ।

"मैं तो इसके बाद तुम्हारी बात नहीं समझता । तुम रूसी जनता का अपमान करते हो । मैं नहीं समझता कि सिद्धान्तों को कोई कैसे नकार सकता है । फिर तुम्हें प्रेरणा काहे से मिलती है ?"

"मैंने आपको पहले ही बताया, चाचा, कि हम किसी शास्त्र के ब्रह्म वाक्य को नहीं मानते ।" आर्केडी ने कहा ।

"हम जिस चीज को उपयोगी समझते हैं उसी से प्रेरणा ग्रहण करते हैं," बैजारोव ने कहा । "आजकल और किसी बात की अपेक्षा परित्याग अधिक उपयोगी है—अत: हम परित्याग करते हैं ।"

"हर चीज का ?"

"हाँ, हर चीज का ।"

"क्या ? न सिर्फ कला, कविता, बल्कि...कहने से भी ठेस लगती है..."

"हर चीज का" बैजारोव ने लुनका देने वाली उदासीनता से कहा ।

पैवेल पैट्रोविच उसे घूरता रहा । उसे यह आशा न थी । और उधर आर्केडी के चेहरे पर प्रसन्नता की आभा दौड़ गई ।

"लेकिन देखो," निकोलाई पैट्रोविच ने कहा । "तुम हर चीज का परित्याग करते हो, या, यह कहना और सही होगा कि तुम हर चीज नष्ट करते हो ।...लेकिन फिर निर्माण कौन करेगा ?"

"यह हमारा काम नहीं है ।...पहले जमीन साफ होनी चाहिए ।"

"राष्ट्र की वर्तमान स्थिति का यह तकाजा है," आर्केडी ने गर्व का अनुभव करते हुए कहा; "हमें उन तकाजों को जरूर पूरा करना चाहिए । हमें उसके बीच में अपना व्यक्तिगत अहंकार लाने की आवश्यकता नहीं है ।"

अन्तिम टिप्पणी निश्चय ही बैजारोव की रुचि की नहीं थी—

उसमें दर्शन की गंध आ रही थी, जिसे कहना रूमानियत चाहिए, क्योंकि बैजारोव दर्शन शास्त्र को भी रूमानियत ही मानता था, लेकिन वह अपने अधकचरे शिष्य का खंडन नहीं करना चाहता था।

"नहीं, नहीं।" पैवेल पैट्रोविच ने एकाएक जोश के साथ कहा। "मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि तुम लोग वास्तव में रूसी जनता को जानते हो, और यह कि तुम उसकी आवश्यकताओं और अभिलाषाओं का प्रतिनिधित्व करते हो। नहीं, तुम जो समझते हो वह रूसी जनता नहीं है। वह अपनी परम्पराओं का पवित्र सम्मान करती है, वह पितृसत्ताक है, वह बिना विश्वास के रह नहीं सकती।…"

"मैं इसका विरोध नहीं करूंगा," बैजारोव ने बीच में टोक कर कहा, "इसमें आप सही हैं, और यहां तक मैं आपसे सहमत हूं।"

"अगर ऐसा है, तब…"

"पर इससे अब भी कोई बात सिद्ध नहीं होती।"

"बिल्कुल ठीक, इससे कोई बात सिद्ध नहीं होती," आर्केडी ने मन में प्रसन्न होते हुए कहा, जैसे एक शतरंज का अनुभवी खिलाड़ी अपने विपक्षी के विरुद्ध किसी खतरनाक चाल की कल्पना कर प्रसन्न हो उठता है।

"तुम यह कैसे समझते हो कि इससे कुछ सिद्ध नहीं होता?" पैवेल पैट्रोविच आश्चर्य से हकला रहा था। "तब तो तुम अपनी ही जनता के विरुद्ध जा रहे हो?"

"अगर ऐसा है तो क्या हुआ?" बैजारोव ने जोर से कहा। "जब लोग बिजली की घड़घड़ाहट सुनते हैं तो वे विश्वास कर लेते हैं कि एलिय्या देवता ❀ अपने रथ में बैठे आकाश-पथ में जा रहे हैं। तो क्या है? क्या आप मुझसे उनका समर्थन करने को कहेंगे? हां,

---

❀ इन्द्रदेव—अनु

वे रूसी हैं—लेकिन क्या मैं भी एक रूसी नहीं हूं ?"

"नहीं तुम जो कुछ कह रहे हो, उसके बाद तुम रूसी नहीं हो।"

"मेरे बाबा खेत जोतते थे," बैजारोव ने उद्धत गर्व के साथ कहा। "आप अपने किसी किसान से पूछ लीजिये कि वह मुझे या आपको वह किसको आसानी से अपने देश का स्वीकार करेगा। आपको तो उनसे बात करना भी नहीं आता।"

"तुम उससे बात भी करते हो, और साथ ही साथ उससे घृणा भी करते हो।"

"क्या हुआ अगर वह घृणा करने योग्य ही हैं। आप मेरे दृष्टि-कोण की निंदा करते हैं। लेकिन यह आप कैसे समझते कि मैंने उसे यों ही ग्रहण कर लिया है और वह नितान्त विशुद्ध रूप नहीं है, जिसका आप इतनी ईर्ष्या के साथ प्रतिरोध करते हैं ?"

"निश्चय ही ! यह निहिलिस्ट किसी के लिए किस उपयोग के हैं ?"

"हम किसी के उपयोग के हैं या नहीं, इसका निश्चय करने वाले हम नहीं हैं। मैं नहीं कह सकता कि आप अपने को भी किसी तरह उपयोगी कह सकते है।"

"अब, अब, महाशयो, कृपया व्यक्तिगत आक्षेप नहीं," निकोलाई पैट्रोविच ने अपनी जगह से उठते हुए कहा।

पैवेल पैट्रोविच मुस्कुराया और अपने भाई के कंधे पर हाथ रख-कर उसने उसको उसकी जगह पर बैठा दिया।

"तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है," उसने कहा, "मैं अपना आपा नहीं खो बैठूंगा, विशेष कर इसलिए कि मुझ में वह आत्म सम्मान की भावना है, जिसे हमारे मित्र...हमारे मित्र डाक्टर उनका इतना क्रूर मजाक उड़ाते है। मुझे माफ करना," फिर बैजारोव की ओर उन्मुख होते हुए उसने कहा, "क्या तुम अपने सिद्धान्तों को

नवीन मानते हो ? अगर ऐसा है तो तुम अपने को ही धोखा दे रहे हो। जिस भौतिकवाद का तुम आज उपदेश दे रहे हो, वह कई बार पहले भी लहर ले चुका है और कभी भी उसको कदम टिकने के लिए धरती नहीं मिली।…"

"दूसरा विदेशी शब्द," बैजारोव ने बीच में ही टोका। वह अपना आपा खोता जा रहा था। और उसके चेहरे का रंग भद्दे ताँबे के रंग जैसा हो गया था। "पहली बात तो यह कि हम किसी बात का उपदेश नहीं देते; यह हमारी रीति नहीं है।…"

"फिर कैसे क्या करते हो ?"

"मैं बताता हूं। अभी थोड़ी देर पहले हम अपने अफसरों की रिश्वत लेने के सम्बन्ध में सड़कों की कमी के बारे में, व्यापार की दयनीय दशा और अदालतों के बारे में बातें कर रहे थे…"

"अह हां, हां निश्चय, तुम निन्दक हो, यही शब्द ठीक है, मेरी समझ से मैं स्वयं तुम्हारे बहुत से दोषारोपणों से सहमत हूँ, लेकिन…"

"तब यह स्पष्ट हो गया कि महज अपनी बुराइयों के बारे में बातें करना जीवन-श्वास की व्यर्थ बर्बादी थी, कि यह तुच्छता और हवाई काल्पनिक बातें करना था, हमने खोज की कि वे चतुर लोग तथाकथित उन्नत लोग और निन्दक, भौतिक उपयोग के नहीं थे कि हम कला के संबंध में बेकार की बातें करके, अचेतन निर्माण शक्ति, संसदवादिता, न्याय व्यवस्था और शैतान जाने किस किस के बारे में बातें करके अपनी श्वास व्यर्थ खो रहे थे, जब कि आदमी के सामने रोटी पाने का साधारण प्रश्न था, जब हम घने अंधविश्वास के नीचे दम घोंट रहे थे, जब हमारी व्यापार कम्पनियाँ फेल हो रही थीं क्यों कि ईमानदार आदमियों की कमी है; जब कि सरकार जो मुक्ति का कोलाहल मचा रही थी उससे शायद ही हमारी कोई भलाई हो सके,…

क्योंकि किसान ताड़ीखाने में जाकर शराब पीकर अपने को ही लूटने में बड़े प्रसन्न होंगे।"

"तो," पैवेल पैट्रोविच ने कहा, "तो, तुम इस सब से सहमत हो चुके हो और किसी भी बात को गम्भीरता से न सुलझाने का अपने मन में निश्चय कर चुके हो।"

"और किसी भी बात को गम्भीरता से न सुलझाने का हम निश्-चय कर चुके हैं," बैजारोव ने कटुता से दुहराया।

एकाएक इस अभिजात्य के सामने अपनी जीभ के बेकाबू हो जाने से उसे अपने ऊपर क्रोध हो आया।

"और करना कुछ नहीं, सिवाय निन्दा करने के?"

"करना कुछ नहीं सिवाय निन्दा करने के।"

"और इसी को निहिलिज्म कहते हैं?"

"इसी को निहिलिज्म कहते हैं," बैजारोव ने इस बार तीखी धृष्टता के साथ दुहराया।

पैवेल पैट्रोविच ने अपनी आंखें थोड़ी सी सकुंचित कीं।

"मैं समझा!" उसने अत्यन्त शान्त स्वर में कहा। "निहिलिज्म हमारे सब कष्टों का इलाज है, और तुम, तुम हो हमारे मुक्तिदाता, महान व्यक्ति। तो। तुम्हें दूसरों से जवाब तलब करने का क्या हक है, जैसे मिसाल के लिए निन्दक? क्या शेष उन सब की तरह तुम बक-वाद नहीं करते फिरते?"

"हमारे दोष कुछ भी हों, पर यह उनमें से नहीं है," बैजारोव ने कहा।

"तब क्या है? तुम कुछ करते भी हो? तुम कुछ करने का निश्-चय रखते हो?"

बैजारोव ने उत्तर में कोई जवाब नहीं दिया। पैवेल पैट्रोविच इस ठेस से चौंका; लेकिन उसने अपने को अवश नहीं होने दिया।

"हुं ! कुछ करने के लिए ध्वंस करने के लिए···" वह कहता गया। "लेकिन बिना यह जाने कि क्यों, कहां से और कैसे ध्वंस आरम्भ किया जाय ?"

"हम ध्वंस करते हैं क्योंकि हम एक शक्ति हैं" आर्केडी ने कहा।

पैवेल पैट्रोविच ने अपने भतीजे पर दृष्टि डाली और व्यंग से मुस्कुराया।

"हाँ, एक शक्ति—एक अदम्य शक्ति," आर्केडी ने अपने शरीर को सतराते हुए कहा।

"तुम निकम्मे लड़के," पैवेल पैट्रोविच अपने आवेश को न रोक पाया और बोला। "कम से कम तुम तो यह सोचना बन्द कर सकते हो कि रूस में तुम किन जीर्ण विचारों को समर्थन दे रहे हो। सचमुच यह दैवी धैर्य्य को भी विचलित कर देने वाली चीज है! शक्ति! जंगली कालमुक और मंगोलों में भी शक्ति है—लेकिन उसे चाहता कौन है? हम सभ्यता के मधुर स्वप्न देखते हैं, हां श्रीमान्, और सभ्यता के फलों का। मुझ से यह मत कहो कि ये फल तुच्छ हैं। सबसे तुच्छ रंगसाज की रंगसाजी और एक रात के लिए नृत्य के अवसर पर पाँच कोपेक पर काम करने वाला पिआनो वाला तुमसे अच्छा है, क्योंकि वह सभ्यता का प्रतिनिधि है, जंगली मंगोली शक्ति का नहीं! तुम अपने को प्रगतिशील कहते हो लेकिन तुम कालमुक टेंट में पालथी मार कर बैठने के सिवाय और किसी उपयोग के नहीं हो! शक्ति! और यह मत भूल जाओ, ये शक्ति के श्रीमानों, कि दूसरे लोगों के मुकाबिले में तुम्हारी पार्टी के हम ख्याल कुल साढ़े चार व्यक्ति हैं जब कि विरोध में लाखों हैं जो अपनी पवित्र मान्यताओं को तुम्हें समाप्त नहीं करने देंगे और जो तुम्हें कुचल देंगे।"

"अगर हम कुचल दिए जाते हैं तो इससे हमारा काम और आसान हो जायगा," बैजारोव ने कहा। "लेकिन करने से कहना आसान है।···हम उतने थोड़े भी नहीं हैं जितना आप समझते हैं।"

"क्या ? क्या, तुम सचमुच गम्भीरता से यह सोचते हो कि तुम सारे राष्ट्र के विरोध में खड़े हो सकते हो ?"

"आप जानते हैं कि मास्को चौथाई मोमबत्ती से ही जल गया था," बैजारोव ने जवाब दिया।

"तो, तो। पहले हमें शैतान जैसा गर्व है, तब हम हर चीज का उपहास करते फिरते हैं। तो यह नौजवानी की एक ताजी सनक है, तो यह अनुभव शून्य नौजवानों को बड़ी जल्दी प्रभावित करता है। वह, उनमें से एक तुम्हारी बगल में बैठा है; वह तुम्हारी पूजा करता है। उसकी ओर देखो!" (आर्केडी ने व्यग्रता से उधर देखा) "और यह छूत खूब फैल चुकी है। मुझे बताया गया है कि रोम में हमारे रंगसाज वेटीकन ❀ में कभी भी पैर नहीं रखते।, रेफेल चित्रकार को बिल्कुल मूढ़ लट्ठ समझा जाता है क्योंकि, क्या तुम नहीं देखते कि वह एक विशेषज्ञ है, माना हुआ व्यक्ति, जब कि वे स्वयं निरे अयोग्य और अनुपयोगी व्यक्ति हैं, उनकी कल्पना 'गर्ल एट ए फाउन्टेन' ❀ के आगे, उनके जीवन तक नहीं जाती ? और उसकी तस्वीर भी बड़े घृणित रूप में बनाई जाती है। तुम्हारे कहने के अनुसार वही सही है, क्या नहीं है ?"

"मेरे अनुसार," बैजारोव ने जवाब दिया, "रेफेल पीतल की फारदिंग के योग्य नहीं है, और वे किसी काम के नहीं हैं।"

"शाबाश, शाबाश ! तुम सुनते हो आर्केडी···इस तरह आधुनिक नौजवानों को बोलना चाहिए ! सोचो इसे कि वे तुम्हारा अनुसरण

१. ❀ जहाँ पोप रहता है।

२. ❀ एक चित्र का नाम है।

क्यों नहीं करते ? पहले दिनों में नौजवान लोगों को अध्ययन करना होता था, वे नहीं चाहते थे कि उन्हें मूर्ख समझा जाय, इसलिए उन्हें विवश होकर मेहनत करनी होती थी। लेकिन अब तो उन्हें इतना ही कहना होता है; संसार में हर चीज निकम्मी है। और, बस ! काम चल गया। नौजवान लोग आपस में एक दूसरे को आलिंगन करते हैं। और वास्तव में इससे पहले कि वे साधारणतः मोटी बुद्धि के हों, वे एकाएक निहिलिस्ट हो जाते हैं।"

"यह है आपकी अतिप्रशंसित व्यक्तिगत गौरव की भावना," बैजारोव ने कफ से भराए स्वर से कहा। आर्केडी उछल पड़ा। उसकी आंखें चमक रही थीं। "हमारे तर्क ने जरा काफी गहरी चोट की है।... मैं सोचता हूं कि इसे बन्द कर देना अच्छा होगा। और मैं आपसे सहमत हो जाऊंगा," उसने उठते हुए कहा, यदि आप राष्ट्रीय जीवन की कोई ऐसी संस्था दिखा दें चाहे वह परिवारिक हो या सामाजिक, जिसमें गुण दोष और निन्दा की बात नहीं होती।"

"मैं तुम्हें ऐसी करोड़ों संस्थाएं दिखा दूंगा," पैवेल पैट्रोविच ने ऊंचे स्वर में कहा; "करोड़ों ! मिसाल के लिए हमारे गांव का समाज ही ले लो।"

बैजारोव ने व्यंग उपहास से अपने ओंठ बिचकाए।

"जहां तक ग्रामीण समाज का सम्बन्ध है," उसने कहा, "आप अच्छा हो अपने भाई से पूछ लें। मेरा विश्वास है कि उन्हें ग्रामीण समाज के बारे में परस्पर कर्त्तव्य परायणता और संयम तथा उस सब खोखे धड़ी के बारे में अधिक ज्ञान है।"

"परिवार, हमारे किसानों का परिवार भी कोई परिवार है ?" पैवेल पैट्रोविच ने लगभग चिल्लाते हुए कहा।

"यह दूसरा विषय है, और मेरा विश्वास है कि उस पर अधिक गहराई से खोज बीन न करना आपके ही हक में न होगा। क्या

आपने किसी के बेटे की बहू के साथ व्यभिचार की बात सुनी मेरी सलाह मानिए और थोड़े दिन इन्तजार कीजिए—मैं दावे से कह सकता हूं कि आप किसी चीज को नहीं ठुकरायेंगे। आप सभी वर्गों के पास जाइए, हर एक को नजदीक से परखिए और इस बीच में और आर्केडी…"

"सबका मखौल उड़ाते फिरें," पैवेल पैट्रोविच ने व्यंग किया।

"नहीं, मेंढकों की चीर-फाड़। आओ आर्केडी, नमस्ते श्रीमान्।"

दोनों दोस्त बाहर चले गये और दोनों भाई अकेले रह गए। थोड़ी देर तक तो दोनों में से कोई न बोला फिर दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और पैवेल पैट्रोविच ने आखिर में बात शुरु की।

"हाँ, तो यह है तुम्हारी नई पीढ़ी। यह हैं हमारे उत्तराधिकारी।"

"उत्तराधिकारी," निकोलाई पैट्रोविच ने आह भरते हुए दुहराया। वह इस सारे विवाद के दौरान में ऐसी विषादपूर्ण मुद्रा बनाए बैठा रहा था मानों उसे कांटे चुभ रहे हों। बीच बीच में सिर्फ आर्केडी की ओर जब तब छिपी नजर डाल लेता था। "भाई साहब, आप जानते हैं, मैं इस बीच क्या सोचता रहा हूं? एक बार प्रिय माता जी से मेरा झगड़ा हो गया था; वह बिगड़ती और मेरी बात नहीं सुनती थीं…अन्त में मैंने उनसे कहा कि वह मुझे नहीं समझ सकतीं, हम भिन्न पीढ़ी के लोग हैं। मेरी इस बात से उन्हें बड़ी ठेस लगी और वे भौंचक्की सी रह गई थीं। और मैंने सोचा, कोई चारा नहीं। यह है तो कड़वी गोली पर निगलनी तो है ही।' और अब हमारी बारी है। हमारे उत्तराधिकारी हमसे कह सकते हैं: "तुम हमारी पीढ़ी के नहीं हो, इस गोली को निगलो।"

"तुम आवश्यकता से अधिक दयालु, विनीत और संकोची हो," पैवेल पैट्रोविच ने उलट कर कहा।

"बल्कि मुझे तो यह उलटा निश्चय हो गया है कि हम लोग उन दोनों नौजवानों की अपेक्षा अधिक सही हैं, यद्यपि हम लोग शायद पुराने ढंग से ही अपने को प्रकट करते हैं और उनकी सी दृढ़ता से भी बात नहीं करते।...लेकिन आज के नौजवान कितने आत्म संतोषी होते हैं! तुम एक आदमी से पूछते हो: 'आप कौनसी शराब लेंगे, लाल या श्वेत?' 'मैं तो लाल का ही आदि हूँ,' उसने मंद स्वर में उत्तर दिया—इतनी गम्भीरता से, कि तुम उस समय यह सोचगे कि वही इस ब्रह्माण्ड का सब से अधिक गम्भीर व्यक्ति है।..."

"क्या आप चाय और लेंगे" फेनिच्का ने दरवाजे पर प्रकट होते हुए पूछा। विवाद के समय उसे बैठक के अन्दर झांकने का साहस न हुआ था।

"नहीं, तुम उन लोगों से अलग चाय पीने को कह सकती हो," निकोलाई पैट्रोविच ने उत्तर दिया और उससे मिलने के लिए उठा। पैवेल पैट्रोविच ने उसके प्रति संक्षिप्त शुभ कामनाएं प्रकट कीं और अपने अध्ययन के कमरे में चला गया।

: ११ :

आध घंटे बाद निकोलाई पैट्रोविच बाग के अपने लतागृह में गया। वह दुखी भावनाओं से विकल हो रहा था। अब जाकर उसे इस बात का अनुभव हुआ कि वह और उसका बेटा विपरीत दिशा की ओर जा रहे हैं; उसने महसूस किया कि भविष्य में जैसे जैसे समय बीतेगा सारंगी और बेसुरी होती जायेगी। तब तो जाड़े के दिनों में सेंटपीटर्सबर्ग में रहकर उसका नई किताबों पर आंखें फोड़ना

व्यर्थ गया; नौजवानों की बातों को उत्सुकता से सुनना निरर्थक रहा; और जब वह युवकों के बातचीत के दौरान में अपना एक-आध शब्द कह देता था और उससे गर्व का अनुभव करता था सब बेकार रहा। भाई साहब कहते हैं हम ठीक हैं, उसने सोचा, मिथ्या अभिमान की बात नहीं है, मैं सच ही सोचता हूं कि वे हमारी अपेक्षा सत्य से अधिक दूर हैं, और फिर भी मैं सोचता हूँ, उनके पास कुछ है जो हमारे पास नहीं है, उन्हें हमारी अपेक्षा एक सुविधा है—उनकी युवावस्था ! नहीं, इतनी ही बात नहीं है। क्या यह नहीं है कि उनमें हमारे अपेक्षा अभिजातीय उत्तेजना कम है ?"

निकोलाई पैट्रोविच का सिर छाती पर लटक गया और वह अपने हाथ मुंह पर फेरने लगा।

"लेकिन कविता को अस्वीकार करना ?" उसके दिमाग में विचारों की नई लड़ी शुरू हुई, "कला और प्रकृति के प्रति कोई अनुभूति न होना..."

और उसने अपने चारों ओर दृष्टि फिराई मानो यह जांचने का प्रयास कर रहा हो कि किसी में प्रकृति के प्रति कोई भावना, कोई लगाव कैसे नहीं हो सकता। संध्या का आँचल सृष्टि को अपने साये में लेता जा रहा था। और सूरज बाग में कुछ दूरी पर एस्पिन में स्थित झुरमुट में छिपा हुआ था। उसका साया शान्त, निश्चल मैदानों पर धीरे धीरे सिमटता जा रहा था। सड़क के किनारे की झाड़ियों के बगल की अंधेरी पगडंडी पर एक किसान सफेद टट्टू पर बैठा कदम चाल से चला जा रहा था फिर भी उसकी सारी आकृति स्पष्ट दीख पड़ रही थी, यहाँ तक कि उसके कंधे पर लगे पैबन्द के धब्बे भी दीख पड़ रहे थे। घोड़े की स्पष्ट और चपल गति का दृश्य बड़ा सुहाना सा लग रहा था। सूरज की किरणें झाड़ियों से हो कर छन रहीं थी, एस्पिन पर उनकी ऐसी गर्म लपट पड़ रही थी कि वे देवदार जैसे लग रहे थे और उनकी

पत्तियों के गुच्छे नीले। ऊपर डूबते सूरज की चमक से हल्का गुलाबी नीलपीताभ आकाश छाया हुआ था। अबाबील आकाश में ऊपर उड़ रही थी, हवा भी धीमी पड़ चली थी; खिली हुई बकाइनों में मक्खियाँ मस्त खुमारी से गुंजार रही थीं, पेड़ों की नीची शाखों पर कीड़ों के झुन्ड जमा हो रहे थे। "ओह, मेरे ईश्वर, कितना सुहाना, कितना सुन्दर !" निकोलाई पैट्रोविच ने सोचा और उसकी प्रिय कविता उसकी जिह्वा पर आ गई, लेकिन उसे आर्केडी और स्टौफ अन्ड क्राफ्ट की याद हो आई और वह चुप हो रहा; पर अब भी वह विषादपूर्ण विचारों में और धीरज की व्यर्थ चिंता में डूबा रहा। वह मधुर कल्पनाओं में खो जाना पसन्द करता था, और ग्रामीण जीवन ने उसमें ये लक्षण पैदा भी कर दिये थे। अधिक दिन नहीं बीते जब वह एक सराय में इसी प्रकार के मधुर दिवा-स्वप्न में निमग्न अपने बेटे की प्रतीक्षा कर रहा था, लेकिन तब से एक परिवर्तन हो गया था, बाप-बेटे का सम्बन्ध जो उस समय अस्पष्ट और धुंधला था अब उसने एक रूप और एक निश्चित रूप धारण कर लिया था। एक बार फिर उसके मनःपटल पर उसकी मृत पत्नी की स्मृति सजग हो उठी, लेकिन वैसी नहीं जैसी वह वर्षों तक उसे एक गृहणी के रूप में जानता था; किन्तु भोली, जिज्ञासु, प्रश्नीली दृष्टि, शिशुवत, कोमल ग्रीवा पर लटकते सुन्दर संवारे बालों वाली एक युवा चंचल लड़की के रूप में। वह दिन याद आए जब उससे उसकी पहली भेंट हुई थी। वह उस समय एक विद्यार्थी था। अपने निवास स्थान की सीढ़ियों पर उससे उसकी पहली भेंट हुई थी, और अनजाने में उसके शरीर का उससे स्पर्श हो गया था। वह माफी मांगने के लिए घूमा, पर हकलाता ही रह गया था, देवी जी, क्षमा," उसने अपनी गर्दन झुकाली थी और मुस्करा दी थी; और एकाएक उद्वेगावेश में संकोच भार से दबी सी सहमी भाग गई थीं। सीढ़ियों की एक मोड़ से उसने फिर उस पर एक दौड़ती दृष्टि फैंकी, और लज्जा से वह गम्भीर

हो गई थी। और तब पहली कातर-संकोची-उद्वेगपूर्ण भेंट में आधे शब्द आधी मुस्कुराहट, व्यग्र आकुलता, व्यथा उत्कंठातुरता विकलता और अन्त में श्वास रहित हर्ष उन्मत्तता।···कहां गया यह सब? वह उसकी पत्नी हो गई, वह सुखी था, इतना सुखी जितना इस संसार में बिरले मनुष्य होते हैं।···"लेकिन," उसने सोचा, "वे सुख और आनन्द की पहली मधुर घड़ियां, वे सदा, सदा के लिए अनन्त क्यों न रह सकीं?"

उसने अपने विचारों का विश्लेषण नहीं करना चाहा, लेकिन वह आनन्द के उन मधुर सुहाने दिनों की याद को स्मृति से भी अधिक किसी मजबूत सूत्र के सहारे सजग बनाए रखने को उत्कंठित हो उठा। वह अपनी प्रिय मारिया को फिर से अपने पास अनुभव करने लगा। उसकी सजीव तस्वीर उसके सामने घूमने लगी।···

"निकोलाई पैट्रोविच," उसके पास से फेनिच्का का स्वर आया, "तुम हो कहां?"

वह चौंक पड़ा। न वह दुःखी हुआ और न उदास।···उसने अपनी पत्नी और फेनिच्का की तुलना के विचार की किसी सम्भावना को कभी भी अपने मन में नहीं आने दिया था, लेकिन उसे इस बात का दुःख था कि उसने उसे खोज निकाला। उसकी आवाज उसे तुरन्त कल्पना जगत से घसीट कर यथार्थता में उसके सफेद बालों और उसकी बढ़ती वृद्धावस्था की यथार्थता में लौटा लाई।···

वह जादू का संसार जिसमें वह अब प्रवेश करने वाला था, जिसने उसे विगत काल की धुंधली लहरों में बनाया था, हट गया और मिट गया।

"मैं यहीं तो हूँ," उसने उत्तर दिया, "मैं अभी आया, तुम चलो।" "यह है अभिजातीय उत्तेजना की आदत," उसके दिमाग में विचार की तरंग उठी। फेनिच्का ने बिना कुछ बोले उसे झाँक कर

देखा और चली गई; उसे आश्चर्य हुआ कि स्वप्न में डूबे डूबे ही रात हो गई। उसके चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा था और नीरवता व्याप्त थी। फेनिच्का का पीला छोटा चेहरा उसके सामने तैर उठा। वह घर जाने के लिए उठने को हुआ लेकिन उसका विगलित हृदय भावावेश से इतना परिव्याप्त था कि वह बाग में ही टहलने लगा। वह जमीन पर चिन्तातुर दृष्टि जमाए था।''' उसने अपनी दृष्टि ऊपर आकाश की ओर उठाई। आकाश में तारे चमचमा रहे थे। वह जब तक थक न गया, चलता रहा लेकिन उसकी विकलता की भावना, उत्कंठा, अस्थिरता, व्यथित उद्विग्नता शान्त न हुई। ओह, अगर बैजारोव को उस समय की उसकी आन्तरिक स्थिति और मानसिक व्यग्रता का पता चल जाता तो वह उसका कितना मखौल उड़ाता! और आर्केडी ने भी इसे अच्छा न समझा होता। उसकी आंखों में आंसू बहने लगे, अवांछित आंसू। यह उसके लिए चौआलिस वर्ष की आयु के पुरुष, फारम के एक मालिक, के लिए बेला बजाने से सौ गुना भद्दा था।

निकोलाई पैट्रोविच बाग में टहलता रहा, उसे घर जाने का साहस न हुआ। प्रकाश से चमकती खिड़कियों से मुस्कराता हुआ सुखकारी घर उसे घूर रहा था; वह अन्धकार से, बाग से, अपने चेहरे पर ताजी हवा के दुलारने वाले स्पर्शों से, दिल की टीसों से, और उत्कंठता से, अपने को विलग न कर सका।'''

रास्ते को एक मोड़ पर पैवेल पैट्रोविच से उसकी भेंट हो गई।

"क्या मामला है?" उसने निकोलाई पैट्रोविच से पूछा। "तुम तो भूत की तरह पीले पड़ गये हो; तबियत ठीक नहीं है। आराम क्यों नहीं करते?"

निकोलाई पैट्रोविच ने थोड़े ही शब्दों में अपनी दिमागी कचोटन को बताया और चला गया। पैवेल पैट्रोविच बाग के सिरे तक टहलता

चला गया, और वह भी नाना विचारों की कुंजबादिकाओं में खो गया, उसने भी अपनी आंखें आकाश की ओर उठाईं। लेकिन उसकी सुन्दर कजरारी आंखों में कुछ नहीं प्रतिछवित हुआ सिवाय तारों की चमक के। वह जन्म से ही रूमानी काल्पनिक न था और उसकी नीरस आवेशपूर्ण आत्मा, स्वप्न देखने वाली न थी।

\+ \+ \+

"तुम जानते हो, मेरे दिमाग में क्या तरंग उठी थी? उसी रात को बैजारोव आर्केडी से कह रहा था। तुम्हारे पिता जी आज एक निमंत्रण के बारे में बातें कर रहे थे, जो उन्हें तुम्हारे किसी प्रसिद्ध रिश्तेदार से मिला है। तुम्हारे पिताजी नहीं जा रहे हैं। क्या कहते हो चलो शहर का एक चक्कर ही लगा आया जाय। उन महाशय ने तुम्हें भी तो बुलाया है। देखो मौसम भी कैसा है; चलो, जरा शहर चल कर घूम ही आया जाय। हम लोग वहाँ पांच छः दिन मटरगश्ती करेंगे और समय भी आनन्द में बीतेगा।"

"तुम लौटकर यहां आओगे?"

"नहीं, मैं अपने पिता के पास चला जाऊंगा। वह शहर से तीस वेर्स्टस दूर रहते हैं। मैंने वर्षों से उन्हें नहीं देखा है और माँ को भी नहीं। जरा उन बुजुर्गों को भी आनन्द उठा लेने दिया जाय। वे लोग बड़े अच्छे हैं; विशेषकर पिता बड़े ही दिलखुश हैं। तुम तो जानते ही हो मैं उनका इकलौता लड़का हूं।"

"क्या वहां काफी दिनों तक टिकने की सोच रहे हो?"

"नहीं, ऐसी तो बात नहीं सोचता। वहाँ सम्भवतः बड़ा नीरस सा लगेगा?"

"तुम लौटते समय यहाँ रुकोगे?"

"कह नहीं सकता...देखूगाँ। अच्छा तो अब तुम क्या कहते हो? हम लोग शहर चलें?"

"तुम्हारी मर्जी है," आर्केडी ने बिना किसी उत्साह के कहा।

वास्तव में वह अपने मित्र के प्रस्ताव से बड़ा ही प्रसन्न हुआ था, लेकिन उसने अपने मन के सही भावों को प्रकट होने देना ठीक नहीं समझा। क्या वह भी एक निहिलिस्ट न था?

दूसरे दिन वह और बैजारोव शहर चल दिए। मैरिनो-परिवार के युवा सदस्य उन दोनों के जाने पर दुःखी थे; दुन्याशा तो वास्तव में रो भी दी...लेकिन बुजुर्गों ने आराम की साँस ली।

: १२ :

हमारे मित्र शहर में पुनः दिखाई पड़े। शहर का शासन एक नौजवान प्रगतिशील निरंकुश गवर्नर के हाथ में था जैसा कि हमारे पुराने रूस में प्रायः होता है। अपने शासन के पहिले ही वर्ष में उस का ग्यूबर्निया के कुलीन मार्शल, जो अश्वारोही सेना का रिटायर्ड कप्तान तथा फारम का मालिक और मस्त किस्म का आदमी था, से तथा अपने मातहतों से झगड़ा होगया। झगड़े इतने बढ़ गए कि अन्त में सेंटपीटर्सबर्ग की मिनिस्ट्री ने तै किया कि मामले की जाँच के लिए एक कमिश्नर भेजा जाय। कोल्याजिन के पुत्र मात्वी इलिच कोल्याजिन को इस काम के लिए चुना गया, जिसकी देख रेख में सेंटपीटर्सबर्ग में किर्सानोव भ्राता रहे थे। वह भी नए जमाने का था, यानी कि करीब चालीस का लेकिन वह अभी से राजनीतिज्ञ बनने का लक्ष्य रखता था और सीने पर दोनों तरफ पदक पहनता था, जिनमें से एक विदेशी चिन्ह था और कोई अभिमान योग्य वस्तु न था। गवर्नर की ही तरह, जिस के सम्बन्ध में वह फैसला सुनाने आया

था, वह भी प्रगतिशील समझा जाता था, और यद्यपि वह भी एक बड़ा आदमी था, पर वह बड़े लोगों के बहुमत का प्रतिरूप नहीं लगता था। अपने बारे में उसकी बड़ी ऊंची राय थी, उसके मिथ्या आत्मगर्व की कोई सीमा न थी, किन्तु वह अपने व्यवहार से धृष्ट न था, दयालु दीखता था, अत्यन्त विनीत होकर दूसरों की बातें सुनता और दिल खोलकर हंसता था, कोई उसे पहली ही नजर में 'कमाल का आदमी' समझ लेता था। अवसर आने पर वह रौब भी जमा सकता था। "आवश्यकता किस बात की है, शक्ति की," वह ऐसे अवसरों पर दृढ़ता से बातें करता, कहावत है कि "शक्ति ही अभिजात का गुण है;" लेकिन यह सब होते हुए भी कोई भी जरा सा अनुभव रखने वाला अधिकारी उसकी नाक जिधर चाहे घुमा सकता था। मेत्वी इलिच गुइजौट के लिए बड़ा सम्मान प्रदर्शित करता था, और किसी भी तरह निचले किस्म की घिस घिस और ओछे अफसरी का आदमी न था। जन जीवन का एक भी प्रदर्शन उसकी नजर से बच न पाता था।...वह इस प्रकार की बातों में खूब दक्ष था। वह आधुनिक साहित्य की प्रवर्त्तियों को समझता था यद्यपि उद्धत उदासीनता के साथ। कभी कभी वह सड़क पर बच्चों के जलूस में शामिल हो जाता। वास्तव में मेत्वी इलिच ने एलेक्जेंडर कालीन उन अफसरों की हालत से अधिक प्रगति नहीं की थी, जो सुबह कौन्डिलैक का एक आध पृष्ठ पढ़ कर सेंटपीटर्सबर्ग में श्रीमति स्वेचिना की गोष्ठी में जाने की तैयारी करते थे। बस उनके तरीके अलग थे या अधिक आधुनिक थे। वह एक चतुर दरबारी और एक पैना उस्तरा था, इससे ज्यादा कुछ नहीं। काम काज के मामलों में वह अयोग्य था, विचारों में दरिद्र पर वह अपना काम सम्हाल लेना जानता था; और वहाँ उसकी यह हालत नहीं थी कि कोई उसकी नकेल पकड़ कर उसे रास्ता दिखाये, और आखिर है खास चीज यही।

मेत्वी इलिच ने आर्केडी का ऐसी प्रसन्नता के साथ हार्दिक स्वागत किया जो एक उच्च पद वाले संस्कृत व्यक्ति के लिए अजीब बात थी, नहीं, हम तो यहाँ तक कहेंगे कि बड़े मसखरे ढंग से उसका स्वागत किया। जब उसने सुना कि उसके सम्बन्धी जिनको उसने निमंत्रण दिया था, नहीं आए तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। "तुम्हारे पापा हमेशा से ही बड़े अजीब व्यक्ति रहे हैं," उसने अपने बेशकीमती शानदार ड्रैसिंग गाउन के फुंदनों को झुलाते हुए कहा और एकाएक एक नौजवान अफसर जो वर्दी पहने हुए सुन रहा था, की ओर घूमकर तेवर चढ़ाते हुए कहा : "यह क्या है ?" नौजवान जिसके ओंठ बड़ी देर से प्रयोग में न आने के कारण सट गये थे, उठ कर खड़ा हो गया और अपने अफसर की ओर सकपका कर देखने लगा।...लेकिन, मैत्वी इलिच ने अपने मातहत को घबड़ा देने के बाद उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। साधारणतः हमारे उच्च पदाधिकारियों को अपने मातहतों पर रौब जमा कर उन्हें सकपका देने में विशेष मजा आता है; इसके लिए वे तरह तरह के ढंग काम में लाते हैं। एक ढंग अति प्रसिद्ध ढंग या जैसी अंग्रेजी कहावत है, "अति प्रिय," ढंग है—कि बड़ा अफसर एकाएक सरल से सरल शब्दों को भी न समझने का स्वांग करता है, मानों बहरा हो। वह मिसाल के लिए पूछेगा, आज कौन दिन है ?

उसे अत्यन्त विनीत भाव से सिर्फ इतना बताया जाता :

"आज शुक्रवार है हु...जू...र।"

"कैसे ? क्या ? क्या शुक्रवार ? क्या मतलब ?"

"शुक्रवार हुजूर, सप्ताह का एक दिन।"

"क्या दुष्टता है, अब तुम क्या मुझे शिक्षा दोगे।"

मैत्वी इलिच आखिरकार एक उच्च पदाधिकारी था, यद्यपि वह उदार समझा जाता था।

"मेरे दोस्त मेरी सलाह है कि तुम गवर्नर से मिल लो," उसने आर्केडी से कहा; "मैं तुम्हें यह सलाह इस लिए नहीं दे रहा हूँ कि मैं अधिकारियों की सलामी बजाने के पुराने विचारों का पक्षपाती हूं, समझे; बल्कि सिर्फ इसलिए कि गवर्नर एक अच्छा आदमी है; और फिर तुम सम्भवत: स्थानीय सोसाइटी से परिचय करना भी पसन्द करोगे।...मुझे आशा है, तुम नीरस नहीं हो? वह परसों एक वृहद् नाच-पार्टी का आयोजन कर रहा है।"

"क्या आप होंगे नाच-पार्टी में?" आर्केडी ने पूछा।

"उस नाच-पार्टी का आयोजन तो वह मेरे ही लिए कर रहा है," मेरवी इलिच ने ऐसे स्वर में कहा, मानों उसे इसका बड़ा दुःख है। "क्या तुम नाचना जानते हो?"

"नाच तो लेता हूँ, लेकिन अच्छी तरह नहीं।"

"यह तो बहुत बुरा है। यहां कुछ बड़ी खूबसूरत लड़कियां हैं, और फिर एक नौजवान के लिए नाच न जानना बड़े शर्म की बात है। इस मामले में मैं पुरान-पंथी नहीं हूँ; मैं एक मिनट के लिए भी यह नहीं सोचता कि आदमी की बुद्धि उसके चरणों में हो; लेकिन बायरनवाद* बेकार की बात है।

"लेकिन चाचा, सचमुच यह बायरनवाद की बात नहीं है..."

"मैं यहां की महिलाओं से तुम्हारा परिचय करा दूंगा; मैं तुम्हें अपनी छाया में लेता हूं।" मेरवी इलिच आत्म सन्तुष्टि से दिल खोलकर हंसा और बोला।"ए: तुम्हें उसमें आराम मिलेगा।"

"एक चपरासी आया और उसने शासन समिति के सभापति के

---

* कवि बायरन के नाम पर योरप में नौजवानों में एक वाद चल पड़ा था जो जीवन में खाओ-पियो-ऐश करो और मस्त रहो जैसे सिद्धान्त को मानते थे—अनु

आगमन की सूचना दी—वह कोमल आंखों और सिकुड़े मुंह का एक बूढ़ा था, और बड़ा प्रकृति प्रेमी था। विशेषकर गर्मी के दिन में। वह कहता : "हर छोटी मक्खी हर छोटे फूल से थोड़ी रिश्वत लेती है।" आर्केडी वहां से हट गया।

उसे बैजारोव सराय में मिला जहां वे ठहरे थे, वह बड़ी देर तक उसे गवर्नर से मिलने की बात समझाता रहा। "ओह! अच्छी बात है।" बैजारोव ने अन्त में माना। "यह भी भले और वह भी भले। उन सुसंस्कृत लोगों को भी देखा जाय, जो भी हो, इसीलिए तो हम आए हैं।"

गवर्नर ने युवकों का बड़ी सौजन्यता से स्वागत किया, लेकिन न उन्हें बैठने को कहा और न स्वयं ही बैठा। वह हमेशा अफ़सरी जोश और उतावलेपन में रहता थ; सवेरे सवेरे ही उठकर वह सबसे पहले चुस्त फिट वर्दी और टाई कस लेता था। वह आदेश देने के अदम्य उतावलेपन और आवेश में खाना-सोना भी भूल जाता। ग्युबर्नियाँ भर में उसका उपनाम बोर्डलो रख लिया गया था; जो प्रसिद्ध फ्रान्सीसी उपदेशक की ओर संकेत नहीं था; बल्कि बोर्डो-स्वादहीन शराब की ओर था। उसने किर्सानोव और बैजारोव को अपने घर नाच-पार्टी में आने का निमंत्रण दिया, और दो मिनट बाद उन्हें भाई बताते हुये और किर्सानोव के नाम से पुकारते हुये, फिर निमंत्रण दुहराया।

गवर्नर के यहाँ से घर लौटते हुये मार्ग में एक आदमी एकाएक गुजरती हुई गाड़ी में से कूदा। वह एक नाटा आदमी था जो *पान स्लावी ढंग का एक कुरता पहने हुये था। वह "एवजैनी वैस्लिच?" चिल्लाता हुआ। बैजारोव की ओर लपका।

---

*नौवीं शताब्दी के मध्य में रूसी पान-स्लावी अनुयायियों से प्रभावित हंगरी से निकली खूब कढ़ी हुई एक जाकेट—अनु

"ओह ? तुम हो सिलिकोफ," बैजारोव ने कहा। "तुम यहाँ कैसे जी ?" और वह आगे चलता गया।

"क्या तुम विश्वास कर सकोगे, एक मौका ही समझो," उसने जवाब दिया और भाड़ा गाड़ी की ओर घूमकर उसने आधी दर्जन बार हाथ हिलाया और चिल्लाया: "पीछे पीछे आओ, गाड़ी वाले, हमारे पीछे पीछे आओ ! मेरे पिता का यहाँ कुछ काम है," वह कहता रहा नाली कूदते हुए," और मुझे उसे देखने का काम सौंपा गया है। मैंने सुना कि तुम यहाँ हो। मैं उसी दम तुमसे मिलने गया था (सचमुच जब दोनों दोस्त लौटकर कमरे पर आए तो उन्हें एक कार्ड मिला जिस पर एक तरफ़ फ्रेंच भाषा में और स्लाव भाषा में सिलिकोफ़ लिखा था।) "मैं आशा करता हूँ कि तुम गवर्नर के यहाँ से नहीं आ रहे हो ?"

"तुम आशा करना छोड़ सकते हो, हम सीधे वहीं से आ रहे हैं ?"

"ओह ! तब तो मुझे भी उससे मिलना होगा। एवजेनी वेस्लिच, तुम मेरा परिचय करा दो अपने......अपने......"

"सिलिकोफ, किर्सानोव," बैजारोव ने बिना रुके दोनों को एक दूसरे का नाम बता दिया।

"आप से मिलकर बड़ी खुशी हुई, सच" सिलिकोफ ने किनारे चलते हुए, मुस्कराते हुए और जल्दी जल्दी अपने सुन्दर दस्ताने उतारते हुए कहा।

"मैंने बहुत कुछ सुना है···मैं एवजेनी वोस्लिच का पुराना परिचित हूँ। उनका शिष्य मुझे कहना चाहिए। मैं इसके लिए उनका ऋणी हूं।"

आर्केडी ने बैजारोव के शिष्य पर दृष्टि डाली। उसके चिकने, छोटे, लेकिन भद्दे नहीं चेहरे पर उत्सुक उदासीनता की हवाई थी, उसकी अन्दर धुली आँखों में व्यग्र बेचैनी की टकटकी थी और उसकी हंसी भी बेचैनी से भरी—एक तीखी रुक्ष नीरस हंसी थी।

"क्या तुम विश्वास करोगे," वह कहता गया, "जब मैंने पहली बार एवजेनी वैस्लिच को यह कहते सुना कि हमें किसी शास्त्रज्ञ को नहीं मानना चाहिए, तो सचमुच मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई थी'''वह एक दैवी प्रकाश था। मैंने सोचा कि आखिर मुझे एक ऐसा व्यक्ति तो मिला। अच्छा, हाँ, एवजेनी वेस्लिच तुम यहां एक महिला से अवश्य मिलो। वह तुम्हें समझने के लिए पूर्ण योग्य है, और उससे तुम्हारी भेंट बहुत उपयुक्त होगी। मुझे विश्वास है तुमने उसके बारे में सुना भी होगा?"

"कौन है वह?" बैजारोव ने बिना किसी उत्साह के पूछा।

"कुकशिना यूदोजिया—एवदोजिया कुकशिना। वह एक अजीब चरित्र है। वह शब्द के सही अर्थों में उन्मुक्ता है। एक आधुनिक महिला हैं, समझे। चलो, अब उससे मिलने चलें। वह पास में ही रहती है। हम लोग नाश्ता भी वहीं करेंगे। मेरा ख्याल कि तुम लोगों ने अभी नाश्ता नहीं किया है?"

"अभी नहीं।"

"यह तो अच्छा है। वह अपने पति के साथ नहीं रह रही हैं; बिलकुल स्वतंत्र है, समझे!"

"क्या वह सुन्दर है? बैजारोव ने पूछा।"

"देखो'''ऐसी बात तो नहीं है।"

"तब व्यर्थ को तुम हमें वहां क्यों घसीट रहे हो?"

"हा, हा, यह तो अच्छी रही'''वह हमारे लिए शैम्पेन * की एक बोतल खोलेगी।

"चलो। तुम काम के आदमी को ढूंढ सकते हो, तुम्हारे बुड्ढ़ क्या कर रहे हैं, क्या खेती कर रहे हैं?"

---

* फारस देश की एक शराब—अनु

हाँ, सिलिकोफ ने झुलसी हुई हंसी हंसते हुए जल्दी से कहा, "अच्छा हम लोग चलें, क्यों ?"

"भाई, मैं नहीं जानता सचमुच ।"

"तुम लोगों को देखना चाहते थे; जाओ न," आर्कैडी ने दबी जबान से कहा ।

"और आप मिस्टर किर्सानोव ?" सिखिकोफ ने पूछा । "आपको भी आना पड़ेगा; इससे काम नहीं चलेगा ।"

"हम सब कैसे एकाएक ऐसे जाकर उन पर भार डाल सकते हैं ?"

"सब ठीक है । तुम कुकशिना को नहीं जानते, वह बड़ी सज्जन है ।"

"वहां होगी भी कैम्पेन की बोतल ?" बैजारोव ने पूछा ।

"तीन बोतलें !" सिलिकोफ ने चिल्ला कर कहा । "मैं इसके लिए शर्त बद सकता हूं !"

"काहे की ?"

"अपने सिर की ।"

"अपने बुजुर्गवार की थैलियाँ क्यों नहीं ?"... अच्छा खैर, चलो भी, चला जाय !

: १३ :

एक सड़क पर जो अभी हाल ही में आग लग जाने से बरबाद हो गई थी, मास्को ढंग के बने एक छोटे से भवन में एवदोक्सया निकितिश्ना (या एवदोजिया) कुकशिना रहती थी । यह जग जाहिर है

कि हमारे प्रान्तीय नगरों में हर पाँचवें वर्ष एक बार आग लग जाती है। दरवाजे पर बुलाने की घंटी का बटन लगा हुआ था। बैठक के बड़े कमरे में अतिथियों को घर की दासी मिली—या सम्भवतः महिला की सहेली होगी ?—जो फीतेदार टोप पहने थी, और जो अपनी मालकिन की प्रगतिशील प्रवृत्तियों की त्रुटि रहित प्रतीक थी। सित्निकोफ ने पूछा कि क्या एवदोत्या निकितिश्ना घर पर हैं ?

"कौन है ? विक्टर ?" बगल के कमरे से एक पतली तीखी आवाज ने पूछा, "भीतर आ जाओ।"

टोप वाली औरत फौरन गायब होगई। "मैं अकेला नहीं हूं," सित्निकोफ ने बैजारोव और आर्केडी की ओर उत्फुल्ल दृष्टि डालते हुए कहा। उसने बड़ी चतुरता से अपना ऊपरी चोगा उतारा, जिसके अन्दर वह एक किसानी ढंग की बिना आस्तीनों की पोशाक पहने था।

"कोई बात नहीं" आवाज ने जवाब दिया, "आ सकते हो।"

युवक भीतर गये। जिस कमरे में वे घुसे वह बैठक की अपेक्षा अध्ययनशाला जैसा अधिक था। अखबार, कागज, पत्र, अधिकतर बिना कटी मोटी रूसी पत्रिकाएं धूलधूसरित मेज पर पड़ी रहती थीं। जली हुई सिगरेट के टुकड़े इधर उधर छितरे पड़े हुए थे। एक चमड़े के सोफा पर एक महिला लेटी थी। वह अभी जवान थी। उसका रंग गोरा था, उसके बाल सुनहले थे और थोड़ा बिखर रहे थे। वह एक अर्धमलिन रेशमी लबादे में अपने को लपेटे हुए थी और अपने कंकाल हाथों में उसने कंगन पहन रखा था और सिर पर कढ़ा हुआ रूमाल बाँधे हुये थी। वह सोफा से लापरवाही से अपने सुनहले रोएंदार मखमली चोगे को कंधों पर लपेटती हुई उठ खड़ी हुई और अलसाई आवाज में धीरे से बोली:

"नमस्कार, विक्टर," और सित्निकोफ से हाथ मिलाया।

"बैजारोव और किर्सानोव" उसने बैजारोव की नकल करते हुए दोनों का परिचय कराया।

"खुशी हुई आप से मिलकर," कुकशिना ने उत्तर दिया और अपनी गोल आंखों से देखते हुए जिनके बीच में सुर्ख मांस पिंड की सी छोटी उठी हुई उसकी नाक थी। बैजारोव पर रौब जमाते हुए कहा: "मैंने आपके बारे में सुना है," और उससे भी हाथ मिलाया।

बैजारोव ने अजीब टेढ़ा सा मुंह बना या। इस उन्मुक्त औरत की, छोटी कुरूप आकृति में कुछ ऐसी मुंह टेढ़ा करने की बात तो वैसे न थी, लेकिन उसके चेहरे का भाव अत्यन्त असुन्दर प्रभाव उत्पन्न कर रहा था। उसे देखकर कोई भी यह पूछना चाहेगा: "क्या मामला है, क्या आप भूखी हैं? या आप ऊबी हुई हैं? या आपके दिमाग को कोई चीज परेशान कर रही है? आप इस तरह का हास्यास्पद नाटक क्यों कर रही हैं?" वह सिलिकोफ की ही तरह मुंह टेढ़ा करके हंसती थी। वह लापरवाही से दिखावे के साथ बात करती और भोंडे तरीके से घूम जाती थी। वह प्रत्यक्ष रूप से अपने को, अच्छे स्वभाव की और सरल हृदय की समझती थी और फिर भी वह जो कुछ भी करती थी, आपको हमेशा ऐसा भान होगा कि वह निश्चित रूप से ऐसा होता, जिसे वह नहीं करना चाहती थी; वह हर काम, जैसा कि बच्चे कहते हैं, किसी उद्देश्य से—करती प्रतीत होती थी। कहना चाहिए, सरल, स्वाभाविक रूप से नहीं।

"हां, हां, मैंने आपके बारे में सुना है बैजारोव," उसने दुहराया। (बहुत सी प्रान्तीय और मास्को महिलाओं की विशिष्ट आदत की तरह ही उसकी भी आदमियों से परिचय के प्रथम दिन से ही उपनाम से पुकारने की आदत थी।) "क्या आप सिगरेट पसन्द करेंगे?"

"मुझे कोई एतराज नहीं है," सिलिकोफ ने एक आराम कुर्सी पर पैर पर पैर रखे बैठकर झूलते हुए कहा, "लेकिन थोड़ा नाश्ता

कराइये। हम बुरी तरह भूखे हैं; और शैम्पेन की बोतल के बारे में क्या कहती हैं ?"

"विलासी," एवदोजिया ने उत्तर दिया और हंसी। (जब वह हंसी तो उसके ऊपर के मसूड़े खुल गए) "वह विलासी है, बैजारोव, क्यों है न ?"

"मैं जीवन के सुख-प्रसाधन पसन्द करता हूँ," सिलिकोफ ने शान दिखाते हुए कहा। "जिससे मेरे उदार होने में कोई बाधा नहीं पैदा होती।"

"लेकिन होती है, होती है !" एवदोजिया चिल्लाई, फिर भी उसने अपनी दासी से नाश्ता और शैम्पेन लाने को कहा। "आपका क्या विचार है ?" उसने बैजारोव को सम्बोधन करते हुए पूछा। "मुझे विश्वास है कि आप भी मेरी राय से सहमत हैं ?"

"जी नहीं," बैजारोव ने कहा। रोटी के एक टुकड़े की अपेक्षा गोश्त का एक टुकड़ा अधिक अच्छा है, रसायनिक दृष्टिकोण से भी।"

"क्या आपने कैमिस्ट्री का अध्ययन किया है ? मैं इस विषय के पीछे पागल हूं। मैंने तो एक गोंद का अविष्कार भी किया है।"

"गोंद, आपने ?"

"हाँ, मैंने ! आप जानते हैं किसलिए ? गुड़िया का सिर बनाने के लिए, ताकि वे टूटें नहीं। आप जानते हैं मैं व्यवहारिक भी हूँ। लेकिन वह अभी तैयार नहीं है ! मुझे लीबिग पढ़ना चाहिए। क्या अपने मास्कोव्स्की वेदोमोस्ती में महिला श्रम के सम्बन्ध में किस्लयाकोव का लेख पढ़ा है ? आप उसे अवश्य पढ़िए। आप महिला अधिकारों की समस्या से रुचि रखते हैं, क्या नहीं रखते ? उनका नाम क्या है ?"

मैडम कुकशिना ने एक के बाद एक प्रश्न लापरवाही से किये, बिना

उत्तर की प्रतीक्षा के; बिगड़े हुए बच्चे अपनी धायों से ऐसी बातें करते हैं।

"मेरा नाम आर्केडी निकोलाई किर्सानोव है," आर्केडी ने कहा, "और मैं कोई काम नहीं करता।"

एवदोजिया ज़ोर से हँस पड़ी। "क्या यह आकर्षक नहीं है ? आप सिगरेट क्यों नहीं पीते ? तुम जानते हो, विक्टर, मैं तुमसे नाराज़ हूँ !"

"किस लिए ?"

"मैंने सुना है तुम जार्ज सैंड की फिर चापलूसी कर रहे थे। वह एक असभ्य औरत है ? एमर्सन के सामने तुलना में कहीं नहीं नहीं टिकती। उसे शिक्षा के बारे में या शरीर विज्ञान या किसी भी चीज के बारे में धुँधला सा भी ज्ञान नहीं है। मुझे विश्वास है कि उसने भ्रूण विज्ञान के बारे में सुना भी नहीं है—आजकल न जानने की सुन्दर चीज ? "(एवदोजिया ने अपने हाथ उठाए।) "आह, चेलेसेविच ने उस सम्बन्ध कैसा बढ़िया लेख लिखा है ! वह सज्जन प्रतिभा शाली है ?" (एवदोज़िया बराबर व्यक्ति के स्थान पर 'सज्जन' का प्रयोग करती थी।) बैजारोव, मेरे बगल में सोफ़ा पर बैठ जाइए। आप भले ही न जानें पर मैं आपसे बहुत डरती हूँ।..."

"क्यों, क्या मैं पूछ सकता हूं ?"

"तुम एक खतरनाक शरीफ आदमी हो, तुम बाल की खाल उखाड़ते हो। या खुदा, क्या मजाक है, पिछड़ी हुई देहाती औरत की तरह मैं बातें कर रही हूँ। लेकिन मैं वास्तव में जायदाद वाली हूँ। मैं अपनी जागीर स्वयं सम्हालती हूं; और आप क्या विश्वास करेंगे, मेरा कारिन्दा, एरोफी बड़ा ही अजीब चरित्र है—कूपर के यथान्वेषक की तरह। उसमें एक स्वाभाविक सरलता है। मैं यहाँ स्थायी रूप से बस गई हूँ। यह बड़ी परेशानी की जगह है, क्या ख्याल है तुम्हारा। लेकिन किया भी क्या जाय ?"

"जैसी और जगह है वैसी यह भी है," बैजारोव ने शान्ति से कहा।

"ऐसे साधारण स्वार्थ—यही सबसे बुरी बात है ? मैं जाड़े मस्को में व्यतीत करती थी...लेकिन मेरे पति मोशियो कुकशिन ने वहाँ अब मकान बना लिया है। इसके अतिरिक्त मास्को आजकल ..किसी तरह, पहले जैसा नहीं है। मेरा विदेश जाने का विचार है; मैं पिछले साल जाते जाते ही रुक गई थी।"

"पेरिस ?" बैजारोव ने पूछा।

"पेरिस और हीडेलबर्ग।"

"हीडेलबर्ग क्यों ?"

"अरे, बन्सेन वहाँ है।"

अब बैजारोव कुछ सकपका गया।

"पियेरे सैपोज्हनिकोफ...क्या आप उन्हें जानते हैं ?"

"नहीं, मैं नहीं जानता।"

"ओह, मैंने कहा पियेरे सैपोज्हनिकोफ—वह हमेशा लिदिया खोस्तासोफा के पास रहता है।

"मैं उसे भी नहीं जानता।"

"खैर ? उसने मेरे साथ चलने का प्रस्ताव किया था। ईश्वर को धन्यवाद है, मैं आज़ाद हूं, मेरे कोई बच्चा नहीं है...मैंने क्या कहा था ?—ईश्वर को धन्यवाद ! फिर सोचने पर, उससे कुछ नहीं होता जाता।"

एवदोजिया ने अपनी तम्बाकू से पीली पड़ी उंगलियों से सिगरेट बनाई। जीभ से उस पर थूक लगाया और बना कर सुलगा ली। दासी एक ट्रे लेकर भीतर आई।

"आहा, नाश्ता ! आप तो पहले नाश्ता करेंगे ? विक्टर, बोतल खोलो—वह तुम्हारी ओर है ?"

"हाँ, सो तो है," सिलिकोफ फिर फुसफुसाया और किकियाता हुआ हंसा।

"क्या यहां कुछ सुन्दर औरतें हैं ?" बैजारोव ने अपना तीसरा ग्लास गटक करते हुए पूछा।

"हां, हैं यहां," एवदोजिया ने उत्तर दिया, "लेकिन वे सभी खाली खोपड़ी की हैं। मिसाल के लिए मोनी एमी ओडिन्तसोवा को लीजिए—वह देखने में बुरी नहीं है। यह दुःख की बात है कि उसकी प्रतिष्ठा कुछ ऐसी ही है...थोड़ी सी बात के लिए ही, यद्यपि बात यह है कि उसके दृष्टिकोण में कोई व्यापकता नहीं है, कुछ नहीं... इसी तरह। हमारी शिक्षा प्रणाली को आमूल बदल न देना चाहिए। मैं इस पर मनन करती रही हूँ : हमारी नारियां बड़ी बुरी तरह से खाली पनासी जाती हैं।"

"यह तो निराशाजनक मामला है," सिलिकोफ ने कहा। "उनके लिए सिवाय घृणा के और कुछ अपेक्षित नहीं है; मैं उनके लिए यही अनुभव करता हूँ—निरी और घोर उपेक्षा।" (उपेक्षा का अनुभव करना और उसे प्रगट करना सुख की बात थी जिसमें सिलिकोफ ने आनन्द लिया; विशेष कर उसने नारियों पर आक्षेप किया था; तनिक भी बिना यह शंका किए हुए कि कुछ महीने बाद वह अपनी पत्नी के सामने साष्टांग करेगा सिर्फ इसलिए कि उसका उपनाम राजकुमारी दुर्दो लियोसोफा था) "उनमें से कोई भी हमारी बातचीत नहीं समझ सकती : हम गम्भीर विचारशील पुरुष जो श्वास उन पर बरबाद करते हैं, उनमें से कोई उनके योग्य नहीं है।"

"लेकिन उनके लिए हमारी बातचीत समझ सकने की तो बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है," बैजारोव ने कहा।

"तुम किस सम्बन्ध में बातें कर रहे हो ?" एवदोजिया ने आश्चर्य से पूछा।

"सुन्दर औरतों के सम्बन्ध में।"

"क्या? तब तो तुम प्रूधों* के से ही विचार के आदमी हो?"

बैजारोव ने गर्व से अपने को सीधा किया।

"मैं किसी के विचार का सा नहीं हूं; मेरा अपना है।"

"शास्त्रज्ञ जहन्नुम में जांय।"

सिलिकोफ ने उस व्यक्ति के सामने जिसके लिए वह चापलूसी का नाटक कर रहा था, कोई वीरतापूर्ण बात कहने के अवसर का स्वागत करते हुए चिल्ला कर कहा।

"लेकिन मेकाले ने भी..." कुक्शिना ने कहना आरम्भ किया था।

"मैकाले भी जहन्नुम रसीद हो।"

सिलिकोफ ने चिल्लाया। "क्या आप औरतों की सफाई दे रही हैं।"

"नहीं, स्त्रियों की नहीं, लेकिन स्त्रियों के हकों की, अपने लहू के अंतिम बूंद तक जिनकी रक्षा करने की मैंने कसम खाई।"

"जहन्नुम में।" लेकिन अब सिलिकोफ ने बात बदली, "मैं उस का विरोध नहीं कर रहा हूँ," उसने कहा।

"नहीं, मैं देखती हूँ कि तुम एक पानस्लावी* हो।"

"नहीं, मैं पानस्लावी नहीं हूँ, यद्यपि वास्तव में..."

"नहीं; नहीं; नहीं! तुम पानस्लावी हो। तुम धर्म शास्त्र दोमोस्त्रॉय* के पक्षधर हो। तुम चाहते हो कि तुम्हें कोड़े लगाए जायं।"

"कोड़े की मार बुरी चीज तो नहीं है," बैजारोव ने कहा। "लेकिन

---

* एक विचारक।

* समस्त स्लोवानिक जातियों को एक राष्ट्र, एक भाषा, एक समाज और एक राजनीति के सूत्र में बांध देने के आन्दोलन के अनुयायी—अनु।

* संसारी ज्ञान का एक प्राचीन रूसी धर्म शास्त्र—अनु।

हम तो अंतिम बूंद तक आ गये हैं..."

"काहे की ?" एवदोजिया ने पूछा।

"शैम्पेन की, मम प्रिय एवदोक्या निकितिश्ना, शैम्पेन की—तुम्हारे रुधिर की नहीं !"

"जब औरतों पर आक्षेप किया जाता है तो मैं सहन नहीं कर सकती," एवदोजिया ने कहा। "यह भयानक है, भयानक ! उनपर आक्षेप करने की अपेक्षा तो अच्छा हो तुम माइकेल की दिलेमर पढ़ो। वह अद्भुत है ! महाशयो ! आइये, हम प्रेम के सम्बन्ध में कुछ बातें करें।" सोफा पर अलमस्त शिथिलता से अपने हाथ को गिराते हुये एवदोजिया ने कहा।

आकस्मिक निस्तब्धता व्याप्त हो गई।

"नहीं, प्रेम के सम्बन्ध में क्यों बातें करें," बैजारोव ने कहा; "तुमने अभी ओदिन्त्सोवा का जिक्र किया था...मेरा ख्याल है यही सम्बोधन तुमने उसके लिए किया था, वह महिला कौन है ?"

"ओह, वह बड़ी मोहिनी है। अत्यन्त मधुर।" सिलिकोफ ने आवाज को सुरीला बनाते हुए जोर से कहा। "मैं उससे तुम्हारा परिचय कराऊंगा। बड़ी चतुर लड़की है, भयानक रूप से धनी है और उस पर से विधवा है। दुर्भाग्य से अभी उसका बौद्धिक विकास नहीं हुआ है। हमारी एवदोजिया से उसका जरा नजदीकी परिचय होना चाहिए।...तुम्हारे स्वास्थ्य की शुभ कामना में, एवदोजिया ! आओ, शुरू किया जाय। आओ गिलास बजायं ! एट टोक, एट टिन-टिन-टिन ! एट टोक, एट टोक, टिन, टिन, टिन !!..."

"विक्टर, तुम्हारी नस नस में शैतानी भरी है।"

नाश्ता में अनेक व्यंजन थे। शैम्पेन की पहली बोतल के बाद दूसरी खुली, फिर तीसरी और फिर चौथी भी।...एवदोजिया बिना विराम के निरन्तर चहकती रही। सिलिकोफ उसके राग में राग

मिलाता रहा। उन्होंने शादी ब्याह के सम्बन्ध में काफी बातें की—कि वह किंवा एक पूर्वाग्रह है, या एक अपराध, और कि मनुष्य एक से पैदा होते हैं कि नहीं, और कि, व्यक्तित्व क्या वस्तु है। यह दौर अन्त में इस सीमा तक पहुँचा कि एवदोजिया शराब की अलमस्त खुमारी में मदहोश हो रही थी और उसने बेसुरे पिआनों को अपनी चपटी लम्बे नाखून वाली उंगलियों से बजाना शुरू किया और रुक्ष कर्कश स्वर में गाने लगी—पहले तो एक जिप्सी गाना और फिर सिमूर शिपस का प्रेम-गीत 'ग्रनदा निन्दा मग्न' है। सित्निकोफ ने अपने सिर पर एक स्कार्फ बाँध लिया और जब उसने गाया :

"हे प्रिय, तेरे अधर मेरे ओंठों पर ज्वलन्त चुम्बन में मुद्रित हो जायें।" तो उसने प्रेमी का अभिनय किया।

आर्केडी की सहनशक्ति जवाब दे गई। "महाशयो, यह तो पागलखाना दिखाई देता है," उसने टिप्पणी की।

बैजारोव ने, जो बीच बीच में कभी कभो व्यंगात्मक टिप्पणी कर देता था, और अन्य किसी चीज की अपेक्षा शैम्पेन में अधिक मस्त था, जम्हाई ली, और उठ खड़ा हुआ; और बिना मेजबान से बिदाई लिये कमरे से बाहर निकल गया। आर्केडी उसके पीछे हो लिया। सित्निकोफ भी उसके पीछे लपका।

"अरे, यह क्या, कहाँ चले! क्या कहते हो?" उसने हिरनी के बच्चे की तरह लड़खड़ाते हुए कहा। "क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था—एक कमाल की स्त्री! ऐसी और भी स्त्रियां होतीं तो अच्छा होता। यह एक प्रकार से नैतिक सच्चाई का उदाहरण है।"

"और क्या तुम्हारे बाप की यह स्थापना नैतिक सचाई की मिसाल है?" बैजारोव ने एक शराबखाने की ओर, जिसकी बगल से वे लोग गुजर रहे थे, संकेत करते हुए कहा।

सित्निकोफ फिर किकियानी हंसी हंसा। वह अपने इस पतन के

प्रति लज्जित था और यह नहीं समझ पा रहा था कि बैजारोव को उस अप्रत्याशित अपनत्व से प्रसन्न हो या बुरा माने।

: १४ :

कई दिन बाद गवर्नर के घर पर नृत्य समरोह हुआ। कोल्याजिन उस दिन का नायक था। राजघराने के उच्चस्थ अधिकारी ने सब पर यह प्रकट किया कि बल्कि सही कहा जाय तो वह उसके प्रति सम्मान ही के कारण आया था, जब कि गवर्नर नृत्य के अवसर पर भी और यहाँ तक कि जब वह आज्ञा देने के मूड में रहा करता था, वह हर एक की ओर देखता। किसी की ओर उपेक्षा और किसी की ओर सम्मान से। वह प्राचीनकाल के वीरों की भाँति था, खासतौर पर जब वह स्त्रियों के साथ होता तो वह सही मानों में फ्रांसीसी सज्जन की भाँति था, जहाँ वह बराबर राजनीतिज्ञों की भाँति एक से स्वर में दिल खोल कर हंसता। उसने आर्केडी की पीठ थपथपाई और सब को सुनाने के लिए उसे "प्यारे भतीजे" कहा। बैजारोव पुराने ड्रैस सूट में था और उसने तीक्ष्ण किन्तु उड़ती हुई दृष्टि से सब को देखा और बड़बड़ाया, जिसमें से सिर्फ यह सुनाई दिया : "मैं" तथा "ऐसा ही।" उसने सिलिकोफ की उंगली उठाई, मुस्कराया हालांकि इस बार उसका सिर दूसरी ओर मुड़ा हुआ था। कुकशिना जो कलफदार कपड़े नहीं पहने थी और जिसके दस्ताने कुछ मैले से थे, लेकिन जिसके बालों में स्वर्ग की चिड़िया थी, उसकी ओर देखकर वह धीरे से बुदबुदाया: "सम्मोहन!"

उस जगह लोगों की भीड़ जमा थी और वहाँ पर नृत्य के अनेक जोड़े थे। नागरिक अधिकतर 'सजावट के फूल' थे, लेकिन सैनिक बड़ी तत्परता और चतुरता से नाच रहे थे उनमें से एक विशेषरूप से, जो छः हफ्ते तक पेरिस में रह आया था, जहाँ उसने कुछ विशेष उत्तेजक शब्द सीख लिए थे जैसे "शिः, "आह, क्या खूब," "इधर आओ, इधर आओ मेरी नन्ही" आदि आदि। वह इन्हें बड़ी कुशलता से उच्चारित करता, सही रूप में पेरिस के चतुराई पूर्ण लहजे से 'निश्चय' की जगह वह 'नितान्त' शब्द का प्रयोग करता, सारांश यह, वह फ्रेंच भाषा का रूसी विकृत रूप बोलता जो फ्रांसीसियों के लिए मजाक की चीज बन जाती, खासतौर पर तब जब वह हमारे देश वालों को सुनकर यह नहीं कहते कि हम उनकी भाषा को फरिश्ते की तरह बोलते हैं।

आर्केडी जैसा हम जानते हैं अपटु नर्तक था, और बैज़ारोव तो बिल्कुल ही नहीं नाचता था, वे लोग एक कोने में बैठे थे। सिन्तिकोफ उनके साथ था। मुख पर ठिठोली का भाव लाकर और व्यंग्य टिप्पणी करते हुए उसने कमरे में चारों ओर ढिठाई से देखा। ऐसा लगता था मानों वह बड़ा सुख पा रहा है। अकस्मात् उसकी मुखाकृति बदल गई और आर्केडी की ओर उन्मुख होकर उसने अपराधी आँखों से देखते हुए कहा: "यह है ओदिन्त्सोवा!"

आर्केडी घूमा और उसने एक लम्बी औरत को बड़े कमरे के दरवाजे पर खड़े देखा, वह काला लबादा पहने थी। आर्केडी उसकी चाल के राजसी ढंग को देखकर स्तम्भित हो गया। उसकी नग्न बाहें उसके सुडौल पतले शरीर की बगल में सुन्दरता से लटकी हुई थीं। उसके सुढाल कन्धों पर लहराती चमकदार वेणी में फूल का गुच्छा सुन्दरता से शोभा दे रहा था, थोड़ी झुकी हुई भौंह के नीचे शान्त पर स्वप्निल नहीं, निर्मल स्वच्छ आँखों का एक जोड़ा बुद्धिमानी और सन्तोषपूर्ण शान्ति के साथ देख रहा था—हाँ, और उसके अधरों पर

अति सूक्ष्म मुस्कान विराज रही थी। उसके मुख पर एक कोमल और सन्मोहनी आभा छिटक रही थी।

"क्या तुम उसे जानते हो ?" आर्केडी ने सिजिकोफ से पूछा।

"सम्भवत: ! क्या तुम उससे परिचय करना चाहोगे ?"

"मुझे कोई एतराज तो नहीं है इस क्वाड्रिल* के बाद !"

लेकिन जब आर्केडी का नाम लिया गया तो उसके चेहरे पर उसके प्रति रुचि-औत्सुक्ता की गर्मी का भाव झलक आया। उसने पूछा कि क्या वह निकोलाई पैट्रोविच का पुत्र ही तो नहीं है।

"हाँ, मैं वही हूं।"

"मै आपके पिता से दो बार मिली हूँ और ढेर सारा उनके बारे" में सुना है।" वह कहती गई। मुझे आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्ता हुई।

एक सहायक मेजर ने दौड़ते हुए उसके पास आकर उसे क्वाड्रिल नृत्य में उसका सहगामी बनने को निमन्त्रित किया। उसने स्वीकृत कर लिया।

"क्या आप नृत्य करती हैं ?" आर्केडी ने थोड़ा विस्मय प्रगट करते हुए पूछा।

"हाँ, यह कैसे सोचा कि मैं नहीं नाचती ? क्या मैं उन सब की तरह वृद्ध लगती हूं।"

"ओह, नहीं वास्तव में "लेकिन तब तो क्या मजूर्का* में मेरा साथ देंगी ?" ओदिन्त्सोवा की सनुग्रहित मुस्कान खिल उठी।

"बहुत अच्छा," आर्केडी की ओर ठीक ठीक उत्साह और आश्रय की भावना से उसे अपनाने की दृष्टि से तो नहीं, लेकिन जैसे एक विवाहित बहन छोटे भाइयों को देखती है उस दृष्टि से देखते हुए कहा।

---

* एक प्रकार का नृत्य।

* एक प्रकार का नृत्य।

ओदिन्त्सोवा, आर्केडी से कुछ विशेष बड़ी न थी—लेकिन उसके सामने वह स्कूली छोकरा लगता था, एक अनुभव शून्य अल्हड़ विद्यार्थी, मानो उन दोनों की आयु में बहुत बड़ा अन्तर हो। मेत्वी इलिच उसके पास वैभवशाली ढंग से मधुर बोल बोलता हुआ आया। आर्केडी पीछे हट गया, लेकिन बराबर उसी पर दृष्टि जमाए रहा और नृत्य के दौरान में भी उसकी दृष्टि उसका पीछा करती रही। वह उसी सरलता के साथ अपने नृत्य-संगाथी से भी बातचीत करती जैसे वह किसी महत्व के व्यक्ति के साथ बात करती थी। मासूमियत से वह अपना सिर लचकाती, आँख नचाती और एक दो बार कोमल स्निग्ध मुस्कान बिखेरती। उसकी नाक, आम रूसी नाकों की तरह जरा कुछ मोटी थी; और उसकी छवि, रंग-ढंग, रूप अति सुन्दर तो न थे, फिर आर्केडी ने निश्चय किया कि उसने ऐसी मोहक स्त्री पहले कभी नहीं देखी थी। उसके स्वरों का संगीत उसके कानों में गूँजता रहा। उसके लबादे की सलवटें भिन्न प्रकार की पड़ रहीं थीं; जैसी दूसरी स्त्रियों के लबादों पर नहीं पड़ रही थीं। और सलवटें सुन्दर रूप से नये-नये ढंग से पड़ रही थीं। उसका व्यवहार तथा चाल ढाल स्निग्ध और अकृत्रिम थी।

जैसे मजूर्का नृत्य की रागिनी बजनी आरम्भ हुई आर्केडी पर अति संकोच का भाव छाने लगा। वह स्त्री के पार्श्व में बैठा था और उससे वार्त्तालाप करने का उद्यम कर रहा था, लेकिन वह जिह्वा को जकड़ने वाली अवशता से अभिभूत था और केवल अपने बालों पर हाथ फेर पा रहा था। लेकिन उसकी भीरुता और व्यग्रता अधिक देर तक नहीं रह सकीं। ओदिन्त्सोवा की शान्ति ने उसपर प्रभाव डाला और पंद्रह मिनट में ही वह सरलता से उससे अपने पिता के बारे में, चाचा के बारे में, सेंटपीटर्सबर्ग के जीवन के सम्बन्ध में और देहाती जीवन के बारे में बातें करने लगा। ओदिन्त्सोवा सहानुभूति

पूर्ण भावों से सुन रही थी। वह कभी पंखे को थोड़ा बन्द करती और खोलती। उन दोनों की बातचीत में व्यवधान पड़ गया, जब उसे फिर नृत्य के लिए निमंत्रित किया गया। औरों के साथ ही सिलिकोफ ने भी उसे अपने साथ नाचने के लिये दो बार निमंत्रित किया। वह नृत्य समाप्त होने पर हर बार आर्केडी के पास आ जाती, बिना हांफे पंखा उठा लेती। आर्केडी उससे बात करने, उसकी आँखों में देखने, उसकी सुन्दर भौंहों को देखने और उसके चेहरे की समस्त माधुरी को देखने और उसके पास बैठने का गर्व अनुभव करते हुए उससे बातचीत शुरू कर देता। वह स्वयं कम बात करती थी लेकिन उसके शब्दों से ऐसा लगता था कि वह संसार के सारे ज्ञान का भंडार है। उसकी कुछ बातों से आर्केडी ने यह निष्कर्ष निकाला कि उस नौजवान औरत ने काफी अनुभव और विचार तथा मनन किया है।...

"जब मिस्टर सिलिकोफ तुमको मेरे पास लाए थे," उसने उससे पूछा, "तब तुम्हारे पास वह और कौन खड़ा था?"

"क्यों, क्या आपने उसे देखा था?" आर्केडी ने प्रति प्रश्न किया, "उसका मुख अति सुन्दर है, क्यों है न? उसका नाम बैजारोव है, और मेरा एक दोस्त है।"

और आर्केडी ने 'अपने दोस्त' के बारे में बताना शुरू किया।

उसने उसके सम्बन्ध में इतने विस्तार के साथ और इतने उत्साह के साथ बताया, कि ओदिन्त्सोवा उसकी ओर घूमकर गौर से उसे देखने लगी। इसी बीच मजूर्का समाप्त प्राय: हो रहा था। आर्केडी को अपने साथी से बिछुड़ने का दुःख था, उसने उसके साथ अत्यन्त सुख की घड़ियाँ व्यतीत की थीं। सच ही, सारे समय वह उसकी ओर से एक विनीत विनम्रता का अनुभव करता रहा था, कुछ ऐसा अनुभव जिसके लिये उसे कृतज्ञ होना चाहिये...लेकिन जिस अनुभूति

से युवकों के दिल दब से नहीं जाते।

संगीत समाप्त हो गया।

ओदिन्त्सोवा ने उठते हुए कहा। "देखो भूलना मत, तुमने मेरे यहाँ आने का वायदा किया है—अपने साथ अपने मित्र को भी लेते आना। मैं ऐसे व्यक्ति से मिलने के लिए अति उत्सुक हूं जो किसी चीज में विश्वास नहीं करता है।"

गवर्नर ओदिन्तसोवा के पास आया। और बोला भोजन तैयार है, और बड़ी विनम्रता से उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। जब वह चलने लगी तो उसने घूम कर आर्केडी की ओर मुस्कुराते हुए सिर झुका कर विदाई ली। वह भी थोड़ा झुका, और उसकी जाती हुई आकृति को देखता रहा (भूरी चमक वाले काले रेशमी वस्त्रों में उसका शरीर कितना सुडौल लग रहा था) और सोच रहा था "मैं यहाँ हूँ इसे वह भूल भी गई," उसे वहाँ से चुपचाप हट जाने की इच्छा हुई?...

"क्यों?" बैजारोव ने उसके लौटकर पास आने पर आर्केडी से पूछा। "समय तो अच्छा बीता? एक महाशय मुझे अभी बता रहे थे कि यह औरत—ओह,—हो-हो है! वह यद्यपि मुझे कुछ मूर्ख सा लगा। तुम्हारी क्या राय है—क्या वह वास्तव में ओह-हो-हो है।

"मैं इस परिभाषा को ठीक नहीं समझता," आर्केडी ने उत्तर दिया।

"कभी नहीं। कितने भोले हो?"

"तब फिर मैं तुम्हारे उन महाशय को नहीं समझता। ओदिन्त्सोवा निःसन्देह आकर्षकहै, लेकिन ठंडी है और परांगमुख है, कि…"

"फिर भी मामला गहरे में है…जानते हो।" बैजारोव ने कहा। "तुम कहते हो वह ठंडी है। यही उसकी सबसे सुन्दर बात है। तुम्हें आइसक्रीम प्रिय है, क्यों हो न?"

"शायद," आर्केडी ने फुसफुसाते हुए कहा। "मैं कोई उसका जज नहीं हूँ। वह तुमसे परिचय करना चाहती है और उसने मुझसे कहा भी है कि मैं तुम्हें उसके पास ले चलूं।

"सब मैं खूब समझता हूँ, तुमने उससे मेरे बारे में कैसे कैसे रंग भरे होंगे। तुमने ठीक किया। मुझे ले चलना। वह जो कुछ भी है प्रान्तीय रूप की रानी या कुकशिना टाइप की मुक्तिदात्री, पर निःसन्देह उसके कन्धे ऐसे हैं जैसे मैंने अरसे से नहीं देखे।"

बैजारोव की विद्वेषी सनक ने आर्केडी को उत्तेजित कर दिया, लेकिन जैसा प्रायः होता है—उसने अपने मित्र को मित्र की उस बात से भिन्न जिसे वह उसमें नापसन्द करता था, दूसरी ही बात के लिए झिड़का······"

"तुम स्त्रियों में विचार स्वातन्त्र्य को क्यों नहीं मानते?" उसने दबी जबान से पूछा।

"क्योंकि मेरे प्रिय मित्र, मैं स्त्रियों के विचार स्वातन्त्र्य की विभीषिका देख सकता हूँ।"

उससे वार्तालाप समाप्त हो गया। खाने के बाद दोनों मित्र तुरन्त चल दिये। कुकशिना ने उन लोगों की ओर अधीरतापूर्ण द्वेषी किन्तु विचारशील मुस्कान बिखेरी। उसके अहंकार को चोट लगी क्योंकि उनमें से किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था। वह सबसे अंत में गई और प्रातः काल तीन बजे के बाद उसने सिलिकोफ के साथ पेरिस ढंग से पोल्का मजूर्का नृत्य किया, जिसके साथ यह गवर्नर का यह शिक्षाप्रद नृत्याडम्बर समाप्त हो गया।

: १५ :

"हमें देखना है कि यह स्त्री किस धातु की बनी है," दूसरे दिन बैजारोव ने आर्केडी से ओदिन्त्सोवा के होटल की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए कहा।" इसके सम्बन्ध में हम जो कुछ आँख से देखते हैं उससे भी कुछ अधिक है!"

"मुझे तुम पर बड़ा आश्चर्य होता है।" "आर्केडी ने चिल्लाते हुए कहा।" तुम्हारे कहने का अभिप्राय है, कि तुम, बैजारोव, इतनी संकीर्ण बुद्धि के हो कि विश्वास..."

"मूर्खता पूर्ण बातें मत करो!" बैजारोव ने लापरवाही से कहा! "सब ठीक है। यह सब चक्की में पिसने के लिए हैं। तुम ही तो आज उसकी शादी की अजीब परिस्थितियों के सम्बन्ध में...बता रहे थे,... यद्यपि, मेरे ख्याल से एक धनी वृद्ध से विवाह करना कोई ऐसा आश्चर्य जनक नहीं है, बल्कि बुद्धिमानी ही है। मैं अफवाहों पर विश्वास नहीं करता; लेकिन अपने सुसंस्कृत गवर्नर के शब्दों से यह सोचना चाहूँगा कि 'इसमें कुछ है'।"

आर्केडी चुप रहा। दरवाजे पर थपकी दी। एक वर्दीधारी चपरासी ने दोनों मित्रों को बैठक मार्ग दिखाया। कमरा सभी रूसी होटलों के कमरों की तरह तमोली की दूकान जैसा सजा था, लेकिन फूलों की भरमार थी। ओदिन्त्सोवा जल्दी ही आ गई। वह प्रातःकालीन की साधारण पोशाक पहिने थी। उगते सूरज के प्रकाश में वह और भी युवा लग रही थी। आर्केडी ने उससे बैजारोव का परिचय कराया। उसने साश्चर्य देखा कि वह सकुचा रहा है; जब कि ओदिन्त्सोवा बिल्कुल निःसंकोची और सरल बनी रही, जैसी कि वह गत रात में थी। बैजारोव अपनी व्यग्रता के प्रति सजग था और उसके लिए उसे अपने ऊपर

क्रोध भी हो रहा था। "क्या तुम कभी किसी स्त्री से इतने अधिक सकपकाए और सकुचाए हो !" उसने सोचा और आराम कुर्सी पर सिलिकोव की ही तरह झूलते हुए बेरुखी से बात करने लगा जबकि ओदिन्त्सोवा अपनी निर्मल आँखों से ध्यान पूर्वक और तत्परता से उसकी ओर देख रही थी।

अन्ना सर्जेवना सर्जी निकोल्याविच लोक्तेव की पुत्री थी। वह एक दुराचारी छैला, अवारा और जुआड़ी था जो सेंटपीटर्सबर्ग और मास्को में पन्द्रह वर्ष तक आवारागर्दी में पानी की तरह धन बर्बाद करने बाद देहात में जाकर रहने पर विवश हुआ था, जहाँ वह अन्त में अपनी दो पुत्रियों—बीस वर्षीया अन्ना और बारह वर्षीय केतिनी को छोड़कर इस संसार से चल बसा। उनकी मां, जो एक निर्धन परिवार की थी, का देहान्त सेंटपीटर्सबर्ग में हो गया था; जब उसका पति अभी युवा ही था। अपने पिता की मृत्यु के समय अन्ना की स्थिति अतिशय दुःखद थी। सेंटपीटर्सबर्ग में उसने जो शिक्षा प्राप्त की थी उससे वह घर सम्भालने, जागीर की व्यवस्था करने और कष्टमय अंधकारपूर्ण जीवन व्यतीत करने की दक्षता से अनभिज्ञ थी। वह उस प्रदेश में किसी को भी न जानती थी और न कोई उसके ऐसा था जिससे सलाह कर सके। उसके पिता ने अपने पड़ोसियों से मनमुटाव कर रखा था और उनसे घृणा करता था; वे भी उससे घृणा करते थे। खैर, उस स्थिति में भी, वह घबड़ाई नहीं और उसने तुरन्त अपनी मौसी राजकुमारी एवदोत्या स्तेपानोवना को अपने साथ रहने के लिए बुला लिया था। वह चिड़चिड़े स्वभाव की वृद्ध महिला थी। उसने अपनी भतीजी के यहाँ आते ही सभी अच्छे कमरों में डेरा डाल दिया। वह सवेरे से शाम तक बड़बड़ाती और चिड़चिड़ाती रहती थी और बिना अपनी एकमात्र सखी को साथ लिए जो मुंह की चिड़चिड़ी थी जो आस्मानी नीले फीतेदार मटर जैसी हरी पोशाक पहिनती होती

और कलगीदार टेढ़ा हैट लगाए होती, बाग में घूमने न जाती। अन्ना बड़े धैर्य के साथ अपनी मौसी के दुर्व्यवहारों को सहन करती रही और अपनी बहन के लालन पालन में लगी रही। और ऐसा प्रतीत होता था मानों उसने उसी प्रकार जवानी व्यतीत करने का सन्तोष कर लिया है।...लेकिन भाग्य का निर्णय कुछ और ही हुआ। एक धनी व्यक्ति श्री ओदिन्त्सोवा जिनकी आयु लगभग छियालीस वर्ष की थी, की दृष्टि उसकी ओर आकर्षित होगई। वह विलक्षण रूप से पित्तोन्मादी, तगड़ा, भारी भरकम और रूक्ष था; लेकिन मूर्ख और बुरे स्वभाव का नहीं। वह उससे प्रेम करने लगा और उसने उससे जीवन-सूत्र में बंध जाने का प्रस्ताव रखा। उसने स्वीकार कर लिया और उसकी पत्नी बन गई। वह उसके साथ लगभग छः वर्ष रहा और मृत्यु के समय अपनी सारी सम्पत्ति को उसके नाम वसीयत कर गया। उसकी मृत्यु के लगभग एक वर्ष बाद तक अन्ना सार्जेवना देहात में ही रही, उसके बाद अपनी बहन के साथ विदेश चली गई। लेकिन घर की याद सताने के कारण जर्मनी ही घूम सकी और वापस लौट आई और अपने प्रिय निकोलस्कोय में रहने लगी—शहर से चालीस वेर्स्टस् दूर। वहाँ उसका घर बड़ा सुन्दर बहुमूल्य और वैभव से भरा पूरा था। उसमें एक सुन्दर बाग था जिसमें कोमल पौधों को हरे रखने का घर था। स्वर्गीय ओदिन्त्सोवा अपने आराम के सम्बन्ध में मितव्ययी और असावधान नहीं था। अन्ना सर्जेवना शहर कभी कभी ही जाती, किसी विशेष काम से ही और वह भी थोड़े समय के लिए ही। वह युवतियों में प्रसिद्ध नहीं थी, ओदिन्त्सोवा से उसकी शादी ने काफी वाहवैला मचा दिया था, और उसके सम्बन्ध में अनेक अजीब बेसिरपैर की कहानियों के ताने बाने बुन डाले गए थे। कहा जाता था कि उसने ही अपने पिता को बुरी आदतों के लिए उकसाया था और विदेश जाने के लिए विवश की गई थी। वह विवश की गई थी एक बदनामी को गुपचुप करने के

लिए।..."अपना निष्कर्ष स्वयं ही निकाल लीजिए।" कुपित अफवाह खोर अपनी बात का अन्त इस प्रकार करते थे। "वह आग और पानी में से गुज़र चुकी है," यह उसके बारे में कहा जाता; और एक प्रान्तीय मज़ाकिए ने, सुना जाता है, जोड़ा : 'और उबले हुए तेल में में से भी," ये सारे कलंक उसके कानों तक भी पहुँचे, लेकिन उसने उसकी उपेक्षा की। वह स्वतन्त्र और दृढ़ चरित्र की महिला थी।

ओदिन्त्सोवा अपनी कुर्सी पर हाथ बाँधे बैठ गई और बैजारोव की बातें सुनने लगी। बैजारोव अपनी आदत के विपरीत अधिक बातूनी हो रहा था और उससे आनन्दित हो रहा था; जिससे आर्केडी को और भी आश्चर्य हो रहा था। वह निश्चय नहीं कर पाया कि बैजारोव अपना उद्देश्य पूरा कर पाया या नहीं। अन्ना सर्जेवना का मुख, उसके दिल में क्या हो रहा है, इसे कुछ भी प्रगट नहीं कर रहा था। वह बड़ी भीतरी और मर्मज्ञ थी। व्यग्रता का भाव न प्रगट होने देती थी। उसकी प्यारी आँखें मनोयोग से चमक रही थीं; किन्तु वह मनोयोग, मनोभाव शून्य था। आरम्भ के कुछ मिनटों में बैजारोव की बातों ने उसे बेचैन कर दिया। जैसे कोई बुरी दुर्गन्ध या कर्कश ध्वनि से बेचैन हो जाता है। लेकिन वह तुरन्त समझ गई कि वह घबरा रहा था और इसमें उसने अपने प्रभाव का अनुभव किया। वह केवल अश्लीलता से सकुचा जाती थी, और अश्लीलता बैजारोव का दोष न थी। यह दिन आर्केडी के लिए आश्चर्य का दिन था। उसने आशा की थी कि बैजारोव इस चतुर महिला ओदिन्त्सोवा से अपनी मान्यताओं और सिद्धान्तों के विषय में बातें करेगा; और उसने भी ऐसे व्यक्ति से मिलने की इच्छा प्रगट की थी। "जो किसी में भी विश्वास न करने का साहस रखता हो।" इसके बजाय यहाँ पर बैजारोव औषधि, होम्योपैथी और बोटेनी पर बातें कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि ओदिन्त्सोवा ने एकान्त में अपना समय नहीं बरबाद किया है। उसने कुछ अच्छी

किताबें पढ़ी हैं और उसे रूसी भाषा का अच्छा ज्ञान है। उसने बात-चीत को संगीत की ओर मोड़ा, लेकिन यह जानकर कि बैजारोव कला से बिचकता है वह बड़ी सरलता से बोटैनी पर लौट गई; यद्यपि इसी बीच आर्केडी ने लोक संगीत के गुणों पर बात आरम्भ कर दी थी। ओदिन्त्सोवा अब भी उससे छोटे भाई की तरह व्यवहार कर रही थी। ऐसा मालूम होता था कि मानों वह उसके उतावलेपन और जवानी, कला-हीनता और अल्हड़ता को पसन्द करती थी और कुछ नहीं। बातचीत धीरे धीरे अनेक विषयों पर होती रही और तीन घंटे से अधिक देर तक चलती रही।

अन्त में हमारे दोस्त बिदा लेने के लिए उठ खड़े हुए। अन्ना सर्जेवना ने उनकी ओर सम्मानपूर्ण कोमल दृष्टि से देखा और दोनों की ओर अपना सुन्दर खूबसूरत गोरा हाथ बढ़ाया, एक क्षण के विचार के बाद उसने सकुचाती किन्तु मधुर मुस्कराहट के साथ कहा :

"महाशयो, अगर आप लोगों को यह भय न हो कि आप ऊब जायंगे तो आप लोग कृपया निकोलस्कोव पधारिये।"

"ओह, मैं कहता हूं, अन्ना सर्जेवना" आर्केडी चिल्लाया, "मुझे तो बड़ी प्रसन्नता होगी।"

"और आप, जनाब बैजारोव ?"

बैजारोव केवल विनत हो गया—और आर्केडी ने अपना अन्तिम आश्चर्य देखा कि उसका दोस्त शरमा रहा है।

"अच्छा," उसने उस से सड़क पर कहा, "क्या तुम अब भी यही विश्वास करते हो कि 'ओह-हो-हो' है और दुश्चरित्रा है।"

"मैं बड़े असमंजस में हूँ कि उसके बारे में क्या राय बताऊं! वह तो बिल्कुल मूर्ति जैसी निश्चल बैठी थी।" थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बैजारोव ने कहा : "महिला, महान धनी विधवा है उसे सिर्फ चामरग्राहियों और राजमुकुट की आवश्यकता है।"

"हमारी ड्यूक-विधवाएं या स्त्रियाँ ऐसी रूसी भाषा नहीं बोलतीं," आर्केडी ने कहा।

"वह उस जीवन की चक्की में से गुजर चुकी है, प्रिय मित्र, उसने हमारी रोटी का स्वाद चखा है।"

"तुम्हारी जो तबियत आये सो कहो, पर है वह अत्यन्त मधुर," आर्केडी ने कहा।

"वैभवशील हस्ती ! बैजारोव ने कहा। "शरीर विच्छेदशाला में अध्ययन के लिए क्या ही सुन्दर विषय है।"

"एवजेनी, ईश्वर के वास्ते बन्द करो यह। आखिर किसी चीज की सीमा भी होती है, समझे।"

"अच्छी बात है नाराज मत हो अरे मरियल। खैर जो भी हो, है अव्वल दर्जे की। उससे जाकर जरूर मिलना चाहिए।"

"कब ?"

"परसों कैसा रहेगा ?" यहाँ लटके रहने का प्रयोजन और उपयोग ही क्या है ? कुकशिना के साथ शैम्पेन पीना ? उस तुम्हारे उदार उच्च पदाधिकारी रिश्तेदार की बातों पर कान हिलाना ? तब परसों तै रही। और फिर मेरे पिता के थोड़े से खेत वहीं पास में हैं। यह निकोलस्कोय-'न' सड़क पर है न, क्यों ?

"निश्चित ! हमें समय नहीं नष्ट करना चाहिए; सिर्फ बुद्धिमान चिड़ियां और मूर्ख ही समय नष्ट करते हैं—

"कसम खुदा की क्या हस्ती है ?"

तीन दिन बाद दोनों मित्र निकल्सकोय के मार्ग में थे। उस दिन प्रकाश अत्यन्त प्रखर था, पर विशेष गर्मी नहीं थी, और चमकीली छोटी गाड़ी के घोड़े दुमची से बंधी अपनी बड़ी पूंछ को हिलाते हुए चपल गति से बढ़े जा रहे थे। आर्केडी ने सड़क पर देखा और मुस्कराया, वह स्वयं नहीं जानता था, क्यों ?

"मुझे बधाई दो, एकाएक बैजारोव ने कहा," आज २२ जून है, मेरे सन्त का दिन। देखो, आज मेरा क्या सौभाग्य होता है। आज वे घर पर मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे," उसने अपने स्वर को मद्धिम करते हुए कहा, "कोई बात नहीं, उन्हें प्रतीक्षा करने दो।"

: १६ :

अन्ना सर्जेवना जिस गढ़ी में रहती थी वह एक पहाड़ी पर खुले में पीली ईंटों के बने गिर्जाघर से केवल इतनी दूर जितनी दूर हाथ से ढेला फेंका जा सके स्थित थी। उस गिर्जाघर की छत हरी थी, उसके खम्भे सफेद थे और प्रवेश द्वार पर, दीवालों पर ईसा के मृत्युंजय रूप के चित्र इटाली ढंग से बने हुए थे। सामने मैदान में जिरह-बख्तर से सन्नद्ध वीर सैनिक की एक काली आकृति बनी थी जिसके मोटापे को प्रगट करनेवाली रेखायें उसे आकर्षक बना रही थीं। गिर्जाघर के बाद दो पंक्तियों में एक गाँव की बस्ती फैली हुई थी जिसमें जहाँ तहाँ चिमनी घास-फूँस की छतों से ऊपर झाँक रही थी। गढ़ी भी गिर्जाघर के शिल्प की बनी थी। वह शिल्प, एलेक्जंड्री शिल्प के नाम से प्रसिद्ध था। गढ़ी में भी पीला पोत हो रहा था, छतें हरी, खम्भे सफेद पुते थे और प्रवेश द्वार पर चित्रकारी हो रही थी। एक प्रान्तीय प्रसिद्धि प्राप्त शिल्पी ने दोनों इमारतों को उस स्वर्गीय ओदिन्त्सोवा की इच्छा-नुसार बनाया था जो तत्व रहित काल्पनिक नीरस विचार सहन नहीं कर सकता था। वह उन्हें नये विचार कहा करता था। गढ़ी दोनों बगलों में पुराने बाग के काले पेड़ों से घिरी हुई थी और गढ़ी के प्रवेश द्वार तक एक सड़क बनी थी जिसके अगल-बगल में छाँटे और सँवारे हुए फर के पेड़ लगे थे।

हमारे मित्रों की बाहरी पौरी में दो बलिष्ट बावर्दी चपरासियों से भेंट हुई, जिनमें से एक तुरन्त खानसामे की खोज में गया। खानसामा उसी दम हाजिर हो गया वह एक मोटा आदमी था। उसने एक लम्बा काला कोट पहन रखा था। उसने अतिथियों का उनके कमरे की सीढ़ियों तक मार्ग-प्रदर्शन किया। सीढ़ियों पर कालीन बिछी हुई थी। कमरे में दो पलँग थे और स्नानादि के सभी आवश्यकीय प्रसाधन रखे हुए थे। वह प्रगट रूप से सुव्यवस्थित गृह था। हर वस्तु नवीन थी और करीने से सजी हुई थी। हर वस्तु में सुवास थी जैसी मिनिस्ट्री के विश्रामालयों में होती है।

"अन्ना सर्जेवना प्रार्थना करती हैं कि आप लोग आध घन्टे में आकर उनका साथ दें," खानसामा ने कहा, "इस बीच में आप लोगों को किसी चीज की आवश्यकता है ?"

"नहीं; किसी चीज की नहीं, मेरे भले आदमी," बैजारोव ने उत्तर दिया। "अगर तुम कृपा कर एक गिलास वोडका* का ला सको तो......।"

"बहुत अच्छा, श्रीमान्।" खानसामा ने थोड़ा व्यग्र होते हुए कहा। लौटते समय उसके जूते फर्श पर आवाज़ कर रहे थे।

बैजारोव ने कहा : "क्या भव्य-रूप है। मेरा ख़्याल है तुम्हारे शब्दों में ऐसा कहना ही ठीक होगा ?" "एक अद्भुत सुन्दरी है यह ड्यूक विधवा, आर्केडी ने प्रति उत्तर में कहा," जो हम तुम जैसे अमूल्य अभिजात्यों को निमन्त्रित करती है।"

"विशेषकर मुझे, जो हड्डी बैठाने वाले का बेटा है और एक छोटे पादरी का नाती है; तुम तो यह जानते होगे ?"

और थोड़ी देर की चुप्पी के बाद ओंठ को थोड़ा बिचकाता हुआ बोला : ।

---

* रूसी शराब।—अनु

"रुपर्रेस्की की तरह। मेरे ख्याल से वह मज़ाक में जरूर दिल-चस्पी लेती होगी। अरे, हम लोगों को ड्रैस सूट क्यों नहीं पहनने चाहिए।"

आर्केडी ने सिर्फ अपने कंधे हिलाए...लेकिन वह भी थोड़ा परे-शानी का अनुभव कर रहा था।

आध घन्टे बाद बैजारोव और आर्केडी बैठक में पहुँचे। यह एक बड़ा, हवादार कमरा था। कमरा खूब सजा था पर अधिक सुरुचिपूर्ण नहीं था। मजबूत और कीमती फर्नीचर पुराने ढंग से कत्थई रंग के कागज से मढ़ी दीवालों के सहारे सजा हुआ था। स्वर्गीय ओदिन्त्सोवा ने उसे अपने एक एजेन्ट और शराब के व्यापारी मित्र के द्वारा मास्को से मंगवाया था। केन्द्रीय दीवान के ऊपर स्थूल सुन्दर बालों वाले किसी महाशय की एक तस्वीर टंगी थी जो मानों आने वालों को अप्रसन्नता से घूर रही हो।

"बड़े मियां, खुद ही दिखते हैं?" बैजारोव ने फुसफुसाते हुए आर्केडी से कहा और नाक सिकोड़ते हुए बोला: "क्या हमें लौट नहीं चलना चाहिए।"

इसी समय मेजबान ने प्रवेश किया। वह एक हल्के रंग की झीनी पोशाक पहने थी। उसके बाल सुन्दरता से संवारे हुए थे जिससे उसके मुख की आभा बालापनीय अल्हड़ मासूमी भोलेपन की पवित्रता से भासित हो रही थी।

"धन्यवाद, आपने अपने वचन निभाए," उसने कहना आरम्भ किया, "और मेरा आतिथ्य स्वीकार किया। सच, यह कोई बुरी अरुचिकर जगह न होगी। मैं आपका परिचय अपनी बहन से कराऊंगी; वह पिआनो बड़ा अच्छा बजाती है। उससे आपको रुचि नहीं है महाशय बैजारोव, लेकिन, महाशय किर्सानोव, मैं समझती हूँ संगीत प्रेमी हैं। मेरी बहन के अतिरिक्त मेरी एक वृद्धा मौसी मेरे

साथ रहती हैं, और एक पड़ौसी भी कभी-कभी ताश खेलने आ जाते हैं; हम सब का सहवास और संग आपको प्राप्त होगा। आइए, हम लोग बैठें।"

ओदिन्त्सोवा ने उपरोक्त वक्तव्य कुछ अजीब निराले ढंग से दिया, मानो उसने उसे रट लिया हो; तब वह आर्केडी की ओर उन्मुख हुई। ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी माँ आर्केडी की माँ को जानती थी और जब निकोलाई पैट्रोविच की प्रेम-लीला चल रही थी। तब वह उसकी विश्वासभाजन रही थी, आर्केडी अपनी माँ के सम्बन्ध में भावुकता से बातें करने लगा और बैजारोव चित्रसंग्रह देखने लगा। "मैं कैसा मेमना बन गया हूं," उसने मन में सोचा।

एक खूबसूरत बोर्जोई कुतिया नीला पट्टा पहने दौड़ती फर्श पर अपने पंजों से आवाज करती कमरे के भीतर आई, उसके पीछे एक १८ वर्षीय लड़की भीतर आई। उसके बाल काले थे और उसका रंग जैतूनी था। उसके गाल गोल और आकर्षक थे, और आँखें भंवर कजरारी थीं। वह फूलों से भरी डोलची लिये हुए थी।

"यह है मेरी बहन, कात्या," ओदिन्त्सोवा ने उसकी ओर संकेत करते हुए कहा।

कात्या ने कभिवादन किया और अपनी बहन की बगल में बैठकर फूलों को छांटने लगी। बोर्जोई जिसका नाम फिफी था आतिथियों के पास पूंछ हिलाती हुई गई और उसने उनके हाथों में अपने ठंडे नथुने रगड़े।

"क्या यह सब तुमने अपने आप चुने हैं?" ओदिन्त्सोवा ने पूछा।

"हाँ," कात्या ने उत्तर दिया।

"क्या चाची जी चाय पर आ रही हैं?"

"हाँ, आ रही हैं।"

कात्या जब बोलती तो वह बड़ी मोहक रूप से शर्माते हुए, चतुरता से मुस्कराती और अपनी भौंहों के नीचे से देखने का तरीका उसका बड़ा ही मुग्धकारी था। उसकी हर चीज में ताजगी और विशुद्ध सरलता थी। आवाज, चेहरे की मसृणता, उसके गुलाबी हाथों की हथेलियों पर पीले वृत्त और थोड़े सिकुड़े हुए कंधे सभी बड़े सुन्दर थे...रह रह कर उसके चेहरे की आभा रंग बदल रही थी।

ओदिन्त्सोवा ने बैजारोव की ओर उन्मुख होकर कहा।

"आप अपनी विनम्रता के कारण इन तस्वीरों को देख रहे हैं ऐवजेनी वैस्लोविच," उसने कहना आरम्भ किया। "उससे आपको आनन्द नहीं आ रहा है। आप जरा हम लोगों के पास आ जाइए और अच्छा हो हम लोग किसी चीज पर विचार विनिमय करें।" बैजारोव ने अपनी कुर्सी पास खींच ली।

"आप क्या विचार करना चाहेंगी?" उसने पूछा।

"जो आप चाहें। मैं आपको पहिले ही से यह बता दूँ कि मैं तर्कों के लिए बड़ी जिद्दी हूँ।"

"आप?"

"हां, मैं। आपको आश्चर्य हो रहा है। क्यों भला?"

"क्योंकि जहाँ तक मैं समझ सका हूं आप शान्त और सरल स्वभाव की हैं और बातचीत में किसी प्रकार की भावुकता नहीं प्रकट होने देती और तर्क में तो आदमी को कुछ देर के लिए बह जाना ही पड़ता है।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि आपने मुझे बड़ी जल्दी समझ लिया है। पहली बात तो यह कि मैं अधीर और जिद्दी हूँ, कात्या से पूछ लीजिए, दूसरी बात यह कि मैं तर्कों से बड़ी जल्दी बहक जाती हूं।

बैजारोव ने अन्ना सर्जेवना की ओर देखा। "सम्भवतः, आप ही अच्छी तरह जानती हैं। तो, आप किसी चीज पर विचार विनिमय

करना चाहती है—अच्छी बात है। मैं आपके चित्र-संग्रह में सेक्सोनी स्वीटजरलैंड के दृश्य देख रहा था; आपने कहा कि वे मुझे अच्छे नहीं लग सकते। आपने यह इसलिए कहा क्योंकि आपने मुझे कला-अभिरुचि का श्रेय नहीं दिया। यह सच है, मेरे अन्दर वह रुचि है भी नहीं; लेकिन वे दृश्य मुझे सम्भवतः भूतत्व-विद्या की दृष्टि से रुचिकर हो सकते हैं; जैसे पर्वत की बनावट के अध्ययन की दृष्टि से।"

"मुझे क्षमा कीजियेगा; आप भूतत्व विद्या विशारद के नाते इस विषय पर अभी किसी पुस्तक के विषय में विशेष अध्ययन की चर्चा करेंगे, लेकिन किसी चित्र की नहीं।"

"पुस्तक के दस पृष्ठ जिस बात को स्पष्ट करेंगे उसे एक ही चित्र प्रगट कर देगा।"

अन्ना सर्जेवना ने थोड़ी देर तक कुछ नहीं कहा।

"क्या आपमें तनिक भी किसी प्रकार की भी कला—अभिरुचि नहीं है?" उसने मेज पर अपनी कुहनी टेकते हुए और इस तरह अपना चेहरा बैजारोव की ओर नजदीक लाते हुए पूछा। "आप उसके बिना कैसे काम चलाते हैं?"

"मैं जानना चाहूंगा, कि इसका उपयोग ही क्या है?"

"अच्छा! सिर्फ अध्ययन के लिए और लोगों के समझने के लिए।"

बैजारोव तीखे व्यंग से मुस्कराया।

"पहली बात तो यह कि यह काम मेरे लिए अनुभव से पूरा हो सकता है; और दूसरी बात मैं आपको बताऊं कि व्यक्तियों का अध्ययन समय को गंवाना है। हर मनुष्य एक से होते हैं, शरीर और आत्मा दोनों की ही दृष्टि से; हम में से हर एक के मस्तिष्क है, क्रोध है, दिल है, और फेफड़े हैं और सब समान रूप से ही व्यवस्थित भी हैं। और हम सब में तथा कथित धार्मिक गुण भी एक से ही हैं। थोड़ा बहुत परिवर्तन कोई माने नहीं रखता। शेष को समझने के लिए

मानव शरीर का एक नमूना पर्याप्त है। मनुष्य वैसे ही हैं जैसे जंगल में पेड़। कोई बनस्पति शास्त्री हर पेड़ की परख करने का कष्ट व्यर्थ में सिर पर नहीं लादता फिरेगा।"

कात्या ने, जो आराम आराम से गुलदस्ता बनाने के लिए फूलों को छांट रही थी, बैजारोव की ओर उसकी त्वरित असावधान दृष्टि से दृष्टि मिलाते हुए और आश्चर्य से उद्विग्न होते हुए, देखा। आश्चर्य से उसके कान तक लाल पड़ गए थे। अन्ना सर्जेवना ने अपना सिर हिलाया।

"जंगल में पेड़," उसने दुहराया। "तब तुम्हारी राय में एक मूर्ख और चतुर व्यक्ति में कोई अन्तर ही नहीं है?"

"नहीं, है; जैसा एक स्वस्थ और रोगी मनुष्य में। क्षय रोग से ग्रस्त फेफड़े आपके और मेरे फेफड़ों जैसे नहीं हैं, यद्यपि उनका निर्माण भी उसी तरह से हुआ है। हम करीब करीब मोटे तौर पर जानते हैं कि शारीरिक रोग क्यों होते हैं, नैतिक रोग कुशिक्षा और उन तमाम बेहूदगियों का परिणाम हैं जो बचपन से ही दिमाग में घर कर लेती हैं; संक्षेप में समाज की निर्लज्ज, दयनीय कुव्यवस्था इसके मूल में है। समाज की दशा सुधारो; कोई रोग नहीं रहेगा।"

यह सब इस ढंग से कहा गया था, मानों बैजारोव अपने आप सोच रहा हो: "आप मुझ पर विश्वास करें या न करें मुझे इसकी तनिक भी परवाह नहीं है।" उसने अपनी लम्बी उंगलियों से धीरे धीरे मूछें ठीक कीं। उसकी आँखें बेचैनी से कमरे में चक्कर काट रही थीं।

"और, तो आप विश्वास करते हैं," अन्ना सर्जेवना ने कहा, "कि जब समाज की दशा सुधर जायगी फिर कोई मूर्ख और बदमाश आदमी नहीं होगा।"

"जब समाज सुव्यवस्थित हो जायगा तो उस बात की कोई कीमत ही न होगी कि कोई मनुष्य मूर्ख है या चतुर; भला है या बदमाश?"

"हाँ, मैं समझती हूँ; हम सब एक से ही हो जायेंगे।"

"बिल्कुल ठीक, मैडम।"

ओदिन्त्सोवा आर्केडी की ओर उन्मुख हुई।

"और तुम्हारी क्या राय है आर्केडी निकोलेविच?"

"मैं एवजेनी से सहमत हूं।" उसने उत्तर दिया।

कात्या ने सिकुड़ी भौंहों के नीचे से उसे देखा।

"मुझे आपकी बात से आश्चर्य हो रहा है महाशय," ओदिन्त्सोवा ने कहा, "लेकिन हम फिर कभी दूसरे समय इस पर विचार विमर्श करेंगे। मुझे मौसी के आने की आवाज सुनाई पड़ रही है; हमें उनके कानों को तो बख्श देना चाहिए।"

अन्ना सर्जेयना की मौसी राजकुमारी 'क'—एक पतली, दुबली, सुर्झाये हुये छोटे से मुख और ईर्षालू घूरती आँखों की औरत थी। वह भूरे जीर्ण हैट को लगाये कमरे में आई, और अतिथियों की ओर थोड़ा सा सिर झुका कर एक बड़ी गद्दीदार आराम कुर्सी पर पसर रही। जिस पर और कोई बैठने का साहस नहीं कर सकता था। कात्या ने उसके पैरों के नीचे एक स्टूल रख दिया, वृद्धा ने उसे इसके लिए धन्यवाद भी नहीं दिया। उसकी ओर देखा तक भी नहीं। उसके हाथ पीले शाल के नीचे जो उसके शिथिल दुर्बल शरीर को लपेटे हुए था थोड़ा स्पंदित हुए। राजकुमारी को पीला रंग प्रिय था; यहाँ तक कि उसके टोप के फीते भी पीले थे।

"आपको नींद कैसी आई, मौसी?" ओदिन्त्सोवा ने अपनी आवाज को ऊंचा करते हुए पूछा।

"वह कुतिया फिर यहाँ आ गई है," वृद्धा गुर्रायी और फिफी को अपनी ओर कुछ अनिश्चित कदम बढ़ाते हुए देखकर उसने कहा: "हश, हश!"

कात्या ने फिफी को बुलाया और दरवाजे के बाहर कर दिया।

फिफी खुशी खुशी बाहर चली गई, लेकिन बाहर अपने को अकेला पाकर वह दरवाजा खुरचने लगी राजकुमारी ने भौंहें सिकोड़ीं, और कात्या बाहर जाने को असहमत थी।...

"मेरा विचार है कि चाय तैयार है।" ओदिन्त्सोवा ने कहा। "हम लोगों को चलना चाहिए महाशयो। मौसी चलिए चाय पीजिये।"

राजकुमारी चुपचाप उठ खड़ी हुई और सबसे पहले कमरे के बाहर चल दी। शेष सब उसके पीछे पीछे भोजनालय में गये। वर्दी पहिने एक छोकरे नौकर ने एक गद्देदार कुर्सी शोर करते हुए खींची और राजकुमारी उसमें धम्म से बैठ गई। कात्या ने, जो चाय बना रही थी सबसे पहिले उन्हें ही एक प्याले मे जो कुछ गौरव चिन्ह से सजा हुआ था चाय दी। वृद्धा ने अपनी चाय में कुछ शहद मिलाया, वह अपनी चाय में चीनी मिलाना पाप और बरबादी समझती थी यद्यपि वह एक पाई भी किसी चीज पर नहीं व्यय करती थी और एकाएक अपनी रूखी भारी आवाज से उसने पूछा!

"और राजकुमार इवान क्या लिखता है?"

किसी ने उत्तर नहीं दिया। बैजारोव और आर्केडी ने तुरन्त समझ लिया कि किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया है; यद्यपि वे उसके साथ सम्मान का व्यवहार करते थे। "वे सिर्फ उसे शान दिखाने के लिए रखे हुए हैं क्योंकि वह एक शाही महिला है," बैजारोव ने सोचा।...

चाय के बाद अन्ना सर्जेवना ने टहलने का प्रस्ताव किया; लेकिन थोड़ी थोड़ी फुहार पड़ने लगी और सभी सिवाय राजकुमारी को छोड़कर बैठक में लौट आए। पड़ौसी जो ताश का शौकीन था, आ गया। वह नाटा आदमी था। उसका नाम था पोरफ्रे प्लेटोनिच। वह मोटा भूरे बालों वाला और छोटे छोटे पैरों वाला आदमी था जो लगते थे उसी के लिए काटे गए हैं, वह अत्यन्त विनीत था और बड़ी जल्दी खुश हो जाता था। अन्ना सर्जेवना ने जो अधिक समय बैजारोव से ही बातें

करती रही उससे पूछा कि क्या वह एक पुराने ढंग के खेल "अपेक्षाकृत प्रतिष्ठा" में उनका साथ देना पसन्द करेगा। बैजारोव ने यह कहते हुए कि उसे गाँव में प्रैक्टिस करने की आदत डालनी है, स्वीकृति दे दी।

"सावधान रहना," अन्ना सर्जेवना ने कहा, "मैं और पोरफ़ी प्लेटोनिच तुम्हें हरा देंगे। और तुम कात्या," उसने कहा, "आर्केडी निकोलेविच को कुछ सुनाओ; वह संगीत-प्रेमी है—और हम भी सुनेंगे।"

कात्या अनिच्छुक सी पिआनों पर बैठ गई; और आर्केडी भी, यद्यपि वह संगीत प्रेमी था, अनिच्छुक सा ही गया। उसे सन्देह हो रहा था कि ओदिन्त्सोवा उसे हटा रही है, फिर भी उसका दिल, जैसा कि उसकी आयु में हर युवक का होता है, अवशता के अनुभव से घुमड़ रहा था। कात्या ने पिआनों खोला और बिना आर्केडी की ओर देखे धीमी आवाज में उसने पूछा :

"क्या सुनाऊँ?"

"जो आप चाहें," आर्केडी ने उदासीनता से उत्तर दिया।

"आप किस तरह का संगीत पसन्द करते हैं?" कात्या ने अपनी स्थिति बिना बदले फिर पूछा।

"पक्का," आर्केडी ने उसी लहजे में उत्तर दिया।

"क्या आप मोजार्ट* पसन्द करेंगे?"

"हाँ।"

कात्या ने मोजार्ट का सोनाटा फैनटैसिया सी माइनर स्वर में पेश किया। उसने बहुत अच्छा बजाया, यद्यपि अविनीत और अभावुकता से बजाया था। आँखें बाजे पर जमी हुई थीं और ओंठ तनाव से खुले हुए थे। वह बिल्कुल सतर बैठी थी और सिर्फ संगीत के अन्त में उसके

---

*जर्मनी का एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ—अनु

चेहरे पर लालिमा दौड़ी और बालों का एक गुच्छा छूट कर भौंह पर लटक गया।

आर्केडी संगीत के आरोह में विभोर हो रहा था, उसी समय मस्त स्वर माधुरी की सुखोन्मेषी प्रफुल्लता एक ऐसी मर्मभेदी, लगभग करुण पूरित व्यथा की लहर के साथ एकाएक बन्द हो गई।...लेकिन मोजार्ट के संगीत की लहरी से उसके हृदय में जिन भावों का उन्मेष हुआ था उनका कात्या से कोई सम्बन्ध न था। वह उसकी ओर देख-कर विचारों में डूब गया: "यह युवती बुरा नहीं बजाती, और देखने में भी बुरी नहीं है।"

कात्या ने संगीत समाप्त करने के बाद बाजे पर हाथ रखे हुए ही पूछा: "काफी है?" आर्केडी ने कहा कि वह उसे और कष्ट देने का साहस नहीं कर सकता और उसके साथ मोजार्ट पर वार्त्ता आरम्भ कर दी। उसने उससे पूछा कि वह संगीत उसने अपने आप चुना है अथवा किसी अन्य ने उसे यह सुझाया है। कात्या ने अनमने ढंग से उसे एकाक्षरों में उत्तर दिया। वह अपने में ही संकुचित हो गई और मौनी बन गई। एक बार अपने में ही संकुचित हो जाने के बाद उसे निःसंकोच होने में देर लगती थी। ऐसे अवसरों पर उसके चेहरे पर रूक्षता और उदासीनता छा जाती थी। यह तो स्पष्टतः नहीं कहा जा सकता कि वह शर्मा रही होती है। वह अपनी बहन की संरक्षकता से थोड़ा त्रस्त और असन्तुष्ट थी। यह ऐसा सत्य था जिसका उसकी बहन कभी अनुमान भी न करती थी। आर्केडी ने समय के तनाव को ढीला करने के लिए एक तरीका अपनाया, पर भोंड़ा; उसने फिफी को अपने पास बुलाया जो कमरे में फिर वापस आ गई थी और दयापूर्ण मुस्क-राहट के साथ उसका सिर थपथपाने लगा। कात्या पुनः अपने फूलों में व्यस्त हो गई।

उधर बैजारोव लगातार हारता जा रहा था। अन्ना सर्जेवना बड़ी

कुशल खिलाड़ी थी और पोरफ्र प्लाटोनिच भी मंजा हुआ खिलाड़ी था। बैजारोव की हार, यद्यपि साधारण थी फिर भी सुखकर न थी। भोजन के समय अन्ना सर्जेवना ने पुनः वनस्पति विज्ञान की बहस छेड़ दी।

"कल सुबह हमलोग टहलने चलें" उसने उससे कहा, "मैं चाहती हूं कि आप मुझे पेड़ों के लैटिन नाम और गुण बतायें।"

"आप जानकर क्या करेंगी?" बैजारोव ने पूछा।

"हर चीज में कोई व्यवस्था जरूर होनी चाहिए," उसने उत्तर दिया।

× × ×

"अन्ना सर्जेवना कैसी आश्चर्य जनक महिला है?" आर्केडी ने अपने मित्र से जब वे दोनों अपने कमरे में अकेले थे, कहा।

"हाँ," बैजारोव ने उत्तर दिया, "वह बड़ी घाघ महिला है। मेरा ख्याल है कि उसने दुनिया देखी है।"

"तुम्हारा अभिप्राय क्या है इससे; एवजेनी वैस्लिच?"

"बड़ा अच्छा अभिप्राय है, प्रिय साथी, आर्केडी निकोलाइच! मुझे विश्वास है कि वह अपनी जागीर की व्यवस्था भी बड़े सुन्दर ढंग से करती है। लेकिन वह आश्चर्यजनक नहीं है, वह तो उसकी बहन है।"

"क्या? वह लड़की?"

"हाँ, वही। वहाँ तुम्हें, ताजगी, भोलापन, अल्हड़ता मूकभाव और सब कुछ मिलेगा। वह इस योग्य है कि उसकी ओर ध्यान दिया जाय। जैसा तुम चाहो अभी उसे वैसा ही ढाल सकते हो; किन्तु वह दूसरी तो सारे पैंतरों में माहिर है।"

आर्केडी ने कुछ कहा नहीं, और दोनों ही अपने विचारों में लीन अपने अपने बिस्तरों पर चले गए।

अन्ना सर्जेवना भी उस शाम को अपने अतिथियों के सम्बन्ध में सोच रही थी। उसे बैजारोव पसन्द था— क्यों कि उसमें लगाव की भावना न थी और वह मुंहफट भी था। उसने उसमें कुछ नवीनता पाई थी, कुछ ऐसी चीज जिससे उसका पहिले कभी साबका नहीं पड़ा था और वह स्वभाव से नवीनता के प्रति उत्सुक प्रवृत्ति की रही है।

अन्ना सर्जेवना विलक्षण महिला थी। वह पूर्वाग्रहों और अंध विश्वासों से मुक्त थी, उसने न कभी किसी को माना और न कभी किसी से प्रभावित हुई। बहुत सी बातें वह साफ साफ समझ सोच लेती थी, बहुत सी चीजों में उसे रुचि हो जाती, लेकिन कोई चीज पूर्णत: सन्तुष्ट नहीं कर पाती; वह बिरले ही कभी पूर्ण संतोष की आशा करती थी। उसका दिल-दिमाग एक दम अति उत्सुक और विरक्त हो जाता था। उस की शंकाऐं कभी इस सीमा तक शान्त न होतीं कि उन्हें विस्मृत किया जा सके और न कभी चिन्ताकुलता के बिन्दु तक बढ़ पातीं। यदि वह धनी और स्वतन्त्र न होती तो सम्भवत: उसने अपने को कलह में झोंक दिया होता, और आवेश और उत्कंठा के अर्थ समझ लिये होते।···लेकिन वह चिन्ता रहित जीवन व्यतीत करती थी, यद्यपि कभी कभी वह उकताहट का अनुभव अवश्य करती थी; और उसके दिन उत्साह के आकस्मिक झोंके के साथ सरकते जा रहे थे। कभी कभी गुलाबी दृश्य उसकी आंखों के सामने साकार हो उठते। जब वह धुंधले पड़ जाते तो आराम से शिथिल हो जाती और कभी उनके ओझल हो जाने का दु:ख न करती। उसकी कल्पना उसे पारम्परिक नैतिक सीमा के पार तक ले जाती; लेकिन तब भी उसका लहू धीरे धीरे उसके चंचल निर्मल शरीर में अपना मार्ग बना लेता। कभी कभी सुवासित स्नान के बाद, ऊष्मा और मादक मूर्छना में वह जीवन की तुच्छताओं, व्यथाओं कष्टों और

दोषों के गम्भीर मनन में निमग्न हो जाती।...एकाएक उसका दिल तेज सांसों से फूलने लगता, वह उच्च लालसाओं से चमकने लगती; लेकिन आधी खुली खिड़की में से हवा का एक झोंता आता और अन्ना सर्जेवना ठिठुर जाती और शिकायत करती और बिगड़ उठती। उस समय वह सिर्फ यह चाहती कि हवा के इस शैतानी झोंके को उसके ऊपर आने से किसी तरह रोक दिया जाय।

उन सभी स्त्रियों की तरह जिन्होंने कभी नहीं जाना-प्रेम कैसा होता है, वह किसी चीज के पीछे हिलगी हुई थी, लेकिन वह वास्तव में क्या थी जिसे वह चाहती थी, वह स्वयं नहीं जानती थी। सच बात तो यह थी कि वह कुछ नहीं चाहती थी, यद्यपि उसे ऐसा लगता था कि वह सब कुछ चाहती है। उसने स्वर्गीय ओदिन्त्सोवा के साथ बड़ी कठिनता से निभाया था (वह उसके लिए एक सहूलियत की शादी थी, यद्यपि सम्भवतः यदि उसने उसे अच्छा व्यक्ति न समझा होता तो वह कभी उसकी पत्नी बनने के लिए सहमति न देती) और उसने हर मनुष्य के लिए, जिनको वह उलझे हुए, भारी-भरकम सुस्त, अकर्मण्य और बुरी तरह थका देने वाले प्राणी समझती थी, मन में गुप्त रूप से एक घृणा की धारणा बना ली थी। विदेश में कहीं उसकी एक बार एक स्वीडेन निवासी से भेंट हुई थी, जिसके मुख पर वीरता का तेज था, बांकी विलम्बित भौंहों के नीचे निश्छल आँखें थीं। उसने उस पर गहरा प्रभाव डाला था, फिर भी वह उसे रूस वापस आने से नहीं रोक सका।

"वह डाक्टर बड़ा ही आश्चर्यजनक व्यक्ति है।" उसने सोचा जबकि वह अपने वैभवशाली पलंग पर हल्के रंग के रेशमी आच्छादन के नीचे लेटी थी, उसका सिर कढ़े हुए तकियों पर आराम से रखा था।...अन्ना सर्जेवना ने अपने पिता से उत्तराधिकार में विलास के लिए कुछ पूर्व स्नेह पाया था। उसे अपने अपराधी किन्तु दयावान

माँ-बाप प्रिय थे। उसका पिता उसे प्यार करता और दोस्ताना हंसी दिल्लगी से उसे प्रसन्न करता था, उससे बराबरी का व्यवहार करता और और उस पर बिना किसी दुराव के पूर्ण विश्वास करता था। उसे अपनी माँ की बड़ी धुंधली सी याद थी।

"वह बड़ा अजीब आदमी है।" उसने अपने मन में फिर दुहराया। उसने अंगड़ाई ली, मुस्कराई और अपने सिर के पीछे हाथ बांधे और तब एक रद्दी फ्रेंच उपन्यास के दो-तीन पृष्ठों पर नजर दौड़ाई, फिर किताब रख दी और सो गई। उसके अधरों पर विलम्बित मधुर मुस्कान थिरक रही थी।

दूसरे दिन सबेरे नाश्ते के तुरन्त बाद,...अन्ना सर्जेवना बैजारोव के साथ वनस्पति विज्ञान के अध्ययन के लिए चली गई और भोजन के समय तक नहीं लौटी; आर्केडी कहीं नहीं गया, उसने बस लगभग एक घंटा कात्या के साथ व्यतीत किया। आर्केडी को उसके संग से उकताहट नहीं हुई और कात्या ने स्वयं ही पिछले दिन के संगीत को दुहराने का प्रस्ताव किया; लेकिन जब ओदिन्त्सोवा आखिरकार लौट कर आई और आर्केडी ने उसे देखा तो उसका दिल क्षणिक वेदना का अनुभव करने लगा।...उसने बाग में शिथिल चाल से प्रवेश किया; उसके गाल लाल हो रहे थे और सिरकियों के हैट के नीचे उसकी आंखें पहले की अपेक्षा अधिक चमक रही थीं। वह एक जंगली फूल के पतले डंठल के साथ खेल रही थी; उसका पतला दुपट्टा कुहनियों तक सरक आया था और उसके हैट का चौड़ा रेशमी भूरा फीता सीने पर झूल रहा था। बैजारोव उसके पीछे पीछे आ रहा था, स्वविश्वस्त और सदैव की तरह लापरवाह अलमस्त; लेकिन आर्केडी को उसके चेहरे का भाव नहीं रुचा, यद्यपि वह अभिव्यक्ति प्रसन्न और कोमल थी। "नमस्कार!" फुसफुसाते हुए बैजारोव कमरे में चला गया और ओदिन्त्सोवा ने बेसुधी सी में आर्केडी से हाथ मिलाया और आगे बढ़ गई।

"नमस्कार," आर्केडी ने सोचा "ऐसा मालूम होता है कि हम दोनों ने आज एक दूसरे को देखा ही नहीं।

: १७ :

समय (हम सब जानते हैं) कभी-कभी पक्षी की चाल से उड़ता है, कभी-कभी घोंघे की तरह घिसटता है, लेकिन मानव जब समय की उड़ान से अनजान और असावधान रहता है तब अतिशय सुखी होता है। ऐसी ही स्थिति में आर्केडी और बैजारोव ने ओदिन्त्सोवा के साथ पन्द्रह दिन व्यतीत किए। इसका कुछ श्रेय तो सुव्यवस्थित जीवन को था जिसे ओदिन्त्सोवा ने अपने गृह में स्थापित कर रखा था। वह कट्टरता से इस सुव्यवस्थित जीवन को निभाती थी और अन्यों को भी निभाने पर उद्यत करती थी। दिन भर के हर काम के लिए एक निश्चित समय था। सुबह ठीक आठ बजे सब कोई नाश्ते के लिए जमा होते, नाश्ता और भोजन के बीच के समय में हर कोई अपनी मर्जी का काम करता और मालकिन कारिन्दों और प्रधान गृह-प्रबन्धकों से कामकाज की बातचीत करती (वह अपनी जागीर की व्यवस्था पट्टे के आधार पर करती थी) ब्यालू से पहले फिर सब लोग थोड़ी गपशप या कुछ पढ़ने के लिए एक साथ एकत्र होते, शाम घूमने, ताश और संगीत में व्यतीत होती, साढ़े दस बजे अन्ना सर्जेवना अपने कमरे में जाती, दूसरे दिन के लिए आदेश देती और फिर सोने चली जाती। बैजारोव इस नीरस व्यवस्थित जीवन को पसन्द नहीं करता था। "यह तो रेल की पटरियों पर चलना जैसा है," उसने कहा। वर्दीधारी चपरासी और खानसामा उसकी जनवादी इच्छाओं में बाधा

पहुंचाते थे। वह इस बात में विश्वास करता था कि सब एक साथ जाकर अंग्रेजी ढंग से पूरी पोशाक और सफेद टाई पहन कर भोजन कर सकते हैं। उसने एक बार इस विषय पर अन्ना सर्जेवना से बात छेड़ी थी।

उसमें कुछ ऐसा था कि कोई उसके सामने अपने मन की बात साफ-साफ कहने में झिझकता न था। उसने बैजारोव की बात सुनी और कहा: "तुम अपने दृष्टिकोण से सम्भवतः सही हो—उस तरह मुझे अपने मालकिन होने का भान होता है, लेकिन अगर तुम यहां देहात में अव्यवस्थित जीवन व्यतीत करो तो तुम भयानक तरीके से ऊब जाओगे।" और वह अपने ही ढंग से काम चलाती रही। बैजारोव बड़बड़ाया, पर उसने और आर्केडी दोनों ने ही ओदिन्त्सोवा के मकान में जीवन को अत्यन्त सरल, सुखी पाया। विशेषकर इसलिए कि सारी बातें "रेल की पटरियों पर चलती थीं।" निश्चय ही उनके निकोल-स्कोय में आने के पहले ही दिन से दोनों युवकों में एक परिवर्तन आया था। बैजारोव एक बेचैनी का, जो उसके लिए नई थी, अनुभव करने लगा था। यद्यपि अन्ना सर्जेवना जो शायद कभी ही उससे सहमत होती हो, फिर भी उसे मानती थी। वह झल्ला उठता, वह अनमने ढंग से बात करता, उद्विग्न और उदास दिखाई पड़ता और अधीर तथा बेचैन हो उठता था, जब कि आर्केडी ने जिसने अपने मन में पूरी तरह समझ लिया था कि वह ओदिन्त्सोवा से प्रेम करता है, अपने को पूरी तरह से उदासीनता और खिन्नता को सौंप दिया था। यद्यपि इस खिन्नता और उदासीनता ने कात्या से मित्रता बढ़ाने में उसे कोई बाधा नहीं पहुँचाई; बल्कि इसने तो उसे कात्या के साथ अच्छी हर्षदायक, प्रगाढ़ मैत्री स्थापित करने में सहायता ही पहुं-चाई। "वह मुझे पसन्द नहीं करती!...क्या करती है? ओह? ठीक है!...लेकिन यह एक सज्जन प्राणी है जो मुझे नहीं ठुकराती—"

आर्केडी ने सोचा और उसके हृदय ने पुनः एक बार कोमल भावनाओं की माधुरी का अनुभव किया। कात्या को इस बात का धुंधला सा आभास था कि वह उसके सहवास में सुख और चैन पाता है, और वह न तो उसे ही और न अपने को ही ऐसी मित्रता, जिसमें लज्जा की झिझक और विश्वाशपूर्ण समर्पण की आँख मिचौनी होती है, के भोले मासूम अचेतन सुख की अनुभूति से वंचित रख सकी। अन्ना सर्जेवना के सम्मुख वे आपस में बातचीत न करते थे। कात्या सदैव अपनी बहन की पैनी आँखों के सामने सकुचाई सी रहती और आर्केडी का तो जब उसकी प्रेमिका उसके पास होती तो और किसी पर ध्यान ही न जाता; वैसा हर युवक प्रेमी के साथ होता है। जो भी हो, फिर भी वह वास्तव में केवल कात्या के साथ ही सुख-चैन का अनुभव करता था। वह महसूस करता कि ओदिन्त्सोवा को प्रसन्न करने की योग्यता उसमें नहीं है। जब वह उसके साथ अकेला होता तो शर्मा जाता। और उसकी जुबान जकड़ जाती, और वह भी न समझ पाता कि उससे क्या बात करे? वह उसके लिए बहुत बच्चा था। इसके विपरीत कात्या! कात्या के साथ आर्केडी बेतकल्लुफी का, और सारल्य का अनुभव करता था। वह कोमल और उसके अनुकूल व्यवहार करता और उसे संगीत से उत्प्रेरित प्रभावों को खुल कर आजादी से कहने की छूट देता और किसी किताब या कविता पर इसी प्रकार की गपशप करता। वह स्वयं नहीं जानता था कि ये गपशप उसे भी अच्छी लगती हैं कात्या अपनी तरफ से उसकी उद्विग्न चित्तवृत्तियों में दखल नहीं देती थी। आर्केडी कात्या के साथ से आनंद लाभ करता था और ओदिन्त्सोवा बैजारोव के साथ से सुख पाती थी, और सदैव अनायास ही ऐसा हो जाता कि दोनों युग्म साथ साथ चलना आरम्भ करके भी आगे चलकर अपने रास्ते पर अलग अलग चले जाते, विशेषकर चहल कदमी के समय। कात्या प्रकृति से प्रेम करती थी; यथापि

उसने इस सत्य को स्वीकार करने का साहस नहीं किया था; ओदिन्त्सोवा उस ओर से विरक्त थी, जैसा कि बैजारोव था। दोनों मित्र लगातार एक दूसरे से दूर रहते थे। इसका कुछ परिणाम न निकला हो सो बात नहीं थी; उनके पारस्परिक सम्बन्ध शनैः शनैः लगातार बदलते गए। बैजारोव अब आर्केडी से ओदिन्त्सोवा के सम्बन्ध में बातें न करता, और उसके अभिजातीय रंग ढंग और हाव-भाव की आलोचना करना भी उसने छोड़ दिया था। वह अब भी कात्या की बड़ाई करता और अपने मित्र को उसके भावुकतापूर्ण झुकावों को शालीनता प्रदान करने और मृदु बनाने की सलाह देता था; फिर भी उसका यह गुणगान, बहुत संक्षिप्त होता। उसकी सलाह ठंडी और नीरस होती और सब मिलाकर वह आर्केडी से पहले की अपेक्षा बहुत कम बात करता।...ऐसा लगता था मानों वह उसे अपने से अलगाना चाहता हो; मानों उससे लज्जित अनुभव करता हो।...

आर्केडी ने यह सब देखा—समझा, लेकिन अपनी राय अपने तक ही रखी।

इस "नवीन परिवर्तन" का असली कारण, वह भावना थी जो ओदिन्त्सोवा ने बैजारोव में उत्पन्न कर दी थी, भावना जिसने उसे संतप्त और पागल बना दिया था, लेकिन कोई यदि उसे जो कुछ वास्तव में उसके दिल में गुजर रही थी उसकी सम्भावना के बारे में किंचित भी संकेत करता तो वह तुरंत उससे उपहास में उड़ाते हुए और व्यंगमय निंदा करते हुए मुकर जाता। बैजारोव स्त्रियों का उपासक था, लेकिन आदर्श रूप में प्रेम को या उसके ही शब्दों में रुमानी भावना को अक्षम्य भूल कहता और उसका मखौल उड़ाता था। वीरता को वह राक्षसत्व या रोग मानता, और अनेक बार उसने इसी पर आश्चर्य किया था कि तोगेनवर्ग अपने सहायकों तथा त्रोबेदारों ※

※ संगीतज्ञ कवियों की एक श्रेणी जो फ्रान्स और उत्तरी इटली में ११-१२-१३ सदी में फली फूली।—अनु

के साथ पागलखाने में क्यों नहीं रख दिया गया।

-'अगर तुम किसी औरत को चाहते हो," उसे कहने की आदत थी, "तो पीतल की कील से जूझ जाओ। अगर वह उखड़े नहीं तो कोई बात नहीं, अपनी उंगलियों को देखो।" उसके अलावा भी बहुत-सी बातें हैं!" ओदिन्त्सोवा ने उसके विचारों को समझ लिया था; अफवाहें जो उसके सम्बन्ध में फैली हुई थीं,—उसकी विचारों की स्वतन्त्रता, बैजारोव के प्रति उसका स्पष्ट पक्षपात—यह सब, कोई समझेगा उसकी चक्की का कौर था। लेकिन वह शीघ्र ही इस सत्य के प्रति सचेत हो गया कि वह उसके साथ पीतल की कीलों की स्थिति तक नहीं जा सकता, और रही अपनी उंगली चटकाने की बात सो वह अपनी उद्विग्नता के कारण ऐसा नहीं कर सका। ओदिन्त्सोवा के विचार मात्र से उसकी धड़कन से समझौता कर लेता, लेकिन उसके साथ कुछ और बात भी हो गई, कुछ ऐसी बात, जिसे वह कभी स्वीकार न करता, कुछ ऐसी बात जिसका उसने सदैव उपहास किया है, और जिसके विरुद्ध उसका सारा गर्व विद्रोह कर उठता था। जब अन्ना सर्जेवना के साथ बातचीत करते समय वह हर रूमानी बात का सदैव से अधिक उपेक्षा से मखौल उड़ाता लेकिन अकेले में वह रूमानी भावना से जो उसने अपने अन्दर अनुभव की थी, रोमांच और उत्तेजना का अनुभव करने लगता था। ऐसे अवसरों पर वह जंगल में टहनियों को तोड़ता और अपने को और उसको भी कोसता हुआ निरुद्देश्य घूमता हुआ दूर चला जाता; या फिर फूस की अटारी में घुस जाता, और हठ पूर्वक अपनी आँखें बन्द करके जबर्दस्ती से सोने का उपक्रम करता, जिसमें कि वह सदैव सफल नहीं हो जाता था। एकाएक वह अपने मन में एक तस्वीर की कल्पना कर लेता—वह पवित्र सादी बाहें उसकी गर्दन को आलिंगनाबद्ध किए हैं, वे गर्वीले अधर उसके चुम्बनों का प्रति उत्तर दे रहे हैं और वे गम्भीर

आँखें कोमलता से उसकी आँखों में देख रही हैं,—हाँ, कोमलता से, और उसका सिर चक्कर खाने लगता और वह एक क्षण के लिए अपने को भूल जाता, और उस समय तक भूला रहता जब तक वह पुनः सचेत न हो जाता। उसके मन में हर तरह के "अरुचिकर" भाव उत्पन्न होने लगे, मानों शैतान उसे परेशान कर रहा था। कभी कभी वह विश्वास करता कि ओदिन्त्सोवा में भी परिवर्तन आ रहा है, मानों जो भाव उसके चेहरे पर प्रकट है रहे हो वे कुछ असमान्य हैं, मानों सम्भवतः...इस पर वह पैर पटकता, दाँत पीसता और अपने हाथ से ही अपना मुँह मसोस लेता था।

और वास्तव में बैजारोव की ही सारी गलती न थी। उसने ओदिन्त्सोवा की भी कल्पना को उद्दीप्त कर दिया था; उसने उसे अपने प्रति आकर्षित किया और वह बहुत हद तक उसके विचारों में बस गया था। उसकी अनुपस्थिति में वह उदास न होती और कभी उसे अपने दिमाग से अलग न करती; जब वह उसके सामने साक्षात् आता तो वह खिल उठती, वह जान बूझकर उसके साथ अकेली रहती और उससे बातचीत करती, तब वह उसे नाराज कर देता या उसकी सुरुचि को और सुसंस्कृत आदतों को चोट पहुंचा देता था। ऐसा लगता था कि मानों वह उसे परखना चाहती है और साथ ही अपने को भी आँकना चाहती है!

एक दिन बाग में उसके साथ चहल कदमी करते समय उसने अन्यमनसस्कता से कहा कि वह जल्दी ही अपने पिता के पास जाने की सोच रहा है।...उसके चेहरे का रंग उड़ गया, मानों उसके दिल में एक टीस हुई हो; यह अनुभूति इतनी तीव्र थी कि इससे उसे स्वयं उस पर आश्चर्य हुआ और बाद में उसने अचम्भा किया कि इसके क्या माने हो सकते थे। बैजारोव ने अपने जाने की बात उसे परखने के उद्देश्य से या यह देखने के लिए कि उसके कहने का परिणाम क्या

छोटा है, नहीं कही थी। वह कभी कपट नहीं करता था। सबेरे उसे अपने पिता का कारिन्दा, तिमोफ़ेच मिला था जो उसके बचपन से उसका संरक्षक था। तिमोफ़ेच देखने में बड़ा फुर्तीला बूढ़ा था, उसके बाल श्वेत-पीत थे, धूप की मार से उसके चेहरे का रंग गहरा हो गया था और उसकी सिकुड़ी आँखों में तरलता की छोटी छोटी बूँदें ढरकती रहती थीं। वह एकाएक भूरे, नीले जहाजी कपड़े का किसानों का छोटा कोट, एक पुरानी पेटी से कसे हुए और जीर्ण काले ऊंचे जूते पहने हुए बैजारोव के सामने आ उपस्थित हुआ।

"कहो बड़े मियाँ, कैसे ?" बैजारोव ने कहा।

"नमस्कार, मालिक एवजैनी वेस्लिच," वृद्ध ने जवाब दिया और उसका चेहरा एकाएक झुर्रियों से भर गया और उसके ओंठों पर प्रसन्नता की मुस्कान खिल उठी।

"तुम यहाँ कैसे आ टपके ? मैं समझता हूँ तुम मेरे लिए आए हो ?"

"आपका रुतबा बढ़े श्रीमान्, नहीं !" तिमोफेचने विनम्रता से कहा (चलते समय उसे दिया गया अपने मालिक का आदेश याद था।) "मैं मालिक के काम से शहर जा रहा था। जब मैंने सुना कि आप यहाँ तशरीफ रखते है तो मैं रास्ते में आपके दर्शनों के लिए रुक गया...लेकिन आपको किसी प्रकार परेशान करने का मैं ख्याल भी नहीं ला सकता।"

"अच्छा तो आप शहर जाते जाते यहाँ टपक पड़े हैं।" बैजारोव ने पूछा।

तिमोफेच कभी इस पैर कभी उस पैर के सहारे खड़ा होता हुआ चुप बना रहा; उसने जवाब नहीं दिया।

"पिताजी तो अच्छी तरह हैं ?"

"जी हां श्रीमान्, ईश्वर की कृपा।"

"और मां ?"

"और अरिना व्लासेवना भी, सब ईश्वर की कृपा है।"

"वे लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं मैं समझता हूं!"

उस बिचारे ने अपना छोटा सा सिर खुजाया।

"आह, एवजेनी वैस्लिच, और क्या आशा की जा सकती है! यह इतना ही सत्य है जितना ईश्वर का होना। आपके माता-पिता की ओर देखकर कलेजा फटने लगता है।"

"अच्छा, ठीक है, ठीक है! अब और कुछ मत कहो। उनसे कहो कि मैं जल्दी ही आऊंगा।"

"बहुत अच्छा, श्रीमान्," तिमोफेच ने दीर्घ निःश्वास लेते हुए कहा।

उसने घर छोड़ते ही अपनी छोटी टोपी अपने दोनों हाथों से सिर पर जमाई और एक जर्जर छोटी पुरानी गाड़ी में कठिनता से बैठा, जिसे वह दरवाजे के पास ही खड़ा छोड़ आया था और चल दिया, लेकिन शहर की ओर नहीं।

× × ×

उस शाम को ओदिन्त्सोवा बैजारोव के साथ अपने कमरे में बैठी थी, उसी समय आर्केडी कात्या का गाना सुनता हुआ बैठक में टहल रहा था। राजकुमारी ऊपर जा चुकी थी; वह सभी मिलने आने वालों को दिल से नापसन्द करती थी और इन "जंगलियों" को जैसा कि वह उन्हें कहती थी विशेषकर। सबके बीच में बैठे रहने पर तो वह सिर्फ उदासीनता ही प्रगट करती पर अकेले में वह अपनी दासी के सामने पूरे आवेश के साथ अपने क्रोध की बोतल खोल देती ऐसे कि उसके सिर पर उसकी टोपी उसके बालों के हिलने से नाचने सी लगती। ओदिन्त्सोवा यह सब जानती थी।

"आपके जाने की क्या बात है," उसने कहना आरम्भ किया, "और आपका वायदा क्या हुआ ?"

"कौनसा वायदा ?"

"क्या भूल गए आप मुझे कैमिस्ट्री पढ़ाना चाहते थे न !"

"मुझे दुःख है; मेरे पिता मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं; मैं और अधिक देर नहीं कर सकता लेकिन आप पोलस एट फ्रेमी की नोशनस जेनरलस डी चिनीं* पढ़ सकती हैं। यह अच्छी किताब है और आसान भाषा में लिखी हुई है। आपको जितनी-जरूरत है सब उसमें मिल जायेगा।"

"क्या आप भूल गए, आपने कहा था कि कोई किताब इतनी अच्छी नहीं है जितनी...मैं तो भूल गई आपने कैसे कहा था, लेकिन आप जानते हैं मैं क्या कहना चाहती हूँ...आपको याद है ?"

"मुझे अफसोस है !" बैजारोव ने दुहराया।

"क्या जाओगे ही ?" ओदिन्त्सोवा ने अपनी आवाज मंद करते हुए पूछा।

बैजारोव ने उसकी ओर देखा। उसने अपनी कुर्सी की पीठ के सहारे अपना सिर पीछे की ओर झुका लिया था, और उसके हाथ कुहनियों तक नंगे सीने पर बंधे हुए थे। झिझरीदार कागज के शेड से आच्छादित एकाकी लैम्प के प्रकाश में वह अत्यंत पीली दीख रही थी। सफेद ढीले गाउन की परतों में उसका शरीर ढका हुआ था; सिर्फ उसके एक दूसरे पर रखे पैरों का सिरा कठिनता से दीख रहा था।

"मैं क्यों ठहरूं ?" बैजारोव ने उत्तर दिया। ओदिन्त्सोवा ने अपना सिर थोड़ा घुमाया।

"क्यों से आपका मतलब क्या है ? क्या आप यहां सुखी नहीं हैं ?

---

*रसायन शास्त्र की साधारण किताब—अनु

या क्या आप सोचते हैं कि किसी का आपसे बिछोह नहीं होगा।"

"हां।" ओदिन्त्सोवा थोड़ी देर चुप रही।

"आप गलती पर हैं और फिर मैं किसी तरह तुम पर विश्वास नहीं करती। तुम यह बात गम्भीरता से नहीं कह सकते।" बैजारोव निश्चल रहा।

"एवजेनी वैस्लिच आप कुछ कहते क्यों नहीं?"

"लेकिन मैं क्या कहूं? मैं नहीं समझता कि लोगों को किसी के जाने से दुःख हो सकता है। और खासतौर से मुझ से।"

"ऐसा क्यों?"

"मैं बहुत ही गम्भीर हूं और मैं लोगों को उबा देता हूं। मैं बातचीत में अपटु हूं।"

"आप अपने गुण ही गिना रही हैं एवजेनी वैस्लिच।"

"यह मेरी आदत नहीं है। आपको समझना चाहिए कि आप जीवन की जिन सुरुचियों को मन में पोसे हुए हैं मेरा उनसे दूर का भी सम्बन्ध नहीं है।"

ओदिन्त्सोवा ने अपने रूमाल का सिरा कुतरा।

"आप जो चाहें सोच सकते हैं; लेकिन आपके चले जाने पर मुझे बड़ा उदास उदास सा लगेगा।"

"आर्केडी तो रहेगा," बैजारोव ने कहा।

ओदिन्त्सोवा ने असन्तोष से कंधा हिलाया।

"मुझे उदास उदास लगेगा।" उसने दुहराया।

"सच? फिर भी आपको ज्यादा दिन तक उदास नहीं लगेगा।"

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं?"

"आपने ही तो मुझे बताया था कि जब आपकी नियमितता में उलट-फेर हो जाती है तो आप उदासी का अनुभव करने लगती हैं। आपने अपने जीवन को ऐसी अभेद्य नियमितताओं से घेर रखा

है कि उसमें कोईम या व्यथा उद्वेग...किसी भी तरह की दुःखदायी भावनाओं को घुस सकने का कहीं कोई मार्ग ही नहीं है।"

"तो आप यह समझते हैं कि मैं अभेद्य हूं...मेरा मतलब है, कि मैंने अपने जीवन की व्यवस्था इतनी ठोस तरह कर रखी है?"

"सम्भवतः! देखो, मिसाल के लिए, कुछ ही मिनटों में दस का घन्टा बजेगा और मैं पहले से जानता हूं कि तुम मुझे बाहर कर दोगी।"

"नहीं, मैं नहीं करूंगी, एवजेनी वैस्लिच। तुम ठहर सकते हो। उस खिड़की को खोल दो . . . मुझे गर्मी लग रही है।" उसका स्वर बदल गया था।

बैजारोव उठा और उसने खिड़की को धक्का दिया। वह एक झटके से आवाज करती हुई खुल गई। . . . वह उसके इतनी आसानी से खुल जाने की आशा नहीं करता था; इसके अतिरिक्त उसके हाथ कांप रहे थे। मुलायम गुलगुली काली रात ने लगभग अन्धकार प्रायः आसमान के संग, और मन्द-मन्द सर-सर ध्वनि करते पेड़ों और शीतल मधुर बयार के संग कमरे में झांका।

"पर्दा खींच दो और बैठ जाओ," ओदिन्त्सोवा ने कहा "मैं, तुम्हारे जाने से पहले तुमसे गपशप कर लेना चाहती हूं। मुझे कुछ अपने सम्बन्ध में बताओ, तुमने कभी अपने सम्बन्ध में कुछ नहीं बताया।"

"मैं तुमसे काम की चीजों पर बात करता हूं, अन्ना सर्जेवना"

"तुम बहुत ही संकोची हो।···लेकिन मैं तुम्हारे बारे में और तुम्हारे परिवार के बारे में, तुम्हारे पिता के बारे में, जिनके लिए तुम हम लोगों से मुंह मोड़ रहे हो, कुछ जानना चाहूंगी।"

"यह सब किस लिए?" बैजारोव ने सोचा। "मुझे यह सब बिल्कुल रुचिकर नहीं है," उसने सस्वर कहा, "विशेषकर तुम्हारे लिए, हम अप्रतिष्ठित लोग हैं···"

"क्या तुम मुझे अभिजात्य समझते हो?

बैजारोव ने ओदिन्त्सोवा की ओर देखा।

"हाँ," उसने फूहड़पन से जोर देते हुए कहा। मुस्कान से उसके अधर मुड़ गए।

"मैं देखती हूं कि तुम मुझे अच्छी तरह नहीं जानते, यद्यपि तुम दावा करते हो कि सभी लोग समान होते हैं और अध्ययन के योग्य नहीं हैं। मैं आपको अपने बारे में किसी दिन बताऊंगी।...लेकिन पहले अपने बारे में मुझे बताइये।

"मैं तुम्हें भली प्रकार नहीं जानता," बैजारोव ने दुहराया?" सम्भवतः तुम सही, सम्भवतः हर व्यक्ति ही एक पहेली है। अपने ही को ले लो, मिसाल के लिए, तुम समाज से दूर भागती हो, तुम अपनी इस शान और सौन्दर्य को लिए हुए यहां देहात में क्यों रहती हो?"

"क्या? क्या कहा, तुमने?" ओदिन्त्सोवा जल्दी से बोल पड़ी। "अपने सौन्दर्य के साथ?"

बैजारोव के माथे पर बल पड़ गए।

"कोई बात नही," उसने कहा, "मैं कहना चाहता हूं कि मेरी समझ में यह नही आता कि तुम देहात में क्यों रहती हो?"

"तुम उसे नहीं समझ सकते, तुम कहते हो।...लेकिन मैं समझती हूं तुमने अपने तईं इसे समझाने की कोशिश की है।"

"हां!...मैं समझता हूँ तुम एक स्थान पर स्थायी रूपसे इसलिए रहती हो क्योंकि तुम अपने को पूर्णरूप से सन्तुष्ट करना चाहती हो, तुम आराम, विलास और सुख-चैन का जीवन पसन्द करती हो और बाकी हर चीज से विरक्त रहना चाहती हो।"

ओदिन्त्सोवा फिर मुस्कराई।

"तुम यह विश्वास करने से इन्कार करती हो कि मैं यहाँ से जा नहीं सकता, क्यों?"

बैजारोव ने अपनी भृकुटि के नीचे से उस पर दृष्टि डाली।

"केवल उत्सुकता के लिए सम्भवतः और किसी लिए नहीं।"

"निश्चय ? अच्छा अब मैं समझा कि तुम और मैं मित्र कैसे बन जाए, तुम जानती हो, तुम मेरी ही तरह हो।"

"तुम और मैं मित्र बन गए है…" बैजारोव ने भर्राए स्वर में कहा।

"हाँ !…लेकिन मैं भूल गई कि तुम जाना चाहते थे।"

बैजारोव उठ कर खड़ा हो गया। अंधेरे सुवासित एकान्त कमरे के मध्य में लैम्प मदिर मदिर जल रहा था; उड़ते हुए पर्दों के मार्ग से रात कमरे के भीतर अपनी तर ताजगी और रहस्यभरी फुसफुसाहट उंडेल रही थी। ओदिन्त्सोवा जरा भी टस-से मस न हुई, लेकिन एक गुप्त उत्तेजना उसे अवश करती जा रही थी।… उसने बैजारोव से भी अपना भाव तारातम्य स्थापित किया। उसने अकस्मात अनुभव किया कि वह एक जवान सुन्दर स्त्री के साथ अकेला है…

"कहाँ चले ?" उसने मदिर ध्वनि से पूछा।

उसने कुछ उत्तर न दिया और अपनी कुर्सी पर धम से बैठ गया।

"तो तुम मुझे ठंडी, सन्तुष्ट, बिगड़ी हुई समझते हो," अपनी आँखों को खिड़की पर से हटाये बिना वह उसी स्वर में कहती गई, "लेकिन मैं ही जानती हूँ कि मैं बड़ी दुःखी हूं।"

"तुम और दुखी ? क्यों ? क्या तुम कहना चाहती हो कि तुम निरर्गल और घृणित अफवाहों को कोई महत्त्व देती हो ?"

ओदिन्त्सोवा ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। वह व्यग्र हो गई कि उसने उसके शब्दों का यह अर्थ लगाया।

"मुझे इस तरह की अफवाहों से खुशी भी नहीं होती, एवजेनी वेसिलिच, और उससे मुझे क्रोध हो आता है, इसका मुझे गर्व है।

मैं दुःखी हूं क्योंकि'''मेरी कोई कामना नहीं है, जीवित रहने की कोई इच्छा नहीं है। तुम मुझे संदिग्ध दृष्टि से देखते हो, और तुम सम्भवतः सोच रहे हो : यह एक 'अभिजात्य' ऊपर से नीचे तक कीमती चमक-दमक वस्त्र पहने आराम कुर्सी पर बैठी बोल रही। मैं इन्कार नहीं करती कि मैं, जिसे तुम विलास कहते हो उससे प्रेम करती हूं, और फिर भी मैं जीवित नहीं रहना चाहती। अगर कर सकते हो तो इन अस्थिरताओं और विषमताओं को सन्तुलित और सन्तुष्ट करने का प्रयास करो। खैर तुम्हारे लिए तो यह रूमानियत है।"

बैजारोव ने अपना सिर हिलाया।

"तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा है, स्वतन्त्र हो और धन भी है तुम्हारे पास, तुम्हें और किस बात की दरकार है? तुम क्या चाहती हो?"

"मैं क्या चाहती हूं?" ओदिन्त्सोवा ने दुहराया और एक आह भरी। "मैं चूर हूँ, थकी हूं, बूढ़ी हूं; मुझे ऐसा लगता है कि मैं अरसे से रहती आई हूं। हाँ, मैं बूढ़ी हूं," आहिस्ता से अपनी ओढ़नी के सिरों को अपने खुले हाथों पर खींचते हुए उसने कहा। बैजारोव की आँखों से उसकी आँखें चार हुईं, और उसके मुंह पर थोड़ी सी लाली दौड़ गई। "मेरे पिछले जीवन की अनेक स्मृतियाँ हैं : सेन्ट-पीटर्सबर्ग का जीवन, वैभव, फिर गरीबी, फिर मेरे पिता की मृत्यु, फिर मेरी शादी, फिर विदेश वाला, जैसा होना चाहिए'''बहुत सी स्मृतियां हैं लेकिन कुछ उनमें याद रखने के लिए नहीं है, और मेरे आगे लम्बी बहुत लम्बी सड़क फैली है पर मंजिल नहीं है'''मुझे चलने की प्रेरणा का अनुभव नहीं होता।"

"क्या तुम इतनी निराश हो गई हो?" बैजारोव ने पूछा।

"नहीं," ओदिन्त्सोवा ने धीमी आवाज में कहा, "लेकिन मैं सन्तुष्ट नहीं हूं। मुझे ऐसा लगता है कि यदि मैं किसी चीज से गहरा लगाव लगा सकती'''"

"तुम प्रेम करना चाहती हो," बैजारोव ने कहा, "लेकिन तुम प्रेम नहीं कर सकतीं—इसी कारण तुम इतनी दुखी हो।"

ओदिन्त्सोवा ने अपनी ओढ़नी के सिरों को फिर इधर उधर किया।

"तुम समझते हो कि मैं प्रेम करने के योग्य नहीं हूँ?" उसने बुदबुदाया।

"कठिनाई से। सिर्फ मुझे इसे दुख नहीं कहना चाहिए था। बल्कि इसके विपरीत, ऐसा व्यक्ति जिसके साथ ऐसी बात हो जाय वह दया का पात्र है।"

"कौन सी बात?"

"प्रेम में पड़ना।"

"यह तुम कैसे जानते हो?"

"ऐसे ही लोगों के कहने सुनने से," बैजारोव ने तरंग के लहजे में कहा।

"तुम मखौल उड़ा रही हो," उसने सोचा, "तुम ऊब गई हो और कुछ करने को नहीं है तो मुझे ही तंग कर रही हो, जब कि मैं······"

सचमुच उसका दिल फटा जा रहा था।" तब तो मैं समझता हूं कि तुम हर काम को पूरा पूरा नपे तुले ढंग से करना चाहती," उसने आगे झुकते हुए और अपनी आराम कुर्सी की झालर से खेलते हुए कहा।

"हो सकता है। मैं हर चीज में विश्वास करती हूँ या फिर ये। मैं नहीं। जीवन जीवन के लिए है। मेरा लो और मुझे अपना दो, लेकिन पीछे कोई पछतावा नहीं होना चाहिए, पीछे नहीं हटना चाहिए। अन्यथा फिर अच्छा है कि कुछ हो ही न।"

"वाह!" बैजारोव ने कहा, "यह तो अच्छी शर्तें हैं, और मुझे ताज्जुब है कि तुम्हें अभी तक नहीं····मिला जो तुम चाहती हो।"

"क्या तुम समझते हो कि अपने को दे देना इतना आसान है ?"

"नहीं है अगर तुम चिंता करना बन्द कर दो। "तेल देखो तेल की धार देखो" और अपने बारे में अत्यधिक सोचो, मेरा मतलब है, अगर तुम अपना मूल्य निर्धारित कर लो। लेकिन बिना किसी चिंता के अपने आप को समर्पित कर देना बड़ा आसान है।"

"तुम किसी से यह आशा कैसे करते हो कि वह अपना मूल्य नहीं निर्धारित करेगा ? अगर मैं किसी योग्य नहीं हूं तो मेरा किसी के प्रति प्रेम किस काम का ?"

"इससे मुझे प्रयोजना नहीं है; कोई दूसरा व्यक्ति ही इसका निश्चय करे कि मैं किसी योग्य हूं या नहीं। मुख्य बात है समर्पण के योग्य होना।"

ओदिन्त्सोवा अपनी कुर्सी पर बैठी रही।

"तुम ऐसे बोलते हो," उसने कहना आरम्भ किया, "मानों तुम इन सब स्थितियों से गुजर चुके हो।"

"मैंने तो सिर्फ एक बात कही, अन्ना सर्जेवना; तुम तो जानती ही हो, यह सब मेरी लाइन की बातें नहीं हैं।"

"लेकिन क्या तुम अपना समर्पण करने में समर्थ होगे ?"

"मैं नहीं जानता — मैं डींग मारना नहीं चाहूंगा।"

ओदिन्त्सोवा ने कोई जवाब नहीं दिया और बैजारोव चुप हो ... बैठक से पिआनों की ध्वनि उसके कानों में आने लगी।

"कात्या आज इतनी अबेर तक कैसे गा-बजा रही है," ओदिन्त्सोवा ने कहा।

बैजारोव खड़ा हो गया।

"हाँ, काफी देर हो गई है और तुम्हारे सोने का समय हो गया है।"

"एक मिनट रुको, जल्दी क्या है ? मुझे तुम से कुछ बताना है।"

"क्या है ?"

"एक मिनट रुको भी," ओदिन्त्सोवा ने फुसफुसाया।

उसकी दृष्टि बैजारोव पर टिक गई, मानों वह उसे ध्यान से परख रही हो।

उसने कमरे में एक चक्कर लगाया, तब एकाएक उसकी ओर घूमा और जल्दी से बोला, "नमस्कार," और उसका हाथ ऐसे पकड़ा कि वह करीब करीब चीख पड़ी, और फिर बाहर चला गया। उसने अपनी कुचली उंगलियाँ अधरों से लगाईं और आवेग से चूम लीं, किसी अकस्मात भावोन्मेष से उत्प्रेरित होकर वह आराम कुर्सी से उछल पड़ी और तेजी से दरवाजे की ओर दौड़ी, मानों बैजारोव को वापस बुलाना चाहती हो।... एक दासी ने चांदी की ट्रे में शराब की बोतल लिए प्रवेश किया। ओदिन्त्सोवा रुक गई। दासी को उसने छुट्टी दी और फिर अपनी जगह पर वापस लौट गई और विचारों में लीन हो गई। उसके गोटे में गुथे हुए केश पाश बिखर गये और सर्पों की तरह कंधे पर लहराने लगे। कमरे का लैम्प बड़ी देर तक जलता रहा और बड़ी रात बीते तक उसी तरह मूर्तिवत् स्थिर बैठी रही, केवल जब तब रात की ठंडक से ठिठुरे हाथों को मसल लेती।

× + ×

दो घंटे बाद बैजारोव अपने सोने के कमरे में, बाल बिखेरे, बौखलाया और मुर्झाया हुआ आया। उसके बूट ओस से भीग गए थे। उसने आर्केडी को मेज पर एक किताब पढ़ते हुए पाया। उसके कोट के बटन लगे हुए थे।

"क्या तुम अभी सोए नहीं ?" उसने झुँझलाते हुए पूछा।

"तुम आज रात अन्ना सर्जेवना के साथ बड़ी देर तक बैठे रहे," आर्केडी ने उसके प्रश्न का उत्तर टालते हुए पूछा।

"हां, मैं पूरे समय जब तुम और कात्या पिआनो बजा रहे थे, उसी के पास था।"

"मैं नहीं बजा रहा था," आर्केडी ने कहा और निस्तब्ध हो गया। उसने अनुभव किया कि उसकी आंखों में आंसू छलछलाने वाले हैं और वह अपने व्यंग करने वाले मित्र के सामने चीत्कार नहीं करना चाहता था।

: १८ :

दूसरे दिन सबेरे जब ओदिन्त्सोवा नाश्ते पर आई तो बैजारोव कुछ समय तक ध्यान से अपने प्याले को देखता रहा, फिर एकाएक उसकी ओर देखा···वह उसकी ओर ऐसे घूमी जैसे मानो उसने उसे कुहनियां दिया हो; और उसने सोचा कि उसका चेहरा अत्यंत पीला दीख रहा है। वह उसके बाद अपने कमरे में चली गई और लंच से पहले बाहर नहीं निकली। सबेरे से ही पानी बरस रहा था और सैर सपाटे को जाना संभव न था। सभी लोग बैठक में जमा हुए। आर्डी को एक पत्रिका का ताजा अंक मिल गया उसने उसे सस्वर पढ़ना शुरू कर दिया। राजकुमारी ने जैसी उसकी आदत थी पहिले तो आश्चर्य प्रगट किया, जैसे मानो कोई अनुचित असभ्य काम कर रहा हो, फिर दुःख भरी उदासीनता से बिगड़ पड़ी, लेकिन उसने उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया।

"एवजेनी वैस्लिच," अन्ना सर्जेवना ने कहा, "मेरे कमरे में चलो .. मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती थी।...तुमने कल एक किताब के बारे में कहा था..."

वह उठी और दरवाजे की ओर चल दी। राजकुमारी ने चारों ओर इस प्रकार देखा मानों वह कह रही हो :

"जरा देखो मैं अचम्भित हूं।" उसने फिर एक बार आर्कैडी पर दृष्टि गड़ाई, लेकिन उसने केवल अपना स्वर तीव्र कर दिया और बगल में बैठी कात्या की ओर दृष्टि दौड़ाते हुए पढ़ता रहा।

× + ×

ओदिन्त्सोवा तेजी से अपने अध्ययन-प्रकोष्ठ में चली गई। बैजारोव बिना आँख ऊपर उठाये उसके पीछे पीछे चलता चला गया और सिर्फ उसके कानों में उसके रेशमी गाउन के घिसटने की ध्वनि पड़ रही थी। ओदिन्त्सोवा कमरे में जाकर उसी आराम कुर्सी पर जिस पर पिछली रात बैठी थी बैठ गई; और बैजारोव भी अपनी गत रात वाली ही कुर्सी पर बैठ गया।

"उस किताब का नाम क्या था ?" थोड़ा रुककर उसने पूछा।

"पैलोस एट फ्रेमी नोशन्स जेनरल्स .." बैजारोव ने उत्तर दिया। "शारीरिक प्रयोगों की साधारण किताब भी पढ़ लो" इस पुस्तक में तस्वीरें और साफ दी हुई हैं और टेक्सट बुक कि तरह यह..."

ओदिन्त्सोवा ने अपना हाथ बढ़ाया।

"क्षमा करना, एवजेनी वैस्लिच, मैंने तुम्हें टैक्सट बुक पर बहस करने नहीं बुलाया है। मैं कल वाली बात आरम्भ करना चाहती थी। तुम इतने में अकस्मात् चले गए...तुम बोर नहीं होगे, क्यों, क्या हो जाओगे ?"

"मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ, अन्ना सर्जेवना। लेकिन वह क्या बात थी जिसके सम्बन्ध में हम लोग कल बातें कर रहे थे ?"

ओदिन्त्सोवा ने उसकी ओर कटाक्ष से देखा।

"हम लोग, मेरा ख़्याल है सुख के बारे में बातें कर रहे थे। मैं तुम्हें अपने बारे में बता रही थी। सुख के बारे में जरा यह तो बताओ

कि ऐसा क्यों होता है कि जब हम आनन्द ले रहे हैं, समझिए संगीत का, या किसी सुहानी संध्या का या जिन्हें हम पसंद करते हैं उनसे बातचीत करने का—क्यों यह सब कहीं किसी अधिक विस्तृत सुख की स्थिति की ओर संकेत करता सा प्रतीत होता है, वास्तविक सुख से भी बढ़ कर अर्थात् जिस प्रकार का हम लोगों को प्राप्त होता है उससे भी बढ़कर ? ऐसा क्यों होता है ? या सम्भवतः तुम्हें इस तरह का कोई अनुभव नहीं हुआ है ?"

"तुम वह कहावत जानते हो : अपने पड़ौसी की फसल अपनी फसल से अच्छी दीखती है," बैजारोव ने उत्तर दिया। "तुमने स्वयं ही कल यह स्वीकार किया था कि तुम असन्तुष्ट थीं। ऐसे विचार सचमुच ही मेरे दिमाग़ में नहीं घुसते।"

"सम्भवतः तुम उन्हें बेहूदा और व्यर्थ समझते हो।"

"नहीं सीधी सी बात है वे मेरे दिमाग़ में घुसते ही नहीं।"

"सच ? क्या तुम जानते हो, मैं यह जानना बहुत पसन्द करूंगी कि तुम क्या और किसके बारे में सोचते हो।"

"क्या ? मैं तुम्हरा मतलब नहीं समझा !"

"सुनो, मैं काफी दिन से तुमसे बातें करना चाहती थी। तुम्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी—तुम उसे स्वयं जानते हो—कि तुम सामान्य और साधारण लोगों में से नहीं हो। तुम अब भी जवान हो—तुम्हारा सारा जीवन अभी तुम्हारे सामने पड़ा है। तुम क्या करने का विचार रखते हो ? तुम्हारे लिए भविष्य में क्या संभावनाएं हैं ? मेरे कहने का मतलब यह है—तुम किस लक्ष्य पर निशाना साध रहे हो; तुम कहाँ जा रहे हो, तुम्हारे दिमाग में क्या है ? संक्षेप में—कि तुम क्या हो , तुम क्या हो ?"

"मुझे तुम्हारी बातों से बड़ा आश्चर्य हो रहा है, अन्ना सर्जेवना।

तुम जानती हो कि मैं प्रकृति विज्ञान का अध्ययन कर रहा हूं, रही बात, कि मैं कौन हूं ?"

"हां, और क्या ?"

"मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है कि मेरा विचार देहात में डाक्टरी करने का है।"

अन्ना सर्जेवना ने अधीरता सी का भाव प्रगट किया।

"तुम ऐसा क्यों कहते हो ? तुम स्वयं उस पर विश्वास नहीं करते। आर्केडी कहे तो यह बात ठीक भी हो सकती है, लेकिन तुम्हारे मुंह से नहीं शोभा देती।"

"आर्केडी किस तरह..."

"छोड़ो भी इसे ! क्या तुम ऐसे संकोची सन्तुष्ट जीवन से सन्तुष्ट रह सकते हो, और क्या तुमने सदैव नहीं कहा है कि तुम दवा में विश्वास नहीं करते ? तुम देहात में डाक्टर बनने की आकांक्षा से ही सन्तुष्ट रह सकते हो ! तुम उस तरह की बात सिर्फ मुझे टालने के लिए करते हो; क्योंकि तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। क्या तुम जानते हो, ऐवजेनी वेस्लिच, शायद मुझ में तुम्हें समझने की क्षमता हो सकती हैं, मैं एक बार स्वयं गरीब और आकाँक्षी थी; सम्भवतः मैं भी उन्हीं कसौटीयों से होकर गुजरी हूँ जिनसे होकर तुम।"

"यह तो और भी अच्छा है, अन्ना सर्वेजना, लेकिन मुझे तुम क्षमा करो···मैं अपने को भार से हलका करने का आदी नहीं हूँ, और फिर मैं और तुम एक दूसरे से बहुत अलग हैं, जैसे एक बल्ली के दो सिरे···"

"क्यों इतना अलग हैं ? तुम मेरे लिए फिर कहोगे, कि मैं एक अभिजात्य हूँ ? यह बहुत बुरा है, एवजेनी वेस्लिच, मेरा विश्वास कि मैंने तुम्हें अपनी सफाई दे दी है···"

"और इसके अतिरिक्त," बैजारोव ने बीच में ही टोका, "भविष्य

के सम्बन्ध में बात करने और सोचने से लाभ भी क्या है; जो अधिकतर हमारे ऊपर निर्भर नहीं करता। अगर कुछ करने का अवसर मिलता है, तो ठीक है और अच्छा है, अगर नहीं—तो तुमको कम से कम यह तो संतोष है कि तुमने पहिले ही इस पर अपना सिर नहीं खपाया था।"

"तुम एक मित्रता की बातचीत को सर खपाना कहते हो—या तुम मुझे अपने विश्वास के अयोग्य स्त्री समझते हो? तुम हम सबको तुच्छ समझते हो, क्यों है न यही बात?"

"तुम्हें तो मैं नहीं तुच्छ समझता, अन्ना सर्जेवन', और तुम इसे अच्छी तरह जानती भी हो।"

"मैं कुछ नहीं जानती—लेकिन कोई बात नहीं। अपने भविष्य के बारे में बात करने की तुम्हारी अनिच्छा को मैं समझती हूँ; लेकिन इस समय तुम्हारे भीतर क्या हो रहा है?"

"हो रहा है!" बैजारोव ने दुहराया। "जैसे मैं कोई राष्ट्र या समाज होऊं। हर सूरत में यह तनिक भी रुचिकर नहीं है, और फिर क्या एक मनुष्य हर समय यह अभिव्यक्त कर सकता है कि उसके भीतर क्या हो रहा है!"

"मैं नहीं समझती कि किसी को अपने मस्तिष्क की बात प्रकट करने में क्या एतराज हो सकता है।"

"क्या तुम बता सकती हो?" बैजारोव ने पूछा।

"मैं बता सकती हूँ," अन्ना सर्जेवनी ने थोड़ी हिचकिचाहते हुए कहा।

बैजारोव ने अपना सिर झुका लिया।

"तुम मेरी अपेक्षा अधिक सुखी हो।"

अन्ना सर्जेवना ने उसकी ओर प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा।

"जैसा तुम समझो," उसने कहा; "लेकिन मैं तो यह महसूस

करती हूँ कि हमारी भेंट मानो आकस्मिक ही नहीं है उससे कुछ अधिक भी है; कि हम अच्छे मित्र बन जायेंगे। मुझे विश्वास है कि यह—मैं इसे कैसे स्पष्ट करूं—तुम्हारा दुराव, तनाव, यह चुप्पी, अन्त में मिट ही जायगी।"

"तो तुमने यह बात जान ली कि मैं मूक हूं, और क्या तुमने कहा—तनाव?"

"हाँ।"

बैजारोव उठ खड़ा हुआ और खिड़की के पास गया।

"और क्या तुम इस मूकता का कारण जानना चाहोगी; क्या तुम जानना चाहोगी कि मेरे अन्दर क्या हो रहा है?"

"हाँ," ओदिन्त्सोवा ने अत्यन्त कातर भाव से कहा।

"तुम नाराज नहीं होगी?"

"नहीं।"

"नहीं?" बैजारोव उसकी ओर पीठ किए खड़ा था। "तब मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि मैं तुम्हें मूर्ख की भांति; पागल की भांति प्रेम करता हूँ...अब तुम समझ गईं।"

ओदिन्त्सोवा ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाए, और बैजारोव ने अपना माथा खिड़की के शीशे से टकराया। वह कठिनता से सांस ले रहा था, उसकी गाँठ गाँठ स्पष्टतः कांप रही थी। लेकिन यह कंप यौवन की लज्जा का नहीं था, बल्कि प्रथम आत्म स्वीकृति का मधुर उद्वेग था जिसने उसे अभिभूत कर लिया था; यह उन्मेष उसमें तीव्रता से तरंगित हो रहा था, बोझिल लहरें, उन्मेष जिसमें आवेगयुक्त लालसा का रूप विद्यमान था, और वह अवश सा हो रहा था। ओदिन्त्सोवा भी डर गई थी और उसके लिए दुःखी थी।

"एवजेनी वैस्लिच," उसने बुदबुदाया, और उसकी आवाज में अनजाने में ही अनचाही कोमलता आ गई थी।

वह घूमा, ओदिन्त्सोवा पर एक दृष्टि डाली, जैसे उसे निगल जायगा, और उसके दोनों हाथ पकड़कर अकस्मात् उसको अपनी बाहों में खींच लिया।

उसने बैजारोव के आलिंगन से अपने को तुरन्त ही अलग नहीं किया, एक क्षण के बाद, वह एक कोने में दूर खड़ी थी, जहाँ से वह बैजारोव को जाँच रही थी, वह उसकी ओर बढ़ा...

"तुमने मुझे नहीं समझा," उसने त्वरित भय से कहा, अपनी ओर उसका अगला कदम उठते ही वह चीख पड़ी होती...बैजारोव ने अपने ओंठ काट लिए और वह लम्बे डग रखता हुआ कमरे के बाहर चला गया।

आधा घंटे बाद दासी ने बैजारोव की एक चिट अन्ना सर्जेवना को लाकर दी; उसमें केवल एक सतर लिखी थी : क्या मैं आज चला ही जाऊं, या मैं कल सबेरे तक रुक सकता हूं।"—"तुम जाओगे ही? मैंने तुम्हें नहीं समझा तुमने मुझे नहीं समझा," ओदिन्त्सोवा ने उत्तर दिया, वह विचारों में मग्न थी : "मैं अपने को ही नहीं समझी।"

वह ब्यालू के समय तक बाहर नहीं निकली और कमरे में ही सारे समय इधर से उधर टहलती रही। उसके हाथ पीछे एक दूसरे को पकड़े हुए बंधे थे। वह कभी खिड़की के सामने, या शीशे के सामने रुकती और रूमाल से नाक पोंछती मानों वह कलंक की जलन के प्रति जागरूक हो। उसने अपने से पूछा : किस भावना ने उसे यह प्रेरणा दी कि वह बैजारोव को उसके सामने अपना दिल खोलने को उकसाये। क्या उसने किसी बात का सन्देह किया था? "यह मेरी गलती है," उसने स्वगत कहा, "लेकिन पहिले से इसे कैसे देख-समझ सकती थी?" उसके मस्तिष्क में सारी घटना घूमने लगी और बैजारोव का उद्दीप्त मुख जब वह उसकी ओर लपका था, उसकी याद से ही उसके

चेहरे पर लाली दौड़ गई, और उसे रोमांच हो आया।

"या फिर ?"...उसने एकाएक अपने घुंघराले बालों को उछालते हुए एक दम खड़ी होकर कहा,...उसने अपनी सूरत शीशे में देखी : अधखुली आंखों की रहस्यमयी मुस्कान के साथ पीछे झुकाया हुआ सिर और खुले ओंठ उसे कुछ कहते से लग रहे थे, जिसने उसे अवश सा कर दिया...और...वह संकोच का अनुभव करने लगी...

"नहीं," उसने अन्त में निश्चय किया। "ईश्वर जाने उसका क्या परिणाम हुआ होता, यह कोई मखौल का विषय नहीं है, अन्ततः शान्ति और धर्म ही संसार में सबसे मुख्य चीज है।"

उसकी शान्ति में खलल नहीं पड़ा लेकिन वह दुःखी हो गई और थोड़ा रोई भी, बिना जाने क्यों—लेकिन इसलिए नहीं कि उसने अपने को अपमानित अनुभव किया था। उसने व्यक्तिगत चोट की भावना का अनुभव नहीं किया था, बल्कि वह अपनी ही गलती के प्रति सजग थी। उसके हृदय में अनेक अस्पष्ट भावनाएं उत्पन्न हुईं अनेक वर्ष बीत जाने की भावना, किसी नई चीज की व्यग्र ललक, उसने अपनी भावनाओं को कुछ दूर तक जाने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया, और उसने देखना चाहा कि उसके आगे क्या है, और वह एक खड्ड भी न था जिसकी उसने कल्पना की थी, सिर्फ शून्य था या कुरूपता।

जब ओदिन्त्सोवा भोजन शाला में भोजन करने आई तो वह अपनी भावनाओं पर काबू पाने और सभी आग्रहों से छुटकारा पाने पर भी संकोच की जकड़न का अनुभव कर रही थी। किसी तरह भोजन तो संतोष के साथ समाप्त हुआ। पोरफे प्लाटोनिच आया और उसने अनेक घटनाओं और बातों के साथ बताया कि वह अभी शहर से वापस आया है। उसने एक खबर बताई कि गवर्नर ने अपने विशेष कमिश्नरों को आदेश दिया है कि वे घोड़ों पर किसी जल्दी के काम से भेजे जाने के अवसर पर अपने जूतों में एड़ी के कांटे* पहना करें। आर्केडी कात्या से दबी दबी सी आवाज में बातें कर रहा था और राजकुमारी की ओर नीति निपुणता से दृष्टिपात कर लेता था। बैजारोव कठोर और मुर्झाई हुई शान्त मुद्रा में बैठा रहा। ओदिन्त्सोवा ने एक या दो बार निष्कपटता से भर आँख उसकी ओर देखा, चोरी से नहीं, और उसका विकृत, दुखी चेहरा, झुकी आँखें, उसकी हर मुद्रा पर तिरस्कार पूर्ण निश्चय और विचार "नहीं...नहीं...नहीं..." लिखा हुआ था। भोजन के बाद वह सबके साथ बाग में गई और यह देख कर कि बैजारोव उससे कुछ कहना चाहता है वह एक तरफ हो कर रुक गई। वह उसके पास आया और आँखें नीची किए हुए ही उसने भर्राई आवाज से कहा :

"मुझे आपसे अवश्य क्षमा मांगनी चाहिए, अन्ना सर्जैवना, आप मुझ से निश्चय ही बड़ी नाराज होंगी।"

---

*घुड़सवार सवारी के समय अपके जूतों की एड़ी में लोहे के बने कांटे पहनते हैं जिनसे घोड़े की चाल तेज करने के लिए एड़ लगाई जाती है!

"नहीं मैं तुम से नाराज नहीं हूँ, एवजेनी वेस्लिच" ओदिन्त्सोवा ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं अत्यन्त ही दुखी हूँ।"

"यह तो और भी बुरा है। खैर, मुझे काफी सजा मिल गई है। तुम मानोगी कि मेरी स्थिति बड़ी ही दयनीय है। तुमने मुझे लिखा था: "तुम जाओगे ही" मैं नहीं रुक सकता और न रुकना ही चाहता हूं। मैं कल चला जाऊंगा।"

"ऐवजेनी वेस्लिच; क्यों..."

"मैं क्यों जा रहा हूँ?"

"नहीं, मेरा मतलब यह न था।"

"'जो बीत चुका है उसे बदला नहीं जा सकता, अन्ना सर्जेवना... और देर-सबेर वह तो होना ही था। और अन्ततः मुझे जाना ही होता। मैं सिर्फ एक शर्त पर यहाँ ठहर सकता था, लेकिन यह कभी होगी नहीं। तुम मेरी ढिढाई और निर्लज्जता को माफ करना-लेकिन तुम मुझे प्रेम नहीं करती। क्यों, है न? और न कभी करोगी?"

बैजारोव की आँखें काली भौंहों के नीचे एक बार को चमक उठीं।

अन्ना सर्जेवना ने कोई उत्तर नहीं दिया, "मैं इस आदमी से डरती हूं," उसके दिमाग में घूम गया।

"अलविदा श्रीमती जी," बैजारोव ने कहा, जैसे मानो उसके विचारों का अनुमान लग रहा हो और घर की ओर घूम कर चल पड़ा।

अन्ना सर्जेवना धीरे धीरे उसके पीछे आई और उसने कात्या को बुलाकर उसका हाथ पकड़ा। और उसे अपने बगल में ही शाम तक बैठाए रखा। उसने ताश खेलने से मना कर दिया, और अधिकतर समय वह हंसती रही हंसी जो उसके पीले सुस्तमुख पर बेतुकी लग रही थी। आर्केडी ने उसे देखा। उसने आश्चर्य किया, और साधारणतः युवक किया ही करते हैं। कहने का मतलब यह कि वह अपने से

पूछता रहा: "इस सबके क्या मानी हैं?" बैजारोव ने अपने को कमरे में बन्द कर लिया, बहरहाल वह चाय पीने आया। अन्ना सर्जेवना को उसे कुछ मधुर बात कहने की इच्छा हुई। लेकिन वह पशोपेश में थी कि कैसे इस तनाव और चुप्पी को तोड़ा जाय।

एक अयाशित घटना ने उसे कठिनाई से निकलने में सहायता पहुंचाई, खानसामे ने सिलिकोफ के आगमन की सूचना दी।

नौजवान प्रगतिशील जिस साहस के साथ कमरे में दाखिल हुआ उसका वर्णन करने की आवश्यकता है। अपनी सदैव की धृष्टता के साथ उसने उस औरत के यहाँ जाने का निश्चय किया जिसे वह नहीं के बराबर जानता था, और जिसने उसे कभी निमंत्रित भी नहीं किया था। वह कुछ इधर उधर की सुनी सुनाई बातों से ही अपने चतुर परिचितों का चित्त-विनोदन कर रहा था। वह कभी शर्माता न था, उसने न क्षमा मांगी और न बधाई दी, बस आते ही कहने लगा, मानो उसने रट रखा हो: कुकशिना ने उसे अन्ना सर्जेवना का कुशल समाचार लेने भेजा है, और कि आर्केडी निकोलेविच ने भी अपनी ऊंची राय प्रगट की है।...इस बात पर वह ऐसा हकलाया और ऐसी उलझन में फंस गया कि वह अपने ही हैट पर बैठ गया। लेकिन उसे किसी ने निकाल बाहर नहीं किया, बल्कि अन्ना सर्जेवना ने उसका परिचय अपनी मौसी और बहन से करा दिया, वह फिर जल्दी ही संभल गया और अपनी सारी योग्यता पर बकझक करता रहा। कभी कभी ऐसी ऊलजलूल बातों की भी जीवन में आवश्यकता पड़ जाती है; जब जीवन-वीणा के तार बेसुरे हो जाते हैं तो उन्हें सम पर लाने के लिए ऐसी ऊलजलूल बातें सहायक होती हैं, आत्म सन्तोषी को गम्भीर बना देती हैं या हठी भावनाओं को उसकी सगोत्रियता की याद दिलाती हैं। सिलिकोफ के आने से वातावरण कुछ सरल हुआ। हर एक ने खूब छक कर भोजन किया और हमेशा से आधा घंटा पहिले सब लोग सोने चल दिए।

"मैं अब दुहरा सकता हूं," आर्केडी ने अपने बिस्तर पर से बैजारोव से कहा, बैजारोव ने भी कपड़े उतार दिये थे, "जो तुमने मुझे एक दिन बताया था : तुम इतने दुःखी क्यों हो ? मैं सोचता हूं तुमने कोई पुण्य कार्य किया है।"

दोनों मित्रों के बीच काफी दिनों से एक दूसरे पर छींटे कसने की आदत पड़ गई थी जिससे सदैव आपस में कड़ी बात हो जाती या फिर मूक सन्देह दिलों में घर कर लेते थे।

"मैं कल अपने पिता के पास जा रहा हूँ," बैजारोव ने बताया।

आर्केडी उछल कर अपने बिस्तार पर कुहनी के बल उचक गया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और कुछ कुछ प्रसन्नता भी।

"ओह !" उसने कहा "इसी लिए तुम दुखी थे ?"

बैजारोव ने जम्हाई ली।

"उत्सुकता ने बिल्ली की हत्या कर दी।"

"और अन्ना सर्जेवना के बारे में क्या है ?" आर्केडी ने पूछा।

"भला, उसके बारे में क्या होगा ?"

"मेरा मतलब है, क्या वह तुम्हें जाने दे रही है ?"

"मुझे उससे इजाजत लेने की आवश्यकता नहीं है, है क्या ?"

आर्केडी सोचने लगा, बैजारोव अपने बिस्तर पर चला गया और दीवाल की ओर मुंह फेर कर लेट रहा।

कई मिनट तक निस्तब्धता रही।

"एवजेनी," आर्केडी ने कहा।

"क्या है ?"

"मैं भी कल जा रहा हूँ।"

बैजारोव ने कुछ भी नहीं कहा।

"मैं घर जाऊंगा," आर्केडी कहता गया। खोख्लोव की चौकी तक हम लोग साथ साथ चलेंगे और वहां फैदोत तुम्हें नए घोड़े

देगा। मैं तुम्हारे घर वालों से मिलना चाहता था लेकिन मुझे डर है कि मैं तुम लोगों के बीच बाधा न बन जाऊं। तुम हमारे यहां फिर आओगे, आओगे न?"

"मेरा सामान जो तुम्हारे यहाँ पड़ा है।"बैजारोव ने अपना बिना सिर घुमाये उत्तर दिया।

उसने यह क्यों नहीं पूछा कि मैं क्यों जा रहा हूँ? और उतना अकस्मात् जितना अकस्मात् वह जा रहा है, आर्केडी ने सोचा। भला क्यों तो मैं जा रहा हूं और क्यों वह जा रहा है? वह सोचता रहा। उसे अपनी उत्सुकता का कोई संतोषप्रद उत्तर नहीं मिला और उस का दिल कड़ुआहट से भर गया। उसने महसूस किया कि इस जीवन को जिसका वह इतना आदि हो गया है, छोड़ना भी दुःखदायी होगा। लेकिन अपने आप रहना भद्दा लगेगा। लगता है उनमें आपस में कोई काट-फांस हो गई है। उसने सोचा, उसके जाने के बाद मैं क्यों हिलगा रहूँ? मुझसे वह और परेशान हो जायगी, और सब बरबाद हो जायगा।" उसने अन्ना सर्जेवना की तस्वीर की कल्पना की, तब धीरे धीरे युवा विधवा के सुहाने दृश्य के सहारे एक दूसरी ही आकृति कल्पना में बनने लगी।

'मैं कात्या से भी बिछुड़ जाऊंगा," आर्केडी ने अपने तकिए में फुसफुसाया जिस पर उसने एक मूक आंसू टपक जाने दिया।... उसने एकाएक अपने बालों को झटका दिया और जोर से कहा:

"वह गधा सित्निकोफ यहां किस लिए आ मरा?"

बैजारोव अपने बिस्तर पर हिला डुला और बोला:

"मेरे प्रिय भाई, तुम अब भी भोले हो; मैं देखता हूं। इस संसार में सित्निकोफ जैसे लोग जरूरी हैं। क्या तुम यह नहीं देखते कि मुझे उस जैसी मोटी खोपड़ियों की जरूरत है। तुम सच ही

देवताओं से इस बात की आशा नहीं कर सकते कि वह ईंटे पकायेंगे ?

"हूंऊ," आर्केडी ने मन में सोचा और एक झटके के साथ बैजारोव के अहंकार की अतल गहराई उसके मन में आगई। "तो मैं और तुम देवता हैं या सम्भवतः तुम देवता हो और मेरा अनुमान है कि मैं मोटी खोपड़ी हूं ?"

"हां," झक्कीपन से बैजारोव ने उत्तर दिया, "तुम अब भी भोले हो।"

दूसरे दिन जब आर्केडी ने बैजारोव के साथ ही अपने जाने की बात कही तो ओदिन्त्सोवा को कोई विशेष आश्चर्य नहीं हुआ। वह मुर्झाई हुई और थकी हुई लग रही थी। कात्या ने उसे उदास गंभीरता से चुपचाप देखा; राजकुमारी जो दुशाला लपेटे बैठी थी, की ओर देखे बिना ही वह न रह सका; रहा सिलिकोफ, तो वह भी गुम-सुम बैठा था। वह अभी नया स्वच्छ सूट पहन कर खाना खाने आया था। इस बार वह पानस्लावी ढंग में न था; पिछली रात को वह अपने चमक-दमक और फैशनेबुल वस्त्रों से नौकरों को चका-चौंध में डाल गया था पर अब उनपर उसका रौब नहीं पड़ रहा था। उसने बनावटी ढंग से बात की और जंगल की पार पर खड़े चौकन्ने खरगोश की तरह बगलें झांकने लगा। और लगभग उन्मत्तता से चीखता हुआ एकाएक बोला, कि वह भी जा रहा है। ओदिन्त्सोवा ने उसे नहीं रोका।

"मेरी गाड़ी बड़ी आराम देह है," उस निकम्मे नौजवान ने आर्केडी को सम्बोधित करते हुए कहा। "तुम मेरे साथ चल सकते हो, और एवजेनी वैस्लिच तुम्हारी टमटम से जा सकते हैं। यह व्यवस्था ठीक होगी।"

"लेकिन तुम्हारा रास्ता तो बिल्कुल अलग है ? और तुम्हें बड़ा

चक्कर पड़ जायगा।"

"कोई बात नहीं; मेरे पास काफी समय है, और फिर मुझे वहाँ कुछ थोड़ा काम भी है।"

"खेती करनी है मेरे ख्याल से?" आर्केडी ने तिरस्कार भरे स्वर से कहा।

लेकिन सिलिकोफ बड़ा चिकना घड़ा था। उसपर कोई असर ही नहीं हुआ।

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मेरी बग्घी बड़ी आरामदेह है," उसने फिर कहा, "और उसमें सभी बड़े आराम से आ सकते हैं।"

"मना करके महाशय सिलिकोफ को निराश मत कीजिये।" अन्ना सर्जेवना ने सहारा दिया।

आर्केडी ने उसकी ओर देखा और अर्थपूर्णता से अपना सिर हिलाया।

भोजन के बाद अतिथि बिदा हुए। बैजारोव से बिदा लेते हुए ओदिन्त्सोवा उसके हाथ में अपना हाथ थमाते हुए बोली:

"हम लोग फिर मिलेंगे, क्यों मिलेंगे न?"

"आपकी मर्जी," बैजारोव ने उत्तर दिया।

"तो फिर हम जरुर मिलेंगे।"

आर्केडी ड्योढ़ी से पहले उत्तर आया और सिलकोफ की गाडी में बैठ गया। खानसामें ने विशेष सम्मान से उसे हाथ का सहारा दिया। जीवन के इस घाव से उसका दिल आहत था और वह रोने रोने को हो रहा था।

बैजारोव टमटम में बैठ गया। खोख्लोव की चौकी पर पहुंच कर आर्केडी ने उस समय तक प्रतीक्षा की जब तक सराय मालिक फैदोत ने घोड़े नहीं जुतवा दिए और तब टमटम तक जाकर उसने मुस्कुराते हुए बैजारोव से कहा:

"एवजेनी,मुझे अपने साथ ले चलो; मैं तुम्हारे यहां चलना चाहता हूं ?"

"आ जाओ" बैजारोव ने अपने दांतों के बीच से कहा ।

सिलिकोफ जो अपने आप ही खुश हो सीटी बजा रहा था और अपनी गाड़ी के पास आराम से टहल रहा था, इस खबर को सुनकर हांफ उठा । आर्केडी ने शान्ति से अपना सामान उसकी गाड़ी में से निकाल कर बैजारोव की गाड़ी में रख लिया और उसकी बगल में आकर बैठ गया, और विनम्रता से बाहर को झुक कर कोचवान से बोला, "चलो कोचवान !" टमटम बढ़ा दी और जल्दी ही आंखों से ओझल हो गई । सिलिकोफ ने बुरी तरह से सकपकाते हुए अपने कोचवान की ओर चोरी से देखा; लेकिन वह तो बाहिरी घोड़े की दुम पर कोड़े का तस्मा फिरा रहा था । सिलिकोफ उछल कर अपनी गाड़ी में बैठ गया और उधर से जाते हुए दो किसानों पर बुरी तरह झल्ला पड़ा : "अरे मूर्खो, अपना टोप पहनो ।"

वह शहर में दिन ढले पहुंचा । दूसरे दिन वह कुकशिना से मिला और उससे बताया कि वह उन रूप गर्वित निकम्मे देहातियों के बारे क्या सोचता है ।

टमटम में बैजारोव की बगल में बैठने के बाद आर्केडी ने अपने हाथ को जोर का झटका दिया और बड़ी देर तक चुप बैठा रहा । ऐसा लगता था कि बैजारोव ने उसकी इस चुप्पी को पसन्द किया । पिछली रात बैजारोव नाम को भी न सो पाया था, और न उसने सिगरेट ही पी थी । पिछले कई दिनों से उसने खाना भी नाम मात्र को ही खाया था । करीब करीब आंखों के ऊपर तक खिंचे हुए टोप के नीचे उसका चेहरा चुसा हुआ, रुखा और चीरा लग रहा था ।

"अच्छा, मेरे दोस्त" उसने निस्तब्धता भंग की, "आओ, एक एक चुरट ही सुलगाया जाय । जरा देखना तो, क्या मेरी जीभ पीली है ?"

"हां, कुछ है तो," आर्केडी ने उत्तर दिया।

"तो यह बात है ...और यह चुरट भी कम्बख्त फीका फीका है। शरीर की मशीन ही बिगड़ रही है।"

"वास्तव में पिछले कुछ दिनों से तुम अस्वस्थ दीख रहे हो।" आर्केडी ने कहा।

"कोई बात नहीं है, सब ठीक हो जायगा। यद्यपि मामला जरा टेढ़ा है। मेरी मां बड़ी कृपालु महिला हैं। जब तक खाते खाते तुम्हारा पेट नाद न हो जाय और दिन में दस बार न खाओ, तब तक उन्हें चैन ही नहीं आता। स्वभाव तो पिता जी का भी बुरा नहीं है। वे कई जगह घूमे हैं, और अनेक चीजें देखी हैं!...नहीं, चुरट पीने से कोई लाभ नहीं है," उसने चुरट को रास्ते की धूल में फेंकते हुए कहा।

"यहाँ से तुम्हारी जागीर पच्चीस वेर्स्ट्स् है, क्यों?" आर्केडी ने पूछा।

"हाँ, लेकिन उन हजरत से पूछो।"

उसने फेदोत के आदमी की ओर संकेत किया, जो कोचवान के पास बैठा था।

उन हजरत ने कहा; "खुदा जाने! यहाँ पर दूरी की नाप नहीं की जाती," और बाहिरी घोड़े को तिकतिकाता रहा, जिसकी प्रतिक्रिया में घोड़े ने अपने सिर को झटका दिया।

"हाँ, हाँ," बेजारोव ने बात आरम्भ रखी; "यह तुम्हारे लिए एक सबक है, सीख देने वाला सबक, मेरे दोस्त। ओफ, मुसीबत, कैसा गड़बड़ झुटाला हुआ है। हर मनुष्य एक धागे से लटका हुआ है। किसी भी क्षण एक दरार उसके पैरों के नीचे फट सकती है, और वह नाना प्रकार के झंझटों में फंस सकता है, अपने जीवन को नरक बना सकता है।"

"किस ओर संकेत है तुम्हारा ?" आर्केडी ने पूछा ।

"किसी ओर भी नहीं; मैं तो तुमसे एक सीधी सी बात कह रहा हूँ—हम दोनों ही मूर्ख बने रहे हैं । पर कहने से क्या लाभ ! मैंने अस्पताल में देखा है कि जो आदमी दर्द के मारे बेहाल हो जाता है, वह निश्चय ही उस संकट से पार हो जाता है ।"

"मेरी समझ में तुम्हारी बात ठीक ठीक नहीं आ रही है," आर्केडी ने कहा, "दिखता है तुम्हें किसी बात के बारे में कोई शिकायत नहीं है ।"

"नहीं आ रही है तो लो मैं समझाए देता हूँ : मेरी राय में किसी स्त्री को अपनी छोटी उंगली भी पकड़ने देने की अपेक्षा सड़क के किनारे पर पत्थर तोड़ना कहीं अच्छा है । यह सब—" बैजारोव अपना प्रिय शब्द 'रूमानियत' कहने जा ही रहा था, कि रुक गया और बोला : "बेकार की बकवास है । तुम मेरी बात का विश्वास नहीं करोगे, पर मैं तुम्हें बताता हूँ कि हम तुम अभी स्त्रियों की सोहबत में रह कर आए हैं और उसका सुख भी हमने उठाया है; पर उस सोहबत को छोड़ना ऐसा ही है जैसे गर्मी के दिनों में शीतल बौछार का आनन्द लेना । मनुष्य के पास ऐसी बकवासों में बर्बाद करने के लिए समय नहीं है । एक पुरानी स्पेन की कहावत है कि मनुष्य को हमेशा बिना लगाम के रहना चाहिए ।—ए, इधर तो देखो," कोचवान की सीट पर बैठे किसान को सम्बोधन करते हुए उसने पूछा, "ए चतुर आदमी, तुम्हारे बीबी है ?"

वह कृशकाय नर्म और चपटी आँखों वाला व्यक्ति हमारे मित्रों की ओर मुड़ा ।

"बीबी, आपने पूछा ? हाँ, है तो ।"

"तुम उसे मारते हो ?"

"बीबी को मारता हूं ? जैसा मौका हो। हाँ, बिना बात के नहीं मारता।"

"बहुत अच्छा करते हो। अच्छा भला, क्या वह भी कभी तुम्हें मारती है।"

आदमी ने लगाम को झटका दिया।

"आप कैसी बात करते हैं, हुजूर! आप तो मजाक कर रहे हैं—" स्पष्ट था कि उसे बुरा लगा था।

"सुनो आर्कैडी निकोलेविच! तुम्हें और मुझे आश्रय दिया गया है— शिक्षित होने की यही सहूलियत है।"

आर्कैडी को बरबस हंसी आ गई। बैजारोव ने अपना मुंह दूसरी ओर फिरा लिया, और शेष यात्रा में मूक बना रहा।

पच्चीस वैर्स्टस आर्कैडी को अच्छे खासे पचास वैर्स्टस् लगे। अन्त में एक पहाड़ी के एक ढलवान पर एक गाँव दीख पड़ा। पास ही भोजपत्र के छोटे छोटे पेड़ों के एक निकुंज में एक छोटी सी कोठी थी। उसकी छत छप्पर की थी। पहिली झोंपड़ी के दरवाजे पर दो किसान टोपी पहिने खड़े थे, "तुम बड़े सूअर हो," एक दूसरे से कह रहा था," और वैसा ही गया बीता तुम्हारा बरताव है।" "और तुम्हारी बीबी डाइन है," दूसरे ने उलट कर उत्तर दिया।

"इतने निर्बाध व्यवहार को देखकर," बैजारोव ने आर्कैडी से कहा, "और नहले पर दहले वाली मजेदार बातचीत से तुम अनुमान कर सकते हो कि मेरे पिता के किसान भी दबाए हुए नहीं हैं। वह लो, वह स्वयं ही मकान की सीढ़ियों पर से उतर रहे हैं। उन्होंने निश्चय ही घोड़ों की घंटियाँ सुन ली होंगी। हाँ, वही तो हैं, वही तो हैं—मैं उनकी आकृति पहचानता हूँ। च—च—च बेचारे के बाल सफेद हो चले हैं।"

: २० :

बैजारोव टमटम से बाहर उझका, और आर्केडी ने अपने मित्र की पीठ पीछे से कंधों के ऊपर से झाँका और लम्बे, दुबले, बाल बिखेरे, सुन्दर गरुड़वत् नाक वाले व्यक्ति को देखा। वह एक पुराना सैनिक कोट पहिने था। उसके कोट के बटन खुले थे और मकान की सीढ़ियों पर पैरों को चौड़ा किए खड़ा सूरज की ओर आंख मिचमिचाता हुआ अपना लम्बा पाइप पी रहा था।

घोड़े रुक गए।

"तुम आ ही गए आखिर," बैजारोव के पिता ने पाइप पीते हुए कहा, यद्यपि उसका पाइप उंगलियों के बीच में हिल रहा था।

"अच्छा, उतरो भी, आओ, तुम्हें प्यार तो करलूं।"

उसने अपने बेटे को आलिंगन में भर लिया—

"प्यारे एवजेनी वेस्लिच," भीतर से औरत की कांपती आवाज आई, और दरवाजा खुला जिसमे से एक वृद्धा बाहर निकली। वह सफेद टोपी और छोटी नीली जाकेट पहिने थी। वह चीखी और लड़खड़ाई; सम्भवतः गिर पड़ी होती, अगर बैजारोव ने आगे बढ़ कर उसे सम्हाला न होता। उसके मोटे और छोटे हाथ बैजारोव की गर्दन से लिपट गए, उसका सिर उसके सीने से चिपट गया।—और सब ओर निस्तब्धता थी; सिर्फ रह रह कर उठने वाली सिसकियां सुन पड़ती थीं।

बैजारोव लम्बी-लम्बी सांस ले रहा था, और उसने अनेक बार आंखें मिचकाईं।

"बस, हो गया, हो गया आरिशा। बहुत हो गया," बैजारोव के

पिता ने आर्केडी की ओर देखते हुए कहा। वह गाड़ी के सहारे चुपचाप खड़ा था। कोचवान ने अपनी आंखें फेर ली थीं; "बस हो भी गया, कृपया अब रहने भी दो।"

"आह, वेसिली एवेनिच," वृद्धा ने हकलाते हुए कहा, "युग के बाद मैंने अपने लाल को, अपने प्रिय बेटे को देखा है..." और उसे आलिंगन से अलग किए बिना ही, उसने अपना आंसुओं से तर झुर्रीदार लाल चेहरा हटाया और उसे जी भर स्निग्ध दृष्टि से देखा ...और फिर उसकी गर्दन से चिपट गई!

"अच्छा, हाँ, ठीक है, यह सब तो स्वभाविक ही है," वेसिली एवेनिच ने कहा, "लेकिन अच्छा हो, हम सब भीतर चलें। एवजेनी अपने साथ एक मित्र भी लाया है।" और आर्केडी की ओर थोड़ा घूम कर बोला, "मुझे क्षमा करना, स्त्रियोचित कमजोरी है, तुम जानते हो, आखिर माँ जो ठहरी···"

उसके ओंठ और भौंह सिकुड़े और ठुड्डी काँपी।···वह स्पष्टतः अपनी भावनाओं को वश में करने का प्रयास कर रहा था और विरक्ति का व्यर्थ बहाना बना रहा था। आर्केडी ने उसके प्रति सम्मान और विनम्रता से सिर झुकाया।

"चलो माँ," बैजारोव ने कहा और भावावेश से अवश वृद्धा को सहारा देकर घर के भीतर ले गया, और उसे आराम कुर्सी पर बैठा दिया। उसने अपने पिता से फिर एक बार आलिंगन किया और फिर उसका आर्केडी से परिचय कराया।

"तुम्हारा परिचय पाकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई," वेसिली एवेनिच ने कहा; "हमारे पास जो रूखा-सूखा है तुम्हारे स्वागत में प्रस्तुत है। हम बड़ा ही सादा जीवन व्यतीत करते हैं। एक सैनिक जीवन।···अरिना व्लासेवना अपने को शान्त भी करो अब! इतना भावुक नहीं होना चाहिए! ये महाशय तुम्हारे बारे में क्या सोचेंगे?"

"प्रिय श्रीमान्," वृद्धा ने आंसुओं से आर्द्र कंठ से हकलाते हुए कहा "मुझे तुम्हारा नाम जानने की प्रसन्नता का अवसर नहीं मिला···"

"आर्केडी निकोलेइच," वेसिली एवेनिच ने शीघ्रता से धीमी आवाज में बताया।

"मैं तुमसे माफी मांगती हूं। मैंने वास्तव में बड़ा मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया है।" वृद्धा ने नाक बजाई और दोनों की ओर बारी बारी से सिर झुका अपनी आंखें पोंछी, और बोली: "कृपया मुझे क्षमा करना। वास्तव में मैंने सोचा था कि मैं अपने प्यारे ल···ल··· लाल को देखे बिना ही मर जाऊंगी।"

"अब तो सन्तोष हो गया," वेसिली एवेनिच में कहा। "तान्या" उसने नंगे पैरों वाली एक तेरह वर्षीय बालिका से कहा जो सूती लाल फ्राक पहिने थी और दरवाजे के पीछे से सहमी हुई झांक रही थी, "मालकिन के लिए एक गिलास पानी लाओ, ट्रे में रख कर समझी? और तुम लोग," उसने बुजुर्गाना ढंग से कहा, "मुझ वृद्ध की अध्ययनशाला में चलो।"

"प्यारे एवजेनी मुझे बस एक आलिंगन और कर लेने दो," अरिना व्लासेवना ने कहा। बैजारोव उस पर झुक गया। "मेरे···तुम कितने सुन्दर हो गए हो!"

"सुन्दर है या नहीं, पर वह एक पुरुष है, जैसी कहावत है-एक मर्द का बच्चा है" वेसिली एवेनिच न सगर्व कहा। "और अब अरिना व्लासेवना मुझे आशा है कि तुम्हारा मां का दिल भर गया होगा। अब जरा तुम हमारे अतिथियों का पेट भरने का प्रबन्ध तो देखो, क्योंकि तुम जानती हो-मीठी बातों से कहीं पेट नहीं भरा करता।"

वृद्धा आराम कुर्सी से उठकर खड़ी हो गई। "चुटकी बजाते लो, वेसिली एवेनिच, अभी मेज पर खाना सजता है; मैं खुद चौके में

जाकर देखती हूं और समोवार तैयार कराती हूं,...मैं सब देख लूंगी। तीन वर्ष बाद मैंने उसे आंखों देखा है, और उसकी जरूरतों की ओर निगाह की है; क्या तुम अनुमान कर सकते हो?"

"अच्छा जाओ, उधर जाकर देखो, मेरी नन्हीं मेजबान। लेकिन देखना, कहीं हमें लज्जित न होना पड़े; और तुम लोग क्या कृपया मेरे साथ आओ। ओह, यह तिमोफेच तुम्हें शुभकामनाएं देने आया है, यूवजेनी। सम्भवत: वह भी बड़ा प्रसन्न है; बूढ़ा खूसट। एह? क्या तुम्हें प्रसन्नता नहीं है, ए बूढ़े खूसट? कृपया इधर से आओ।"

और वेसिली एवैनिच अपनी पुरानी फट चली चप्पलों को फटर-फटर करता हुआ आगे बढ़ा।

+ + +

उसके पूरे घर में छ: छोटे छोटे कमरे थे। जिस कमरे में वह अपने अतिथियों को ले गया वह अध्ययन का कमरा था।

एक भारी पायों की मेज, जो दो खिड़कियों के बीच की दीवाल की जगह को घेरे थी, पर कागजों का ढेर बिखरा था जो अरसे से जमी धूल के कारण काले और मटमैले हो गए थे। दीवालों पर टर्की हथियार, सवारी का सामान, एक तलवार, दो नक्शे, कुछ चीर-फाड़ सम्बन्धी चार्ट, हूफेलैन्ड का एक चित्र, काले चौखटे में जड़ा हुआ बालों से बुना एक मोनोग्राम और एक शीशे से मढ़ी सनद टंगी थी। किताबों की दो आलमारियों के बीच एक सोफा रखा था, जिसकी गद्दी पर चमड़ा चढ़ रहा था, जो जहां तहाँ से फट गया था और जीर्ण हो रहा था। आलमारियों में किताबें कूड़े सी भरी थीं और छोटे छोटे बक्से, जार और कांच की शीशिएं और इधर उधर का कूड़ा करकट भरा था। एक कोने में बिजली की टूटी हुई मशीन रखी थी।

"मेरे प्यारे अतिथि मैंने तुम्हें पहले ही आगाह कर दिया था," वेसिली एवैनिच ने कहना आरम्भ किया, "कि हम यहाँ कहना चाहिए पड़ाव की तरह रहते हैं..."

"ओह, छोड़िए भी। आप यह सफाई सी क्यों दे रहे हैं?" बैजारोव ने बीच में कहा। "किर्सानोव अच्छी तरह जानता है कि हम कोई धनी आदमी नहीं हैं और हमारा घर कोई महल नहीं है। हम इन्हें कहां ठहराएंगे, प्रश्न यह है?"

"क्यों, एवजेनी, बगल के हिस्से में एक सुन्दर छोटा कमरा है; तुम्हारे मित्र को उसमें आराम रहेगा।"

"अच्छा तो आपने एक नया हिस्सा बनवा लिया है?"

"जी हाँ, श्रीमान; जहां पर स्नानगृह है, श्रीमान," निमोफेच ने कहा।

"स्नानगृह के बगल में है," वेसिली एवेनिच ने जल्दी से कहा। "आजकल तो गर्मी के दिन हैं...मैं अभी वहाँ जाकर सब बन्दोबस्त ठीक ठीक करा देता हूँ, और तुम निमोफेच इसी बीच महाशय का सारा सामान ले आओ। तुम जाहिर है मेरे इस कमरे को भी इस्तेमाल करोगे एवजेनी। चलो, जल्दी करो।"

वेसिली एवेनिच के चले जाने के बाद बैजारोव ने कहा, "देखा कैसे मजेदार सीधे आदमी हैं पापा। यह तुम्हारे पापा की तरह थोड़ा झक्की हैं, लेकिन दूसरी तरह के। यद्यपि बातूनी बहुत हैं।"

"और तुम्हारी माँ बड़ी आश्चर्यजनक महिला हैं," आर्केडो ने कहा।

"हाँ, वह बड़ी सीधी और सरल हैं, चतुराई उन्हें छू तक नहीं गई है। तुम देखना वह हमें कैसा भोजन कराती हैं।"

"हम लोग आज आपकी आशा नहीं करते थे हुजूर और इसी-लिए गोश्त का प्रबन्ध नहीं किया है," निमोफेच ने कहा जो अभी बैजारोव का सूटकेस लेकर आया था।

"कोई बात नहीं काम चल जायगा; नहीं है तो न सही। न होना कोई अपराध नहीं है।"

"तुम्हारे पिता के कितने काश्तकार है ?" आर्केडी ने एकाएक पूछा।

"जागीर उनकी नहीं है, यह मां की है; जहां तक मुझे याद है, पन्द्रह।"

"ओह नहीं, सब बाइस हैं," निमोफेच ने बीच में कहा।

सलीपरों की आवाज सुनाई पड़ी और वेसिली एवेनिच आ पहुँचे।

"तुम्हारे लिए कमरा थोड़ी देर में ठीक हुआ जाता है," उन्होंने सगर्व कहा। "आर्केडी निकोलाइच ?—ठीक कहा न मैंने ? और यह रहा तुम्हारा नौकर," उसने आगे कहा, एक छोकरे की ओर इशारा करते हुए जिसकी खोपड़ी छिली हुई थी और जो एक पुरानी सी नीली फतूही पहने था जो कुहनियों पर से फटी थी और किसी और के जूते पहने था। "इसका नाम फेद्या है। मुझे दुहराने की इजाजत दीजिए, यद्यपि मेरा बेटा इसे नहीं लेगा—यह हम जो आपको दे सकते थे उनमें सब से अच्छा है। वह पाइप भर सकता है यद्यपि। आप पीते हैं, क्यों, पीते हैं न ?"

"मैं ज्यादातर सिगार पीता हूं," आर्केडी ने उत्तर दिया।

"बहुत अच्छा करते हो। मैं स्वयं भी सिगार ही पसन्द करता हूं, लेकिन इन दूरदराज की जगहों में उनका मिलना मुश्किल है।"

"आइए, और साधूपन की ये सब बातें बन्द कर दीजिए" बैजारोव फिर बीच में बोल पड़ा, "और यहां सोफा पर बैठिए और हम लोगों को अपने को जरा फिर आंख भर देख लेने दीजिए।"

वेसिली एवेनिच बैठ गया। उसका चेहरा अपने बेटे से बहुत मिलता जुलता था सिवाय इसके कि उसका माथा उतना चौड़ा न था, और उसके चेहरे पर अधिक दयालुता रहती थी जब वह चंचलता से अपना कंधा सिकोड़ता, हालांकि कि उसके कपड़े बगलों में कसे

होते थे। वह आँखें चिमधाता, गला खंखारता और उंगलियां मरोड़ता रहता, जब कि उसका बेटा विरक्त स्थिरता धारण किए रहता।

"साधू मत बनिए।" वेसिली एवेनिच ने दुहराया, "यह मत सोचो, एवजेनी, कि मैं अपने अतिथि को उत्तेजति करना चाहता हूँ, कहना चाहिए, एक तरह दया दिखाने के लिए—हम कैसे दैव-उपेक्षित स्थान में रहते हैं। इसके विपरीत मैं तो इस राय का हूँ कि एक सक्रिय प्रवृत्ति के मनुष्य के लिए कोई स्थान दैव-उपेक्षित नहीं है। मैं हर सूरत से इस बात का प्रयास करता हूं कि कीचड़ की उपज न हो जाऊं, और समय की प्रगति से जानकार रहने का भी प्रयास करता हूं।"

वेसिली इवानिच ने अपनी जेब से एक नए नीबू से रंग का रेशमी रूमाल निकाला जिसे उसने आर्केडी के कमरे में आते समय ले लिया था, और रूमाल को झुलाता रहा :

"मैं उस सत्य के बारे में कुछ नहीं कहता, मिसाल के लिए जिससे मुझे कोई कम नुकसान नहीं हुआ है, कि मैंने अपने किसानों को आध आध बटाई की हिस्सेदारी का हक दे दिया है। मैं इसे अपना कर्तव्य समझता हूं और अत्यन्त ही न्याय संगत; यद्यपि दूसरे जमींदार स्वप्न में भी इसकी कल्पना नहीं करते; मैं विज्ञान और शिक्षा का पक्षपाती हूं।"

"हाँ, मैं देखता हूं," बैजारोव ने कहा—'शायद तुम्हारे पास १८२५ का स्वास्थ्यरक्षक है ※?'

"मेरे एक दोस्त ने पुरानी दोस्ती की खातिर मेरे पास भेजा है," वेसिली एवेनिच ने जल्दी से बीच में ही कहा। "लेकिन शरीर विज्ञान के सम्बन्ध में हमें भी कुछ जानकारी है," उसने अधिकतर आर्केडी की ओर उन्मुख होते हुए एक दराज या चौखटों के बीच में रखे एक

※ स्वास्थ्य सम्बन्धी एक पत्रिका—अनु

कपाल के ढांचे की ओर संकेत करते हुए कहा ? "हम शैवलिन और रेडीमेकर से बिलकुल ही अपरिचित नहीं हैं।"

"क्या वे अब भी इस ग्यूबर्नियां में रेडीमेकर की दुहाई देते हैं ?" बैजारोव ने पूछा।

वेसिली एवेनिच ने खंखारा।

"एह—यह ग्यूबर्नियां "निश्चय ही, तुम लोग अच्छी तरह जानते हो, तुम लोग हम से आगे हो। तुम लोग आखिरकार हम लोगों के उत्तराधिकारी हो तो हो! मेरे वक्तों में हौफमैन जैसे दिल्लगी बाज या जीवआत्मावादी ब्राउन जैसे आदमी लोगों को बेहूदे और व्यर्थ के लगते थे, यद्यपि एक बार तो उन्होंने काफी धूम मचा दी थी। तुम लोगों ने एक नये व्यक्ति को खोज निकाला है जिसने रेडीमेकर को स्थानच्युत कर दिया है, और तुम लोग उसकी भक्ति करते हो, लेकिन बीस वर्ष में वह भी सम्भवतः हास्यास्पद लगने लगेगा।"

"निष्कर्ष मैं बताऊँ!" बैजारोव ने कहा: "कि साधारणतः हम औषधियों को ही हास्यास्पद समझते हैं और किसी की भक्ति नहीं करते।"

"तुम्हारा मतलब ? लेकिन तुम तो एक डाक्टर बनने जा रहे हो क्यों क्या नहीं ?

"हाँ, लेकिन उससे क्या होता है ?"

वेसिली एवेनिच ने अपनी बीच की उंगली से अपने पाइप की गर्म राख को दबाया।

"हो सकता है, हो सकता है—मैं बहस नहीं करूंगा। मैं हूं क्या आखिर ? मैंने एक सैनिक डाक्टर की हैसियत में पेन्शन पाई और अब एक किसान बन गया हूं। मैंने तुम्हारे बाबा की ब्रिगेड में काम किया है," उसने एक बार फिर आर्केडी को सम्बोधन कर कहा। "हाँ श्रीमान, मैंने अपने वक्तों में कुछ एक-आध अनुभव किए हैं। हर तरह के समाज में मिला जुला हूं और हर प्रकृति के आदमी देखे हैं!

जिस आदमी को तुम अपने सामने देख रहे हो—हाँ मैंने राजकुमार विटगेनटीन और कवि ज्हुकोवस्की जैसे व्यक्तियों की नब्ज़ पकड़ी है! वही उन लोगों की जो दक्षिणी सेना में रहे हैं, जो १४ दिसम्बर * की घटनाओं में शामिल हुए थे, तुम जानते हो," (यह कहते हुए वैसिली एवेनिच ने विशेषभाव से ओंठ दबाए)—"मैं उनमें से हर एक को जानता हूं। हांलाकि उस से मुझे कोई प्रयोजन नही था; मेरा काम तो सिर्फ चीर-फाड़ की देख भाल करना था और कुछ नहीं! लेकिन तुम्हारे बाबा तो बड़े सम्मानित व्यक्ति, एक सच्चे सैनिक थे।"

"सच मानिए, वे काठ की खोपड़ी थे," बैज़ारोव ने उदासीनता से कहा।

"अरे भले आदमी, एवजेनी, तुम कैसे शब्द इस्तेमाल करते हो! वास्तव में···निश्चय ही, जनरल किर्सानोव ऐसे लोगों में से न थे···"

"छोड़ो भी इस मसले को," बैज़ारोव ने कहा। "मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपका भोजपत्र निकुंज बड़ा अच्छा हो गया है।

वेसिली एवेनिच खिल उठा।

"और तुम देखना, कि मेरा बाग अब कितना सुन्दर हो गया है! हर पेड़ मैंने अपने हाथ से लगाया है। और उसमें फल, बेर और हर तरह की जड़ी बूटी हैं। तुम जवान लोग जो चाहे सो कह सकते हो, लेकिन पुराने पैरासेलसस् ने पवित्र सत्य कहा था: जड़ी बूटी और पत्थर में भी तासीर होती है! मैंने अपनी डाक्टरी छोड़ दी है, तुम जानते हो लेकिन हफ्ते में एक या दो दिन पुराना कचड़ा खोदना ही पड़ता है। लोग-बाग सलाह पूछने आ जाते हैं, और उन्हें ठोकर मारकर बाहर तो नहीं निकाल सकते। कभी कबार गरीब भिखमंगे इलाज के लिए आ जाते हैं। और यहां आस-पास कोई डाक्टर नहीं है।

* १४ दिसम्बर की असामयिक असफल दिसम्बरिस्ट क्रान्ति (पुराने तरह की) की, ओर संकेत—अनु

क्या विश्वास करोगे, एक पड़ोसी पेन्शनर मेजर भी इलाज करने जाता है। मैंने एक बार किसी से पूछा था कि क्या उसने कभी डाक्टरी पढ़ी है। नहीं, उन्होंने कहा, उसने नहीं पढ़ी, वह अधिकतर मुफ्त इलाज करता है'''हा ! हा ! मुफ्त ! ए ह ? क्या यह महान नहीं है ? हा–हा ! हा–हा !''

''फेद्या, मेरे लिए एक पाइप भर दो,'' बैजारोव ने तीखी आवाज से कहा।

''या एक और डाक्टर को लीजिए जो इधर मरीजों को देखने आता है'' वेसिली एवेनिच ने निराशा प्रगट करते हुए कहा, ''और जहाँ जाता है वहीं सुनता है कि मनुष्य अपने बुजुर्गों के पास पहुंच चुका है नौकर उसे घर में नहीं घुसने देता और दूरसे ही बता देता है कि अब उसकी कोई जरूरत नहीं रही है। डाक्टर सम्भवत: सकते में रह जाता है और इस पर विश्वास न करते हुए पूछता है:'' 'बताओ तो जरा, क्या तुम्हारे मालिक ने मरते समय हिचकी ली थी ?''— हां श्रीमान, उसने ली थी।—''और क्या उसने अधिक हिचकी ली थी ?—'काफी।''—'आह, आह, यह अच्छा है,'' और चला जाता है। हा हा-हा।''

वृद्ध अकेला ही हंसा; आर्केडी का मुंह भी मुस्कान से तिर्छा हो गया। बैजारोव ने सिर्फ पाइप का कश खींचा। इस तरह गपशप लगभग एक घंटे तक चलती रही; इसी बीच में आर्केडी अपने कमरे में गया था जो स्नानगृह में जाने के रास्ते का कमरा निकला, लेकिन जो साफ सुथरा था। अन्त में तान्या ने आकर बताया कि भोजन तैयार है।

वेसिली एवेनिच सबसे पहले उठा।

''आओ महाशयो ! और मैंने आप लोगों को उबाया हो तो मैं

आप लोगों से दिल से माफी मांगता हूँ। सम्भवतः मालकिन नहीं आएंगी।

× × ×

भोजन यद्यपि जल्दी में बनाया गया था, पर बड़ा अच्छा बना था और अनेक प्रकार का था, सिवाय शराब के जो पर्याप्त न थी। वह लगभग काली थी, उसे तिमोफेच ने शहर में एक जान-पहचान के दुकनदार के यहाँ से खरीदा था और उसमें से तांबे या राब की सी गंध आ रही थी; और मक्खिएं भी बड़ा तंग कर रही थीं। साधारणतः एक हरी शाख से मक्खियां उड़ाने का काम एक दास का था; लेकिन आज वेसिली एवोनिच ने उसे छुट्टी दे दी थी इस डर से कि कहीं नई पीढ़ी के ये युवक इस पर एतराज न करें। अरिना व्लासेवना में इस बीच स्फुर्ती आ गई थी, वह एक रेशमी डोरी लगी सामान्य टोपी पहने थी और आसमानी नीले रंग का कढ़ा हुआ शाल ओढ़े थी। अपने लाडले एवजेनी को देख कर वह फिर एक बार रोने लगी, लेकिन इसके पहले कि उसके पति को फिर उसे झिड़कने का अवसर मिले उसने जल्दी में अपनी आंखें पोंछ लीं ताकि शाल न भीगे। युवकों ने अकेले ही भोजन किया क्योंकि घर वालों ने पहले ही खा लिया था। फेद्या उनकी टहल में रहा जिसके बड़े जूते निश्चय ही उसे तंग कर रहे थे। एक औरत उसकी सहायता कर रही थी, जिसकी मुद्राएं पुरुषों जैसी थीं और एक आँख की कानी थी। उसका नाम अनफिसुश्का था जो घर की देखभाल, मुर्गियों की देख-भाल और धोबिन का काम करती थी। जब तक भोजन चलता रहा वेसिली एवेनिच इधर उधर टहलता रहा, उसके चेहरे पर हार्दिक प्रसन्नता का भाव झलक रहा था और नैपोलियन की नीति से प्रेरित अपने गम्भीर सन्देहों और इटालवी गड़बड़ घुटालों को प्रगट कर रहे थे। अरिना व्लासेवना ने आर्केडी की उपस्थिति की ओर ध्यान ही

न दिया, अस्तु उसके प्रति जो आदर सत्कार अपेक्षित था वह उसने न किया। वह अपनी हथेलियों पर मुंह रखे बैठी थी। मोटी चेरी के रंग के उसके ओंठ और गाल पर के मस्सों और भोंहों से सुख और दयालुता के कोमल भाव झलक रहे थे। वह निरन्तर एक टक अपने लाल की ओर देखती रही और दीर्घ श्वास लेती रही। वह यह पूछने के लिए तड़प रही थी कि वह कितने दिन ठहरेगा, लेकिन वह पूछने से डरती थी। "अगर वह कहता है दो दिन, तो क्या होगा," उसने बैठते दिल से सोचा। गोश्त भुंज जाने के बाद वेसिली इवानिच थोड़ी देर के लिए गायब हो गया और शैम्पेन की आधी बोतल के साथ लौटा। उसकी डाट खुली थी। "यहां," उसने कहा, "यद्यपि हम जंगल में रहते हैं फिर भी विशेष अवसरों पर दिल खुश करने के लिए थोड़ी बहुत रखते ही हैं।" उसने तीन टोंटी दार पात्रों और एक शराब के गिलास में शराब उंडेली और अतिथियों के स्वास्थ्य की शुभकामना की "हमारे अमूल्य अतिथियों के स्वास्थ्य की शुभ-कामना में," और एक घूंट में ही सैनिक चातुरी से सारा गिलास खाली कर दिया, और आरिना व्लासेवना को भी गिलास की अन्तिम बूंद तक समाप्त करने पर विवश किया, जब फलों का नम्बर आया तो आर्केडी ने जिसे मीठी चीजों से घृणा थी, चार विभिन्न प्रकार की ताजी पकी डेन्टीज* खाईं। बैजारोव ने उन्हें छुआ तक भी नहीं और चुरट जलाकर पीने लगा। उसके पश्चात मेज पर क्रीम मक्खन और केक के साथ चाय लगाई गई। भोजन और चाय समाप्त होने के बाद वेसिली एवेनिच ने सब को सांध्य कालीन सौन्दर्य का आनन्द लेने के लिए बाग में चलने को निमन्त्रित किया। जब वे एक बेंच के पास से गुजर रहे थे तो उसने आर्केडी से धीमे से फुसफुसाते हुए कहा: "मैं जब यहाँ से डूबते सूरज को निरखता हूँ तो थोड़ा दार्शनिक

---

*एक प्रकार का भोज्य पदार्थ—अनु

हो जाता हूँ; जो मुझ जैसे एक विरक्त मनुष्य के लिए उपयुक्त ही है ; और वहाँ आगे मैंने कुछ होरेस के प्रिय पेड़ लगाए हैं ।"

"काहे के पेड़ ?" बैजारोव ने पूछा ।

"कुछ नहीं, यही बबूल के पेड़ ।"

बैजारोव न जम्हाई ली ।

"मेरा विश्वास है कि यही समय है जब हमारे यात्री निद्रादेवी की गोद की लालसा करते हैं," वेसिली एवेनिच ने कहा ।

"यानी लौट चलने का समय हो गया है," बैजारोव ने बात स्पष्ट की ।"विचार तो अच्छा है, और वास्तव में समय हो गया है ।"

रात की बिदाई के उपलक्ष्य नमस्कार से उसने अपनी मां का ललाटी चूमा । माँ ने उसे गोद में भर लिया, और उसकी पीठ पर क्रास के तीन चिन्ह बनाते हुए उसे भूरि भूरि आशीर्वाद दिया । वेसिली एवेनिच ने आर्केडी को उसके कमरे में पहुँचाया, और शुभ-कामना प्रगट की: "जब मैं तुम्हारी सुख प्रद उमर का था, तो मैं भी शुभ प्रद नींद का सुख लेता था ।" वास्तव में आर्केडी अपने कमरे में गहरी नींद में सोया । वह स्थान सुगन्धि की खान था । अंगीठी के पीछे झींगुर लोरी गुनगुना रहा था । वेसिली एवेनिच लौट कर अपनी अध्ययन शाला में आया और सोफा पर अपने बेटे के पैरों के पास बात चीत करने के इरादे से बैठ गया । किन्तु बैजारोव ने यह कहते हुए कि वह सोना चाहता है उससे छुट्टी ली, यद्यपि वह सवेरा होने तक जागता रहा । वह अँधेरे में विस्फारित नेत्रों से क्रोध में भरा घूरता रहा । उसके लिए बचपन की स्मृति में कोई मोहकता न थी, और उसके अतिरिक्त अभी तक वह हाल के मर्मांतक प्रभावों से मुक्त नहीं हो पाया था । अरिना व्लासिवना जी भर कर भजन कर चुकने के बाद ऊनफिसुश्का से देर तक बात करती रही, जो अपनी मालकिन के सामने ऐसी खड़ी थी मानो स्थिर हो गई हो, और अपनी शून्य

आंखों से गौर से देखती हुई उसने एवजेनी वेस्लीविच के सम्बन्ध में अपने सारे विचार रहस्यमयी फुसफुसाहट के साथ कह सुनाए। खुशी, शराब और सिगरेट के धुएं से वृद्धा का माथा घूम रहा था। उसके पति ने उससे बात करने की कोशिश की पर असम्भव पा कर हार बैठा।

अरिना व्लासेवना पहिले समय की रूसी शरीफ औरत का एक सच्चा प्रतिरुप थी! उसे करीब दो सौ वर्ष पहले पुराने मास्कोवी के समय में होना चाहिए था। वह बड़ी धार्मिक, प्रभावशाली औरत थी और हर प्रकार की मान्यताओं में विश्वास करती थी—भविष्यवाणी में, जादू में, स्वप्नों में, वह मूर्खता पूर्ण उत्साहों में, भूत प्रेतों में, पिशाचों, अपशकुनों, सनीचर, देहाती दवाइयों, सोमवार और बुद्ध को मन्त्र से फुंके नमक और प्रलय में विश्वास करती थी। वह विश्वास करती थी कि अगर ईस्टर के इतवार को मोमबत्ती गिरजाघर में सन्ध्या के भजन के समय नहीं बुझ जाती तो मोठी की फसल बड़ी अच्छी होगी और कि कुकुरमुत्ता का उगना बन्द हो जाता है जब मनुष्य की आँखे उसे देख लेती हैं। वह विश्वास करती थी कि दलदल में शैतान बसता है और कि हर यहूदी लड़की की छाती पर कलंक होता है; वह चूहों से, सांपों से, मेंढकों, गौरैयों, जोंकों, बिजली की कड़क, ठंडे पानी, तूफानों, घोड़ों बकरियों, लालसिर वाले आदमियों और काली बिल्लियों से डरती थी और झींगुरों और कुत्तों को गन्दा जानवर समझती थी। न तो वह बछड़े का मांस खाती और न कबूतर, न केंकड़ा, न जंगली सेब, न पनीर, न अगस्त्य, न छुकन्दर, न खरगोश, न तरबूज क्योंकि एक कटे हुए तरबूज से उसे ब्यतिस्मा कराने वाले जोन के सिर की याद हो आती। घोंघों के बारे में वह बिना घृणा प्रगट किए बातें न कर सकती। वह अच्छे भोजन की बहुत शौकिन थी—और चहल्लुम बड़ी कठिनता से निभा पाती। वह एक-

दिन में दस घंटे सोती और अगर वेसिली एवेनिच के सिर में भी दर्द होता तो फिर अपने बिस्तर के पास भी न फटकती। उसने अलेक्सिस् या ए केबिन इन दी उडस् के अतिरिक्त कुछ न पढ़ा था। साल भर में एक या अधिक से अधिक दो खत लिखती। घर गृहस्थि की सम्भाल में कुशल थी, दवा-दारु करना, अचार मुरब्बे डालना, उन्हें सुरक्षित रखना यद्यपि खूब जानती थी, वह कोई काम कभी अपने हाथ से न करती थी और साधारणतः अस्वस्थ रहा करती थी। वह बड़ी दयालु हृदया थी, और अपने ढंग की चतुर भी थी। वह जानती थी कि इस दुनियां में मालिक रहते हैं जिनका काम आदेश देना और काम लेना है और सामान्य लोग रहते हैं जिनका काम आदेश का पालन करना और काम करना है, अस्तु वह बिना किसी द्विधा के चापलूसी और सम्मान प्रदर्शन को स्वीकार करती थी। वहउनके प्रति जो उसके यह काम करते हर प्रकार से दयालु थी। कभी उसने किसी भिखारी को खाली हाथ नहीं लौटाया और न कभी लोगों की गपशप पर एतराज किया, यद्यपि वह कभी कभी ही गपशप करना पसन्द करती थी। वह जवानी में बड़ी आकर्षक थी और वीणा बजाती थी और थोड़ी सी फ्रेंच भी बोल लेती थी; लेकिन अपने पति के परदेश-गमन के वर्षों में, जिससे उसने अपनी इच्छा के विपरीत शादी की थी, वह मोटी हो गई और संगीत तथा फ्रेंच दोनों ही भूल गई। वह अपने बेटे को शब्दातीत प्यार करती थी, और उससे डरती भी थी। जागीर की व्यवस्था उसने वेसिली एवेनिच पर छोड़ दी थी—और उस ओर से अब बिलकुल भी अपने मस्तिष्क को परेशान न करती थी: जब कभी उसका बूढ़ा पति हाल में होने वाले सुधारों की और अपनी योजनाओं की बात छेड़ता जिससे उसकी भौंहें व्यग्र आश्चर्यसे तन जातीं तो वह सिर्फ दुख से कराहती और अपने रुमाल के इशारे से उसे रोक देती। काल्पनिक भयों से उसे बड़ी पीड़ा होती थी। वह सदैव किसी

भयानक दुर्घटना होने की बात सोचती रहती और किसी दुखद बात के विचार मात्र से ही बड़ी जल्दी रोने लगती थी...आज कल ऐसी औरतें बिरली ही हैं। ईश्वर ही जाने-कि यह कुछ ऐसी बात है जिस पर प्रसन्न होना चाहिए, या नहीं !

: २१ :

बिस्तर से उठने पर आर्केडी ने खिड़की खोली—और उसकी पहली दृष्टि वेसिली एवेनिच पर पड़ी। वह बुखारा का ड्रेसिंग गाउन पहिने था, और एक बड़े रूमाल की पेटी बांध रखी थी। वृद्ध बाग में बागबानी कर रहा था। अपने युवा अतिथि को देखकर उसने अपने फावड़े पर झुकते हुए पुकारा :

"नमस्कार श्रीमान ! खूब सोए ?"

"खूब," आर्केडी ने उत्तर दिया।

"और मैं, तुम तो देख ही रहे हो, यहाँ भूत की तरह काम कर रहा हूँ, अपने शलगमों के लिए जमीन साफ करने में जुटा हूँ। अब समय ऐसा आ गया है—और मैं तो ईश्वर को इसके लिए धन्यवाद देता हूं—जब कि हर एक को अपने हाथों से स्वयं कमाना चाहिए। और इसलिए जान पड़ता है जीन जेक्स रूसो सही था। आध घन्टे पहिले, मेरे प्रिय श्रीमान, तुमने मुझे बिल्कुल दूसरी स्थिति में पाया होता। एक किसान औरत को, जिसे पेचिश थी, मैंने अफीम का एक इन्जेक्शन लगाया, और एक दूसरी औरत का दाँत निकाला। मैंने उससे दवा लगवाने को कहा पर वह राजी न हुई। मैं यह सब मुफ्त करता हूं—ऐसे ही ! यह सब कुछ मेरे लिए नया नहीं है, यद्यपि;

मैं, तुम जानते हो कुलीन नहीं हूं और न अपनी पत्नी की तरह खानदानी ही हूं।...क्या तुम यहाँ बाहर छांह में नाश्ते से पहिले ताजी हवा खाना पसन्द करोगे ?"

आर्केडी बाहर उसके पास आ गया।

"एक बार फिर तुम्हारा स्वागत," वेसिली एवेनिच ने अपनी चीकट टोपी को छूते हुए कहा और सैनिक ढंग से नमस्कार किया। "तुम विलास और आराम के आदी हो, मैं जानता हूँ पर इस संसार के बड़े आदमी भी कुछ समय के लिए झोंपड़ी का सुख प्राप्त करने के इच्छुक होंगे।"

"क्या गजब है!" आर्केडी ने व्यग्र होते हुए कहा, "भला मैं कब से इस संसार के बड़ों में शुमार होने लगा। और न मैं विलासी जीवन का ही आदी हूं।

"मुझे यह बताने की जरूरत नहीं है," वेसिली एवेनिच ने सौजन्यता से दाँत निकालते हुए उसे रोका। "मैं अब भले ही दौड़ में पिछड़ गया हूं, लेकिन मैंने भी थोड़ी दुनिया देखी है; मैं उड़ती चिड़िया भांप सकता हूं। मैं अपने तरह का थोड़ा मनोविज्ञानी भी हूं और ज्योतिषी भी। मैं उसे ईश्वरी देन समझता हूं। अगर ऐसा न होता तो बहुत पहिले ही मेरा विनाश हो गया होता, मुझ जैसे छोटे आदमी का अड़दम में आ जाना बड़ी बात नहीं है। मैं तुमसे स्पष्ट ही कहता हूं कि मुझे तुम्हारी और मेरे बेटे की दोस्ती बड़ा और वास्तविक सुख देती है। मैंने अभी उसे देखा है। वह हमेशा की तरह बहुत तड़के उठा है, और घूमने निकल गया है। तुम तो सम्भवतः उसकी इस आदत से परिचित होंगे। मेरी जिज्ञासा के लिए क्षमा करना, क्या तुम उसे काफी दिनों से जानते हो ?"

"पिछले जाड़ों से।"

"हूं," क्या मैं यह और पूछ सकता हूं—लेकिन तुम बैठ क्यों नहीं जाते? क्या मैं एक पिता के नाते पूछ सकता हूं—देखो साफ-साफ बताना मेरे एवजेनी के बारे में तम्हारी क्या राय है?"

"मैं जिन विशिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क में आया हूं उनमें से आप का बेटा एक है," आर्केडी ने साफ साफ कहा।

वेसिली एवेनिच की आंखें विस्फारित हो गईं और उसके गालों पर एक हल्की सी रंगत दौड़ गई।...और फावड़ा उसके हाथों से छूट गया।

"तो आप विश्वास करते हैं..." उसने करना आरम्भ किया...।

"मुझे विश्वास है," आर्केडी ने जल्दी से कहना आरम्भ किया, "कि आपके बेटे का भविष्य महान और उज्वल है, और वह निश्चय ही आपका नाम उजागर करेगा। जब पहिले-पहल हमारी उनकी भेंट हुई थी तभी मुझे इसका विश्वास हो गया था।"

"कैसे...यह सब कैसे हुआ?" वेसिली एवेनिच हांफते हुए हकलाया। उसका चौड़ा मुंह अत्यन्त प्रसन्नता से खुल गया।

"तो आप जानना चाहते हैं कि हमारी भेंट कैसे हुई?"

"हाँ...और साधारणतः..."

आर्केडी, जिस ऊष्मा और जोश के साथ उसने एक बार ओदिन्त्सोवा का उसके साथ नाचते समय बेज़ारोव के सम्बन्ध में बताया था उससे भी अधिक ऊष्मा और जोश के साथ अब उसके सम्बन्ध में बताने लगा।

वेसिली एवेनिच बैठा तल्लीनता से सुनता रहा। उसने अपनी नाक छिनकी, अपनी हथेली के बीच रूमाल लपेटा, खखारा, अपने बाल फड़फड़ाए और अधिक समय तक अपने को रोक सकने में असमर्थ हो वह आर्केडी पर झुक गया और उसके कंधे चूम लिये।

"मैं बयान नहीं कर सकता कि तुमने मुझे कितना सुख पहुँचाया है," उसने मुस्कुराते हुए कहा; "मैं तुम्हें जताना चाहता हूं कि मैं... अपने बेटे से अतिशय प्रेम करता हूं; मैं अपनी बूढ़ी के बारे में कुछ नहीं कहता, निश्चय ही, वह एक माँ है—और वहां सारी भावनाएं सवाक हो जाती हैं। लेकिन मैं उसके सामने अपनी भावनाओं को प्रगट करने का साहस नहीं कर सकता, वह इसे पसन्द नहीं करता। उसे प्रेम के हर दिखावे से घृणा है, बहुत से आदमी उसकी इस कठोरता को गलत बताते हैं। वे इसे अहंकार या नासमझी कहते है, लेकिन उस जैसे आदमी साधारण मापदंड से नहीं तौले जाने चाहिएं। क्या तुम ऐसा नहीं समझते? अच्छा, मिसाल के लिए: उसकी जगह पर अगर कोई और होता तो वह अपने माँ-बाप की गर्दन में मील का पत्थर बन जाता, पर उसने, विश्वास करो या न करो, मैं कसम खाकर कहता हूं एक पैसा भी कभी अधिक नहीं लिया।"

"वह ईमानदार और निस्वार्थी आदमी है," आर्केडी ने कहा।

"निस्वार्थी—बिल्कुल ठीक है। रही मेरी बात, आर्केडी निकोलेइच, मैं उसे सिर्फ प्यार ही नहीं करता, मुझे उस पर गर्व भी है, और मेरी एक मात्र कामना है कि एक दिन उसके जीवन चरित्र में निम्नलिखित शब्द लिखे जांय: कि एक सामान्य सैनिक डाक्टर का बेटा, जिसने बचपन में ही उसके उज्वल भविष्य को समझ कर, जो भी हो, उसकी शिक्षा के लिए कुछ उठा नहीं रखा . "

वृद्ध की आवाज लड़खड़ा गई।

आर्केडी ने अपने हाथ दबाए।

"आप क्या सोचते हैं," वेसिली एवेनिच ने थोड़ी देर शान्त रह कर पूछा, "आप उसके लिए जिस प्रसिद्धि की घोषणा करते हैं वह क्या डाक्टरी क्षेत्र में नहीं है, या है?"

"निश्चय ही डाक्टरी में नहीं है, यद्यपि इस क्षेत्र में भी वह

विशेष सम्मान प्राप्त करेगा।"

"तो आप कौन सा क्षेत्र समझते हैं, आर्केडी निकोलेइच?"

"यह अभी से कहना मुश्किल है, लेकिन प्रसिद्ध होगा।"

"वह प्रसिद्ध होगा।" "वृद्ध ने दुहराया और विचारों में खो गया।

"अरिना व्लासिवना आपको नाश्ते के लिये बुला रही है," अनफिसुश्का ने पकी रसभरियों से भरी बड़ी थाली ले जाते हुए कहा।

वेसिली एवेनिच चल दिया।

"क्या रसभरियों के साथ ठंडी की हुई क्रीम होगी?"

"जी हाँ, श्रीमान्।"

"वैसे तो यह भी ठंडी है। तकल्लुफ में मत खड़े रहो, आर्केडी निकोलेइच, खुद मदद करो अपनी। एवजेनी इतनी देर से जाने कहाँ है?"

"मैं यह रहा," बैजारोव ने आर्केडी के कमरे से जवाब दिया।

वेसिली एवेनिच जल्दी से घूमा।

"आहा! मैंने सोचा था कि तुम अपने मित्र से मिलोगे, पर तुम तो लेट हो गये। हम लोग आपस में बड़ी देर से गपशप कर रहे हैं। अब हम चलें चलकर नाश्ता करें——तुम्हारी माँ हम लोगों की प्रतीक्षा कर रही होगी। मैं तुमसे जरा बात करना चाहता था।"

"किस सम्बन्ध में?"

"यहाँ एक किसान है, जिसे कमलवाह हो गया है..."

"पीलिया?"

"हाँ, बड़ा पुराना और बिगड़ा हुआ रोगी है। मैंने उसे सनटौरी औ सेन्ट जौह्न का मिक्सचर पीने को बताया है; और गाजर खाने को बताई हैं, और सोडा भी दिया है;लेकिन यह सब तो सामयिक उपचार है, कुछ और जोरदार चीज दी जानी चाहिए। यद्यपि तुम दवाओं

का मजाक उड़ाते हो, फिर भी मुझे आशा है कि तुम मुझे कुछ ठोस सलाह दोगे। लेकिन इस पर फिर बाद में बात कर लेंगे; अभी तो चलो, चलकर हम लोग नाश्ता करें।"

वेसिली एवेनिच प्रसन्नतापूर्ण स्फूर्ति से उठा और रौबर्ट ले डायबल से एक गीत गुनगुनाने लगा।

"आश्चर्य जनक, उनमें अब भी कितनी शक्ति है।" खिड़की से हटते हुए बैजारोव ने कहा।

× × ×

दुपहर का समय था। सूरज सफेद धूमिल बादलों के झीने घूंघट के भीतर से चमक रहा था। हर चीज पर निस्तब्धता व्याप्त थी; सिर्फ मुर्गे गांव में कुकड़ूकूं कर रहे थे, और अजीब सुस्ती और उबासी की भावना उत्पन्न कर रहे थे; और कहीं ऊंचे पर पेड़ों की चोटियों पर बाज का एक बच्चा सतत् रूप से विलाप की सी आवाज में बोल रहा था। आर्केडी और बैजारोव एक छोटे से घास के ढेर की छाया में लेटे थे; उन्होंने अपने नीचे एक या दो कौरी भर कर गुदगुदी घास बिछा ली थी। घास सभी हरी थी और उसमें से सोंधी सुगन्ध आ रही थी।

"वह आसपिन पेड़," बैजारोव ने कहना आरम्भ किया "मुझे मेरे बचपन की याद दिला देता है; वह एक गढ़े के किनारे पर खड़ा है जहां पर ईंटों की एक खत्ती थी; और बचपन में मुझे विश्वास था कि गढ़े और पेड़ दोनों में कोई विशेष जादू है, मैं उनके पास कभी ऊबता न था। तब मैं नहीं समझता था कि मैं सिर्फ इसलिए नहीं ऊबता, क्योंकि मैं एक बच्चा था। और अब मैं बड़ा हो गया हूं और जादू काम नहीं करता।"

"तुम यहाँ कुल कितने दिन रहे हो?" आर्केडी ने पूछा।

"निरन्तर दो साल; फिर हम बीच में कभी कभी आ जाते थे;

हमारा जीवन असंगत घुमक्कड़ का जीवन रहा है अधिकतर हम लोग शहर शहर मारे मारे फिरते रहे हैं।"

"और क्या मकान तभी से बना हुआ है?"

"हाँ, बहुत दिनों से। यह नाना के जमाने में बना था।"

"तुम्हारे नाना कौन थे?"

"शैतान जाने। सेकेन्ड मेजर थे, उन्होंने सुवोरोव के नीचे काम किया था, और आल्पस पर्वत के अभियान की कहानियां सुनाते थे।"

"अच्छा इसलिए बरामदे में सुवोरोव का फोटो टंगा है। लेकिन मैं छोटे मकान पसन्द करता हूं जैसा तुम्हारा है, पुराना सुखप्रद, अपनी एक विशेष गंध लिए हुए।"

"लैम्प के तेल और मेलीलौट* की गंध," जम्हाई लेते हुए बैजारोव ने कहा। "और इन प्यारे छोटे मकानों में मक्खियां हैं...सो!"

"मैं पूछता हूँ;" थोड़ी देर की चुप्पी के बाद आर्केडी ने कहा, "क्या तुम बचपन में ठीक से नहीं पाले गये थे?"

"तुम देखते ही हो मेरे मां-बाप कैसे हैं। उन्हें सख्त तो नहीं कहा जा सकता, कह सकते हो क्या?"

"क्या तुम उन्हें प्यार करते हो, एवजेनी?"

"करता हूं, आर्केडी!"

"वे तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।"

बैजारोव चुप था।

"क्या तुम जानते हो मैं क्या सोच रहा हूं? "फिर उसने अपने सिर के पीछे हाथ बांधते हुए कहा।

"नहीं, क्या है?"

"मैं सोच रहा था: मेरे घर वाले इस दुनिया में अपने अच्छे दिन

---

* एक दुर्गन्ध पूर्ण घास का पौधा—अनु।

बिता रहे हैं। मेरे पिता करीब साठ के हैं, और चारों ओर 'शान्ति दायक' सामयिक उपचारों की बात करते हैं, बीमार आदमियों का इलाज करते हैं, किसानों से दयालुता का व्यवहार करते हैं और मजे में उनकी जिन्दगी के दिन सुख से बीत रहे हैं; माँ भी सुखी है; वह दिन भर अपने कामों में इतनी व्यस्त रहती हैं कि उन्हें दुनियां के रोने-धोने के बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं है; जब कि मैं..."

"क्या जब कि मैं...?"

"मैं सोच रहा हूं...यहाँ मैं घास के ढेर की साया में लेटा हूं। ...छोटा सा स्थान जिसे मैं घेरे हूँ शेष स्थान की तुलना में, जहाँ मैं नहीं हूं, जहाँ धब्बा बराबर भी कोई मेरी चिन्ता नहीं करता, कितना अधिक सूक्ष्म है; और मेरे जीवन का छोटा सा विस्तार इस अनन्त में, जहां मैं कभी नहीं जा सका और न जा सकूंगा, अत्यन्त छोटा सा बिन्दु है।...फिर भी उस अणु में, गणित-बिन्दु में रुधिर का संचार होता है, मस्तिष्क अपना काम करता है, अभिलाषाओं की ज्योति जलती है।...कितना विलक्षण है। कितना असंगत।"

"पर यह कोई निराली बात तो नहीं। सभी के साथ ऐसा ही होता है, समझे..."

"तुम ठीक कहते हो," बैजारोव ने कहा, "मैं जो कुछ कहना चाहता था वह यह कि वे, यानी मेरे मां बाप यहां व्यस्त रहते हैं और अपनी तुच्छता के बारे में चिन्ता ही नहीं करते, वह उनके मन को कचोटती ही नहीं...जब कि मैं...मैं परेशान हो गया हूं और मुझे कोफ्त हो रही है।"

"कोफ्त हो रही है? लेकिन भला क्यों?"

"क्यों? तुम पूछते हो क्यों? क्या तुम भूल गये?"

"मैं भूला तो कुछ भी नहीं हूं; लेकिन फिर भी मैं नहीं समझता

कि उसमें तुम्हें कोफ्त होने की कोई बात है। तुम दुखी हो, मैं मानता हूँ, लेकिन..."

"ओह, आर्केडी, मैं देखता हूं कि प्रेम के सम्बन्ध में तुम्हारे विचार भी आधुनिक युवकों की ही तरह के हैं—पुः-पुः-पुः नन्हीं मुर्गी, और जैसे ही चिड़िया जवाब देने लगी वैसे ही दामन छुड़ा कर अलग हो जाते हो। मैं उस तरह का नहीं हूँ। लेकिन बहुत हो लिया।"

"अब क्या हो सकता है। बातों से अब उसे नहीं सुधारा जा सकता।" उसने करवट ली। "आह! यह है एक पुष्ट और साहसी नन्ही चींटी; अर्धमृत मक्खी को खींचे लिए जा रही है। खींचे चलो नन्हे प्राणी, खींचे चलो! उसकी ठोकरों की परवाह मत करो। एक पशु के नाते करुणा की हर भावना का तिरस्कार करने के लिए अपने हर अधिकार का उपयोग करो। हम स्वहताश मनुष्यों की तरह हार मत मानना!"

"एवजेनी, तुम्हें तो यह और भी शोभा नहीं देता! तुम निराश कब से हो गए?"

बैजारोव ने अपना सिर उठाया।

"यही तो एक बात है जिसका मुझे गर्व है। मैंने कभी अपने को टूटने नहीं दिया, और स्त्रियों की कोई चीज मुझे नहीं तोड़ सकती। वह बात हुई और खतम हो गई। तुम उसके बारे में मुझ से अब एक शब्द भी नहीं सुनोगे।"

दोनों ही कुछ समय तक चुप पड़े रहे।

"हाँ," बैजारोव ने आरम्भ किया, "आदमी एक अजीबो-गरीब जानवर है। जब तुम एकाकी जिन्दगियों पर जो हमारे पूर्वजों ने यहां बिताई हैं दूर से देखो तो तुम आश्चर्य करोगे; कोई इससे और अधिक क्या तमन्ना कर सकता है? खाओ, पीओ और जानो कि जो कुछ तुम

कर रहे हो, वह सब सही और समुचित है। लेकिन नहीं, मानसिक निरुत्साह के शिकार हो जाते हो। तुम लोगों को जीतने का प्रयत्न करना चाहते हो। अगर सिर्फ उन्हें झिड़कना और ताना ही मारना है—तो ठीक है जीतने का ही प्रयत्न करो।"

"जीवन इस रूप में व्यवस्थित होना चाहिए कि उसका हर क्षण मूल्यवान और महत्व का हो," आर्केडी ने विचार पूर्वक कहा।

"ठीक ही तो है! मूल्यवान, यद्यपि कभी कभी यह झूठा भी हो सकता है, मीठा है, और कोई भी तुच्छता के साथ रह सकता है··· लेकिन यह छोटे छोटे संघर्ष, छोटे छोटे संघर्ष···यही तो मुश्किल है।"

'ये छोटे छोटे संघर्ष एक आदमी के लिए कोई अस्तित्व नहीं रखते अगर वह उन्हें नहीं मानना चाहता।"

"हूँ···तुमने जो कहा वह उलटी और सामान्य अनर्थक बात है।

"एह? इससे तुम्हारा मतलब क्या है?"

"सिर्फ यह मिसाल के लिए यह कहना कि शिक्षा उपयोगी चीज है, यह है अनर्थक बात; लेकिन यह कहना कि शिक्षा नुकसानदेह है, उलटी अनर्थक वार्ता है। लेकिन असल में दोनों बात एक ही है।

"लेकिन सत्य कहां है?"

"कहां है? मैं इसके जवाब में यही सवाल करूंगा कहाँ है?"

"तुम आज कुछ चिन्ताग्रस्त मूड में है, एवजेनी।"

"क्या मैं? सम्भवतः सूरज के कारण, और फिर बहुत ज्यादा रसभरी खा लेना भी बुरा है।"

"तो फिर थोड़ा सा सो लेने के बारे में तुम्हारी क्या राय है!" आर्केडी ने पूछा।

"अच्छी बात है; लेकिन मेरी ओर देखना मत, आदमी आम तौर पर जब सोया होता है तो मूर्ख लगता है।"

"क्या तुम अपने बारे में लोगों के सोचने की परवाह करते हो?"

"मैं नहीं जानता कि क्या कहूं। जो वास्तव में एक आदमी है उसे तो नहीं करनी चाहिए; जो वास्तव पुरुष है उसके बारे में लोग बाग नहीं सोचते, या तो उसके आदेशों का पालन होता है या फिर उससे घृणा की जाती है।"

"अजीब बात है! मैं तो किसी से घृणा नहीं करता," थोड़ी देर तक देखते रहने के बाद आर्केडी ने कहा।

"और मैं करता हूं, बहुतों को। तुम कोमल हृदय हो, बिना रीढ़ के आदमी, तुम किसी से घृणा नहीं कर सकते!···तुम बहुत संकोची हो, तुम्हारे अन्दर पर्याप्त आत्मविश्वास नहीं है · "

"और तुम," आर्केडी ने बीच में टोका, "आत्मविश्वासी हो, मैं समझता हूँ? तुम्हारी अपने बारे में बड़ी ऊंची राय है, नहीं है क्या?"

बैजारोव ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया।

"जब मेरी ऐसे आदमी से भेंट होगी जो मेरे विरोध में अपनी मान्यताओं पर स्थिर रह सके," उसने धीरे धीरे कहना आरम्भ किया, "तो मैं अपने बारे में अपनी राय बदल दूंगा। घृणा? क्यों? मिसाल के लिए जब आज हम अपने सहकारी अमीन फिलिप की झोंपड़ी के पास से गुजर रहे थे—वह बड़ी सुन्दर और सफेद झोंपड़ी है—वहां तुमने कहा था कि जब देश को निम्नतमश्रेणी के किसान के पास रहने के लिए ऐसी ही झोपड़ियां हो जायंगी तो रूस एक समर्थ सम्पन्न देश हो जायगा; और हम में से हर एक को वह स्थिति लाने में सहयोग देना चाहिए।—लेकिन मैं उस निम्नतम किसान से घृणा करने लगा हूँ। उस फिलिप और सिदौर तथा अन्यों से, जिनके लिए मुझ से मेहनत करने की आशा की जाती है कि वे धन्यवाद भी दें—और मैं उनका धन्यवाद चाहता क्यों हूँ? ठीक है, क्या हुआ अगर वह सफेद झोपड़ी में रहता है, जब कि मैं

नरक में जीवन बिताऊंगा ! तो हुआ क्या इससे ?"

"ओह एवजेनी, आज तुम्हारी बातें सुनकर कोई उन लोगों से सहमत होने को तत्पर हो जायगा जो हमारे ऊपर सिद्धान्तहीनता का दोष मढ़ते हैं।"

"तुम अपने चाचा की तरह बात करते हो। साधारणतः कहा जाय तो कोई सिद्धान्त ही नहीं होता—तुम अभी तक इसे समझ क्यों नहीं पाए।—केवल उद्वेगानुभव होते हैं। हर चीज उन्ही पर निर्भर करती है।

"यह निश्कर्ष तुम कैसे निकालते हो ?"

"साधारण सी बात है। मुझी को लो मिसाल के लिए : मेरी मनोवृत्ति नकारात्मक है—मुझ में उद्वेग ही ऐसा है ! मैं नकारात्मकता को पसन्द करता हूँ। मेरा मस्तिष्क उसी ढंग का बना है—बस ! मैं कैमिस्ट्री क्यों पसन्द करता हूँ ? तुम सेब क्यों पसन्द करते हो ? यह सब उद्वेगानुभूति का मामला है। यह सब एक ही चीज है। लोग-बाग इससे अधिक गहराई में कभी नहीं जायेंगे। हर आदमी तुम्हें नहीं बताएगा, और मुझे भी तुम फिर कभी यह कहते नहीं पाओगे।"

"अच्छा, क्या ईमानदारी भी उद्वेगानुभूति है ?"

"सम्भवतः !"

"एवजेनी !" आर्केडी ने अनुताप से कहना आरम्भ किया।

"ऐं ? क्या ? क्या पसन्द नहीं ?" बैजारोव ने बीच में ही कहा।

"नहीं श्रीमान ! एक बार अगर तुमने हर बात की जड़ काटने का निश्चय कर लिया तो फिर पूरी ताकत लगानी होगी। लेकिन यह तो तत्वनिरुपणीकरण होगा। पुश्किन ने कहा है; 'प्रकृति निद्रा की शान्ति का दान करती है।"

"उसने यह कभी नहीं कहा," आर्केडी ने विरोध किया।

"अगर नहीं कहा, तो कह सकता था, और एक कवि होने के नाते उसे कहना ही चाहिए था। उसने सेना में अवश्य काम किया होगा।"

"पुश्किन कभी सैनिक न था।"

"लेकिन, मेरे प्रिय दोस्त, लगभग हर पृष्ठ पर उसने लिखा है: "रूस के गौरव की रक्षा के लिए रणभूमि में चलो, रणभूमि में चलो।"

"तुम तो मजाक कर रहे हो। यह तो वास्तव में किसी को बदनाम करना है।"

"बदनाम? छिः! तुम इस शब्द से मुझे डरा नहीं सकते। चाहे जितना अधिक हम व्यक्ति को बदनाम कर लें, वह वास्तव में उससे बीस गुना अधिक की अपेक्षा करता है।"

"अच्छा हो हम लोग सो लें!" आर्केडी ने नाराज होते हुए कहा।

"बहुत खुशी से," बैजारोव ने प्रति उत्तर दिया।

लेकिन दोनों में से कोई भी नहीं सो सका। दोनों जवानों के हृदय में लगभग घृणा की भावना घर कर गई थी। पांच मिनट बाद उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और निस्तब्धता में ही दोनों की आँखें चार हुईं।

"देखो," आर्केडी ने एकाएक कहा, "एक सूखी मैपल पेड़ की पत्ती फड़फड़ाती हुई जमीन पर गिर रही है; उसकी क्रियाएं ठीक तितली की उड़ान के सदृश्य ही हैं। क्या यह ताज्जुब की बात नहीं है? एक चीज जो इतनी दुखी और मृत है उस चीज से कितनी मिलती है जो सजीव और प्रसन्न है।"

"ओ, मेरे दोस्त, आर्केडी निकोलेइच!" बैजारोव ने कहा," मैं तुमसे एक बात चाहता हूँ मीठा मत बोलो।"

"अपने भरसक तो ठीक ही बोल रहा हूँ।—मैं कहने पर विवश

हूँ कि यह तुम्हारी निरंकुशता और हठधर्मी है। अगर एक विचार मेरे दिल में पैदा हुआ है तो मैं उसे क्यों न प्रगट करूं ?"

"बहुत अच्छा है; लेकिन मैं भी अपना क्यों न अभिव्यक्त करूं। मैं विश्वास करता हूँ कि मीठा बोलना अभद्र है।

"तब फिर भद्र क्या है भला ? कसम खाना ?

"आह ! मैं देखता हूँ कि तुमने अपने चाचा के चरण चिन्हों पर चलने का निश्चय कर लिया है। वह मूर्ख तुम्हें सुन कर कितना प्रसन्न होगा।"

"क्या कहा तुमने पैवेल पैट्रोविच के लिए ?"

"मैंने ठीक ही कहा—एक मूर्ख।"

"लेकिन यह असह्य है !"आर्केडी ने कहा।

"ओहो ! खून बोल उठा," बैजारोव ने उपेक्षा से कहा। "मैंने देखा है कि लोगों में यह भावना बड़ी बलवती होती है। मनुष्य हर चीज का त्याग करने को तैयार हो जाता है, और हर पूर्वाग्रह छोड़ देता है; मिसाल के लिए सिवाय यह मानने के, कि उसका भाई जो रुमाल चुराता है, एक चोर है, यह उसके बस के बाहर की बात है। निश्चय ही मेरा भाई, मेरा ! वह एक प्रतिभा शाली व्यक्ति नहीं है !! यह कैसे हो सकता है ?"

"यह एक साधारण न्याय की भावना थी, जिसने मुझे बोलने को प्रेरित किया, और खून की एकता की बात बिलकुल नहीं है," आर्केडी ने झुंझलाते हुए कहा। "लेकिन तुम उसे नहीं समझते क्योंकि तुम्हारे अन्दर अनुभूति नहीं है।तुम उसके जज नहीं हो सकते।"

"दूसरे शब्दों में, आर्केडी किर्सानोव का दिमाग मेरी समझ से ऊपर की चीज है मैं सिर्फ घुटने टेकता हूँ बकवास करता हूं और कुछ भी नहीं कहता !"

"छोड़ो एवजेनी; हमारी बातों का अन्त झगड़े में होगा।"

"आर्केडी, मैं कहता हूँ एक बार आपस में अच्छी तरह झगड़ा हो लेने दो—हाँ जी जान से।"

"उसका अन्त तो सम्भवत:—"

"हाथा-पाई पर होगा?" बैजारोव उत्सुकता से बीच में बोल उठा। "तो क्या हुआ? यहाँ इस घास पर, इस सुन्दर वातावरण में, दुनिया और मनुष्यों की आंखों से दूर—विचार तो बुरा नहीं है। लेकिन मेरा तुम्हारा कोई मुकाबिला नहीं है। मैं तो तुम्हें गर्दन पकड़ कर धर दबोचूंगा—"

बैजारोव ने अपना लम्बा बलिष्ट पंजा फैलाया···आर्केडी उसे मजाक में लेते हुए घूम गया और बचाव को उद्यत हो गया,···लेकिन अपने मित्र का चेहरा उसे बड़ा कुरूप लग रहा था, उसके ओंठों पर कटुता था और उसकी चमकती आंखों में ऐसी दुष्टता थी कि आर्केडी बेचारा भय से सिकुड़ गया।···

"ओह! तो तुम लोग यहाँ छिपे हो!" उसी समय वेसिली इवानिच की आवाज आई। बूढ़ा सैनिक डाक्टर घर की बुनी जाकेट और घर का बना फूस का हैट पहने था। "और मैं तमाम जगह तुम लोगों को ढूंढता फिरा। तुमने बड़ी बढ़िया जगह ढूंढ़ी है और वैसा ही अच्छी काराम भी। 'धरती' पर लेटना और 'आकाश' देखना...क्या कोई खास बात है!"

"जब मैं छींकने को होता हूं तभी सिर्फ आकाश की ओर देखता हूं," बैजारोव ने टर्राते हुए कहा, और अर्केडी के ओर घूम कर धीरे से बोला," बड़ा दुख है, इन्होंने हमारे बीच बाधा डाल दी।

"चलो तुम आगे बढ़ो," आर्केडी फुसफुसाया और अपने मित्र का हाथ दबाते हुए बोला," लेकिन कोई दोस्ती अधिक दिनों तक इस तरह की टक्करों को सहन नहीं करेगी।"

"जब मैं तुम दोनो जवान दोस्तों को देखता हूं," वेसिली इवा-

निच कहता गया वह सिर हिलाता रहा और अपनी स्वनिर्मित ऐंठदार छड़ी की तुर्क की खोपड़ीनुमा मूठ पर ऊपर हाथ धरे खड़ा रहा और बोला; "इससे मेरे दिल को बड़ी तसल्ली होती है। तुम लोगों में कितनी शक्ति है, कितनी योग्यता और कौशल है! —यौवन पूरे बसन्त पर है। सिर्फ...केस्टर और पोलक्स ※!"

"लो सुनो यह—पौराणिक कथा की फुलझड़ी!" बैजारोव ने कहा। "अभी तुम्हें कोई बताएगा कि तुम अपने समय के बड़े अच्छे लैटिन के ज्ञाता हो! सम्भवतः तुम्हें कविता करने के लिए चांदी का मैडिल मिला था, क्यों है न?"

※"धोस्क्यूरी, धोस्क्यूरी," वेसिली ऐवानिच ने दुहराया।

"रहने भी दीजिए पिता जी, बहुत हो गई यह गुटुरगूं।"

"इस नीलाभ चाँदनी, में कोई चिन्ता नहीं" वृद्ध बुदबुदाया। "लेकिन महाशयो मैं तुम लोगों को तुम्हारी बड़ाई करने लिए नहीं तलाश करता फिर रहा हूँ बल्कि पहली बात तो यह बताने के लिए जल्दी हम लोग भोजन करेंगे, और दूसरी बात यह कि मैं तुम्हें पहले से अगाह कर देना चाहता हूं, एवजेनी...तुम होशियार आदमी हो, तुम लोगों को समझते हो, और औरतों को भी; और अस्तु तुम्हें सहिष्णु प्रवृत्ति अपनानी चाहिए...तुम्हारी माँ तुम्हारे घर वापस आने के उपलक्ष में कथा करना चाहती थी। यह मत समझो कि मैं तुमसे कथा में सम्मिलित होने को कह रहा हूं। वह सब तो अब समाप्त हो चुका है, लेकिन फादर एलेक्सी...।

"वह पादरी?"

हाँ, पादरी; वह...हमारे साथ भोजन करेंगे मुझे इस सम्बन्ध में

※ग्रीस देश के सबसे बड़े देवता ज्यूस और लंडा से उत्पन्न दो पुत्र जिसे ज्यूस ने दो तारे बना दिया था और जो साथ साथ निकलते हैं...अनु।

कुछ नहीं मालूम; सचमुच मैं इसका विरोधी था...लेकिन, कैसे भी, यह हो ही गया...वह मुझे नहीं मिला...और अरिना ब्लासेवना...वह बड़ा अच्छा और बुद्धिमान है, यद्यपि ।"

"वह निश्चय ही मेरे हिस्से का भोजन तो नहीं करेगा ?" बैजारोव ने पूछा ।

वेसिली एवानिच हंस पड़ा ।

"अरे वाह, अब क्या कहोगे भला ?

"तब फिर यह मेरे लिए बड़ा सुन्दर । मैं किसी भी मनुष्य के साथ एक मेज पर बैठकर खा लूंगा ।"

वेसिली एवानिच ने अपना हैट ठीक से पहना ।

"मुझे निश्चय था कि तुम हर तरह के पूर्वाग्रहों से ऊपर हो । मेरी ओर देखो, मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ, अब बासठ साल के करीब होने आया, और मुझे भी कोई पूर्वाग्रह नहीं है ।" (वेसिली एकानिच को यह स्वीकार करने का साहस नहीं था कि वह स्वयं चाहता था कि कथा पढ़ी जाय । वह अपनी स्त्री से कम धार्मिक न था ।) "और फादर एलेक्सी तुमसे परिचय करने लिए बड़े उत्सुक हैं । तुम देखना उन्हें पसन्द करोगे । वह ताश खेलने के विरोधी नहीं हैं और...हम तुम जैसे ही हैं...और वह पाइप भी पीते हैं ।"

"ठीक है । हम लोग भोजन के बाद रमी खेलने बैठेंगे और मैं उन्हें हराऊंगा ।"

"ही-ही-ही, देखेंगे, देखेंगे । अकेले अपने आप ही बिना मेजबान के हिसाब मत कर डालो ।"

"क्यों ? क्या जवानी की याद कर रहे हैं ?" बैजारोव ने अजीब तरह से जोर देते हुए कहा ।"

वेसिली एवानिच के काँसे के रंग के गालों पर हलकी लाली दौड़ गई ।

"शर्म करो, एवजेनी...वह तो बीती बात हो गई। लेकिन मैं इन महाशय से यह स्वीकार करने को तैयार हूं कि अपनी जवानी मुझे उससे पक्षपात था, हां था,और मुझे उसके लिए कीमत भी चुकानी पड़ी थी! लेकिन...क्या आज गर्मी नहीं है! मुझे जरा अपने पास बैठ जाने दो। मैं तुम्हारे बीच में कोई बाधा तो नहीं डाल रहा हूँ, डाल रहा हूँ क्या?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं" आर्केडी ने उत्तर दिया। वेसिली ऐवानिच घास पर थोड़ा कराहता हुआ बैठ गया।

उसने कहना आरम्भ किया, "महाशयो, तुम्हारा यह कोच तो मुझे मेरी सेना के पड़ाव के दिनों की याद दिलाता है। इसी तरह की घास के ढ़ेर के पास अस्पताल के तम्बू लगे थे और हम उस पर ही अपने को भाग्यवान समझते थे।" उसने निः श्वास ली। "हाँ, मैंने अपने वक्तों में ऐसा जीवन बहुत बिताया है। मिसाल के लिए बेस-बिया में प्लेग फैला था तब...अजीब कहानी है, सुनना पसन्द करोगे?"

"वह जिसके लिए आपको सेंट ब्लाडिमीर-का तगमा मिला था?" बैजारोव ने पूछा, और कहा! "हम उसके बारे में सुन चुके हैं।... आप उसे पहिनते क्यों नहीं?"

"मैंने तुम्हे बताया कि मुझे कोई पूर्वाग्रह नहीं है" वेसिली एवे-निच ने कहा—(उसने सिर्फ पिछले दिन ही अपने कोट से लाल फीता फाड़ने का आदेश दिया था)—और प्लेग की घटना सुनाने लगा।

"ओह, वह तो सो भी गया," उसने एकाएक बैजारोव की ओर संकेत करते हुए आर्केडी के कान में मजाकिया स्वर में फुसफुसाया, और कहा; "एवजेनी, उठो! चलो भोजन करने चला जाय..."

फादर एलेक्सी का व्यक्तित्व गम्भीर और प्रभावशाली था, और उनके शरीर का गठन सुडौल था, उनके लम्बे बाल पटुता से संवारे हुए थे और बैंगनी रंग के रेशमी लबादे पर कढ़ा हुआ कमरबन्द

बंध हुआ था। वह बड़ा घाघ और हाजिर जवाब निकला। उसने सबसे पहिले आगे बढ़ कर आर्केडी और बैजारोव से हाथ मिलाया और यद्यपि वह पहिले से जानता था उन्हें उसके आशीर्वाद की कोई जरूरत नहीं हैं, फिर भी उसने वह कष्ट बड़ी सरलता से उठाया ही। वह गम्भीर बना रहा और किसी बात का उसने बुरा नहीं माना। वह एक बार स्कूली लैटिन के मूल्य पर हंसा, अपने बड़े पादरी के सम्मान में उठा, दो गिलास शराब पी, पर तीसरा नहीं लिया, आर्केडी का एक सिगार स्वीकार किया, लेकिन जलाया नहीं, कहा कि घर जाकर पीएगा। उसकी सिर्फ एक आदत ही असंगत और असत्य थी कि वह अपने गालों पर रखा हाथ मक्खियां पकड़ने के लिए शिथिलता से उठाता था, और कभी एकाध मक्खी दबोच भी लेता था। वह हरे रंग की मेज पर बैठा था। उसने विनय से प्रसन्नता प्रगट की और अन्त में बैजारोव से दो रूबल और पचास कोपेक दक्षिणा प्राप्त की। अरिना व्लासेवना के मकान में किसी को चाँदी की मुद्रा गिनने का ज्ञान न था।...मालकिन रीति के अनुसार अपने बेटे की बगल में बैठी थी। (वह ताश नहीं खेली) उसने अपना मुख अपनी हथेलियों पर टिका लिया था, और सिर्फ कोई नई चीज परोसने की आज्ञा देने के लिए ही उठती थी। वह बैजारोव का आलिंगन और उसे लाड़-प्यार करने में सहमती थी, उसने उसे इस बात का अवसर ही नहीं दिया था; और फिर वेसिली एवेनिच ने बैजारोव को अधिक तंग न करने की चेतावनी भी दे दी थी: "युवक लोग इसे पसन्द नहीं करते।" उस दिन की दावत का और विशेष उल्लेख अनावश्यक है। निमोफेच सबेरे से ही गौ-मांस लेने के लिए घोड़े पर भागा गया था; और अमीन भी एक ओर अनेक प्रकार के मांस-भक्ष्य लेने गया था। सिर्फ कुकरमुत्ते किसान औरतें लाई थीं, जिसके लिए उन्हें ब्यालीस तांबे के कोपेक मिले थे। आरिना व्लासेवना की आँखें बैजारोव पर ही

जमी थी; उनसे केवल अनन्य प्रेम और कोमलता ही नहीं प्रगट होती थी—उनमें उत्सुकता और भय मिश्रित व्यथा और एक प्रकार की कातर विनम्रता भी थी।

बैजारोव को मां की ओर ध्यान देने की अपेक्षा अन्य अनेक बातों पर चिन्ता करनी थी। उसने मां से बात भी कम ही की और की भी तो अत्यन्त संक्षिप्त। उसने एक बार ताश के खेल में शकुन के लिए मां का हाथ अपने हाथ में लेने की कामना की। उसने अपना छोटा मुलायम हाथ उसके हाथ में थमा दिया।

"क्यों," उसने थोड़ी देर बाद पूछा, "क्या इसने कुछ सहायता दी?"

"हमेशा से भी बुरा रहा इस बार," उसने तिक्त हंसी से उत्तर दिया।

"यह खतरनाक खेल खेलते हैं," फादर एलेक्सी ने सम्भवतः दुख प्रगट करते हुए और अपनी सुन्दर दाढ़ी में उंगली फेरते हुए कहा।

"नैपोलियन का शासन फादर," वेसिली ध्वेनिच ने इक्का चलते हुए कहा।

"जो उसे सेंट हेलेना में ले गया," फादर एलेक्सी ने इक्के पर तुरप लगाते हुए कहा।

"क्या थोड़ा मुनक्कों का रस, लोगे प्यारे एवजेनी?" अरिना व्लासेवना ने पूछा।

बैजारोव ने सिर्फ कंधा हिलाया।

× × ×

"नहीं!" वह दूसरे दिन आर्केडी से कह रहा था, "मैं कल चल दूंगा। यहाँ पड़ा रहना कठिन है; मैं काम करना चाहता हूँ, और यहाँ मैं कर नहीं सकता। मैं फिर तुम्हारे यहां चलूंगा—मैं अपना

सामान भी तो वहीं छोड़ आया हूं। तुम्हारे वहां मैं कम से कम अपने को एकान्त में बन्द तो कर सकता हूँ। यहां तो पिता जी हर समय यही दुहराते रहते हैं कि 'मेरी अध्ययनशाला तुम्हारे इच्छा पर है—कोई तुम्हारे रास्ते में नहीं आयेगा,' लेकिन एक मिनट को भी मेरे ऊपर से दृष्टि नहीं हटाते। मैं बहरहाल उन्हें किसी तरह भी बन्द नहीं कर सकता। और मां भी। मैं उन्हें दीवाल के पीछे निःश्वास छोड़ते सुनता हूँ, और अगर मैं उनके पास जाता हूं तो फिर कुछ कह नहीं पाता।"

"वह बहुत घबड़ा जायगी," आर्केडी ने कहा, "और वह भी घबड़ा जायेंगे।"

"मैं इनके पास वापस आऊंगा।"

"कब ?"

"सेंटपीटर्सबर्ग जाने से पहले।"

"मुझे विशेषकर तुम्हारी मां के लिए दुख होता है।"

"ऐसा क्यों ? क्या उसने रसभरियों से तुम्हें जीत लिया है ?"

आर्केडी ने अपनी आंखें झुका लीं।

"तुम अपनी मां को नहीं जानते, एवजेनी। वह सिर्फ एक अच्छी औरत ही नहीं हैं, वह बहुत चतुर भी हैं, वास्तव में। आज सुबह उन्होंने मुझ से आधा घन्टे बात की और वह इतनी दिलचस्प और सलीके की थी कि कुछ पूछो मत।"

"सारे समय मेरी बड़ाई करती रही होंगी, मैं समझता हूं ?"

"हमने और चीजों के सम्बन्ध में भी बातें कीं।"

"शायद; ये चीजें बाहर वाले को अतिस्पष्ट हैं। अगर एक औरत आध घन्टे तक बातचीत को सजीव रख सकती है तो यह अच्छा चिन्ह है। लेकिन फिर भी मैं जा रहा हूँ।"

"तुम आसानी से उन्हें सूचना नहीं दे सकोगे। वे सारे समय हमारे अगले दो हफ्तों के प्रोग्राम के बारे में ही सोच रहे हैं।"

"हां, आसान तो न होगा। आज किसी शैतान ने मुझे पिता जी को तंग करने के लिए उकसाया है। उन्होंने पिछले दिन एक किसान दास को बेंत मारने का आदेश दिया था—और बिल्कुल ठीक ही; हां, बिल्कुल ठीक ही। मेरी ओर इस तरह हक्का बक्का होकर मत देखो, क्योंकि वह एक अव्वल दर्जे का चोर और शराबी है; सिर्फ पिता जी को यह आशा न थी कि खबर मेरे कानों तक पहुँच जायगी। वह बहुत घबड़ा गए थे, और अब मैं ऊपर से उन्हें और भी दुखी कर दूंगा...कोई बात नहीं; और फिर किया भी तो क्या जा सकता है, और कोई चारा भी तो नहीं है।"

बैजारोव ने कह तो दिया: "कोई बात नहीं है," पर वेसिली एवानिच को अपने निश्चय से अवगत कराने का साहस बटोरने में उसे लगभग दिन भर लग गया। अन्त में रात को जब वेसिली एवानिच उससे बिदा ले रहे थे तो उसने बनावटी जम्हाई लेते हुए बुदबुदाया:

"हां··· मैं तो आपसे कहना ही भूल गया···क्या कृपया कल फैदोत के पास नए घोड़े भेज देंगे?"

वेसिली एवेनिच स्तम्भित हो गया।

"क्या मिस्टर किर्सानोव जा रहे हैं?"

"हाँ···और मैं भी उनके साथ जा रहा हूं।"

वेसिली एवानिच के काटो तो खून नहीं।

"तुम जा रहे हो?"

"हां मुझे जाना ही होगा। कृपया घोड़ों का प्रबन्ध कर दीजिए।"

"बहुत अच्छा···" वृद्ध हकलाया, "घोड़े···बहुत अच्छा··· लेकिन—आखिर बात क्या है?"

"मुझे उसके यहां थोड़े दिन के लिए जाना ही चाहिए। मैं फिर

वापस आजाऊंगा।"

"हां, थोड़े दिन के लिए—अच्छी बात है।" वेसिली एवेनिज ने अपना रुमाल निकाला, और करीब करीब जमीन पर झुक कर नाक छिनकी। "अच्छा यह कि—यह—बस ! मैंने सोचा था कि तुम अभी और ठहरोगे।—तीन दिन—और वह भी तीन वर्ष बाद—ज्यादा नहीं हैं, ज्यादा नहीं हैं एवजेनी !"

"लेकिन मैं कह तो रहा हूं; कि मैं जल्दी ही वापस आजाऊंगा। मुझे जाना ही है।"

"तुम्हें जाना ही है,—ओह, अच्छा ! काम पहिले, निश्चय ही—तो तुम चाहते हो कि घोड़े भेज दिए जाएं ? अच्छी बात है। पर हमें ऐसी आशा न थी। आरिना ने पड़ोसी से फूलों के लिए कह रखा था, वह तुम्हारा कमरा सजाना चाहती थी।" (वेसिली एवेनिच ने उस सम्बन्ध में उससे कुछ नहीं कहा कि कैसे वह हर दिन तड़के नंगे पैरों में सिर्फ स्लीपर पहने हुए तिमोफैच से सलाह करता और खाने योग्य वस्तुओं और युवकों को विशेष प्रिय लाल शराब की दुकानदारी के लिए कांपते हाथों से एक के बाद एक पुराना नोट निकालता) "स्वतन्त्रता सर्वोपरि है—यह मेरा नियम है...किसी के रास्ते में बाधा नहीं डालना चाहिए...कभी नहीं..."

वह एकाएक चुप हो गया और बाहर चला गया।

"हम निश्चय ही फिर मिलेंगे।"

लेकिन वेसिली एवेनिच न रुका, न घूमा ही सिर्फ हाथ हिलाए और बाहर चला गया। अपने सोने के कमरे में आने पर उसने देखा कि उसकी बीवी सो रही है। उसने फुसफुसाते हुए प्रार्थना की ताकि वह जाग न जाय; फिर भी वह जग ही गई।

"कौन एवेनिच ?" उसने पूछा।

"हां।"

"क्या तुम एवजेनी के पास से आ रहे हो ? मुझे डर है कि उसे सोफा पर कष्ट होता है, तुम जानते हो। मैंने अनफिसुश्का से उसे तुम्हारी यात्रा वाली चारपाई देने को कह दिया है, और कुछ नये तकिए भी। मैं उसे अपना परों वाला बिस्तर दे दूंगी; लेकिन मेरा ख्याल है कि वह मुलायम बिस्तर पसन्द भी तो नहीं करता।"

"कोई बात नहीं; तुम चिन्ता मत करो, मेरे बच्चे की माँ। वह आराम से है। ईश्वर हम ग़रीब पापियों पर दया करे," वह अपनी प्रार्थना समाप्त कर बुझे स्वर में कहता रहा। उसे अपनी वृद्ध बीवी पर दया आ गई। वह उसे सवेरे से पहिले नहीं बताना चाहता था कि दुख के कैसे बादल उसके सिर पर मंडरा रहे हैं।

बैजारोव और आर्केडी दूसरे दिन चले गये। सारे घर में सवेरे से ही दुख की घटा घिरी हुई थी। अनफिसुश्का के हाथों से प्याले और तश्तरियां गिर-गिर पड़ती थीं। फेद्या भी उदास पड़ गया था। वेसिली एवेनिच ने पहिले से भी अधिक अपने को व्यस्त कर लिया। वह बड़ा उदास था और साहस के साथ इस दुखद घटना का सामना कर रहा था। वह ज़ोर ज़ोर से बोलता हुआ काम की देख भाल करता रहा; लेकिन उसका चेहरा मुर्झा गया था, और उसने अपने बेटे से चलते समय आंखें भी नहीं मिलाई थीं। अरिना व्लासेवना धीरे धीरे सिसकियां भर रही थी। वह एक दम होश हवास खो बैठती अगर उसके पति ने उसे सवेरे दो घन्टे तक बैठकर धीरज न बंधाया होता। जब बैजारोव एक महीने के भीतर ही वापस आजाने का बार बार वायदा करके उसकी बहुओं में से छूट कर अन्त में टमटम में आकर बैठ गया, जब घोड़े चल दिये, उनकी घंटियां टनटनाने लगीं और पहिए घूमने लगे और जब सड़क पर टकटकी बांध कर देखने के लिए भी कुछ न बचा और सड़क की धूल भी बैठ गई और तिमोफेच भी अपनी कमर झुकाए हिलता हुआ अपने झोंपड़े में चला

गया, तब वृद्ध मियाँ-बीवी अकेले रह गये, नितान्त एकाकी। सारा मकान स्तब्ध, ठिठका, बुझा-बुझा सा बीयाबान और उजाड़ लग रहा था। वेसिली एवेनिच जो अभी थोड़ी देर पहिले साहस बटोरे सीढ़ियों पर खड़ा रूमाल हिला रहा था, अब कुर्सी पर शिथिल और उदास पड़ा था और उसका सिर झुक कर सीने पर आ टिका था। "वह हमें छोड़ गया, हमें छोड़ गया।" वह बुदबुदाया; "हमारे साथ उसका मन नहीं लगा। अब नितान्त अकेलापन, नितान्त अकेलापन!" उसने शून्य में खोया खोया सा निहारते और हाथ हिलाते हुए बार बार दुहराया। तब अरिना व्लासेवना उसके पास गई और अपना भूरा सिर उसके सीने पर रखती हुई बोली: "'कुछ नहीं किया जा सकता वास्या! बेटा एक छूटी हुई शाख की तरह होता है। वह एक उड़ती चिड़िया की तरह है जिसका जब जी चाहता है आती है और जब जी चाहता है उड़ जाती है; और मैं और तुम एक पेड़ पर पास पास बैठे दो कुकरमुत्तों की तरह हैं। सिर्फ मैं ही सदैव तुम्हारे लिए रहूंगी और तुम मेरे लिए।"

वेसिली एवेनिच ने अपने चेहरे पर से हाथ हटाए और अपनी बीवी, अपनी अन्तरंग, अपनी दुख-सुख की एक मात्र साथिन का गाढ़ालिंगन किया। ऐसा उसका आलिंगन उसने जवानी में भी न किया था; उसने उसके आहत हृदय पर शीतल मरहम का काम किया।

: २२ :

फैदौत के यहां तक दोनों ही मित्र चुप-चाप यात्रा करते रहे। सिर्फ बीच में सम्भवतः एकाध शब्द बोले हों। बैजारोव अपने से कुछ

अधिक प्रसन्न न था, और उसका दिल एक ऐसे अवर्णनीय दुख की भावना से दबा जा रहा था जो युवकों के लिए बहुत कुछ अपनी है। कोचवान ने घोड़ों को फिर जोत कर तैयार किया और अपनी जगह पर बैठते हुए उसने पूछा: "श्रीमान, दाँए या बाँए ?"

आर्केडी ने बात आरम्भ की। दांयीं ओर की सड़क शहर की ओर जाती थी और वहां से फिर आर्केडी के घर की ओर; बायी ओर की सड़क ओदिन्त्सोवा के यहां जाती थी।

उसने बैजारोव की ओर देखा।

"एवजेनी," क्या हम लोग बाँए चलें ?"

बैजारोव ने अपना सिर घुमा लिया।

"यह क्या बेवकूफी है ?" उसने बुरबुराया।

"मैं जानता हूँ कि यह बेवकूफी है," आर्केडी ने उत्तर दिया, "लेकिन हर्ज भी क्या है ? यह पहिला ही अवसर तो नहीं है।"

बैजारोव ने अपनी टोपी उतार ली।

"जैसा तुम चाहो," उसने अन्त में कहा।

"बांयी ओर कोचवान !" आर्केडी चिल्लाया।

टमटम निकोलस्कोय की ओर दौड़ चली। यह बेवकूफी कर चुकने के बाद मित्रों की मुद्रा और भी कठोर हो गई और उन्होंने और भी दृढ़ मूकता धारण कर ली। और ऐसा लगता था कि वे आपस में कुछ नाराज भी हैं।

ओदिन्त्सोवा के प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर खानसामा ने जिस प्रकार उनका स्वागत किया उससे हमारे मित्रों को निश्चय ही समझ में आ गया होगा कि उन्होंने कितना अविवेकपूर्ण कार्य किया है। निश्चय ही उनका यहां आना अप्रत्याशित था। वे काफी देर तक बैठक में भेड़ बने बैठे सुस्ताते रहे, तब कहीं जाकर उन्हें ओदिन्त्सोवा के दर्शन हुए। उसने अपनी सदैव की ही मिलनसारी से उनका अभि-

नन्दन किया, लेकिन उनके इतनी जल्दी लौट आने पर उसे आश्चर्य था। उसके रुक-रुक कर बातें करने और उदास स्वागत से स्पष्ट था कि वह उनके इस अप्रत्याशित आगमन से प्रसन्न नहीं थी। उन्होंने शीघ्रता से उसे यह बताया कि वे शहर जाने के रास्ते में यहां थोड़ा रुक गए हैं और चार घन्टे बाद ही चल देंगे। उसने सिर्फ सुस्त आवाज में आर्केडी से अपने पिता से उसका सम्मान प्रगट करने को कहा और अपनी मौसी को बुलवा भेजा। राजकुमारी उनींदी आंखों से पधारी। उसने और भी उदासीनता और उपेक्षा से उनकी ओर देखा कि उसके वृद्ध मुख पर झुर्रियां सिकुड़ गईं। कात्या अस्वस्थ थी अस्तु वह अपने कमरे से ही नहीं निकली। एकाएक आर्केडी के मन में विचार उठा कि वह जितना व्यग्र अन्ना सर्जेवना को देखने के लिए था उतना ही व्यग्र कात्या को देखने के लिए भी था। चार घन्टे योंही इधर-उधर की बातों में बीत गए। अन्ना सर्जेवना सुनती रही और बोली भी पर हंसी एक बार भी नहीं। केवल बिदाई के समय उसकी पुरानी मित्रता का थोड़ा सा आभास मिला।

"मुझे दौरे आ जाया करते हैं," उसने कहा, "लेकिन आप लोग इस पर ध्यान न दीजिएगा—यह मैं आप दोनों से ही कह रही हूं, और थोड़े दिन बाद फिर पधारिएगा।"

आर्केडी और बैजारोव ने थोड़ा विनत हो मूक उत्तर दिया और अपनी गाड़ी में बैठकर अपने घर की ओर चल दिए, जहां वे दूसरे दिन सवेरे कुशलता से पहुंच गए। मार्ग में किसी ने भी ओदिन्त्सोवा का नाम नहीं लिया; बैजारोव ने विशेषकर मुश्किल से ही मुंह खोला होगा और सड़क की एक ओर तीव्र तनाव से चुपचाप बैठा घूरता रहा।

मैरिनो में हर एक उन्हें देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। निकोलाई पैट्रोविच अपने बेटे की लम्बी जुदाई से व्यग्र हो रहा था। जब फेनिच्का ने चमकती आँखों से दौड़ती हुई आकर छोटे मालिक के आगमन

की सूचना दी तो वह प्रसन्नता से चीख पड़ा, हवा में उसने अपने पैर उछाले और कोच पर उछल पड़ा और प्रसन्नता की एक फुरफुरी सी दौड़ गई उसके शरीर में। उन घुमक्कड़ों से हाथ मिलाते हुए वह अनुगृहित मुस्कान उसके अधरों पर खिल उठी। बाप-बेटे के बीच सवाल-जवाब की झड़ी लग गई। आर्केडी ही अधिक बोला विशेषकर ब्यालू के समय। ब्यालू आधी रात तक चलता रहा। निकोलाई पैट्रो-विच ने हाल ही में मास्को से आई पोर्ट शराब की कई बोतलें खुलवा दीं और स्वयं इतनी पी कि उसके गाल लाल पड़ गए और वह लगातार बच्चों की तरह हंसी दिल्लगी करता रहा। इस उल्लास की बिजली नौकरों में भी फैल गई थी। दुन्याशा कभी इस दरवाजे से आती और झट से दूसरे से उछलती कूदती चली जाती। वह पूरी चिकरघिन्नी बनी हुई थी। प्योतर सवेरे तीन बजे तक सारंगी पर कज्जाक नाच नाचता रहा। सारंगी के तार निस्तब्ध हवा में मधुर और सुरीली आवाज कर रहे थे। पार्श्वचर सिवाय बाजा खोलने के और कुछ न कर सका, प्रकृति ने औरों की तरह ही उसे संगीत ज्ञान से महरूम रखा था।

× × ×

ये दिन मैरीनो में मुसीबत के दिन थे और बेचारे निकोलाई पैट्रो-विच के लिए और भी मुसीबत थी। खेती-बाड़ी की व्यवस्था दिन पर दिन कष्टकर होती जा रही थी, और खेती में नुकसान होता जा रहा था। मजूर उत्पाती होते जा रहे थे। उनमें से कुछ अपनी मजूरी में तरक्की मांग रहे थे या धमकी दे रहे थे कि उनका हिसाब साफ कर दिया जाय; शेष अपना हिसाब साफ करके चले गए थे। घोड़े दुर्बल हो गए थे। खेती बाड़ी के सामान का भी बुरा हाल हो रहा था। खेती की सारी व्यवस्था जैसे तैसे करके बड़े साहस से चलाई जा रही थी। नाज मीड़ने की मशीन जो मास्को से आई थी बड़ी ही निकम्मी

साबित हुई। नाज पसाने की मशीन पहिले बार के चालू करने में ही ऐसी टूटी कि उसकी मरम्मत होना ही सम्भव न था। पशुशाला का आधा छप्पर जलकर राख हो गया था क्योंकि नौकरों के परिवार की एक बूढ़ी अंधी औरत एक दिन रात के समय आंधी में धर्म भावना से प्रेरित होकर गाय को धूप से सुवासित करने के लिए हाथ में लुकाठी लेकर गई थी।...उसने उलटा अपने मालिक की नई प्रकार की पनीर और डेरी की सनक पर दोष मढ़ा। मैनेजर एकाएक काहिल हो गया और हर उस रूसी की तरह जो बैठा बैठा मस्ती की रोटी चाबता है, मोटा हो गया था। निकोलाई पैट्रोविच को आता देखकर वह जोश का प्रदर्शन करता हुआ उधर से गुजरते हुए किसी सुअर पर डंडा फेंकता या किसी अर्धनग्न छोकरे पर मुट्ठी उभासता, लेकिन अधिकतर समय वह सोता ही रहता। जिन किसानों को खेत लगान पर उठा दिए गए थे उन पर लगान चढ़ गया था और ऊपर से वे अपने मालिक की लकड़ी चुरा ले जाते थे। शायद ही कोई ऐसी रात बीतती जब इधर-उधर के किसानों के छुट्टा घोड़े खेतों में चरते हुए न पाए जाते हों। निकोलाई पैट्रोविच ने उसके लिए जुर्माना लागू कर दिया था, लेकिन आम तौर पर घोड़े एक दो दिन बाद उनके मालिक को वापस कर दिए जाते और गाँठ को चारा और खा जाते। इस सब के अतिरिक्त किसान आपस में लड़ने झगड़ने भी लगे थे—भाइयों में बटवारे की लड़ाई होने लगी; उनकी बीवियां भी आपस में लड़तीं; और कलह यहाँ तक बढ़ती कि आसमान सिर पर उठ जाता। आंख झपकते ही सारा अड़ोस पड़ोस जमा हो जाता; सब जमा होकर आफिस के दरवाजे पर पहुँचते और मालिक पर चारों ओर से बरस पड़ते, न्याय और प्रतिकार की मांग करते। बहुतों के चेहरे झगड़े की मारपीट से कुरूप हो रहे होते और कई शराब पिए होते। औरतों के रोने किकयाने और आदमियों की गाली गलौज से एक हंगामा सा मच

जाता। यह जानते हुए भी कि सही फैसला नहीं किया जा सकता, लेकिन फिर भी बीच में पड़कर फैसला करना होता। अनाज कटाई वाले किसानों की कमी थी। एक पड़ोसी विनीत मुख वाले चौधरी ने प्रति डेसिटिन दो रूबल के हिसाब से कटाइए देने का ठेका किया। लेकिन उसने बेशर्मी से निकोलाई पैट्रोविच का नुकसान होने दिया। स्थानीय किसान औरतें बड़ी ऊंची मजदूरी मांगती थीं, और इसी गड़बड़ घुटाले में फसल बिगड़ी जा रही थी और कटाई पड़ी ही थी, और उधर संरक्षक समिति रहन के सूद की तुरंत चुकती की मांग जोरों से कर रही थी।...

"अब मेरा अन्त नजदीक है?" निकोलाई पैट्रोविच ने अनेक बार निराशा से घबड़ा कर कहा था। "मैं उनसे अकेला ठीक ठीक संघर्ष नहीं कर सकता, और मेरे सिद्धान्त पुलिस अफसर को बुलाने की इजाजत नहीं देते और बिना दंड की धमकी के काम भी नहीं चलता!"

"शान्त हो, शान्त हो," पैवेल पैट्रोविच उस समय उसे सान्त्वना देता जब वह चिन्ता से बेचैन होकर अपना माथा रगड़ता और अपनी मूछें खींचता।

बैजारोव ने अपने को इन झगड़ों से अलग रखा और फिर अतिथि के नाते यह सब उसका काम भी न था। जिस दिन वह मैरिनो पहुँचा था उसके अगले दिन से ही वह अपने मेढ़कों ※ इन्फ्यूसोरिया और रसायनिक के काम में फिर से लग गया और अपना सारा समय उसी में लगा रहता। आर्केडी ने अपने पिता के हाथ में काम बंटाना न सही तो कम से कम उसके काम में सहायता करने की इच्छा प्रगट करना अपना कर्तव्य समझा। उसने अपने पिता की सारी कठिनाइयों को ध्यान से सुना और एक बार कुछ सलाह भी दी, इसलिए नहीं कि वह

※ सड़ान में पड़े कीड़े—अनु

मानी जाय बल्कि सहानुभूति प्रगट करने के विचार से। एक काम चलाने का विचार उसके प्रतिकूल न था : वास्तव में वह खेती बाड़ी का काम ही भविष्य में हाथ में लेने का विचार करता था, लेकिन इस समय उसका दिमाग और ही बातों से घिरा हुआ था। आर्केडी को स्वयं अचम्भा था कि, वह हर दम निकोलेस्कोय के बारे में ही सोचा करता था; अगर पहले कोई उसे बैजारोव के साथ में बोर होने की सम्भावना को सुझाता तो वह सिर्फ शंका से अपने कन्धे हिला देता, और वह भी अपने माँ-बाप के घर में; लेकिन वह वास्तव में बोर हो गया था और निकल भागने को छटपटा रहा था। वह थकाने वाली लम्बी लम्बी पैदल सैर करता, पर कोई नतीजा न निकालता। एक बार अपने पिता से बातचीत करने के दौरान में उसे पता चला कि उसके पिता के पास ओदिन्त्सोवा की माँ के उसकी स्वर्गीय बीबी के नाम कुछ बड़े दिलचस्प खत थे। आर्केडी ने अपने पिता के पीछे पड़कर खत उससे झटक लिए। निकोलाई पैट्रोविच को वह खत तलाश करने के लिए बीसियों दराज़ और बक्स खखोलने पड़े। इन खतों को पाकर जिनका कागज लगभग गल गया था, आर्केडी प्रसन्न हो गया मानों उसने अपने गन्तव्य की एक झलक पा ली हो। "यह मैं तुम दोनों से कहती हूं," उसने बार बार अपने से ही फुसफुसाया, "यह उसने स्वयं कहा था। जो कुछ भी हो मैं जाऊंगा, हाँ, मैं जाऊंगा ही।" तब उसे याद आया कि पिछली बार उसका स्वागत कितना बेमन हुआ था, और यह याद आते ही उसका पुराना संकोच और व्यग्र अवशता का भाव लौट आया। कुछ साहसी कार्य करने का जवानी का जोश और अपनी किस्मत आजमाने की होड़ में अकेले ही अपनी शक्ति परखने की गुप्त आकांक्षा ने अन्त में उसके सारे संशयों पर विजय प्राप्त की। मैरिनो आने के दस दिन बाद ही वह इतवार के स्कूलों के संगठन का अध्ययन करने के बहाने शहर चल दिया।

और वहाँ से निकोलस्कोय। अपने कोचवान को जल्दी चलने के लिए उत्सुकता से तिकतिकाते हुए वह अपनी मंजिल पर ऐसे बढ़ा जा रहा था जैसे कोई नौजवान सैनिक अफसर युद्ध के मोर्चे पर जा रहा हो। वह भय और प्रसन्नता दोनों ही भावनाओं के बीच फसा हुआ थपेड़े खा रहा था और उतावली से फूट पड़ता, "मुख्य बात उसके बारे में सोचना ही नहीं है," वह सोचता रहा। किस्मत का मारा कोचवान हर सार्वजनिक पड़ाव पर यह कहते हुए रुकता: पानी पीऊं या नहीं ?" लेकिन अपना गला तर करने के बाद वह घोड़ों को भी न छोड़ता। अन्ततः परिचित मकान की छत नजर आई।···"ओह, मैं यह क्या कर रहा हूँ ?" एकाएक आर्केडी के दिमाग में लहर उठी। "अब तो लौट सकने का समय भी नहीं रहा।" घोड़ा-गाड़ी आगे बढ़ती गई, घोड़े हाँफ रहे थे, कोचवान तिकतिकाए जा रहा था; गाड़ी पहियों की घड़घड़ाहट करती हुई तेजी से बढ़ रही थी। लकड़ी का पुल पार हुआ···देवदार के संवारे हुए पेड़ नजर आने लगे···गहरी हरियाली के बीच लाल फ्राक की झलक दिखाई पड़ी और स्त्रियों के छाते की झालर के नीचे से एक जवान चेहरा झांकता हुआ दिखाई पड़ा।—उसने कात्या को पहचान लिया और उसने भी आर्केडी को पहचान लिया। आर्केडी ने कोचवान को घोड़े रोकने का आदेश दिया, गाड़ी से कूदा और लपक कर उसके पास पहुंचा, "अरे, यह तुम हो !" उसने आहिस्ते से कहा; उसके गालों पर हल्की लाली दौड़ गई। "चलिए बहन के बहन के पास चलें, वह यहीं बाग में हैं; वह आपको देखकर बड़ी प्रसन्न होंगी।"

कात्या आर्केडी को बाग में ले गई। उन दोनों की भेंट बड़ी प्रसन्नतादायक शकुन साबित हुई। आर्केडी को उसे देखकर कितनी प्रसन्नता हुई उतनी यदि वह उसकी निकट और प्रिय होती तो भी न होती। इससे अधिक अच्छी बात और कोई न होती—कोई खान-

सामा नहीं कोई सूचना भिजवाने का प्रश्न नहीं। पगडन्डी की एक मोड़ पर उसने अन्ना सर्जेवना को देखा। वह उसकी ओर पीठ किए खड़ी थी। पदचाप सुनकर वह धीरे से घूमी।

आर्कडी पुनः बेचैनी का अनुभव करने लगा, अन्ना सर्जेवना के जो पहिले शब्द मुंह से निकले उन्हीं से वह स्वस्थ हो गया, "हेलो भगोड़े !" उसने मधुरता से उससे मिलने के लिए उसकी ओर बढ़ते हुए और सूरज और हवा के विरोध में आंख मिचमिचाते हुए मुस्करा कर कहा : "तुम्हें यह कहाँ मिल गए कात्या ?"

"मैं आपके लिए कुछ लाया हूँ अन्ना सर्जेवना," उसने तपाक से कहना आरम्भ किया, "ऐसा जिसकी आप आशा भी न करती होंगी······"

"तुम अपने आपको लाए हो, यही सबसे बढ़ कर है।"

: २३ :

आर्कडी को थोड़ा दुख प्रगट करते हुए और यह बताते हुए कि वह उसकी यात्रा के असली उद्देश्य के प्रति धोखे में नहीं है और उसे खूब समझता है, बिदा करने के बाद बैजारोव नितान्त एकाकी जीवन व्यतीत करने लगा। उसे सक्रियता का ज्वर आ गया था। वह अब पैवेल पैट्रोविच से बहस में नहीं पड़ता था विशेषकर जबसे पैवेल ने शब्दों और व्यवहार दोनों में ही और भी अधिक अभिजातीयता अपना ली थी। सिर्फ एक बार उसने बाल्टिक के अमीरों के अधिकारों के विषय में जो उस समय बहस का विषय हो रहा था, उस निहिलिस्ट से बहस करने का साहस किया था लेकिन फिर एकाएक

अपनी नीरस मृदुता के साथ यह कहते हुए रोक लिया : "लेकिन हम एक दूसरे को नहीं समझ सकते; कम से कम मैं तो। मुझे यह कहते हुए दुख होता है कि मैं तुम्हें नहीं समझ सकता।"

"निश्चय ही!" बैजारोव ने कहा "एक आदमी सब कुछ समझ सकता है—हवा कैसे स्पन्दित होती है और सूरज में क्या होता रहता है, आदि लेकिन नाक छिनकने का तो एक ही तरीका हो सकता है।

"क्या तुम समझते हो कि तुमने बड़ा अच्छा व्यंग किया है," पैवेल पैट्रोविच ने प्रश्न किया और चला गया।

सच है, उसने कभी कभी बैजारोव के प्रयोगों को देखने की इजाजत मांगी और एक बार उसने अपना सुवासित मुख सड़ान में पड़े हुए कीड़ों का निरीक्षण करने के लिए अणुवीक्षण यन्त्र पर लगा लिया कि उनमें किस प्रकार की प्रतिक्रिया हो रही है। निकोलाई पैट्रोविच अपने भाई की अपेक्षा बैजारोव से अधिक मिलता था, अगर वह खेती में अधिक व्यस्त न होता रोज, उसके ही शब्दों में 'सीखने के लिए' आता। वह नौजवान प्रकृतिवादी को असुविधा में नहीं डालता था, आम तौर से कोने में बैठा ध्यान से देखता रहता, सिर्फ कभी कभी बीच में एक-आधा प्रश्न पूछ लेता। भोजन के समय वह बात-चीत को फिजिक्स, ज्योलोजी, या केमिस्ट्री की ओर घुमाने का प्रयत्न करता क्योंकि दूसरे सभी विषय राजनीति का क्या जिक्र किया जाय खेती-बाड़ी तक से भी अगर झगड़ा नहीं तो परस्पर नाराजगी पैदा हो जाने का खतरा था। निकोलाई पैट्रोविच ने जान लिया था कि बैजारोव के प्रति उसके भाई की नाराजगी किसी तरह भी कम नहीं हुई है। अनेक छोटी छोटी घटनाओं में से एक छोटी घटना ने इस शंका को सही सिद्ध कर दिया था। पड़ोस में हैजा हो गया था और मेरिनो में भी दो प्राणी उसके शिकार हो गए थे। एक रात पैवेल पैट्रोविच-

पर भी जोर का हमला हुआ। वह सवेरे तक कष्ट भोगता रहा, लेकिन बैजारोव की पटुता को उसने प्रश्रय न दिया, जबकि बैजारोव ने सवेरे उससे मिलने पर पूछा कि उसे बुलाया क्यों नहीं। उसका चेहरा अब भी पीला हो रहा था, पर उसने अच्छी तरह दाढ़ी बना ली थी और चेहरा चमका लिया था। उसने जवाब दिया "अगर मैं भूला नहीं हूँ, तो तुम्हीं ने कहा था कि तुम दवा में विश्वास नहीं करते।"...और इस तरह दिन बीत गए। बैजारोव बिना किसी जोश के कड़ी मेहनत में अपने को खपाए और भुलाए रहा लेकिन निकोलाई पैट्रोविच के घर में भी एक ऐसा प्राणी रहता था, जिसकी संगत में उसे प्रसन्नता होती थी, यद्यपि वास्तव में उसने उस प्रसन्नता को खोजा नहीं था।... वह प्राणी थी फेनिच्का।

वह उससे प्रायः सवेरे सवेरे बाग में या अहाते में मिला करता था। वह कभी उसके कमरे में नहीं गया, और वह भी उसके दरवाजे पर सिर्फ एक बार गई थी यह पूछने कि क्या वह मित्या को नहला सकती है। वह न सिर्फ उस पर विश्वास ही करती थी और उससे डरती न थी—वह निकोलाई पैट्रोविच की भी अपेक्षा उसकी उपस्थिति में अधिक आजादी सुख-चैन और आराम का अनुभव करती थी। ऐसा क्यों था, यह बता सकना कठिन था, सम्भवतः यह इस लिए था; क्यों कि वह अपने भीतर की चेतना से अनजाने रूप से इस बात से अवगत थी कि बैजारोव में वे कोई गुण न थे जो उन दोनों महानुभावों में थे, कुछ ऐसी महानता के गुण जो उसे भौंचक्का और अवश्य बना देते थे। उसके लिए वह सिर्फ एक अच्छा डाक्टर और साधारण आदमी था उस जैसा ही। वह उसकी उपस्थिति में बिना किसी झिझक के अपने बच्चे को खिलाती थी, और जब वह एक बार एकाएक दुर्बलता की मूर्छा का अनुभव करने लगी थी, और उसके सिर में दर्द होने लगा था तब उसने उसके हाथ से एक चम्मच दवा पी थी।

निकोलाई पैट्रोविच की उपस्थिति में वह बैजारोव से झिझकती सी लगती थी। वह ऐसा छल से नहीं करती थी, वरन सद्व्यवहार की भावना के कारण करती थी। पैवेल पैट्रोविच से वह पहिले से भी ज्यादा डरती थी क्योंकि उसने उस पर देर तक निगाह रखना शुरू कर दिया था और एकाएक न जाने कहाँ से जेबों में हाथ डाले चौकन्नी आँखों से देखते हुए उसके पीछे से टपक पड़ता। "वह एक ठन्डे झोंके की तरह है" फेनिच्का ने दुन्याशा से शिकायत करते हुए कहा था; जो उसके बारे में सोचते हुए उत्तर में आह भर लेती "भावना रहित मनुष्य। बैजारोव निःसंशय उसके दिल का क्रूर निष्ठुर शासक बन गया था।

फेनिच्का बैजारोव को पसन्द करती थी, और वह भी उसे पसन्द करता था। उसका चेहरा भी उससे बात करते समय बदल जाता था: उस पर प्रसन्नता और कोमलता के भाव आ जाते थे और फेनिच्का भी उसके साथ हलकापन अनुभव करती थी। वह दिन दूनी रात चौगुनी सुन्दर होती जा रही थी। हर जवान औरत के जीवन में एक ऐसा समय होता है जब वह गुलाब की तरह विकसित प्रफुल्लित और प्रमुदित होने लगती है। फेनिच्का के लिए यह वही समय आ गया था। हर बात ने उसे खिलने में सहारा दिया, यहाँ तक कि जुलाई की उस कड़ी गर्मी ने भी। सफेद हल्की झीनी पोशाक में वह स्वयं अपने को ही सुन्दर और हलकी लगती थी। वह धूप में नहीं निकलती थी और गर्मी से बचने की व्यर्थ कोशिश करती थी, जो उसके गालों को लाल कर देती थी; और उसके शरीर में एक अजीब शिथिलता भर देती थी और उसकी मोहक आंखों में स्वप्निल मूर्छना भर देती थी। वह बड़ी कठिनाई से कोई काम कर पाती थी। उसके हाथ हर दम उसकी गोद में शिथिल पड़े रहते थे। वह मुश्किल से चलती-फिरती और दिन भर बेचैनी से कराहती रहती जो उसके मुंह से बड़ी अच्छी लगती थी।

"तुम्हें प्रायः अधिक नहाना चाहिए" निकोलाई पैट्रोविच उससे

कहा करता ।

उसने बाग के एक तालाब में जो अभी सूखा न था नहाने के लिए तम्बू तनवा दिया था।

"ओह, निकोलाई पैट्रोविच । जब तक तुम तालाब के पास पहुंचोगे करीब-करीब जान निकल जायगी और जब कि लौटोगे तो करीब करीब मृत ही हो जाओगे। बाग में कहीं भी तो जरा सी छांह नहीं है।"

"हाँ, ऐसा तो है, छांह तो नहीं," निकोलाई पैट्रोविच ने अपनी भोंहों को मलते हुए उत्तर दिया।

× × ×

एक दिन सवेरे; छः से कुछ अधिक बजे थे, बैजारोव टहलने से लौट रहा था कि वकाइन फूल के कुंज में जिसके खिलने का समय काफी पहले ही हो गया था, पर अभी भी मोटा और हरा था फेनिच्का से उसकी भेंट हो गई; वह बेंच पर बैठी थी और सदैव की तरह सफेद दुपट्टा उसकी गर्दन पर पड़ा था; उसके बगल में सफेद और लाल गुलाब के फूलों का ढेर लगा था जो अभी भी ओस से तर थे। बैजारोव ने उसे नमस्कार किया।

"ओह ! एवजेनी वेस्लीविच !" उसने अपने दुपट्टे का एक कोना उठाते हुए उसकी ओर देखकर कहा। ऐसा करते समय कुहनी तक उसके हाथ खुल गये।

"यहाँ आप क्या कर रही हैं ?" बैजारोव ने उसकी बगल में बैठते हुए कहा। "क्या गुलदस्ता बना रही हैं ?"

"हाँ, नाश्ते की मेज के लिए। निकोलाई पैट्रोविच को यह अच्छा लगता है।"

"लेकिन नाश्ते में तो अभी काफी देर है। क्या खूब, फूलों का कैसा ढेर है।"

"मैंने इन्हें अभी जमा कर लिया है, क्योंकि फिर गर्मी हो जायगी और फिर दरवाजे से बाहर निकलने का मेरा साहस नहीं होता। यही समय है जबकि मैं आराम की और खुल कर सांस ले सकती हूँ। गर्मी मुझे आश्चर्यजनक रूप से दुर्बल कर देती है। मुझे सन्देह है कि मैं स्वस्थ हूं।"

"अच्छा! जरा मुझे अपनी नाड़ी तो देखने दीजिए।" बैजारोव ने उसका हाथ पकड़ लिया। नब्ज ठीक थी, और उसने नब्ज गिनने का भी कष्ट न किया। "आप सौ वर्ष जीवित रहेंगी," उसने उसका हाथ छोड़ते हुए कहा।

"ओह, ईश्वर न करे!" उसने कहा।

"क्यों? क्या आप अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहना चाहतीं?"

"लेकिन सौ वर्ष! बूढ़ी दादी पच्चासी वर्ष की थीं—और क्या ही हुलिया हो गई थी उनकी। काली और बहरी और झुकी हुई हर दम खों खों करती रहती थीं: उनका जीवन अपने लिए ही भार था। ऐसे जीवन का लाभ!"

"तब जवान होना ही अच्छा है?"

"क्यों, निश्चय ही!"

"यह क्यों अच्छा है? मुझे बताइये।"

"क्या सवाल है! अच्छा, मैं अब जवान हूं, मैं जो चाहे सो कर सकती हूं, मैं आ सकती हूं, जा सकती हूं और चीज-बस्त ले जा सकती हूं मुझे इसके लिए किसी आदमी से कहने और उसका मुंह ताकने की जरूरत नहीं है...और क्या यही सब अच्छा तो है?"

"मेरे लिए तो सब एक ही सा है, न सावन हरे न भादों सूखे, चाहे बूढ़ा हूं या जवान?"

"यह आप कैसे कह सकते हैं कि एक ही सा है? यह असम्भव है।"

"लेकिन आप स्वयं सोचिए फिदोस्या निकोलेवना—मुझे मेरी जवानी की क्या आवश्यकता है? मुझे सदैव नितान्त अकेला ही रहना है, एक बेचारा एकाकी मनुष्य···"

"यह सब तो आप पर निर्भर करता है।"

"यही तो सारी मुश्किल है—यही नहीं होता! अगर सिर्फ कोई मुझ पर दया करे।"

फेनिच्का ने उसे अपांगों से देखा, पर कहा कुछ नहीं। "वह आपके पास कौन सी किताब है?" उसने कहा।

"यह? यह बड़ी ज्ञान से भरी हुई किताब है।"

"और आप हर दम पढ़ते ही रहते हैं! क्या इनसे आपकी तबीयत नहीं ऊबती? मैं समझती हूं कि आप दुनिया भर का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहते हैं।"

"निश्चय ही नहीं। लीजिए इसमें से कुछ पढ़ने की कोशिश कीजिए।"

"लेकिन मैं एक बात भी नहीं समझती। क्या यह रूसी भाषा में है?" फेनिच्का ने अपने दोनों हाथों में भारी सी किताब लेते हुए पूछा और कहा "कितनी मोटी किताब है।"

"हाँ, यह रूसी भाषा में है।"

"एक ही बात है, मैं इसे नहीं समझती।"

"आप समझें या न समझें, इससे मुझे कोई प्रयोजन नहीं है। मैं तो बस आपको पढ़ते हुए देखना भर चाहता हूँ। जब आप पढ़ती हैं तो आपकी नाक बड़े आकर्षक ढंग से फड़कती है।"

फेनिच्का जिसने एक लेख पढ़ना शुरू किया था, "ऑन क्रोसोट,"

हंस पड़ी और किताब गिरा दी जो फिसल कर बेंन्च के नीचे जमीन पर गिर पड़ी ।

"मुझे आपको हंसते हुए देखना भी अच्छा लगता है," बैजारोव ने कहा ।

"ओह, रहने भी दीजिए!"

"जब आप बोलती हैं तो भी मुझे अच्छी लगती हैं । यह एक झरने की कलकल ध्वनि के समान है ।"

फेनिच्का ने अपना सिर घुमा लिया । "ओह, वास्तव में, आप तो जानते हैं !" उसने फूलों से खेलते हुए बुदबुदाया । "आपको मेरी बातों में क्या मिलेगा ? आप तो ऐसी ऐसी होशियार स्त्रियों से बात कर चुके हैं ।"

"ओह, फेदोस्या निकोलेवना ! आप मुझ पर विश्वास कीजिए विश्व की सब चतुर स्त्रियां आपकी कनिष्ठका के मूल्य की समता में भी नहीं हैं ।"

"अब आगे आप और क्या क्या कहेंगे न जाने ।" फेनिच्का ने अपने हाथ सिकोड़ते हुए फुसफुसाहट की आवाज में कहा ।

बैजारोव ने जमीन पर से किताब उठा ली । "यह एक डाक्टरी की किताब है, आपको इसे इस तरह फेंकना नहीं चाहिए !"

"एक डाक्टरी की किताब ?" फेनिच्का ने प्रतिध्वनि की और उसकी ओर घूमी । "क्या आप जानते हैं ? जब से आपने मुझे वे बूंदें दी हैं—आपको याद है ?—मित्या बड़ी गहरी नींद सोता रहा है ! मैं नहीं जानती की आपको कैसे धन्यवाद दूं; आप इतने कृपालु हैं । वास्तव में ।"

"वास्तव में डाक्टरों को कुछ न कुछ देना ही चाहिए," ैजारोव ने मुस्कराते हुए कहा । "डाक्टर, आप जानती हैं, भाड़े के सैनिक होते हैं ।"

फेनिच्का ने बैजारोव की ओर आंख उठाकर देखा। उसकी आँखें उसके चेहरे के ऊपरी भाग के पीलेपन की अपेक्षा काली दीख रही थीं। वह समझ नहीं पा रही थी कि वह हंसी में कह रहा है या दिल से कह रहा है।

"अगर आप चाहते हैं तो हमें बड़ी प्रसन्नता होगी···मैं इस सम्बन्ध में निकोलाई पैट्रोविच से बात करूंगी···"

"क्या आप समझती हैं कि मैं पैसा चाहता हूं?" बैजारोव ने बीच में कहा। "नहीं, मैं आपसे पैसा बिलकुल भी नहीं चाहता।"

"तब क्या?" फेनिच्का ने पूछा।

"क्या?" बैजारोव ने दुहराया। "अनुमान लगाइए।"

"मैं अनुमान लगाने में बड़ी कमजोर हूं।"

"तब मैं आपको बताऊंगा; मैं चाहता हूं···इनमें से एक गुलाब।"

फेनिच्का फिर हंसी और उसने अपने हाथ भी नचाए। उसे बैजारोव की प्रार्थना बड़ी उल्लास दायिनी लगी। यद्यपि वह हंसी, पर उसने मिथ्या प्रशंसा का अनुभव किया। बैजारोव उसकी ओर एक टक विभोरता से देखता रहा।

"क्यों नहीं, अवश्य," उसने अन्त में कहा, और बेंच पर झुककर फूलों में उंगली फेरने लगी। "कौन सा पसन्द करेंगे, लाल या सफेद?"

"लाल, और बहुत बड़ा नहीं।"

वह सीधी हुई।

"यह लीजिए," उसने कहा पर एकाएक अपना हाथ पीछे खींच लिया और अपना होंठ काटते हुए कुंज के द्वार की ओर कान लगा कर देखने लगी।

"क्या है?" बैजारोव ने पूछा। "निकोलाई पैट्रोविच?"

"नहीं" वह तो खेतों पर गए हैं "मैं उनसे नहीं डरती"लेकिन पैवेल पैट्रोविच"मैंने एक क्षण को सोचा"

"क्या ?"

"मैंने सोचा कि वह यहीं टहल रहे हैं। नहीं"कोई नहीं है, लीजिए यह लीजिए।" फेनिच्का ने बैजारोव को गुलाब दिया।

"आप पैवेल पैट्रोविच से डरती क्यों हैं ?"

"वह हर समय मुझे त्रास देते रहते हैं। वह कहते एक शब्द भी नहीं, पर मेरी ओर बड़े अजीब ढंग से घूरते रहते हैं। लेकिन आप भी तो उन्हें पसन्द नहीं करते। आपको याद है आप कैसे उनसे बहस किया करते थे ? मैं नहीं जानती कि वह सब किस विषय में होती थी, पर मैं यह देखती थी कि आप कैसे उन्हें कभी इस पट करते कभी उस पट"

फेनिच्का ने अपने हाथ से करके दिखाया कि उसकी राय में बैजारोव कैसे उसे इस पट उस पट करता था।

बैजारोव मुस्कराया।

"क्या हुआ, वे मेरी पार नहीं पा सकते !" उसने पूछा" क्या आप मेरा पक्ष लेंगी ?"

"मैं आपका पक्ष कैसे ले सकती हूँ ? और फिर आपसे कोई पार भी तो नहीं पा सकता।"

"क्या आप ऐसा समझती हैं ? लेकिन मैं एक हाथ जानता हूँ कि अगर वह चाहे तो मुझे अपनी एक उंगली की ठोकर से ही चित्त कर सकता है।"

"वह हाथ कौन सा है ?"

"क्या, आपका कहने का मतलब है कि आप नहीं जानतीं ? आपका दिया हुआ गुलाब कैसा बढ़िया महकता है, सूंघिए !"

फेनिच्का ने अपनी पतली नाक बढ़ाई और फूल पर अपना चेहरा

झुकाय।'''दुपट्टा खिसक कर कंधों पर आ गया, और उसके मुलायम काले चमकीले केश खुल गए और एक आध लट इधर उधर लटक गई।

"रुकिए, मैं भी इसे आपके साथ सूंघना चाहता हूँ," बैजारोव बुदबुदाया, और झुक कर उसने उसने उसके खुले अधरों पर उन्मत्त चुम्बनांकन कर दिया।

वह चौंक पड़ी और उसने अपने दोनों हाथों से उसके सीने को धकेला, लेकिन जोर से नहीं। और बैजारोव को फिर से और देर तक उन्मत्त अधरपान करने का अवसर मिल गया।

बकाइन की झाड़ियों के पीछे से सूखी खाँसी की आवाज आई। फेनिच्का उछल कर तुरन्त बेंच के दूसरे किनारे पर चली गई। पैवेल पैट्रोविच कुंज द्वार पर से गुजरा और नमस्कार प्रदर्शन में थोड़ा विनत हुआ और क्रूर चमक के साथ बोला "आप यहां हैं!" और आगे बढ़ गया। फेनिच्का ने जल्दी जल्दी से फूल बटोरे और कुंज से चली गई। "शर्म करो, एवजेनी वेस्लिच," जाते जाते उसने फुसफुसाते हुए कहा। उसके स्वर में धिक्कार था।

बैजारोव को अभी थोड़े दिन पहिले का एक और दृश्य याद हो आया और उसका हृदय पश्चाताप और तिरस्कार पूर्ण झुंझलाहट से भर गया। लेकिन थोड़ी देर में उसने अपने सिर को तीखे व्यंगात्मक ढंग से झटका दिया और अपने को सनदयाफ्ता सिलेदौन* की परम्परा में दीक्षित होने के लिए बधाई दी, और अपने कमरे में चला गया।

और पैवेल पैट्रोविच बाग से निकल कर धीरे धीरे जंगल की ओर चला गया। वह वहाँ काफी देर तक रहा और जब वह नाश्ते के लिए वापस आया तो निकोलाई पैट्रोविच ने सविनय पूछा कि उसकी

---

*सिलेदौन-दे उर्फे की आस्त्री नामक पुस्तक का एक व्यसनी चरित्र—अनु

तबियत तो ठीक है—उसके चेहरे का रंग इतना काला पड़ गया था।

"तुम जानते ही हो कि मुझे पित्त की बीमारी उभड़ आती है," पैवेल पैट्रोविच ने शान्ति से उत्तर दिया।

: २४ :

करीब दो घंटे बाद उसने बैजारोव का दरवाजा खटखटाया।

"आपके ज्ञान पूर्ण अध्ययन में बाधा डालने के लिए मुझे अवश्य माफी मांगनी चाहिए," उसने खिड़की के सहारे की एक कुर्सी पर बैठते हुए कहना आरम्भ किया। उसने अपने दोनों हाथ एक खूबसूरत छड़ी पर जिसकी मूठ हाथी दाँत की थी रख लिए थे। (छड़ी लेकर चलना उसकी आदत न थी) "लेकिन मैं आपके सिर्फ पांच मिनट लेने के लिए विवश हूँ, सिर्फ पांच मिनट, अधिक नहीं।"

"मेरा सारा समय आपकी सेवा में प्रस्तुत है," बैजारोव ने उत्तर दिया जिसके चेहरे पर पैवेल पैट्रोविच के भीतर घुसते ही कुछ हवाई सी उड़ने लगी थी।

"बस पांच मिनट ही काफी होंगे मेरे लिए। मैं आपसे केवल एक प्रश्न पूछने आया हूं।"

"एक प्रश्न? किस सम्बन्ध में है वह?"

"अच्छा तब फिर सुनिए। मेरे भाई के मकान में आपके प्रवास के आरम्भ में, जब मैंने भी आपसे बातें करने की प्रसन्नता से अपने को वंचित नहीं किया था तब मुझे अनेक विषयों पर आपके विचार सुनने का अवसर मिला था, लेकिन जहाँ तक मुझे याद है, कि न तो हमारे आपके बीच और न मेरी उपस्थिति में ही द्वन्द्वयुद्ध के सम्बन्ध

में कोई बात चली थी। क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि इस विषय पर आपके क्या विचार हैं ?"

बैजारोव जो पैवेल पैट्रोविच के आगमन पर खड़ा हो गया था एक मेज के किनारे पर बैठ गया, और अपने हाथ एक दूसरे पर रख लिए।

"मेरा विचार यह है," उसने कहा, कि "सिद्धान्त की दृष्टि से द्वन्द्वयुद्ध बकवास है, लेकिन व्यवहारिक दृष्टि से—वह और ही मामला है।"

"अर्थात् अगर मैं आपको सही समझता हूं तो, द्वन्द्वयुद्ध के सम्बन्ध में आपके सैद्धान्तिक विचार चाहे जो हों, आप वास्तव में अपने आप को बिना सन्तोष पाये अपमानित नहीं होने देंगे ?"

"आपने मेरे विचार का सही अनुमान लगा लिया है।"

"बहुत अच्छा है श्रीमान। आपको ऐसे कहते सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। आपके ब्यान ने मुझे द्विधा से निवृत कर दिया…"

"अनिश्चय से, आप कहना चाहते थे।"

"एक ही बात है; मैं समझने के लिए अपने को अभिव्यक्त करता हूं; मैं कोई पाठशाला का चूहा नहीं हूं। आपका ब्यान मुझे एक खेद-जनक आवश्यकता से मुक्त करता है। मैंने आपके साथ द्वन्द्वयुद्ध करने का निश्चय किया है।"

बैजारोव चौंक पड़ा।

"मेरे साथ ?"

"जी हाँ, जनाब, आपके साथ।"

"क्या खूब, भला किस लिए ?"

"मैं आपको कारण समझा सकता था," पैवेल पैट्रोविच ने कहना आरम्भ किया, "लेकिन मैं उसे न कहना ही ठीक समझता हूँ। बस

इतना ही काफी होगा सम्भवतः कि मैं आपसे घृणा करता हूं, और अगर यह भी काफी नहीं है तो···"

पैवेल पैट्रोविच की आँखों से लपट निकलने लगी···बैज़ारोव की आँखों में भी हलकी सी चमक थी।

"बहुत अच्छा, श्रीमान," उसने कहा, "और कुछ कहना सुनना अनावश्यक है। आपने अपने दिमाग में मुझ से अपनी बहादुरी आजमाने का पक्का निश्चय कर लिया है। मैं आपको उस सुख से वंचित कर सकता हूं, लेकिन मैं परवाह नहीं करता।"

"मैं आपका बड़ा अनुग्रहित हूं" पैवेल पैट्रोविच ने उत्तर दिया। "और अब मैं यह आशा कर सकता हूं कि आप मुझे हिंसा के लिए विवश नहीं करेंगे और मेरा चैलेंज स्वीकार कर लेंगे।"

"दूसरे शब्दों में सीधे सीधे कहा जाय तो—तो उसे छड़ी के लिए?" बैजारोव ने छड़ी की ओर शान्ति से देखा। "बहुत ठीक है। आपको मुझे अपमानित करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। और फिर वह सुरक्षित भी न होगा। आप एक शरीफ बने रह सकते हैं···एक शरीफ आदमी के नाते भी मैं आपका चैलेंज स्वीकार करता हूं।"

"बहुत सुन्दर," पैवेल पैट्रोविच ने कहा, और अपनी छड़ी कोने में रख दी। "अब हमारे द्वन्द्वयुद्ध की शर्त के सम्बन्ध में कुछ शब्द; लेकिन पहले मैं यह जानना चाहूंगा कि मेरे चैलेंज के तुर्की-ब-तुर्की के लिए छोटे-मोटे बातों के झगड़े के दिखावे की आवश्यकता है क्या?"

"नहीं, किसी दिखावे की आवश्यकता नहीं है।"

"मैं भी ऐसा ही समझता हूं और मैं अपने विरोधों के असली कारणों के मूल की बहस में भी जाने की आवश्यकता नहीं समझता। हम एक दूसरे को सहन नहीं कर सकते, बस। और अधिक कहने की आवश्यकता ही क्या है?"

"क्या आवश्यकता है!" बैजारोव ने कटु स्वर में दुहराया।

"रही द्वन्द्वयुद्ध की शर्त की बात, हमारे दूसरे साथी नहीं होंगे — हम उन्हें पाएंगे भी कहाँ—?"

"ठीक ही है, हम उन्हें कहां पाएंगे?"

"तो मैं प्रस्ताव करने का गौरव प्राप्त करता हूँ कि द्वन्द्वयुद्ध कल सुबह होगा, समझिए छः बजे, पिस्तौल से, जंगल के पास, दस कदम के निशाने से···"

"दस कदम? बहुत अच्छा; हम एक दूसरे को उसी दूरी से घृणा करते हैं।"

"हम उसे आठ भी कर सकते हैं," पैवेल पैट्रोविच ने कहा।

"निश्चय ही, क्यों नहीं।"

"हम में से हर एक दो बार गोली चला सकेगा; मौके-बेमौके की आवश्यकता के लिए हम में से हर एक अपनी अपनी जेब में अपने को ही अपनी मृत्यु का अपराधी ठहराते हुए, एक पत्र रखेगा।"

"अब आपकी इस बात से मैं सहमत नहीं हूँ," बैजारोव ने कहा। "यह फ्रेंच उपन्यास जैसा लगता है और उचित नहीं जंचता।"

"शायद। लेकिन आप यह मानेंगे कि हत्या का सन्देह उत्पन्न करना अच्छा नहीं होगा?"

"मैं सहमत हूँ। लेकिन इस दुखदायी सन्देह सम्भावना को मिटाने का एक और भी तरीका है। हमारे बीच में कोई दूसरा न होगा पर हम गवाह तो रख सकते हैं।"

"कौन, मैं पूछ सकता हूँ?"

"प्योतर।"

"कौन प्योतर?"

"आपके भाई का नौकर। वह एक आदमी है जो आधुनिक शिक्षा से परिचित है और अपना पार्ट बड़ी खूबी के साथ अदा करेगा।"

"मेरा ख्याल है कि आप मखौल कर रहे हैं जनाबेमन्।"

"बिलकुल भी नहीं। अगर आप मेरे सुझाव पर गौर करें तो वह आपको बिलकुल ठीक और सरल जंचेगा। हत्या के सन्देह की बात खतम हो जायगी। इस अवसर के लिए प्योतर को तैयार करना और युद्धस्थल पर उसे लाने की मेरी जिम्मेदारी रही।"

"आप अब भी मखौल कर रहे हैं," अपनी कुर्सी पर से उठते हुए पैवेल पैट्रोविच ने कहा। "लेकिन शिष्टाचार पूर्ण बातों से आपने यह साबित कर दिया है कि मुझे आपसे ईर्षा करने की कोई गुंजायश नहीं है—और अस्तु, हर बात तै हो गई।—अच्छा, क्या आपके पास पिस्तौलें हैं?"

"मुझे पिस्तौलों से क्या काम, पैवेल पैट्रोविच? मैं कोई योद्धा तो हूं नहीं।"

"तो फिर मैं आपको अपनी भेंट करता हूं। आप निश्चिन्त रहें, मैंने इन्हें पाँच वर्षों से इस्तेमाल नहीं किया है।"

"यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

पैवेल पैट्रोविच ने अपनी छड़ी उठा ली।

"तो मेरे प्रिय महाशय मुझे अब आपको धन्यवाद देना और आपको अपने अध्ययन के लिए छोड़ना शेष रह जाता है; आपका विनीत दास, श्रीमान।"

"कल की हमारी हर्षकारी मुलाकात तक, मेरे प्रिय महोदय," बैजारोव ने उसे बिदा करते हुए कहा।

पैवेल पैट्रोविच चला गया। बैजारोव थोड़ी देर तक बन्द दरवाजे के पास खड़ा रहा, तब बदन को झटकते हुए बोला: "ओफ! कैसा शैतान है! कितना अच्छा और कितना मूर्ख! हमने कैसा नाटक किया है? पालतू सिखाए हुए कुत्तों के जोड़े की तरह पिछली टांगों पर खड़े होकर उछल कूद। फिर भी मैं उससे मना नहीं कर सकता; हो सकता है वह मुझे पछाड़ भी सकता है, और तब···" (बैजारोव विचार आते

ही पीला पड़ गया; उसका सारा गर्व हवा हो गया।) "मैंने बिल्ली के बच्चे की तरह उसकी गरेंटिया दबा दी होती।" वह लौट कर अपने अणुवीक्षण यन्त्र के पास चला गया, पर उसके दिल में खीझन हो रही थी और यन्त्र में देखने की आवश्यक शान्ति हवा हो गई थी। "उसने आज हमें देख लिया था," उसने सोचा; "लेकिन क्या उसने यह सब निश्चय अपने भाई के लिए किया होगा? एक चुम्बन ने कैसा तूफान खड़ा कर दिया है। सम्भवतः इसके पीछे कुछ और है। हूं! मेरा ख्याल है कि वह स्वयं उससे प्रेम करता है। निश्चय ही वह उससे प्रेम करता है; यह दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट है।...कैसा पवित्र गड़बड़ घुटाला है! लाइलाज मामला है," उसने अन्त में निश्चय किया, "चाहे जिधर से उलट-पलट कर देख लो, असल बात तो यह है कि मुझे खतरा है, और हर हालत में मुझे यहां से जाना होगा; और यहाँ आर्केडी है...और—वह स्वर्ग-जन्मा निकोलाई पैट्रोविच, भला हो उसका। लाइलाज, लाइलाज!"

किसी तरह अजीब उदासी और घोर नीरवता के साथ दिन बीता। फेनिच्का का अस्तित्व ही नहीं मालूम पड़ रहा था; वह अपने कमरे में ऐसे घुसी-दुबकी बैठी थी जैसे अपने बिल में चुहिया। निकोलाई पैट्रोविच बड़ा बेचैन और उद्विग्न दीख पड़ रहा था; उसे इस बात की सूचना दी गई थी कि उसके गेहुओं में रोग लग गया है और वह विशेष कर उसी फसल पर आशा लगाए बैठा था। पैवेल पैट्रोविच ने सभी को उदास नीरस बर्फ जैसे ठंडे शिष्टाचार से दुख पहुँचाया, प्रोकोफिच तक को भी। बैजारोव ने अपने पिता को एक पत्र लिखना आरम्भ किया, फिर उसे फाड़ डाला और मेज के नीचे फेंक दिया। "अगर मैं मर जाता हूं," उसने सोचा, "तो उसके बारे में वे सुन ही लेंगे; लेकिन मैं मरने वाला नहीं हूँ। मुझे अभी बहुत दिन देखने हैं।" उसने प्योतर से उसके पास दूसरे दिन तड़के ही किसी जरूरी काम के लिए

आने को कहा; प्योतर इस आशा में था, कि वह उसे अपने साथ सेंट पीटर्सबर्ग ले जाना चाहता है। बैजारोव देर से बिस्तर पर गया और सारी रात अजीब अजीब स्वप्नों से बेचैन रहा—ओदिन्त्सोवा उसके स्वप्न में आई, वह उसकी मां भी थी, उसके पीछे एक बिल्ली का बच्चा था जिसकी काली तीकुर सी मूछें खड़ी थीं और वह बिल्ली फेनिच्का थी; पैवेल पैट्रोविच एक बड़े जंगल के रूप में दिखाई पड़ा जिससे उसे अभी द्वन्द्व युद्ध करना था। प्योतर ने उसे चार बजे सवेरे जगा दिया, उसने जल्दी से कपड़े पहिने और उसके साथ बाहर चला गया।

× × ×

सुबह अत्यन्त ही प्रकाशवान थी; नीले निर्मल आकाश में चितकबरे भुरभुरे गुलगुले बादल छाए हुए थे; पत्तियों और घास पर तुहिन कण झिलमिला रहे थे और मकड़ी के जाले पर चांदी की तरह चमक रहे थे; आसमान से लवा पक्षी का संगीत सुन पड़ रहा था। बैजारोव निश्चित जंगल के पास पहुँचा, और जंगल के किनारे छाया में बैठ गया, और तब उसने प्योतर को बताया कि वह उस से कौन सा काम लेना चाहता है। सुनते ही शिक्षित नौकर के होश फाख्ता हो गए। लेकिन बैजारोव ने उसे समझाते हुए शान्त किया कि उसे सिर्फ दूर खड़े होकर देखते भर रहना है और उस पर किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं आएगी। "तुम जरा सोचो," उसने कहा, "तुम्हारे भाग्य में कितना महत्त्वपूर्ण कार्य करना लिखा है!" प्योतर ने अपने हाथ फैलाए और जमीन पर घूरता हुआ वह एक भोजपत्र में पेड़ के सहारे खड़ा हो गया, उसके चेहरे का रंग उड़ गया था।

मैरिनो से जंगल को जाने वाली सड़क की धूल से कल से ही किसी पहिए या पैर का स्पर्श न हुआ था। बैजारोव ने वैसे ही उदासी

से सड़क की ओर नजर डाली और घास का तिनका नोच कर चबाता हुआ अपने से कहता रहा: "कैसी मूर्खता है !" सवेरे की ठंडी हवा ने उसे एक-आध बार कंपा दिया। प्योतर ने उसकी ओर अफसोस भरी दृष्टि से देखा, लेकिन बैजारोव सिर्फ मुस्कराया—उसने साहस नहीं खोया था।

सड़क पर घोड़े की टापें सुनाई दीं। एक किसान पेड़ों के झुरमुट से प्रगट हुआ। वह अपने आगे दो लंगड़ाते घोड़ों को हाँक कर लिए जा रहा था और बैजारोव के पास से गुजरते हुए उसने बिना नमस्कार किए उस पर एक जिज्ञासा पूर्ण दृष्टि डाली जो प्योतर को एक अप-शकुन जान पड़ी। बैजारोव ने सोचा: "यह आदमी भी तड़के सोकर उठा है पर किसी प्रयोजन में तो, लेकिन हम ?"

"मेरा ख्याल है कि वह आ रहा है," प्योतर ने फुसफुसाते हुए कहा।

बैजारोव ने नजर उठाई और पैवेल पैट्रोविच को देखा। वह एक झीने चारखाने की जाकेट और दूधिया सफेद पैजामा पहने था। वह अपनी बगल में हरे कपड़े में लिपटा एक डिब्बा दबाए तेजी से लपका आ रहा था।

"माफ करना, मैंने तुम्हें इन्तजार कराया," उसने पहिले बैजारोव को विनत नमस्कार किया और फिर प्योतर को भी उसका सहायक मानते हुए विनत हो नमस्कार किया। "मैं अपने दास को कष्ट देना नहीं चाहता था।"

"कोई बात नहीं," बैजारोव ने जवाब दिया, "हम लोग भी अभी पहुँचे हैं।"

"ओह, और भी अच्छा है," पैवेल पैट्रोविच ने चारों ओर नजर दौड़ाते हुए कहा। "कोई नहीं दिखाई पड़ता, कोई बाधक न होगा''' क्या हम शुरू करें ?"

"हां, शुरू करना चाहिए।"

"क्या मैं समझूं कि आपको और किसी सफाई की आवश्यकता नहीं है।

"नहीं ! बिल्कुल नहीं !"

"क्या आप अपनी पिस्तौल स्वयं भरना चाहेंगे?" पैवेल पैट्रोविच ने डिब्बे में से पिस्तौलें निकालते हुए पूछा।

"नहीं, आप ही भर दीजिए, मैं कदम नापता हूं। मेरे डग लम्बे हैं," बैजारोव ने तिक्त-विनोदी मुस्कान के साथ कहा। "एक, दो, तीन..."

"एवजेनी वेसिलिच !" प्योतर ने हकलाते हुए कहा (वह अस्पिन पेड़ की पत्तियों की तरह काँपा)। "आपकी जो तबियत आए कीजिए, पर मुझे माफ कीजिए।"

"...चार, पांच...एक ओर हटो हजरत; तुम तो एक पेड़ के पीछे भी खड़े हो सकते हो, और अपने कान बन्द कर सकते हो, पर आँखें मत बन्द करना; अगर हममें से कोई गिर जाय, तो दौड़ कर उसे उठा लेना...छः, सात, आठ,..." गिनते गिनते बैजारोव रुक गया। "काफी है," बैजारोव ने पैवेल पैट्रोविच की ओर मुड़ते हुए पूछा, "या और एक-दो कदम नापूँ?"

"जैसी तुम्हारी मर्जी," पैवेल ने पिस्तौल में एक और कारतूस भरते हुए जवाब दिया।

"अच्छा, और दो कदम सही।" बैजरोव ने अपने जूते की ठोकर से एक लकीर खींच दी। "यह रही पाली। अच्छा भला यह तो बताइए कि पाली-सीमा से हम कितने कदम की दूरी पर खड़े होंगे? यह भी महत्व की बात है। हमने कल इस पर बात नहीं की थी।"

"दस कदम" पैवेल पैट्रोविच ने बैजारोव की ओर पिस्तौलें

बढ़ाते हुए कहा। "क्या आप कृपा करके अपने लिए पिस्तौल चुन लेंगे।"

"जरूर। क्यों भला पैवेल पैट्रोविच, हमारा यह द्वन्द्वयुद्ध मूर्खता पूर्ण नहीं है? जरा हमारे इस साथी के चेहरे को तो देखो।"

"तुम अब भी इसे मजाक ही समझना चाहते हो," पैवेल पैट्रोविच ने उत्तर दिया। "मैं इससे इन्कार नहीं करता कि हमारा द्वन्द्व-युद्ध अजीबो-गरीब है पर मैं तुम्हें यह चेतावनी देना अपना कर्तव्य समझता हूं कि मैं इसे पूरी लगन और तत्परता के साथ लड़ना चाहता हूं। ए, हमारे भले गवाह हम तुम्हें नमस्कार करते हैं।"

"ओह, मुझे इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि हम एक दूसरे को मिटा देना चाहते हैं; लेकिन हम थोड़ा मुस्कुरा कर इसे थोड़ा मधुर क्यों न बना लें? तो यह रहा तुम्हारे नहले के जवाब में दहला।"

पैवेल पैट्रोविच ने अपना मोर्चा सम्हालते हुए दुहराया, "मैं निःसन्देह लड़ने जा रहा हूं।" बैजारोव ने पाली से दस कदम नाप कर अपना मोर्चा बनाया।

"तैयार हो?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"बिलकुल।"

"हम शुरू कर सकते हैं।"

बैजारोव धीरे धीरे आगे बढ़ा और पैवेल पैट्रोविच उस पर झपटा। उसका बांया हाथ जेब में पड़ा था और दाहिने हाथ से वह होशियारी से पिस्तौल का निशाना साध रहा था। "वह सीधा मेरी नाक का निशाना साध रहा है," बैजारोव ने सोचा, "और कितनी होशियारी से निशाना साध रहा है बदमाश! यद्यपि यह बड़ा अजीब असुख-कर अनुभव है। मैं अपनी नजर उसकी घड़ी की चेन पर रखूंगा..." बैजारोव के कान के पास से कुछ सन्नाता हुआ निकला और साथ ही एक धमाका हुआ। "मैंने सुना; यानी अभी मैं ठीक हूं," एकाएक

उसके दिमाग में बात घूम गई। उसने एक दूसरा पैंतरा लिया और बिना निशाना साधे गोली छोड़ दी।

पैवेल पैट्रोविच चौंक पड़ा और उसने अपनी जांघ पकड़ ली। उसके सफेद पैजामे से लहू बहने लगा।

बैजारोव ने पिस्तौल फेंक दी और लपक कर अपने प्रतिद्वन्द्वी के के पास पहुँचा।

"क्या आप घायल हो गए?" उसने पूछा।

"तुम मुझे पाली पर बुला सकते थे—खैर," पैवेल पैट्रोविच ने कहा। "ओह कुछ भी नहीं, जरा यूं ही। शर्त के मुताबिक हम में से हर एक को अभी एक बार और गोली चलाने का अधिकार है।"

"दुख है, हमें वह अधिकार किसी और समय के लिए स्थगित करना पड़ेगा," बैजरोव ने पैवेल को सम्हालते हुए प्रति उत्तर दिया। पैवेल का रंग पीला पड़ चला था। "अब मैं प्रतिद्वन्द्वी नहीं, बल्कि एक डाक्टर हूं, और मुझे आपका घाव अवश्य देखना चाहिए। प्योतर इधर आओ, तुम कहां छिपे हो?"

"यह कुछ भी नहीं है। मुझे किसी सहायता की जरूरत नहीं है," पैवेल पैट्रोविच ने अटक अटक कर कहा, "और···हमें···फिर···" वह अपनी मूंछ ऐंठना चाहता था, पर उसका हाथ शिथिल हो गिर पड़ा, आंख ऊपर चढ़ गई और वह बेहोश हो गया।

"या ईश्वर! मूर्छना! लो भला!" पैवेल पैट्रोविच को घास पर लिटाते हुए बैजारोव के मुंह से अकस्मात् निकल गया। "देखें तो क्या हो गया।" उसने एक रूमाल निकाला, खून पोंछा और घाव के के चारों ओर दबा कर देखा। "हड्डी ठीक है," वह बुदबुदाया; "ऊपरी मांस में घाव है, गोली पार निकल गई है, जांघ की एक पेशी थोड़ी घायल हो गई है। तीन हफ्ते में उछलने कूदने लगेगा···देखो

तो, मूर्छित हो गया ! बेचारा कमजोर दिल ! देखो तो, कैसी नरम खाल है।"

"क्या मर गये, सरकार ?" प्योतर ने उसके पीछे से जल्दी से पूछा। उसकी आवाज कांप रही थी। बैजारोव पीछे घूमा ।

"जाकर थोड़ा सा पानी लाओ—यह हम दोनों से ज्यादा दिन जिन्दा रहेगा।"

लेकिन वह भला आदमी अपनी जगह से नहीं हिला, मालूम होता था कि उसने बैजारोव की बात समझी ही नहीं। पैवेल पैट्रोविच ने धीरे से अपनी आंख खोली। "ओह अभी जिन्दा हैं ?" प्योतर थर्रा गया और क्रास का चिन्ह् बनाने लगा।

"तुमने ठीक कहा ''कैसा बेहूदा चेहरा है तम्हारा।" घायल ने मरी सी नीरस मुस्कान के साथ कहा।

बैजारोव ने चिल्ला कर कहा, "दौड़ कर पानी लाओ।"

"कोई जरूरत नहीं...यह तो एक हलका सा चक्कर आया था... मुझे जरा बैठा दो.. अब ठीक है...इस खरोंच पर सिर्फ पट्टी बाँधने की जरूरत है और फिर मैं घर आराम से चला जाऊंगा, या फिर गाड़ी मगाई जा सकती है। द्वन्द्व युद्ध अगर तुम चाहोगे तो फिर नहीं दुहराया जायगा। तुमने आज सभ्य व्यवहार किया है, सिर्फ आज ही!"

"छोड़िए भी बीती बातें" बैजारोव ने जवाब दिया। "और भविष्य की चिन्ता की भी जरूरत नहीं है, क्योंकि मैं तुरन्त यहां से निकल जाना चाहता हूं। लाइए, आपके घाव पर पट्टी बांध दूं; वैसे तो आपका घाव कोई खतरनाक नहीं है फिर भी खून का बहना तो रोक ही देना चाहिए। लेकिन पहले इस भलेमानुस के तो होश-हवास दुरूस्त किए जांय।"

बैजारोव ने प्योतर को उसके कालर पकड़ कर झंझोड़ा और

गाड़ी लेने के लिए भेज दिया।

"ध्यान रहे तुम मेरे भाई को जाकर डरा नहीं दोगे," पैवेल पैट्रोविच ने उसे आगाह करते हुए कहा। " उसे कुछ भी बताने का साहस न करना।"

प्योतर दौड़ गया। दोनों प्रतिद्वन्द्वी निश्चल और शान्त जमीन पर बैठे रहे। पैवेल पैट्रोविच बैजारोव की ओर देखने से कन्नी काट रहा था; वह उससे फिर से मित्रता नहीं बनाना चाहता था; वह अपनी उद्दंडता के लिए और अपनी असफलता के लिए लज्जित था और उस सारी गड़बड़ के लिए जो उसने खड़ी कर दी थी वह शर्मिन्दा था, यद्यपि उसने यह भी अनुभव किया कि उसका अन्त इससे अधिक सन्तोष-जनक नहीं हो सकता था। "बहर हाल अब वह किसी शर्त पर यहां नहीं हिलता रहेगा," उसने अपने आपको सान्त्वना दी, "यह एक अच्छी बात रही।" निस्तब्धता दुखदायी और भद्दी होती जा रही थी। दोनों ही उस निस्तब्धता और मूकता से ऊब रहे थे। दोनों ही अनुभव करते थे कि वे एक दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं। दोस्तों के बीच तो यह उल्लासकारी अनुभव होता है, लेकिन शत्रुओं के बीच यह अत्यन्त ही असुखकर अनुभव होता है; विशेष-कर जबकि झगड़ा निपटने पर एक दूसरे से अलग होने का कोई रास्ता नहीं होता।

"मैंने आपका पैर अधिक कस कर तो नहीं बांधा, क्यों?" आखिर-कार बैजारोव ने पूछा।

"नहीं, ठीक है, बहुत ठीक है, "पैवेल पैट्रोविच ने उत्तर दिया, और थोड़ी देर रुक कर फिर बोला, "मेरे भाई को बेवकूफ नहीं बनाना होगा। उसे बताना होगा कि हमारा झगड़ा राजनीति पर हुआ है।"

"बहुत अच्छा," बैजारोव ने कहा। "आप कह सकते हैं कि मैंने

अंग्रेजियत की बू वालों का मजाक उड़ाया था।"

"बहुत ठीक है। तुम्हारा क्या अनुमान है, वह आदमी हमारे बारे में क्या सोचता है?" पैवेल पैट्रोविच ने उस किसान की ओर संकेत करते हुए कहा जो द्वन्द्व से अभी थोड़ी देर पहिले घोड़ों को लिए बैजारोव के पास से गुजरा था और अब सड़क पर से वापस आ रहा था। उसने इन दोनों सज्जनों को देखकर विनत हो हैट उतार कर अभिवादन किया।

"कौन जाने!" बैजारोव ने उत्तर दिया। "सम्भवतः वह कुछ भी नहीं सोचता। रूसी किसान अत्यन्त जाहिल है। श्रीमती रैडक्लिफ इनके बारे में बड़ी बात करती थीं। कौन जाने, कि वह अपने आप को भी जानता है या नहीं।"

"तो तुम ऐसा सोचते हो!" पैवेल पैट्रोविच ने कहना आरम्भ किया, फिर एकाएक संकेत करते हुए बोला, "देखो आपके उस गधे प्योतर ने जाकर क्या किया! मेरा भाई रो रहा है!"

बैजारोव ने सिर घुमाया और देखा कि निकोलाई पैट्रोविच बग्घी में बैठा है। उसका चेहरा पीला हो रहा था। गाड़ी रुकने से पहले ही वह नीचे कूद पड़ा और अपने भाई की ओर दौड़ा।

"यह सब क्या है?" वह घबड़ाई हुई आवाज में चिल्लाया; "एवजेनी वेस्लिच, क्या मामला है?"

"ठीक है, ठीक है, पैवेल पैट्रोविच ने उत्तर दिया।" इन्हें तुम्हें तंग नहीं करना चाहिए था, मि० बैजारोव और मुझ में थोड़ा झगड़ा हो गया था, और मुझे जरा उसका बुरा फल देखना पड़ा है।"

"ईश्वर के वास्ते बताइए यह सब क्या और क्यों हुआ?"

"अच्छा, तुम जानना ही चाहते हो! मि० बैजारोव ने सर रौबर्ट पील के संबंध में कुछ अपमान जनक बातें कहीं। मैंने जल्दी से कहा कि यह सब मेरी गलती है और मि० बैजारोव ने बड़ी अच्छी तरह

व्यवहार किया। मैंने इन्हें ललकारा।"

"लेकिन यह तो खून बह रहा है।"

"क्या तुम समझते हो मेरी नसों में पानी है? लेकिन यह खून बहना स्वास्थ्यकर है। क्यों क्या ऐसा नहीं है डाक्टर? मुझे गाड़ी में चढ़ने में सहायता दो जरा, भाई, और इतने उदास मत हो। मैं कल तक चंगा हो जाऊंगा।···वहाँ, यह ठीक है। कोचवान चलो।" निकोलाई पैट्रोविच गाड़ी के पीछे पीछे चला बैजारोव भी हो लिया······

"जब तक शहर से दूसरा डाक्टर न आ जाय," निकोलाई पैट्रोविच ने उससे कहा, "आप मेरे भाई की देखभाल कीजिएगा।"

बैजारोव ने बिना बोले सिर झुका दिया।

एक घन्टे बाद पैवेल पैट्रोविच बिस्तर पर लेटा था। उसके पैर के घाव पर कुशलता से पट्टी बंधी थी। सारे घर में हंगामा मच गया; फेनिच्का मूर्छित हो गई थी; निकोलाई पैट्रोविच उद्विग्न हो हाथ मल रहा था, और पैवेल पैट्रोविच हंस रहा था और ठिठोली कर रहा था, विशेषकर बैजारोव से। उसने महीन किमरिख की कमीज सवेरे की सुथरी जाकेट और फुन्देदार तुर्की टोपी पहन रखी थी। उसने खिड़कियों के पर्दे नहीं गिराने दिए, और खाना मना होने पर विदूषक की तरह शिकायत करने लगा।

रात के समय उसका बुखार बढ़ गया, और सिर में दर्द हो गया। शहर से एक डाक्टर आ गया था। (निकोलाई पैट्रोविच ने अपने भाई के विरोध को अनसुना कर दिया था और बैजारोव ने भी इस पर जोर दिया था। वह दिन भर अपने कमरे में बैठा रहा था, पीला और उदास। और थोड़ी थोड़ी देर बाद घायल को जाकर देख आता था, एक या दो बार उसकी फेनिच्का से भी मुठभेड़ हुई पर वह भयभीत होकर ठिठक गई थी) नये डाक्टर ने स्फूर्ति लाने वाली शराब देने

की सलाह दी और बेजारोव के आश्वासन का समर्थन किया कि कोई खतरे की बात नहीं है। निकोलाई पैट्रोविच ने उससे यह बताया कि उसके भाई ने गलती से अपने आप ही अपने को घायल कर लिया है; जिस पर डाक्टर ने जवाब दिया : "हूँ।" लेकिन तीन और बाद में पच्चीस चाँदी के रूबल पाने के बाद उसने कहा :

"आश्चर्य है कि आपके साथ अब भी ऐसी बातें हो जाती हैं।"

घर भर में किसी ने न तो कपड़े बदले और न कोई सोया ही। हर घड़ी बाद निकोलाई पैट्रोविच अपने भाई के कमरे में दम साधे पंजे के बल आता और उसी तरह बिना किसी तरह की आवाज किए बाहर चला जाता। घायल को गहरी झपकी आगई, वह थोड़ा कराहा और उसने फ्रेंच में कहा "जाकर सो रहो" और थोड़ी शराब मांगी। निकोलाई पैट्रोविच ने एक बार फेनिच्का के हाथ उसके पास एक ग्लास लैमन भेजा। पैवेल पैट्रोविच ने उसकी ओर एक टक घूरा और ग्लास खाली कर दिया। सवेरा होने के करीब बुखार फिर बढ़ा और बीमार थोड़ा अचेत हो गया और बकने झकने लगा। पहिले तो पैवेल पैट्रोविच ने कुछ असंगत और असम्बद्ध शब्द कहे; फिर उसने एकाएक आँखें खोल दीं और अपने भाई को अपने ऊपर उत्कंठित झुके हुए देखा तो उसने धीमे स्वर में कहा :

"निकोलाई पैट्रोविच क्या तुमने कभी यह ध्यान नहीं दिया कि फेनिच्का और नेले की कुछ बातें एक सी हैं?"

"कौन नेले, पैवेल?"

"सोचो। राजकुमारी, विशेष कर उसके चेहरे का ऊपरी भाग। दोनों में पैतृक समानता सी लगती है।"

निकोलाई पैट्रोविच ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसने घोर आश्चर्य के साथ सोचा कि इस आदमी में पुरानी भावनाएं कितनी दृढ़ हैं।

"इसलिए वे सजीव हो उठती हैं," उसने सोचा।

"ओह, मैं उसे कितना प्यार करता हूं!" पैवेल पैट्रोविच ने घोर मानसिक वेदना से कराहते हुए और अपने सिर के पीछे हाथों को जकड़ते हुए कहा।" मैं उसे छूने का कोई दुराचारी साहस नहीं करूंगा..." एक मिनट बाद वह बुरबुराया।

निकोलाई पैट्रोविच ने सिर्फ एक गहरी सांस ली; उसे इन शब्दों की सच्चाई के प्रति कोई सन्देह न था।

दूसरे दिन सवेरे लगभग आठ बजे बैजारोव उसे देखने आया। उसने अपना सामान बाँध लिया था और अपने सभी मेंढक, कीड़े और चिड़िया आजाद कर दी थीं।

"आप विदा लेने के लिए आए हैं?" निकोलाई पैट्रोविच ने उस से मिलने के लिए उठते हुए कहा।

"जी हाँ।"

"मैं आपकी बात समझता हूं और पूरी तरह से आपका समर्थन करता हूँ। बेचारे मेरे भाई को ही दोष देना चाहिए—और उसकी उन्हें सजा भी मिल गई है। उन्होंने स्वयं ही मुझे बताया है कि उन्होंने आपको ऐसी स्थिति में डाल दिया था कि आपके सामने और कोई रास्ता ही न रहा था। मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस झगड़े को बचाने की स्थिति में न थे जो...जो बहुत हद तक आप दोनों के निरन्तर परस्पर विरोधी विचारों का स्वाभाविक परिणाम था।" (निकोलाई पैट्रोविच के शब्द लड़खड़ा गए) "मेरे भाई पुरानी पीढ़ी के हैं, बहुत जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं और हठी हैं।...ईश्वर ने खैर की कि यहीं अन्त हुआ। ईश्वर को धन्यवाद है। मैंने इस मामले को दबाने के लिए सारे जरूरी उपाय कर लिए हैं..."

"मैं आपको अपना पता दे जाऊंगा, शायद कोई गड़बड़ पड़े," बैजारोव ने कहा।

"मुझे आशा है कि कोई गड़बड़ न होगी, एवजेनी वेस्लिच···मुझे बड़ा दुख है कि मेरे घर में आपका प्रवास···इस दुखदाई रूप से समाप्त हो रहा है। मुझे और भी दुख हो रहा है कि आर्केडी···"

"सम्भवत: ! उससे मेरी भेंट होगी" बैजारोव ने बीच में ही कहा, जो हर तरह की 'सफाई' और 'प्रदर्शन' पर उत्तेजित हो जाता था। "अगर नहीं हुई तो कृपया उससे मेरा नमस्ते कहिएगा और कृपया मेरा खेद स्वीकार कीजिए।"

"और कृपया स्वीकार कीजिए···" निकोलाई पैट्रोविच ने थोड़ा विनत होकर कहना आरम्भ किया। बैजारोव उसकी बात की समाप्ति की प्रतीक्षा किए बिना ही चला गया।

जब पैवेल पैट्रोविच ने सुना कि बैजारोव जा रहा है तो उसने उससे भेंट करने की लालसा प्रगट की। उसने उससे हाथ मिलाया। लेकिन बैजारोव निश्चल बर्फ की तरह ठन्डा खड़ा रहा; उसने अनुभव किया कि पैवेल पैट्रोविच उस पर अपना आभार प्रगट करना चाहता है। उसने फेनिच्का से विदाई लेने की कोशिश नहीं की: सिर्फ उससे खिड़की में से दृष्टि परिवर्तन मात्र कर लिया। उसे उसका चेहरा व्यथित जान पड़ा। "मेरा ख्याल है वह बीमार हो जायगी!" उसने अपने मन में कहा। "छोड़ो, यही आशा करो कि वह किसी न किसी तरह इस कष्ट से उबर ही जायगी!" प्योतर इतना दुखी था कि वह उसके कंधे पर सिर रख कर तब तक रोता रहा जब तक बैजारोव ने उसे सान्त्वना देकर शान्त न किया, और दुन्याशा अपने आवेग को छिपाने के लिए झाड़ी में छिप गई। इन सब व्यथाओं का कारण बैजारोव गाड़ी में बैठा, एक सिगार जलाई और तीन वैर्स्टस सड़क पर चलने के बाद उसने किर्सानोव कृषि फार्म के नये मकान पर एक नजर डाली, थूका और बड़बड़ाया; "जमींदारी राज्य का बुरा हो!" और अपना कोट और कसकर लपेट लिया।

× × ×

पैवेल पैट्रोविच जल्दी ही स्वस्थ होने लगा; लेकिन लगभग एक सप्ताह तक उसे बिस्तर पर पड़ा रहना पड़ा। वह इसे अपना कारावास मानता था। बहरहाल उसने इस समय को धीरता से बिताया लेकिन अपने साबुन-तेल, इतर पाउडर पर काफी हंगामा मचाया और थोड़ी थोड़ी देर बाद अपने कमरे को सुवासित करने की मांग करता था। निकोलाई पैट्रोविच उसे पत्रिकाएं पढ़कर सुनाता, फेनिच्का पहिले ही की तरह उसकी परिचर्या करती, उसके लिए शोरबा लाती, लैमन, आधा उबला अंडा और चाय लाती, लेकिन वह जब जब कमरे में घुसती तब तब किसी अगम्य भय से अभिभूत हो उठती। पैवेल के इस दुस्साहसी कृत्य ने सारे घर भर को भयभीत कर दिया था। और उसे तो ऊंचों की अपेक्षा और भी अधिक भयभीत कर दिया था, केवल प्रोकोफिच ही ऐसा बचा था जिस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था और वह अपने समय के लोगों के बारे में बात करता कि वे भी इस तरह आपस में युद्ध करते थे, पर वे सही माने में सज्जन होते थे, और इन जैसे दुरात्माओं को तो उनकी धृष्ठता के लिए वे सीधे अस्तबल में बन्द कर देने का आदेश देते।

फेनिच्का के अन्तःकरण को वस्तुतः कोई पश्चाताप न था लेकिन कभी कभी उसे यह विचार अवश्य दुखी कर देता था कि वही उस सारे झगड़े की जड़ है; पैवेल पैट्रोविच उसकी ओर अजीब जिज्ञासा की दृष्टि से देखता था…जब उसकी पीठ पैवेल की ओर होती तब भी उसको यह अनुभव होता कि उसकी आँखें उसे ही घूर रही हैं। वह निरन्तर उद्विग्नता के कारण दुर्बल हो गयी थी और जैसी आशा की जा सकती थी और भी आकर्षक हो गई थी।

एक दिन सवेरे के समय पैवेल पैट्रोविच कुछ स्वस्थ अनुभव कर रहा था और बिस्तर से उठकर सोफा पर आ गया था। निकोलाई पैट्रोविच उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछ कर खलिहान में चला गया

था। फेनिच्का उसके लिए एक प्याला चाय लाई और मेज पर रख कर जाना चाहती थी, कि पैवेल पैट्रोविच ने उसे रोक लिया।

"तुम इतनी जल्दी में क्यों हो फिड्रोस्या निकोलेयना?" उसने बात शुरू की। "क्या कोई काम है तुम्हें?"

"जी नहीं...लेकिन मुझे चाय बनानी चाहिए।"

"दुन्याशा बिना तुम्हारे भी बना लेगी; जरा बीमार आदमी की भी तो थोड़ी देर संगत कर लो। मैं जरा तुम से बात करना चाहता हूँ।"

फेनिच्का आराम कुर्सी के किनारे पर उखड़ी उखड़ी सी सहमी निश्चल बैठ गई।

पैवेल ने अपनी मूंछों पर ऊपर की ओर ताव देते हुए कहा, "मैं अरसे से तुम से पूछना चाहता था—ऐसा लगता है कि तुम मुझ से डरती हो?"

"मैं, श्रीमान?"

"हाँ, तुम, तुम कभी मेरी ओर नहीं देखती, कोई यह सोच सकता है कि तुम्हारा अन्तःकरण शुद्ध नहीं है।"

फेनिच्का लाल पड़ गई, लेकिन उसने अपनी आँखें पैवेल पैट्रोविच की ओर उठाईं। उसके इस अजीब स्नेह सम्मान से उसका दिल धुकधुकाने लगा था।

"तुम्हारा अन्तःकरण शुद्ध है, क्यों नहीं है क्या?" उसने पूछा।

"होगा क्यों नहीं? उसने फुसफुसाहट के स्वर में कहा।

"कौन जाने? तुम किसी का बुरा कर सकती हो मुझे सन्देह है? मेरा? यह असम्भव है। घर में और किसी का? यह भी असम्भव है। सम्भवतः मेरे भाई का? लेकिन उसे तो तुम प्रेम करती हो, नहीं करती हो क्या?"

"करती हूँ।"

"सच्चे दिल से ?"

"हाँ, मैं उन्हें सच्चे दिल से प्रेम करती हूं।"

"सच ? मेरी ओर देखो फेनिच्का" (उसने यह नाम पहली बार लिया था—। "तुम जानती हो कि झूठ बोलना महापाप है !"

"मैं झूठ नहीं बोल रही। मैं उन्हें भला प्रेम क्यों नहीं करूंगी उनके बाद मैं जिन्दा भी नहीं रहना चाहूंगी।"

"और तुम किसी और के लिए छोड़ोगी भी नहीं ?"

"मैं किसके लिए उन्हें छोड़ सकती हूं ?"

'कोई कभी नहीं जानता ! क्यों, उन महाशय के लिए, जो अभी यहां से गये हैं।"

फेनिच्का उठ कर खड़ी हो गई : "ऐ मेरे ईश्वर, पैवेल पैट्रविच आप मुझे इस तरह क्यों त्रास दे रहे हैं ? मैंने आपका क्या बिगाड़ा है ! आप ऐसी बात कैसे कह सके ?"

"फेनिच्का," पैवेल पैट्रोविच ने मधुर स्वर में कहा, "मैंने देखा था, तुम जानती हो—"

"देखा था, क्या ?"

"वहां बाहर—कुंज में।"

फेनिच्का को रोमांच हो आया और उसके बालों की जड़ तक लोहित हो गई।

"लेकिन उसके लिए मुझे दोष कैसे दिया जा सकता है ?" उसने बड़े प्रयत्न से कहा।

पैवेल पैट्रोविच सीधा बैठ गया।

"तुम्हारा दोष नहीं है ? नहीं ? बिलकुल भी नहीं ?"

"मैं दुनिया में सिर्फ निकोलाई पैट्रोविच को ही प्रेम करती हूँ, और मैं जब तक जीवित रहूंगी तब तक उन्हीं को प्रेम करूंगी," फेनिच्का ने बड़ी मुश्किल से कोशिश करके कहा और सिसकी लेने

लगी। "और रही वह बात जो आपने उस दिन देखी तो मैं यमराज के यहां न्याय के दिन कसम खाकर कहूँगी कि उसमें मेरा दोष जरा भी नहीं है, और अब मेरे लिए मर जाना ही अच्छा होगा कि ऐसी बात के लिए मेरे ऊपर सन्देह किया जाय, अपने दाता के विरुद्ध ऐसा पाप ! निकोलाई पैट्रोविच···"

कहते कहते उसकी आवाज जवाब दे गई और भर्रा गई, उसी समय उसे यह ज्ञात हुआ कि पैवेल पैट्रोविच ने उसका हाथ पकड़ लिया है और उसे सहला रहा है···उसने उसकी ओर देखा और वह आश्चर्य से पत्थर और निर्जीव हो गई, उसका चेहरा और भी पीला पड़ गया था, उसकी आँखें चमकने लगीं और सबसे ताज्जुब की बात तो यह थी कि एक भारी आँसू की एकाकी बूंद उसके गाल पर ढुलक गई।

'फेनिच्का," उसने चौंका देने वाली फुसफुसाहट से कहा," मेरे भाई को प्यार करो, उसे प्यार करो ! वह बड़ा भला मानुस है ! उसे संसार में किसी के भी लिए धोखा मत देना, किसी की भी मत सुनना ! जरा सोचो प्रेम करने और प्रेम न किए जाने से और बुरा क्या होगा ! मेरे बेचारे निकोलाई को कभी मत त्यागना।"

फेनिच्का की आँखें सूख गईं और उसका डर जाता रहा—उसे अत्यधिक विसमय था। लेकिन तब उसे क्या हुआ जब पैवेल पैट्रोविच, हां, स्वयं पैवेल पैट्रोविच ने उसके हाथ अपने ओठों पर लगाए और उन्हें बिना चूमे ओठों से चिपकाए रहा, सिर्फ रह रह कर बेहोशी की गहरी साँस भरते रहा···

"ओह, कैसी अजीब बात है !" उसने सोचा "मुझे ताज्जुब है कि कहीं फिट तो नहीं आ रहा है ?"···

उस समय उसकी गत बर्बाद जीवन की स्मृतियां उसे पीड़ित करने लगीं।

सीढ़ियों पर पदचाप सुनाई पड़ी···उसने फेनिच्का को परे हटा दिया और सोफा पर पसर गया। दरवाजा खुला-और निकोलाई पैट्रोविच भीतर आया। वह प्रफुल्ल चैतन्य और गुलाबी दीख पड़ रहा था। मित्या, अपने पिता की ही तरह चैतन्य और गुलाबी दीख रहा था। वह सिर्फ एक बनियायन पहने था। वह उछल कर उसके सीने पर चिपट गया। उसके छोटे पैर की नंगी उंगलियाँ निकोलाई के घर-बुने कोट के बड़े बटनों पर टिकीं थीं।

फेनिच्का आवेग से उसकी ओर लपकी और उसे मय अपने बेटे के अपनी बाँहों में भर लिया, और उसके कँधे पर अपना सिर प्यार से रख दिया। निकोलाई पैट्रोविच चकित रह गया उसकी अति लाजवन्ती, संकोची और विनयी फेनिच्का ने तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति में कभी उससे अपना प्रेम प्रकट नहीं किया था।

"क्या बात है?" उसने कहा और अपने भाई की ओर देखते हुए, मित्या को उसने फेनिच्का की गोद में दे दिया। "आपकी तबियत ज्यादा खराब तो नहीं है, क्यों?" उसने पैवेल पैट्रोविच से उसके पास आते हुए पूछा।

पैवेल ने रूमाल से अपना मुंह छिपा लिया। "नहीं,···कुछ नहीं—मैं बिल्कुल ठीक हूं—और बल्कि अब तो मैं स्वस्थ अनुभव कर रहा हूं।"

"आपको सोफा पर उठकर आने की इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिए थी। अरे तुम कहां चलीं," निकोलाई पैट्रोविच ने फेनिच्का की ओर मुंह फेरते हुए कहा, लेकिन वह पहले ही दरवाजे से बाहर निकल कर दरवाजा बन्द कर चुकी थी। "मैं तुम्हें नन्हे को दिखाना चाहता था; वह अपने चाचा को बहुत याद करता है। वह उसे ले क्यों गई? और तुम्हें भी क्या हुआ है? क्या तुम्हारे साथ यहाँ कुछ हो गया है क्या?"

"भाई !" पैवेल पैट्रोविच ने कहा उसके स्वर में पवित्र स्नेह था।

निकोलाई पैट्रोविच चौंक पड़ा। वह स्तम्भित हो गया, वह समझ नहीं सका क्या बात है?

"भाई," पैवेल पैट्रोविच ने दुहराया, "वायदा करो कि तुम मेरी प्रार्थना पूरी करोगे।"

"कौनसी प्रार्थना? आप क्या कहना चाहते हैं?"

"बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है; मेरा विश्वास है कि उस पर तुम्हारे आगत जीवन का सुख निर्भर करता है। मैं जो तुम से कहने जा रहा हूँ उसपर मैं बड़ी देर से विचार कर रहा हूं। भाई मेरे, अपना कर्तव्य पूरा करो, एक ईमानदार और सच्चे आदमी का कर्तव्य। और तुम एक शरीफ आदमी होकर दूसरों के सामने जो बुरी मिसाल रख रहे हो उसे समाप्त करो।"

"पैवेल तुम्हारा मतलब क्या है आखिर?"

"फेनिच्का से विवाह कर लो—वह तुमसे प्रेम करती है; वह तुम्हारे बच्चे की मां है।"

निकोलाई पैट्रोविच भौंचक्का होकर पीछे हट गया और उसने शून्य में अपने हाथ फैला दिए।

"यह तुम कहते हो पैवेल? तुम जिसे मैं हमेशा से ऐसे विवाहों का कट्टर विरोधी समझा था? तुम···तुम कहते हो? क्यों, क्या तुम नहीं जानते कि जिसे तुम आज मेरा कर्त्तव्य कहते हो उसे मैंने सिर्फ तुम्हारा ही कहना मानने के कारण नहीं किया?"

"उस मामले में मेरा कहना मान कर तुमने भूल की," पैवेल ने थकी मुस्कान से कहा। "मैं अब यह अनुभव करने लगा हूं कि बैजारोव ठीक था जो मुझे अभिजातीय कहता था। नहीं मेरे प्यारे भाई, अब समय आ गया है जब हम हवा में बातें करना छोड़ कर समाज के

ठोस धरातल पर बातों को सोचें : हम बूढ़े विषयी लोग हैं; यही समय है जब हमें सांसारी मिथ्या गर्व को त्याग देना चाहिए। हमें जैसा तुम कहते हो अपना कर्तव्य पूरा करना आरम्भ कर देना चाहिए; और मुझे इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए कि इससे हमें सुख भी प्राप्त होगा।"

निकोलाई पैट्रोविच अपने भाई से गले मिलने के लिए लपका।

"तुमने मेरी आँखें साफ साफ खोल दीं!" उसने चिल्लाते हुए कहा। "क्या मैं हमेशा से यह नहीं कहता रहा हूं कि तुम दुनिया में सबसे अधिक कृपालु और चतुर व्यक्ति हो; और अब मैं यह देखता हूँ कि तुम जितने ही अधिक उदार और दयालु हो उतने ही अधिक बुद्धिमान भी हो।"

"शान्त हो, शान्त हो," पैवेल ने कहा, "खैर, कम से कम अपने बुद्धिमान भाई की घायल टांग को तो मत मसलो जिसने लगभग पचास वर्ष की आयु में एक युवा ध्वजा वाहक की तरह द्वन्द्वयुद्ध किया है। अच्छा, तो यह मामला तै रहा : फेनिच्का मेरे भाई की बहू होगी।"

"प्यारे पैवेल! पर आर्केडी क्या होगा?"

"आर्केडी? क्यों, वह तो प्रसन्न हो उठेगा। विवाह उसका सिद्धान्त नहीं है लेकिन तब उसकी समानता की भावना को सान्त्वना मिल जायगी। वास्तव में जब तुम इसके बारे में सोचोगे तो नौवीं दसवीं सदी के जाति सम्बन्धी विचार लगेंगे।"

"आह, पैवेल, पैवेल! जरा मुझे फिर अपने को एक बार चूम लेने दो। डरो मत, मैं सचेत रहूँगा।"

भाई आपस में गले मिले।

"तो फिर अब फेनिच्का को अपना निश्चय बताने की बात के बारे में क्या रहा?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"जल्दी क्या है ?" निकोलाई ने पूछा। "क्यों क्या तुमने इस सम्बन्ध में उससे बातें की थीं ?"

"उससे बातें की थी ? कैसी बात करते हो।"

"तो यह ठीक है। पहिले भले चंगे हो लो—वह हमारे पास से कहीं भाग तो जायगी नहीं। इस पर खूब अच्छी तरह से सोच समझ लेना चाहिए…"

"लेकिन तुमने तो तै कर लिया. क्यों, क्या नहीं तै किया ?"

'हाँ, मैंने तो कर लिया है;और मैं तुम्हें इसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। अब मैं जाऊंगा; तुम्हें आराम करना चाहिये, इस तरह का उद्वेग तुम्हारे लिए ठीक नहीं है…लेकिन हम फिर इस पर बात करेंगे। अब तुम सो जाओ, और ईश्वर तुम्हें अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करे।"

"वह मुझे धन्यवाद किस लिए दे रहा है ?" पैवेल पैट्रोविच जब अकेला रह गया तो सोचने लगा। "जैसे यह उस पर नहीं निर्भर करता। रही मेरी बात तो जैसे ही वह शादी कर लेगा, मैं कहीं दूर चला जाऊंगा, ड्रेस्डन या फ्लोरेंस और जीवन पर्यन्त वहीं रहूंगा।"

पैवेल ने अपने माथे पर यू—डी—क्लोन लगाया और आंखें बन्द कर लीं। श्वेत तकिए पर रखा उसका दुर्बल कपाल दिन के तेज प्रकाश से प्रभासित एक शव के कपाल जैसा लग रहा था…वह वास्तव में एक जीवित शव ही था।

: २५ :

निकोलस्कोय में कात्या और आर्केडी बगीचे में एक विशाल ऐश वृक्ष की छाया तले घास पर बैठे थे। उनके पैरों के पास ही

ठोस धरातल पर बातों को सोचें : हम बूढ़े विनयी लोग हैं; यही समय है जब हमें सांसारी मिथ्या गर्व को त्याग देना चाहिए। हमें जैसा तुम कहते हो अपना कर्तव्य पूरा करना आरम्भ कर देना चाहिए; और मुझे इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए कि इससे हमें सुख भी प्राप्त होगा।"

निकोलाई पैट्रोविच अपने भाई से गले मिलने के लिए लपका।

"तुमने मेरी आंखें साफ साफ खोल दीं!" उसने चिल्लाते हुए कहा। "क्या मैं हमेशा से यह नहीं कहता रहा हूं कि तुम दुनिया में सबसे अधिक कृपालु और चतुर व्यक्ति हो; और अब मैं यह देखता हूँ कि तुम जितने ही अधिक उदार और दयालु हो उतने ही अधिक बुद्धिमान भी हो।"

"शान्त हो, शान्त हो," पैवेल ने कहा, "खैर, कम से कम अपने बुद्धिमान भाई की घायल टांग को तो मत मसलो जिसने लगभग पचास वर्ष की आयु में एक युवा ध्वजा वाहक की तरह द्वन्द्वयुद्ध किया है। अच्छा, तो यह मामला तै रहा : फेनिचका मेरे भाई की बहू होगी।"

"प्यारे पैवेल! पर आर्केडी क्या होगा?"

"आर्केडी? क्यों, वह तो प्रसन्न हो उठेगा। विवाह उसका सिद्धान्त नहीं है लेकिन तब उसकी समानता की भावना को सान्त्वना मिल जायगी। वास्तव में जब तुम इसके बारे में सोचोगे तो नौवीं दसवीं सदी के जाति सम्बन्धी विचार लगेंगे।"

"आह, पैवेल, पैवेल! जरा मुझे फिर अपने को एक बार चूम लेने दो। डरो मत, मैं सचेत रहूँगा।"

भाई आपस में गले मिले।

"तो फिर अब फेनिचका को अपना निश्चय बताने की बात के बारे में क्या रहा?" पैवेल पैट्रोविच ने पूछा।

"जल्दी क्या है ?" निकोलाई ने पूछा। "क्यों क्या तुमने इस सम्बन्ध में उससे बातें की थीं ?"

"उससे बातें की थी ? कैसी बात करते हो।"

"तो यह ठीक है। पहिले भले चंगे हो लो—वह हमारे पास से कहीं भाग तो जायगी नहीं। इस पर खूब अच्छी तरह से सोच समझ लेना चाहिए..."

"लेकिन तुमने तो तै कर लिया. क्यों, क्या नहीं तै किया ?"

"हाँ, मैंने तो कर लिया है;और मैं तुम्हें इसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। अब मैं जाऊंगा; तुम्हें आराम करना चाहिये, इस तरह का उद्वेग तुम्हारे लिए ठीक नहीं है...लेकिन हम फिर इस पर बात करेंगे। अब तुम सो जाओ, और ईश्वर तुम्हें अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करे।"

"वह मुझे धन्यवाद किस लिए दे रहा है ?" पैवेल पैट्रोविच अब अकेला रह गया तो सोचने लगा। "जैसे यह उस पर नहीं निर्भर करता। रही मेरी बात तो जैसे ही वह शादी कर लेगा, मैं कहीं दूर चला जाऊंगा, ड्रेस्डन या फ्लोरेंस और जीवन पर्यन्त वहीं रहूंगा।"

पैवेल ने अपने माथे पर यू—डी—क्लोन लगाया और आंखें बन्द कर लीं। श्वेत तकिए पर रखा उसका दुर्बल कपाल दिन के तेज प्रकाश से प्रभासित एक शव के कपाल जैसा लग रहा था...वह वास्तव में एक जीवित शव ही था।

: २५ :

निकोलस्कोय में कात्या और आर्केडी बगीचे में एक विशाल ऐश वृक्ष की छाया तले घास पर बैठे थे। उनके पैरों के पास ही

फिफी लेटी थी। उसने अपना लम्बा शरीर ऐसी सुन्दरता से मोड़ रखा था, जिसे खिलाड़ी लोग 'खरगोश का संतुलन, कहते हैं। कात्या और आर्केडी दोनों ही निःशब्द थे। वह अपने हाथ में एक खुली किताब लिए हुए था और वह डोलची में से रोटी के टुकड़े बीन-बीन कर गौरैयों को चुगा रही थी। गौरैयां डरती; सहमती, फिर भी साहस करके उसके पैरों के पास फुदक रही थीं। ऐश पेड़ की पत्तियों के झरोखों से मन्द पवन झोंके ले रहा था, और उन झरोखों में से होकर सायेदार पथ और फिफी की नन्ही पीठ पर पीताभ-स्वर्णिल चंचल प्रकाश छन रहा था। आर्केडी और कात्या पर सघन छाया पड़ रही थी, पर कभी कभी प्रकाश की एकाध रेखा उसके केश-पाश को चमका देती थी। दोनों ही मूक थे। लेकिन उनकी मूकता और पास पास बैठने का ढंग उनकी प्रगाढ़, विश्वासपूर्ण मैत्री का परिचायक था। दोनों एक दूसरे की उपस्थिति से अचेत प्रतीत होते थे फिर भी मन ही मन एक दूसरे की निकटता से उत्फुल्ल भी थे। पिछली बार जब हमने उन्हें देखा था तब से उनके चेहरों में भी परिवर्तन आ गया था; आर्केडी अधिक शान्त लगता था, कात्या अधिक उल्लसित, सचेत और निर्भीक लगती थी।

आर्केडी ने बात शुरू की, "ऐश, *वृक्ष के लिए रूसी नाम अत्यन्त उपयुक्त है। तुम्हारा क्या विचार है? कोई और पेड़ हवा में इतना साफ और चमकदार नहीं दिखाई पड़ता।"

कात्या ने दृष्टि उठाई और धीरे से कहा, "हाँ।" और आर्केडी ने सोचा, "वह मेरी स्नेह पूर्ण वार्ता का बुरा नहीं मानती।"

कात्या ने आर्केडी के हाथ में लगी किताब की ओर आँख से

---

* ऐश वृक्ष का रूसी नाम है यसेन; जिसका अर्थ है साफ चमकदार—अनु

संकेत करते हुए कहा। "मुझे हीने ❀ जब हंसता है या रोता है तब नहीं सुहाता। वह मुझे तब अच्छा लगता है जब वह चिन्ताग्रस्त और दुखी होता है!"

"और मुझे वह तब अच्छा लगता है जब वह हंसता है," आर्केडी ने कहा।

"यह तुम्हारी उपहास पूर्ण प्रवृत्ति बोल रही है।..." (पुराने चिन्ह! "आर्केडी ने सोचा, अगर कहीं बैजारोव सुन पाता।) "तुम देखते जाओ, हम तुम्हारे विचार बदल लेंगे।"

"कौन बदल लेगा! तुम?"

"और कौन? मैं, मेरी बहन, पोरफ्री प्लेटोविच, जिसके साथ अब तुम झगड़ा नहीं करते, और मौसी जिसके साथ अभी उस दिन तुम गिर्जाघर गए थे।"

"मैं कुछ योंही मना नहीं कर सका, क्या कर सकता था? रही अन्ना सर्जेवना की बात, तो तुम्हें याद होगा वह बहुत सी बातों पर एवजेनी से सहमत हो गई हैं।"

"वह उस समय तुम्हारी ही तरह उसके प्रभाव में थीं।"

"जैसे मैं था! क्यों, क्या तुमने कोई ऐसी बात देखी है कि मैं उसके प्रभाव से अलग हो गया हूँ?"

कात्या चुप थी।

"मैं जानता हूँ," आर्केडी ने ही कहा," तुमने उसे कभी पसन्द नहीं किया।"

"मैं उस पर अपनी राय नहीं दे सकती।"

"क्या तुम जानती हो, केट्रिना सर्जेवना; हरबार मैं वही जवाब सुनता हूं, मुझे उस पर विश्वास नहीं है...ऐसा कोई आदमी नहीं जिस पर हमसे कोई भी अपनी राय नहीं बता सकता! यह तो सिर्फ

❀ एक जर्मन कवि—अनु

एक बहाना है।"

"तो फिर मुझे कहने की आज्ञा दो वह...खैर, मैं बिलकुल ऐसा तो नहीं कहूँगी कि मैं उसे पसन्द नहीं करती, लेकिन मैं यह अवश्य अनुभव करती हूं कि वह मेरी प्रकृति के विपरीत है और मैं उसकी;. और यह तुम्हारी प्रकृति के भी विपरीत है।"

"कैसे ?"

"कैसे कहूं...वह छुट्टा है और जब कि हम तुम पालतू हैं।"

"और मैं भी पालतू हूँ ?"

कात्या ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

आर्केडी ने अपने कान खींचें।

"इधर देखो, केट्रिना सर्जेवना, क्या यह तुम्हारी बात उत्तेजना पूर्ण नहीं है ?"

"क्यों, क्या तुम छुट्टा होना पसन्द करोगे ?"

"छुट्टा—नहीं, लेकिन बलवान फुर्तीला।"

"वह ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम चाह सकते हो...अब तुम्हारा मित्र—वह इसे नहीं चाहता, लेकिन वह है ऐसा ही।"

"हूं ! तो तुम्हारा ख्याल है कि अन्ना सर्जेवना पर उसका बड़ा प्रभाव है ?"

"हां, लेकिन कोई भी अधिक दिनों तक उन पर हावी नहीं रह सकता," कात्या ने धीमी आवाज में कहा।

"तुम किस कारण से ऐसा सोचती हो ?"

"वह बड़ी घमंडिन है...नहीं, यह नहीं...उसे अपनी आजादी के प्रति बड़ा मोह है,,

"और होता किसे नहीं ?" आर्केडी ने सोचा, और उसी समय उसके दिमाग में आया "इस सब का लाभ क्या है ?"—"इस सब का लाभ क्या है ?" कात्या के दिमाग में यही बात उठी। जवान जोड़े

जिनका प्राय: स्नेह होता है इसी प्रकार के समान विचार सोचते हैं।

आर्केडी मुस्कराया और, कात्या के और करीब सरकता हुआ फुसफुसाता हुए बोला:

"मान लो कि तुम उससे थोड़ा डरती हो?"

"किस से?"

"अन्ना सर्जेवना से," आर्केडी ने साभिप्राय कहा।

"और भला तुम?" कात्या ने उलट कर पूछा।

"मैं भी, ध्यान दो, मैंने कहा था, मैं भी।"

कात्या ने उत्तर में सिर्फ अपनी उंगली हिलाई।

"यह मुझे चकित कर देता है;" उसने आगे कहा। "तुम मेरी बहन की निगाहों में इतने कभी भी न चढ़े थे जितने अब चढ़े हो, तुम्हारे प्रथम आगमन के समय से भी अधिक।"

"क्या ऐसी बात है?"

"क्या तुमने इस पर ध्यान नहीं दिया? क्या तुम्हें खुशी नहीं है?"

आर्केडी विचार में पड़ गया।

"किस रूप में मैंने अन्ना सर्जेवना की पसन्द को जीता होगा? क्या यह वास्तव में तुम्हारी मां के पत्रों के कारण तो नहीं है, जो मैंने लाकर उन्हें दिए थे, क्या ऐसी ही बात है?"

"यह बात भी है, और भी हैं, जो मैं तुम्हें नहीं बताऊंगी।"

"क्यों नहीं बताओगी?"

"मैं नहीं बताऊंगी।"

"ओह, मैं जानता हूं, तुम बड़ी जिद्दिन हो।"

"हां।"

"और आज्ञाकारी हो।"

कात्या ने उसकी ओर आंख की कोरों से देखा ।

"क्या इससे तुम नाराज हो गए ? क्या सोच रहे हो ?"

"मैं सोच रहा था कि तुम्हें चीजों को निरीक्षण करने और समझने की इतनी पैनी दृष्टि कहाँ से मिली । तुम इतनी संकोची हो, शंकालु हो, सबसे अलग रहती हो—"

"मैंने अपने आप ही यह सब समझा है । चाहे या अनचाहे तुम चिन्ता करने लगते हो । लेकिन मैं हर किसी से अलग रहती हूं ।"

आर्केडी ने उसकी ओर कृतज्ञ दृष्टि से देखा ।

"यह तो सब ठीक है," वह कहता गया, "लेकिन तुम्हारी स्थिति के लोग, मेरा मतलब है तुम्हारे जैसे धनी, मुश्किल से इस प्रकृति के होते हैं, उनके पास भी सचाई उतनी ही देर में पहुंचती है जितनी देर में बादशाहों के पास ।"

"लेकिन मैं तो धनी नहीं हूँ,"

आर्केडी स्तब्ध रह गया और एकाएक उसके अर्थ नहीं समझ सका । "निश्चय ही, जागीर तो उसकी बहन की थी !" उसकी समझ में आया; विचार असुखकर न था ।

"तुमने कितनी अच्छी तरह से यह बात कही है !" उसने बुदबुदाया ।

"क्यों ?"

"तुमने बड़े सुन्दर ढंग से बात कही; सीधी तरह से बिना किसी शर्म और मोह के । मुझे ऐसा लगता है कि जो मनुष्य यह जानता है और स्वीकार करता है कि वह गरीब है उसकी भावनाएं कुछ विलक्षण होती हैं; उसमें कुछ विशेष प्रकार की अन्तर्दृष्टि होती है ।"

"बहन को धन्यवाद देना चाहिए कि मुझे इस तरह का कोई अनुभव नहीं हुआ; मैंने अपनी स्थिति की बात सिर्फ इसलिए कही क्योंकि ऐसा ही है ।

"सिर्फ इतना ही। लेकिन यह भी तो स्वीकार करो कि तुम्हारे अन्दर थोड़ी बहुत वह अन्तर्दृष्टि है जिसका मैंने अभी जिक्र किया।"

"जैसे ?"

"जैसे; तुम एक···प्रश्न के लिए क्षमा करना···तुम एक धनी आदमी से विवाह नहीं करोगी: करोगी क्या ?"

"अगर मैं उससे अत्यधिक प्रेम करती हूं।···नहीं, तब भी नहीं।"

"आह ! देखा तुमने !" आर्केडी ने कहा और थोड़ा रुक कर बोला: "तुम उससे विवाह क्यों नहीं करोगी ?"

"क्योंकि छोटी दुलहन के बारे में एक गीत मशहूर है···"

"शायद तुम उस पर हावी रहना चाहती हो, या···"

"ओह, नहीं ! किसलिए भला ? बल्कि इस के विपरीत, मैं समर्पण करना चाहती हूं, यह सिर्फ असमानता ही है जो असहनीय हो जाती है। मैं ऐसे आदमी को तो समझ सकती हूँ जो झुकता है पर अपना आत्मसम्मान बनाए रखता है, यही सुख है; लेकिन वह परवशता का जीवन है।···नहीं मैं इससे भर पायी।"

"भर पायी," आर्केडी ने दुहराया। "हाँ, हां," वह कहता रहा, "तुम निश्चय उसी खून की हो जिसकी अन्ना सर्जेवना है। जितनी स्वतन्त्र वह है उतनी ही तुम भी हो; बस तुम जरा भीतरी हो। मुझे विश्वास है कि तुम कभी पहिले अपनी भावनाओं को प्रगट नहीं होने दोगी; वे भावनाएं चाहे जितनी भी पवित्र और जोरदार क्यों न हों ?"

"तुम मुझसे और क्या आशा करते हो ?" कात्या ने जिज्ञासा की।

"तुम भी उतनी ही चतुर हो; और तुम्हारे अन्दर अगर उससे अधिक नहीं तो उतना ही चरित्र बल भी है···"

"कृपया मेरी बहन से मेरी तुलना मत करो," कात्या ने जल्दी से कहा, "तुम मुझे बड़ी अहितकर स्थिति में रख देते हो। तुम, लगता है यह

भूल जाते हो कि मेरी बहन सुन्दर है और चतुर है—तुम—तुम्हें तो कमसे कम इस तरह मेरा मजाक नहीं बनाना चाहिए !"

"मैं मजाक बना रहा हूं तुम्हारा ! कैसे ?"

"निश्चय ही तुम मजाक कर रहे हो।"

"क्या वास्तव में तुम्हारा ऐसा ख्याल है ? पर मैंने जो कुछ कहा उससे मैं पूरी तरह सहमत हूं। हाँ, यह बात और है कि मैं उसे ठीक ठीक अभिव्यक्त नहीं कर पा रहा हूँ।

"मेरी समझ में तुम्हारी बात नहीं आती।"

"सच ? तो मुझे लगता है कि मैं तुम्हारी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति की जरा आवश्यकता से अधिक तारीफ कर रहा था।"

"आखिर मतलब क्या है तुम्हारा ?"

आर्केडी ने कोई उत्तर नहीं दिया, कात्या ने डोलची में से रोटी के कुछ टुकड़े बीन कर फिर गौरैयों को फेंके; लेकिन उस बार इतनी जोर से फेंके कि एक भी टुकड़ा उनकी चोंच में नहीं पड़ा।

"कैट्रिना सर्जेवना," आर्केडी ने एकाएक कहा: "सम्भवत: इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, लेकिन मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूं कि मुझे तुम्हारे सिवाय संसार में और कोई अच्छा नहीं लगता, तुम्हारी बहन भी नहीं।"

वह उठ खड़ा हुआ और तेजी से एक ओर चला गया; मानो वह अपनी ही बात पर चौंक गया हो।

और कात्या भी ऐसी स्तम्भित हो गई कि उसके दोनों हाथ डोलची लिए दिए उसकी गोदी में गिर पड़े और उसने सिर झुका लिया और आर्केडी की जाती लम्बी आकृति को देखती रही। धीरे धीरे उसके गालों पर गुलाबी आभा आती गई; पर वह मुस्कराई नहीं। उसकी काली आंखें भ्रमित चकित सकपकाहट और कुछ और प्रगट कर रही थीं-एक अगम्य भावना।

"तुम अकेली हो ?" पास ही से अन्ना सर्जेवना की आवाज आई। "मैंने सोचा था कि तुम आर्केडी के साथ बाग में गई हो ?"

कात्या ने धीरे से अपनी बहन की ओर देखा, (वह बनी चुनी विशिष्ट ढंग से कपड़े पहने पगडंडी पर खड़ी थी और फिफी के कानों को अपने खुले हुए छाते से गुदगुदा रही थी) और उसी तरह धीरे से उसने उत्तर दिया:

"हां मैं अकेली हूँ।"

"अच्छा तो वह अपने कमरे में चला गया शायद ?" अन्ना सर्जेवना ने थोड़ा हंसते हुए कहा।

"हाँ।"

"क्या तुम लोग साथ साथ पढ़ रहे थे ?"

"हाँ।"

अन्ना सर्जेवना ने कात्या की ठोड़ी पकड़ कर उसका सिर ऊपर उठाया।

"मुझे आशा है तुम लोग आपस में तो लड़े नहीं ?"

"नहीं।" कात्या ने कहा और मृदुता से अपनी बहन का हाथ हटा दिया।

"तुम बड़ी गम्भीरता से उत्तर दे रही हो! मैंने सोचा था, वह यहां मिलेगा और उसे अपने साथ घूमने ले जाऊंगी। वह काफी अरसे से मेरे पीछे पड़ा हुआ था। तुम्हारे लिए एक जोड़ा जूता शहर से मंगाया है जाकर देख लो, ठीक है! कल मैंने देखा था कि तुम्हारे जूते पहिनने योग्य नहीं रहे। तुम तो अपने ऊपर ध्यान ही नहीं देतीं, और तुम्हारे छोटे छोटे पैर बड़े मोहक हैं! तुम्हारे हाथ भी बड़े प्यारे हैं···यद्यपि थोड़ा बड़े हैं! तुम्हें अपने पैरों का अधिक ध्यान रखना चाहिए। लेकिन तुम्हारे अन्दर तो विलास की जरा सी भी प्रवृत्ति नहीं है।"

अन्ना सर्जैवना अपने सुन्दर गाउन को थोड़ा झटकारते हुए पगडंडी पर आगे बढ़ गई। कात्या उठकर खड़ी होगई और हीने की पुस्तक को साथ लेकर चली गई-लेकिन जूते देखने के लिए नहीं।

"मोहक नन्हे पैर," धूप से गर्म बरामदे की सीढ़ियों पर चढ़ती हुई वह सोचती रही; मोहक नन्हें पैर, तुम कहती हो...अच्छा तो, वह इन पर होगा।"

वह तुरन्त सकुचा गई और शर्मा गई और बाकी सीढ़ियों पर तेजी से चढ़ गई।

आर्केडी अपने कमरे में जा रहा था कि खानसामा ने रोक कर बताया कि मिस्टर बैजारोव उसके कमरे में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"एवजेनी!" कुछ भय और उद्विग्नता जैसी भावना से वह बुद-बुदाया। "क्या काफी देर से आए हुए हैं?"

"नहीं, अभी आए हैं, श्रीमान्, और उन्होंने मालकिन से अपने आने की सूचना देने की मनाही कर दी है। सीधे आपके कमरे में ही पहुँचाने को कहा।"

"कहीं घर पर तो कुछ गड़बड़ नहीं है?" आर्केडी ने सीढ़ियों पर दौड़कर चढ़ते हुए सोचा। उसने तेजी से कमरे का दरवाजा खोला। बैजारोव का चेहरा देखकर उसे कुछ धैर्य आया यद्यपि कोई अनुभवी आंख यह भांप सकती थी कि उसके पतले-दुबले चेहरे पर आन्तरिक बेचैनी के भाव विद्यमान हैं। धूल धूसरित कोट उसके कंधों पर पड़ा हुआ था और टोप सिर पर था। वह खिड़की की चौखट पर बैठा था। जब आर्केडी ने चीखते हुए उसके गले में बाहें थाल दीं तब भी वह नहीं उठा।

"आश्चर्य है! तुम यहाँ कहाँ से और कैसे टपक पड़े?" उसने बार बार दुहराया, ऐसे जैसे कोई आदमी किसी के आने पर समझता

है कि वह प्रसन्न है और उसे प्रगट करना चाहता है। "घर पर सब कुशल से है ? सब ठीक ठाक है ?"

"हाँ सब ठीक ठाक है, पर सब कुशल से नहीं है," बैजारोव ने कहा। "पहिले यह अपनी बक झक बन्द करो और जरा पीने को केवास* मंगाओ और तब बैठ कर मेरी बात सुनो।"

आर्केडी चुप और गम्भीर हो गया। बैजारोव ने उसे पैवेल पैट्रोविच से हुए अपने द्वन्द्व युद्ध की सारी घटना विस्तार से सुना दी। आर्केडी स्तम्भित और दुखी हो गया पर उसने उसे प्रगट न करना ही बुद्धिमानी समझा और सिर्फ यह पूछा कि उसके चाचा का घाव खतरनाक तो नहीं है। बैजारोव उसकी मानसिक स्थिति समझ रहा था।

"हाँ, प्रिय बन्धु, सैनिक और उस पर आभिजात्य जागीरदार के साथ रहने का यही परिणाम होता है। तुम अनजाने में स्वयं भी उसी मनोवृत्ति के हो जाओगे और इस तरह के द्वन्द्वों में भाग लेने लगोगे। इसीलिए मैंने घर जाने का निश्चय कर लिया है," इस तरह बैजारोव ने अपनी कहानी समाप्त की—"और रास्ते में यहाँ आ टपका...मैं कह सकता था अगर तुमको यह सब बताना और व्यर्थ झूठ बोलना मूर्खता न समझता। नहीं, मैं यहाँ आ टपका—क्यों ? अगर मैं स्वयं यह जानता होऊं तो मेरा बुरा हो। तुम तो जानते ही हो कि एक आदमी के लिए यह बेहतर है कि वह एक बार अपना गरेबान आप पकड़े : यही मैंने हाल में किया है...लेकिन एक बार मैं उसके परिणामों को देखना चाहता था, और देखना चाहता था कि मैंने क्या छोड़ा।"

"मेरा विश्वास है कि तुम्हारा संकेत मेरी ओर तो नहीं है," आर्केडी ने उद्विग्नता से पूछा, "निश्चय ही तुम मुझे छोड़ने की बात

---

* एक प्रकार का पेय—अनु

तो नहीं सोच रहे हो !"

बैजारोव ने गहरी पैनी दृष्टि से उसकी ओर देखा ।

"क्या तुम्हें बड़ा दुख होगा ? मुझे ऐसा लगता है कि हमारे तुम्हारे रास्ते तो पहिले से ही अलग अलग हो चुके हैं । तुम इतने साफ स्वच्छ और निर्मल हो जैसे गुल बहार···अन्ना सर्जेवना के साथ तो तुम्हारी अच्छी कट रही होगी ।"

"साथ कट रही होगी से तुम्हारा क्या मतलब ?"

"क्यों, क्या तुम उसी नन्हीं बत्तख के लिए शहर से यहां नहीं आए ? अच्छा यह तो बताओ कि तुम्हारे इतवार के स्कूल कैसे चल रहे हैं ? क्या तुम उससे प्रेम नहीं करते ? या मामला और गहराई तक पहुँच गया है ?"

"एवजेनी तुम जानते ही हो कि मैं तुम से कभी कोई बात नहीं छिपाता । मैं ईश्वर की कसम खाकर कह सकता हूं कि तुम्हें गलतफहमी है ।"

"हूं ! एक नया शब्द," बैजारोव ने भिंचे स्वर में कहा । "लेकिन तुम्हें इतनी दूर तक जाने की जरूरत नहीं है । इससे मुझे जरा भी अन्तर नहीं पड़ता । एक रूमानी व्यक्ति कहेगा : मेरा ख्याल है कि जुदाई की स्थिति पर पहुंच गए हैं; लेकिन मैं सिर्फ यही कहता हूँ कि हम एक दूसरे से आजिज आ चुके हैं ।"

"एवजेनी···"

"मेरे प्यारे बन्धु, इसमें कोई बुराई नहीं है; उन चीजों के बारे में सोचो जिनसे लोग संसार के बीच आजिज आ जाते हैं । और अब अलविदा ! जब से मैं यहाँ आया हूँ; जैसे मानों मैं कलुगा के गवर्नर की बीबी के नाम गोगोल ❀ के पत्रों को पढ़ रहा हूँ । खैर, मैंने घोड़ों को जुते रखने का ही आदेश दे दिया है ।"

❀ एक महान लेखक—अनु

"नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं ?"

"मैं अपनी तो कुछ नहीं कहता पर अन्ना सर्जेवना के प्रति यह अकृतज्ञता है। वह तुमसे मिलने के लिए इच्छुक है।

"यह तुम्हारी भूल है।"

"नहीं, मेरा ख्याल है कि मैं ठीक हूँ," आर्केडी ने कहा। "बनने से क्या लाभ है ? क्या तुम भी उससे मिलने की अभिलाषा से यहाँ नहीं आए हो ?"

बहरहाल आर्केडी ही ठीक था। अन्ना सर्जेवना बैजारोव से मिलना चाहती थी और खानसामा भेजकर उसने उसे बुलवा भी लिया। बैजारोव ने उसके पास जाने से पहिले कपड़े बदले। उसने अपना सूट ऐसे रखा था कि अवसर पर आसानी से निकाला जा सके।

ओदिन्त्सोवा ने उससे उस कमरे में भेंट नहीं की जिसमें बैजारोव ने उसके प्रति अकस्मात अपने प्रेम का प्रदर्शन किया था, बल्कि बैठक में मिली। उसने अपनी उंगलियां उसके हाथ में दे दीं, फिर भी उसके चेहरे पर तनाव बना रहा।

"अन्ना सर्जेवना," बैजारोव ने त्वरित कहा, "सर्व प्रथम तो मैं आपको अपनी ओर से आश्वस्त करना चाहता हूँ। मैंने अपनी औकात समझ ली है और मुझे चेत हो गया है। मुझे आशा है कि आपने मेरी नालायकी को माफ कर दिया होगा। मैं अब काफी दिनों के लिए जा रहा हूं, और आप सहमत होंगी, यद्यपि मैं कोमल भावनाओं का व्यक्ति नहीं हूं, फिर भी मैं अपने साथ यह भावना लेकर नहीं जाना चाहता कि आप मुझे घृणा के साथ याद करें।"

अन्ना सर्जेवना ने उस व्यक्ति की तरह जो ऊंची पहाड़ी पर चढ़ने के बाद गहरी सांस भरता है, सांस ली, और उसके चेहरे पर मुस्कान बिखर गई। उसने पुनः अपना हाथ बैजारोव की ओर बढ़ाया और

उसके दबाव का प्रतिउत्तर दिया।

"हमें बीती बातें भुला देनी चाहिए," उसने कहा, "सच बात तो यह है कि मेरा ही दिल साफ न था और मैंने भी पाप किया है—हाव भाव दिखला कर न सही पर और तरीकों से तो किया ही है। आओ, हम लोग फिर पहिले जैसे मित्र हो जायं। वह एक स्वप्न था, तुम्हारा क्या ख्याल है?...और स्वप्नों को कौन याद रखता है?"

"हाँ, कौन याद रखता है? और तब प्रेम...प्रेम और कुछ नहीं है बस सिर्फ एक लगन है, एक मोह है।"

"वास्तव में? मैं यह सुनकर आश्चर्यान्वित रूप से प्रसन्न हूं।"

इस तरह दोनों ने ही अपने अपने दिल की बात साफ साफ अभिव्यक्त की। दोनों ही समझते थे कि वे सच बोल रहे हैं। लेकिन क्या उस कथन में सत्य, पूर्ण सत्य था? वे स्वयं अपने को नहीं समझते थे और लेखक तो सबसे कम। लेकिन वे एक दूसरे से ऐसी बातें करने लगे मानों एक दूसरे पर पूरा विश्वास करते हों।

अन्य अनेक बातों के साथ अन्ना सर्जेवना ने बैजारोव से यह भी पूछा कि किरसनोव के यहाँ उसके दिन कैसे बीते। वह पैवेल पैट्रोविच के साथ हुए अपने द्वन्द्व युद्ध का किस्सा उसे बताने जा ही रहा था कि रुक गया, इस विचार से कि कहीं वह यह न समझे कि वह टिल्ली दे रहा है, और उसने सिर्फ यह बताया कि वहाँ सारे समय अपने काम में व्यस्त रहा।

"और मैं," अन्ना सर्जेवना ने कहा, "खोई खोई सी रहती थी, पता नहीं क्यों—मैंने विदेश जाने की भी बात सोची, जरा सोचो तो सही। फिर यह विचार भी आया गया हो गया। तभी तुम्हारा मित्र आर्केडी आ गया और मैं फिर उसी पुराने ढर्रे में पड़ गई,....अपने वास्तविक अभिनय में।"

"वह कौन सा अभिनय है, क्या मैं पूछ सकता हूँ?"

"चाची, कुंवारी कन्या की रक्षा करने वाली, माँ—जो तुम्हारा जी चाहे कह सकते हो। अरे...अरे हाँ, पहिले तो मैं आर्केडी से तुम्हारी इतनी गहरी दोस्ती ही नहीं समझ पाती थी। मैं उसे महत्व हीन और सामान्य समझती थी। लेकिन अब मैंने देखा कि वह बड़ा चालाक और चतुर है। और विशेष बात तो यह है कि वह जवान है, जवान। ...मेरी और तुम्हारी तरह नहीं है, एवजेनी वेसिलच !"

"क्या वह अब भी तुमसे शर्माता है ?" बैजारोव ने पूछा।

"क्यों क्या कभी शर्माता था..." अन्ना सर्जेवना ने कहा और फिर थोड़ी देर सोचने के बाद कहा "वह अब विश्वास के योग्य हो गया है। अब वह मुझ से बात करता है। हाँ, पहिले वह मुझे से कतराया करता था और सच तो यह है कि मैंने भी उसकी संगत नहीं चाही थी। कात्या और वह गहरे दोस्त हो गए हैं।"

बैजारोव को बुरा लगा। "स्त्री का शाश्वत छलावा !" उसने सोचा।

"तुम कहती हो वह तुमसे कतराया करता था," उसने उपहास उड़ाने के स्वर में कहा। "लेकिन सम्भवतः यह तुम से छिपा तो न था कि वह तुम से प्रेम करता था !"

"क्या ! वह भी—?" अन्ना सर्जेवना पीछे लुढ़क गयी।

"हाँ, वह भी," बैजारोव ने विनीत विनत हो दुहराया।" क्या तुम कहना चाहती हो, कि तुम इससे अनिभिज्ञ थीं और यह तुम्हारे लिए एक अनजानी सूचना है ?"

अन्ना सर्जेवना ने दृष्टि झुका ली।

"तुम्हें गलतफ़हमी है, एवजेनी वासिलच।"

"मैं तो ऐसा नहीं समझता; लेकिन हाँ, मुझे यह बात कहनी नहीं चाहिए थी।"—"इससे तुम चौकन्नी हो जाओगी।"

"इसमें क्या सन्देह है ? लेकिन मेरा विचार है कि तुम क्षणिक

प्रभाव को अत्यधिक महत्व दे रहे हो। मैं तो यह सोचने लगी हूँ कि तुम बातों को तूल देने के लिए सदैव उद्यत रहते हो।"

"अच्छा हो हम इस बात पर और अधिक बहस न करें, अन्ना सर्जेवना।"

"रहने दो," उसने कहा और बात का विषय बदल दिया। बैजारोव के साथ उसे कुछ बेचैनी का अनुभव हुआ; यद्यपि उसने कहा भी और प्रकट भी ऐसा ही किया कि सारी पुरानी बातें भुला दी गई हैं। वह बैजारोव के साथ सरलता से हंसी ठिठोली और खुल कर बातें करती रही फिर भी एक अज्ञात बेचैनी उस पर छाई रही। दोनों के बीच का भाव कुछ ऐसा था जैसा समुद्रयात्रियों का यात्रा के समय होता है कि वे यात्रा के बीच परस्पर दुनिया भर की बात-चीत भी करते हैं, हंसते बोलते भी हैं, फिर भी उनमें एक दूसरे के प्रति उदासीनता का भाव रहता और ज़रा हिचकिचाहट या किसी अघटनीय की तनिक सी आशंका से उनके कान खड़े हो जाते हैं और निरन्तर भय के चिन्ह उनके चेहरे पर आ जाते हैं।

दोनों की बातें अधिक देर तक नहीं चलीं। वह विचारों में बह गई और खोई खोई सी उत्तर देने लगी और अन्ततः उसने बैठक में जाने का प्रस्ताव किया; जहाँ राजकुमारी और कात्या मौजूद थीं। "आर्केडी कहाँ है?" मेजबान ने पूछा और यह सुनकर कि एक घन्टे से अधिक हो गया जब से वह दिखाई नहीं पड़ा उसने उसे बुलवा भेजा। उसे ढूंढने में कुछ समय लगा। वह बाग में था और अपने गालों को हाथ पर रखे विचारों में डूबा बैठा था। वे विचार अत्यन्त गम्भीर थे, पर निराशापूर्ण न थे। वह जानता था कि अन्ना सर्जेवना बैजारोव के साथ अकेली बैठी होगी, लेकिन उसे जैसा पहिले होता था किसी ईर्षा-भाव का अनुभव न हुआ, वरन् कोमल आलोक से उसका चेहरा प्रभासित हो रहा था, जिससे एक प्रकार के आश्चर्य, एक प्रकार के

सुख, एक प्रकार के निश्चय का भाव प्रगट होता था।

: २६ :

स्वर्गीय ओदिन्त्सोवा को नवीन परिवर्तनों से कोई मोह न था, फिर भी 'कुछ सुरुचिपूर्ण खिलवाड़ों' को सहन कर लेता था। परिणामत: उसने अपने बाग में तालाब और नौकरों के कुटीरों के बीच रूसी यूनानी पुरानो ढंग की एक बरसाती बनवाई थी। इस बरसाती की पिछली दीवाल में मूर्तियां रखने के लिए छ: बड़ी तिखालें थीं; जिनमें रखने के लिए वह विदेश मूर्तियां लाना चाहता था। ये मूर्तियाँ एकाकीपन, शान्ति, साधना, उल्लास, सलज्जता और भावुकता का प्रतिनिधित्व करने वाली थीं। इनमें से एक 'शान्ति की देवी' जो अपने ओंठों पर एक उंगली रखे हुए की मूर्ति तो अपने स्थान पर स्थापित कर दी गई थी। लेकिन जिस दिन उसकी स्थापना की गई थी उसी दिन बच्चों ने उसकी नाक तोड़ दी थी। यद्यपि एक स्थानीय कारीगर ने पिछली से भी अच्छी नाक जोड़ देने का जिम्मा लिया था, फिर भी ओदिन्त्सोवा ने उसे उठवा कर गल्ला गोदाम में रखवा दिया था और वहां वह स्त्रियों में अन्धविश्वास जन्य आश्चर्य उत्पन्न करती हुई वर्षों रखी रही। बरसाती के सामने बेलों की झाड़ियां उग आई थीं जिनके पत्तों में से खम्भों का सिर्फ ऊपरी भाग दिखाई पड़ता था। बरसातो के भीतर दुपहर के समय भी ठंडक रहती थी। अन्ना सर्जेवना ने जब से वहां एक साँप देखा था तब से उस स्थान को त्याग दिया था, पर कात्या यहां जब तब आती थी और मेहराब के नीचे बैठने के लिए पत्थर की बनी कुर्सियों पर बैठ जाती। वहां की शीत-

लता में वह पढ़ती रहती, काम करती या फिर परम शान्ति की भावन से तन्मय हो जाती—जो सम्भवतः सभी में उठती है और जीवन में भीतर और बाहर अनवरत उठने वाली तरंगों के प्रति मूक अर्ध चेतना ही उसका आकर्षण होता है।

वैज्ञारोव के आगमन के आगामी दिन की बात है—कात्या इसी बरसाती में अपनी प्रिय सीट पर आर्केडी के साथ बैठी थी। आर्केडी ही आज उसे यहां बुला कर लाया था।

दुपहर के भोजन में एक घन्टे का समय था। हिम स्नात प्रातः बीत चुका था और उसका स्थान तेज धूप ने ले लिया था। आर्केडी के चेहरे पर गत दिवस की सी ही भाव मुद्रा थी और कात्या के चेहरे पर जिज्ञासा का भाव झलक रहा था। नाश्ते के तुरन्त बाद ही उसकी बहन ने उसे अपनी अध्ययनशाला में बुला भेजा था और उसे थोड़ा झिड़का भी और प्यार भी किया। ऐसे व्यवहार से कात्या सदैव थोड़ा बहुत त्रस्त अनुभव करती थी। उसकी बहन ने उसे आर्केडी से जरा सावधान रहने और विशेषकर उसके साथ अकेले न रहने की चेतावनी दी थी। उसने उसे बताया कि मौसी और अन्य घर वालों ने उसे उसके साथ प्रायः अकेले देखा है और उसकी शिकायत की है। इसके अतिरिक्त गत सन्ध्या को अन्ना सर्जेवना थोड़ा अस्वस्थ थी और कात्या भी कुछ अनमना सा अनुभव कर रही थी जैसे उसे अपनी किसी गलती की चेतना हो आई हो और वह इससे क्षुब्ध हो। जब आर्केडी ने उससे अपने साथ बरसाती में चलने का प्रस्ताव किया तो वह यह निश्चय करके उसके साथ चली आई कि यह उसका उसके साथ अंतिम एकान्त सहवास होगा।

"केद्रिना सर्जेवना", उसने सलज्ज शान्ति के साथ कहना आरम्भ किया, "जब से मुझे तुम्हारे साथ एक ही मकान में रहने का सुख-सौभाग्य प्राप्त हुआ है हमारी तुम्हारी अनेक बातें हुई हैं लेकिन एक

बात है—कि ''जो मेरे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है ''उस पर मैंने अभी तक तुमसे कभी कुछ नहीं कहा। कल तुमने मेरे विचार परिवर्तन के सम्बन्ध में एक बात कही थी, "वह कहता रहा, पर कात्या की ओर देखने से कतरा रहा था, "यह बात सच है कि मेरे अन्दर काफी परिवर्तन आ गया है और तुम इसे औरों से अधिक अच्छी तरह जानती हो '''और वास्तव में उस परिवर्तन के लिए मैं तुम्हारे प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूं। ' तुम्हें ही इसका श्रेय है।"

"मुझे ?" कात्या ने जिज्ञासा से पूछा।

"मैं अब पहिले वाला शेखीखोर लड़का नहीं रहा हूं," आर्केडी कहता गया, "अब मैं चौबीस वर्ष का होने जा रहा हूँ, मैं अब भी अपने जीवन को उपयोगी बनाना चाहता हूं। मैं अपना सारा जीवन सत्य के लिए उत्सर्ग कर देना चाहता हूँ, लेकिन अब मेरी प्रेरणा का स्रोत बदल गया है, अब मेरी प्रेरणा ''वह मेरे अत्यन्त निकट है। अब तक मैं स्वयं नहीं जानता था। मैं जितना पचा सकता था उससे अधिक मैंने खा लिया था और वह जो मेरे खाने की चीज न थी।...मेरी आँखें अभी हाल में ही खुली हैं...एक विशेष प्रेरणा के कारण...मैं.... मैं अपने को ठीक ठीक व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं...पर मुझे आशा है...मुझे विश्वास है कि तुम समझ लोगी..."

कात्या ने कुछ कहा नहीं केवल उस पर दृष्टि डाली।

"मुझे विश्वास है" उसने फिर कहना आरम्भ किया—अब की और भी अधिक भावुक आर्द्रता और आवेश के साथ। उसी समय उनके पास ही खड़े भोज वृक्ष की एक टहनी पर चेफिन्च चिड़िया गा उठी। '' मेरा विश्वास है कि हर व्यक्ति को अपने अन्तरंग से कोई बात गोपनीय नहीं रखनी चाहिए, और ''''''अस्तु मैं''''''मैं चाहता हूं।

एकाएक कहते-कहते आर्केडी की बोलती बन्द हो गई। शब्द मुंह

के मुंह में ही रह गये और वह सकपका गया। कात्या ने अपनी नज़र ऊपर नहीं उठाई। लगता था कि वह उसका मन्तव्य नहीं समझ पा रही थी और वह स्वयं सकते की सी अवस्था में थी।

"मुझे सन्देह है कि मैं कहीं तुम्हें आश्चर्य में न डाल दूं!" आर्केडी ने अपने को संयत कर कहना आरम्भ किया, "क्योंकि ·· क्योंकि कुछ हद तक उसका सम्बन्ध तुमसे है। तुम्हें याद होगा कल तुमने गम्भीर न होने के लिए मुझे धिक्कारा था," आर्केडी उस आदमी के विश्वास के साथ कहता रहा जो दलदल में धंस जाता है और अनुभव करता है कि जैसे जैसे उससे निकलने के लिए कदम बढ़ाता है तैसे तैसे उसमें और भी धंसता जाता है फिर भी उस आशा से कि सम्भवतः निकल जाय और भी तेजी के साथ कदम बढ़ाता जाता है। "वह लताड़ काफी तीखी थी...और युवकों पर प्रभाव डालने वाली थी...उन युवकों पर भी जो उसके योग्य नहीं रहे हैं..." ("परमात्मा के लिए इस भंवर से निकलने में मेरी ... नहीं करतीं," आर्केडी उन्मत्तता से सोच रहा था, लेकि... दिव थोड़ा बहुत उसकी ओर दृष्टि नहीं फेरी।) यदि मैं केवल यह ... से जरा साव- ... चेतावनी दी साहस कर सकता..."

"तुम जो कुछ कह रहे हो उस पर यदि मैं विश्वास भी कर पाती" अन्ना सर्जेवना का स्पष्ट स्वर सुनाई पड़ा।

आर्केडी के ओठों पर शब्द निर्जीव हो गए और ... पड़ गई। बरसाती के पास से होकर झाड़ियों के ... गया था। रास्ता जाता था, उसी पर अन्ना सर्जेवना बैज़ उसने अपने हाथ रही थी। कात्या और आर्केडी उन्हें नहीं देख ... ता हूँ। मैं तुम्हें एक एक शब्द उन्हें स्पष्ट सुनाई पड़ रहा था। ... बताना ... शब्द और उनकी सांस तक भी सुनाई पड़ रही थी। वे लोग थोड़ा चल कर बरसाती के ठीक सामने खड़े हो गए; मानों जानबूझकर खड़े हो गए हों।

"देखो, हम दोनों ही गलत थे; हम में से कोई भी यौवन के ऊषाकाल में नहीं है, विशेष कर मैं; हमने थोड़ी बहुत जिन्दगी देखी है। हम थक चुके हैं। हम दोनों की एक सी ही स्थिति है।...सांप निकलने के बाद खाली लकीर क्यों पीट रहे हो आखिर पानी में महल क्यों बनाया जाय ?—पहिले हम दोनों में एक दूसरे के प्रति रुचि उत्पन्न हुई, एक दूसरे के प्रति कुछ उत्सुकता जागृत हुई...और... अब..."

"और तब मैं फिसल गया," बैजारोव ने कहा।

"नहीं, तुम जानते हो हमारे अलग होने का यह कारण न था। लेकिन ऐसा है कि...और ऐसा सम्भव भी है कि हमें एक दूसरे की आवश्यकता नहीं है।...वास्तव में यही बात है। हम बहुत अधिक... किन शब्दों में स्पष्ट करूँ !...बहुत अधिक एक जैसे ही हैं। मैं इसे तुरन्त नहीं समझ पाई थी। और दूसरी तरफ आर्केडी..."

"[illegible] उसकी जरूरत है ?" बैजारोव ने पूछा।

मैं स्वयं नहीं जानत [illegible]

मैंने खा लिया था [illegible] भी दो एव्जेनी वेसिलज ! तुम कहते हो कि वह [illegible] और मुझे भी यह मालूम था कि वह मुझे चाहता [illegible]

आँखें अभी [illegible] जानती हूँ कि मेरी आयु उसकी चाची होने की है, लेकिन मैं तुम से यह नहीं छिपाऊंगी कि वह मेरे विचारों को घेरने लगा है। इस नई अनुभूति में एक आकर्षण है..."

[illegible] मामलों में मोहिनी शब्द अधिकतर उपयुक्त होता और [illegible] में ही बात काट कर कहा; यद्यपि उसका स्वर [illegible] उसमें विद्वेष की उत्तेजना थी। "आर्केडी कल मेरे [illegible] रहा पर उसने तुम्हारे या तुम्हारी बहन के सम्बन्ध [illegible] शब्द नहीं कहा...यह एक महत्व पूर्ण लक्षण है !"

"वह कात्या के लिए भाई के समान है," अन्ना सर्जेवना ने कहा, "और उसकी यही बात मैं पसन्द करती हूं, यद्यपि सम्भवतः

मुझे इन दोनों में ऐसी प्रगाढ़ता को बढ़ने नहीं देना चाहिए।"

"क्या यह एक···बहन का स्वर है ?" बैजारोव भुनभुनाया।

"निश्चय ही···लेकिन हम लोग खड़े क्यों हैं ? चलो टहलें, हम लोगों की बातचीत भी कैसी अजीब है ? क्या तुम्हारे विचार में ऐसी बात नहीं है ? मैंने कभी भी यह न सोचा था कि मैं तुमसे इस तरह बातें करूंगी। तुम जानते हो कि मुझे तुमसे डर लगता है··· और फिर भी मैं तुम पर विश्वास करती हूं। इसलिए क्योंकि तुम वास्तव में अत्यन्त दयालु हो।"

"शुरू में ही बता दूं मैं ज़रा भी दयालु नहीं हूं; और दूसरी बात यह कि अब मैं तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं हूँ, और तुम कह रही हो कि मैं दयालु हूं···यह ऐसा ही है जैसा एक शव के सिर पर फूलों का गजरा रखना।"

"एवजेनी वेस्लिच, हम में कोई शक्ति नहीं है···"उसने कहना आरम्भ किया था, लेकिन हवा का एक तीव्र झोंका उसके शब्दों को उड़ा ले गया।

"लेकिन फिर तुम उन्मुक्त हो," बैजारोव ने थोड़ा रुक कर कहा। शेष सुनाई नहीं पड़ा, क्योंकि वे लोग आगे बढ़ गए थे···और निस्तब्धता छा गई।

आर्कैडी कात्या की ओर घूमा। वह अब भी वैसी ही बैठी थी जैसी पहले, सिर्फ उसका सिर थोड़ा और नीचे झुक गया था।

"कैट्रिना सर्जेवना," उसका स्वर काँपा और उसने अपने हाथ भींच लिए; "मैं तुम्हें अपने अन्तः करण से प्रेम करता हूँ। मैं तुम्हें छोड़ और किसी से प्रेम नहीं करता। यही मैं तुम से बताना चाहता था।···तुम्हारे दिल की बात जानना चाहता था और कहना चाहता था कि तुम मेरी बन जाओ;···क्योंकि मैं धनी नहीं हूँ और तुम्हारे लिए सब कुछ कुर्बान कर सकता हूँ, तुम कुछ बोलती क्यों नहीं ?

क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं ? क्या तुम समझती हो कि मैं उथली बात कर रहा हूँ ? लेकिन हाल के पिछले दिनों की याद करो ! क्या तुमने नहीं देखा कि बाकी सब कुछ—मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं··· बाकी सब कुछ—सब कुछ समाप्त हो गया है और उस सबका चिन्ह तक भी शेष नहीं है ? मेरी ओर देखो, कुछ तो कहो : मैं प्रेम करता हूं···मैं तुम्हें प्रेम करता हूं—मेरा विश्वास करो।"

कात्या ने उसकी ओर तरल चमकती आंखों से देखा और बड़ी हिचकिचाहट के बाद धीमे स्वर में बुदबुदाया, मुस्कान की छाया उसके ओठों पर छा गई: "हां।"

आर्केडी अपनी जगह से उछल पड़ा : "हाँ ! तुमने कहा 'हाँ,' केट्रिना सर्जेवना ! इसके क्या अर्थ हैं ? क्या उसका यह अर्थ है कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं या कि तुम मुझ पर विश्वास करती हो—" या—या—मुझे कहने का साहस नहीं होता—

"हां," कात्या ने दुहराया, और इस बार वह समझ गया। उसने उसकी लम्बी सुन्दर बांहों को थाम लिया और हाँफते हुए उसने उन्हें अपने सीने पर दबा लिया। वह बड़ी मुश्किल से खड़ा रह पा रहा था बार बार कहता रहा, "कात्या, कात्या—" और वह अपने ही आँसुओं पर कोमल मुस्कान बिखेरती सुबकने लगी। वह जिसने अपनी प्रेमिका की आँखों में ऐसे आंसू नहीं देखे हैं, जो लज्जा और अनुग्रह से रोमांचित नहीं हो उठा है, कभी यह न जान सका कि इस धरती पर यह नश्वर प्राणी कितना सुखी हो सकता है।

× × ×

दूसरे दिन तड़के अन्ना सर्जेवना ने बैजारोव को अपनी अध्ययन शाला में बुलवाया और एक बनावटी हंसी के साथ उसने उसके हाथ में एक मुड़ा हुआ कागज थमा दिया। यह आर्केडी का पत्र था जिस

में उसने उसको अपनी बहन का हाथ उसके हाथ में सौंप देने का प्रस्ताव किया था।

बैजारोव ने पत्र पर नजर दौड़ाई और पढ़ते ही उसके हृदय में जो ईर्षालु आनन्द की भावना उत्पन्न हुई उसे प्रगट होने से उसने रोका।

"तो यह बात है," उसने बड़बड़ाया; "और तुम, मेरा विश्वास है कि कल ही यह सोचती थी कि केट्रिना सर्जेवना के प्रति उसका प्रेम भाई का प्रेम है। अब तुम क्या करने की सोचती हो?"

"तुम क्या सलाह दोगे?" अन्ना सर्जेवना ने पूछा। वह अब भी हंस रही थी।

"मैं तो सोचता हूँ," बैजारोव ने भी हंसते हुए ही उत्तर दिया यद्यपि वह उसकी अपेक्षा हंसने के मूड में न था, "मैं तो सोचता हूँ कि तुम्हें इन दोनों को शुभाशीर्वाद देना चाहिए। जोड़ा अच्छा है हर तरह से; किर्सानोव भी काफी खाता पीता है, वही अपने बाप का इकलौता बेटा है, और उसका बाप एक भला आदमी है; वह इसका विरोध नहीं करेगा।"

ओडिन्त्सोवा ने मुंह फिरा लिया। उसका चेहरा लाल से सफेद पड़ गया।

"यह तुम सोचते हो?" उसने कहा। "ओह, अच्छा! मैं भी कोई विरोध की बात नहीं देखती...मैं कात्या के लिए प्रसन्न हूँ... और आर्केडी निकोलाइच के लिए भी। हां, मैं उसके पिता के उत्तर की प्रतीक्षा करूंगी। मैं उसे ही भेजूंगी। इस सब से साबित है कि कल मेरी ही बात सही थी जब मैंने तुम्हें बताया था कि हम दोनों ही बूढ़े होते जा रहे हैं।—ऐसा कैसे हुआ कि मैं कुछ भी न जान सकी? इसी का मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य है।"

अन्ना सर्जेवना फिर हंस पड़ी और दूसरी ओर घूम गई।

"आज कल नौजवान लोग बड़े ही चतुर होते हैं," बैजारोव ने भी हंसते हुए कहा, "अलविदा," थोड़ा रुक कर फिर बोला, "मैं आशा करता हूं कि तुम इस मामले का अन्त आनन्दपूर्ण करोगी, मैं दूर से इसे देखूंगा और प्रसन्न होऊंगा।"

ओदिन्त्सोवा जल्दी से उसकी ओर घूमी।

"क्यों, क्या तुम जा रहे हो? तुम अब रुकते क्यों नहीं? रुक जाओ···तुमसे बात करना अत्यन्त ही रोमांचकारी है···चट्टान की कगार पर चलने जैसा है। पहले कोई सहम कर ठिठकता है तब फिर किसी तरह साहस बटोरता है।···रुक जाओ!"

"निमन्त्रण के लिए धन्यवाद, अन्ना सर्जेवना, और मेरी बातचीत और संग साथ ने आपको जो प्रसन्नता दी उसके लिए भी। लेकिन मैं समझता हूँ कि मैं विभिन्न विरोधी स्वभाव के क्षेत्रों में भटकता रहा हूं। उड़ती हुई मछली हवा में कुछ ही देर स्थिर रह सकती है, उसे निश्चय ही फिर पानी में गिरना होता है; कृपया मुझे भी अपने मूल तत्व में जाकर मिलने दो।"

ओदिन्त्सोवा गौर से उसके भाव पढ़ती रही। उसके पीले चेहरे पर तीखी मुस्कान थी। "यह आदमी मुझे प्यार करता था!" उसने सोचा और एकाएक उसके प्रति उसके हृदय में करुणा जाग उठी। उसने सहानुभूति से अपने हाथ फैला दिए।

लेकिन उसने उसे समझ लिया था।

"नहीं," उसने कहा, एक कदम पीछे हटते हुए। "मैं एक गरीब आदमी हूँ, लेकिन मैंने कभी भी भीख नहीं स्वीकार की, अलविदा, श्रीमती जी और प्रसन्न रहो।"

"मुझे इस बात का पक्का निश्चय है कि यही हमारी अन्तिम भेंट नहीं होगी," अन्ना सर्जेवना ने अनायास कहा।

"हमारे इस संसार में कुछ भी हो सकता है!" बैजारोव ने उत्तर

दिया, तन हुआ और चला गया।

+ + +

"तो तुमने अपने लिए एक घरौंदा बनाने का निश्चय कर ही लिया?" वह उसी दिन सूटकेस में अपना समान सरियाते हुए आर्केडी से कह रहा था। "हाँ, विचार तो बुरा नहीं है। लेकिन तुम इसके बारे में इतने कपटी क्यों थे? मैं तुमसे एक बिलकुल दूसरे ही रास्ते पर चलने की आशा करता था। या सम्भवतः तुम्हीं अपने सम्बन्ध में अज्ञान में थे?"

"बात यह है कि जब मैं तुम्हारे पास से चला था उस समय मुझे इसकी आशा न थी," आर्केडी ने जवाब दिया। "लेकिन यह कह कर 'विचार तो अच्छा है' तुम अपना बचाव क्यों कर रहे हो, क्या नहीं जानते कि विवाह के सम्बन्ध में मैं तुम्हारे विचार जानता हूँ।"

"ओह, मेरे प्रिय बन्धु!" बैजारोव ने कहा, "तुम किस तरह की बातें करते हो! तुम देख रहे हो मैं क्या कर रहा हूँ: मेरे सूटकेस में खाली जगह है, उसे मैं घास-कूड़े से भर रहा हूँ; यह बात जीवन के सूटकेस के साथ सटीक बैठती है: उसे तुम मन चाही चीज से उस समय तक भरते जाओ जब तक कि वह रसहीन नहीं हो जाता। बुरा मत मानना कृपया; तुमको तो सम्भवतः केद्रिना सर्जेवना के बारे में मेरी सदा की राय याद होगी। कुछ लड़कियाँ बड़ी चतुरता से उत्तीर्ण हो जाती हैं क्योंकि वे बड़ी चतुरता से आह भर सकती हैं। लेकिन तुम्हारी राय तो उसकी अपनी राय ही होगी और वह तुम्हारे ऊपर भी प्रभाव स्थापित कर लेगी, मैं निश्चय पूर्वक कहता हूँ—लेकिन यही होना भी चाहिए।" उसने पलक नीचे गिराए और फर्श पर से उठ बैठा। "और मैं जाते जाते यह कह देना चाहता हूँ...कि अपने को बेवकूफ बनाने से कोई लाभ नहीं है...हम लोग

सदा के लिए विछुड़ रहे हैं, और तुम स्वयं समझते हो...कि तुमने बुद्धिमानी से काम लिया है, तुम हमारे कटु, निष्ठुर, एकाकी जीवन के लिए नहीं बने हो; न तो तुम्हारे अन्दर साहस है और न घृणा, तुम्हारे अन्दर तो केवल जवानी का जोश और ललक है; यह हमारे काम के लिए अच्छा नहीं है। तुम धनी घराने के लड़के शिष्ट आत्मसमर्पण या शिष्ट रोष से अधिक और कुछ नहीं कर सकते, और वह एक धक्के के योग्य नहीं है। मिसाल के लिए, तुम लड़ते भी नहीं—फिर भी यह समझते हो कि तुम वीर हो—और जब कि हम युद्ध के लिए लालायित रहते हैं। हमारी धूल तुम्हारी आँखों को ढक लेगी, हमारी गन्दगी तुम्हें गन्दा कर देगी, इसके अतिरिक्त तुम हमारे लिए बड़े ही अनुभव शून्य हो, तुम अपने को छोटा-मोटा तीसमार्खा से कम नहीं समझते, तुम आत्म तिरस्कार से लड़खड़ाना पसन्द करते हो; हम उस सब से आजिज आ चुके हैं, हम कुछ नवीनता चाहते हैं। हमें दूसरों को तोड़ना है। तुम एक भले आदमी हो, लेकिन तुम कोमलता के पीछे मतवाले और उदार हो, भले आदमी की तरह हो, बस और कुछ नहीं, जैसा मेरे माता पिता कहेंगे।"

"तुम मुझ से सदा के लिए अलविदा कहना चाहते हो, एवजेनी," आर्केडी ने दुखित मन से कहा, "और मुझ से कहने को तुम्हारे पास और कोई शब्द नहीं है?"

वैजारोव ने अपनी खोपड़ी का पिछला भाग खुजाया।

"है, आर्केडी, मेरे पास दूसरे शब्द भी हैं, लेकिन मैं उन्हें नहीं कहूँगा क्योंकि वह निरी भावुकता होगी—जिसका अर्थ होगा : वेग से बहना। तुम यों ही चलते रहो और शादी कर लो, अपने छोटे से घोंसले को सजाओ संवारो और बढ़ाओ, जितने ही बच्चे होंगे उतना ही अच्छा होगा। वे अच्छे प्राणी होंगे सिर्फ इसीलिए कि वे ठीक समय पर इस दुनिया में पैर रखेंगे, मेरी तुम्हारी तरह नहीं होंगे।

ओह, मैं देखता हूँ कि घोड़े तैयार हो गए हैं। जाने का समय हो गया ! मैंने हर एक से विदा ले ली है···अच्छा ? आओ हम गले तो मिल लें, क्यों तुम्हारी क्या राय है ?"

आर्केडी अपने पूर्व गुरु और मित्र के गले से लिपट गया, उसकी आँखों से आँसू झर रहे थे।

"आह, जवानी, जवानी !" बैज़ारोव ने शान्ति से कहा। "लेकिन मैं केट्रिना सर्जेवना पर भरोसा करता हूं, वह शीघ्र तुम्हें ढाढ़स दे लेगी।"

× × ×

"अलविदा, मेरे पुराने मित्र !" उसने आर्केडी से गाड़ी में बैठने के बाद अस्तबल की छत पर बगल बगल में बैठे हुए कागा के एक जोड़े की ओर संकेत करते हुए कहा, उसने आगे कहा: "यह तुम्हारे लिए शिक्षा का एक प्रत्यक्ष रूप है !"

"क्या अर्थ है इसका ? आर्केडी ने पूछा।

"क्या ? क्या प्राकृतिक इतिहास का तुम्हारा ज्ञान इतना कम है या फिर तुम यह भूल गये हो कि कागा अत्यन्त ही सम्मानित घरेलू चिड़िया है ? उसकी मिसाल का अनुकरण करो !...अलविदा महाशय।"

गाड़ी ने झटका दिया और आगे बढ़ चली।

+ + +

बैजारोव ने सच कहा था। उसी शाम को कात्या से बातें करते समय आर्केडी अपने गुरु को बिलकुल ही भूल गया। वह उसके प्रभाव में बहने लगा था। कात्या ने भी इसका अनुभव किया, पर उसे उस पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उसे अगले दिन निकोलाई पैट्रोविच से इसी सम्बन्ध में बात करने मैरिनो जाना था। अन्ना सर्जेवना इन नौजवानों के मार्ग में बाधा नहीं डालना चाहती थी, लेकिन फिर भी औचित्य के

विचार से दोनों को अधिक देर तक अकेला नहीं रहने देती थी। वह बड़ी सौजन्यता से राजकुमारी को उनके मार्ग से अलग रखती थी—होने वाले विवाह की सूचना ने उसे रूआंसा और उन्मादी बना दिया था। पहले तो अन्ना सर्जेवना को यह भय हुआ कि उन दोनों का हर्ष-पूर्ण दृश्य उसके लिए सम्भवत: दुखदायी होगा, लेकिन बात उल्टी ही निकली इससे उसे सिर्फ दुःख ही नहीं हुआ बल्कि यह उसके लिए सुखद और हार्दिक प्रसन्नता दायक सिद्ध हुआ। वह भावावेश से प्रसन्न और दुखी दोनों ही थी। "बैजारोव की बात ठीक लगती थी," उसने सोचा, "सिर्फ जिज्ञासा सिर्फ जिज्ञासा; और सरलता का प्रेम और स्वार्थपरता..."

"बच्चो!" उसने जोर से कहा, "क्या प्रेम मोह है?"

लेकिन न तो कात्या ही और न आर्केडी ही उसे समझ सका। वे उससे शर्माते थे; उनकी बातचीत अनचाहे सुन ली गई थी और यह बात उनके दिमाग में घर कर गई थी। अन्ना सर्जेवना ने बहरहाल उन्हें जल्दी ही आश्वस्त किया। उसे ऐसा करने के लिए कुछ विशेष प्रयास नहीं करना पड़ा। वह भी आश्वस्त और आराम का अनुभव कर रही थी।

: २७ :

बैजारोव दम्पत्ति अपने बेटे के अनायास अप्रत्याशित रूप से घर लौट आने पर फूले नहीं समाए। अरिना व्लासेवना घर भर में ऐसी भागती फिरती कि वेसिली इवानिच ने उसे मुर्गी कहा, सच ही वह कतरी हुई पोंछ जैसी छोटी जाकेट पहन कर चिड़िया जैसी ही लग

रही थी। और वह स्वयं...वह अपने पाइप का सिर कुतरता और चबाता रहा और अपने हाथ से अपनी गर्दन को घुमाता फिराता रहा मानों जांच रहा हो कि उसका सिर गर्दन पर ठीक से जमा भी है या नहीं, और मूक हर्षोल्लास से अपना मुंह खोल देता।

"मैं पूरे छः सप्ताह तक यहां रहने आया हूं," बैजारोव ने उसे बताया, "और मैं कुछ काम करना चाहता हूं, इसलिए कृपया आप मेरे बीच में बाधा मत डालिएगा।"

"मैं कैसा दिखता हूँ, यह तुम भूल जाओगे, बस ऐसा मैं तुम्हें तंग करूंगा!" वेसिली इवनिच ने उत्तर दिया।

और उसने अपना वायदा पूरा भी किया। अपने बेटे को अपनी अध्ययन शाला में जमा देने के बाद वह उससे ओझल हो गया और अपनी स्त्री को भी उसके प्रति अधिक स्नेह प्रदर्शन करने के लिए मना कर दिया। "प्रिये," उसने उससे कहा" पिछली बार जब एवजेनी यहां था तो हमने उसके प्रति अधिक ध्यान देकर उसे थोड़ा कष्ट कर दिया था। अब की हमें थोड़ा सचेत रहना होगा।" वह मान तो गई, पर धीरे-धीरे ही वह सम्हल पाई क्योंकि वह सिर्फ खाने के ही समय अपने बेटे से मिल पाती और उससे बात करने में डरती थी। "एवजेनी प्यारे!" वह कहती और जब तक वह उसकी ओर आँख उठाता वह अपने बटुए की डोरी से फूहड़पन के साथ खींचातानी करने लगती सकपका कर हकला जाती, "कुछ नहीं, कुछ नहीं, मैं तो जरा योंही..."और तब वह वेसिली एवेनिच का सहारा लेती और अपनी हथेलियों पर अपनी ठोढ़ी टिकाते हुए कहती: "यह कैसे पता लगाया जाय कि एवजेनी को आज क्या खाना पसन्द आएगा—करम कल्ले का शोरवा या——?"—"तुम उससे ही पूछ क्यों नहीं लेती?"—"मैं उसे परेशान नहीं करना चाहती!" बैजारोव ने बहुत खास जल्दी ही कमरे में ही घुसा रहना बन्द कर दिया। उसका काम

करने का जोश समाप्त हो गया और उसका स्थान शिथिल उदासी और चेतना शून्य बेचैनी ने ले लिया। उसके सारे व्यवहारों में एक अजीब ग्लानि भरी शिथिलता थी, यहां तक कि उसकी चाल, जो सदैव दृढ़ और अति आश्वस्त होती थी, भी बदल गई। वह अब अकेला टहलने न जाता, वरन किसी संगी की टोह में रहता था, वह बरामदे में बैठकर चाय पीता था और वेसिली एवेनिच के साथ बाग में चहल कदमी करता था और उसके साथ ही तम्बाकू पीता था। एक बार उसने फादर एलेक्सी के सम्बन्ध में पूछा। इस परिवर्तन ने पहले तो वेसिली एवेनिच को उल्लसित कर दिया था, लेकिन उसके सुख की आयु थोड़ी ही थी। उसने अपनी पत्नी से एकान्त में कहा, "एवजेनी ने मुझे चिन्तित कर दिया है। ऐसा नहीं है कि वह हम से अप्रसन्न है या रुष्ट है, यह होता तो इतना बुरा न होता; वह दुखी है, व्यथित है--यही सबसे बुरा है। कभी एक शब्द नहीं कहता। अच्छा होता यदि वह हमें बुरा-भला कह लेता, पर वह तो अन्दर ही अन्दर दिन पर दिन घुलता जा रहा है और यही बात मुझे बेचैन करती है।"

"ईश्वर पर भरोसा करो!" वृद्धा ने फुसफुसाया; "मैं उसकी गर्दन में एक पवित्र धार्मिक तावीज बांध दूंगी, लेकिन शायद वह तो बांधेगा नहीं।" वेसिली एवेनिच ने एक या दो बार बड़ी चतुराई से उससे उसके काम के सम्बन्ध में उसके स्वास्थ्य के बारे में और आर्केडी के बारे में ठोका बजाया।...लेकिन बैजारोव ने बड़ी उदासीनता से टालते हुए उत्तर दिए, और एक दिन यह समझ कर कि उसका पिता उस से कुछ टटोलना चाहता है तो उसने नाराजी से कहा: "आप मेरे चारों तरफ इस तरह कान खड़े करके पंजों के बल क्या चक्कर लगाया करते हैं? यह तो पहले से भी बुरा है।"—"नहीं, नहीं, मेरा कोई मतलब नहीं, कोई मतलब नहीं।" बेचारे एवेनिच ने

जल्दी से कहा। उसकी ये तरकीबें कामयाब न हो सकीं। एक बार उसने किसानों की आजादी के विषय पर बेटे की रुचि उत्पन्न करने के लिए बात चलाई; लेकिन उसने उदासीनता से कहा, "कल मैं चहार दीवारी के पास से जा रहा था तो मैंने कुछ लड़कों को एक आधुनिक गीत चीखते सुना मैं आप मीठे दिल वालों से तंग हो गया हूँ, एक पुराने सुन्दर गीत की अपेक्षा आपके लिए यह तरक्की है।"

कभी कभी बैजारोव गांव में होकर टहलने जाता और अपने सदैव के उपहास करने के ढंग से किसी किसान के साथ बातचीत करने लग जाता। वह उससे कहता, "ऐ बुजुर्गवार, जीवन पर अपने विचार प्रकट करो; कहा जाता है कि तुम्हारे अन्दर सारी शक्ति और रूस का भविष्य निहित है: तुम इतिहास में एक नये युग की नींव डालोगे—तुम हमें अधिकृत भाषा दोगे और नियम बनाओगे!" वह व्यक्ति या तो कुछ भी न कहता, या कहता भी तो कुछ इस तरह: "ऐ वह हम—ऐ देखो, बात यह है कि—हमारी स्थिति ऐसी है।"

"अच्छा जरा यह बताओ कि तुम्हारा मिर* क्या है?" बैजारोव ने टोक कर पूछा। "क्या वही मिर नहीं है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह तीन मछलियों पर टिकी है?"

"वह तो धरती है, श्रीमान, जो तीन मछलियों पर टिकी है," देहाती ने गम्भीरता से कहा। उसकी आवाज में बुजुर्गी की गिड़गिड़ाहट थी "हमारी मिर, निश्चय ही, हर कोई जानता है, हमारे मालिक की इच्छा है, क्योंकि वह हमारे पिता हैं, सच! और मालिक जितना सख्त होता है मूजिक उतना ही उसे पसन्द करते हैं।"

बैजारोव ने इस प्रकार की बात सुनकर घृणा से अपने कंधे झिंझोड़े और चला गया।

---

*रूसी शब्द मिर के दो अर्थ हैं-ग्रामीण जाति और दुनियां—

'तुम लोग क्या बातें कर रहे थे ?" एक दुबले पतले कुरूप, फूहड़, अधेड़ किसान ने अपनी झोंपड़ी के दरवाजे पर से सिर निकाल कर अपने साथी गाँव वाले से पूछा। "लगान की बाकी के बारे में ?"

"नहीं लगान से कोई मतलब नहीं रहा," पहले किसान ने जवाब दिया। अब उसकी आवाज में वह सुरीलापन न था, जो अब बुरी तरह भारी थी। "लड़का सिर्फ बूढ़ी दादियों की कहानी बड़बड़ाना चाहता था। क्या देखते नहीं कि वह एक छैला है, वह क्या समझता है ?"

"ए, वह क्या समझता है !" दूसरे ने भी दुहराया और अपने सिरों को हिलाते हुए और अपना कमरबन्द ठीक करते हुए अपने मामलों की बातों पर बहस करने लगे। और घृणा से कन्धों को झिटकारने वाला बैजारोव, जो किसानों से बात करना जानता था (इस तरह से बैजारोव ने एक बार तैवेल पैट्रोविच से अपने झगड़े के समय डींग मारी थी) आत्मआश्वस्त बैजारोव कभी यह शंका नहीं करता था कि उनके लिए वह कुछ बहाने बाज जैसा है

आखिरकार उसने अपने लिए काम पा ही लिया। एक बार उसके सामने वेसिली एवैनिच एक किसान के कटे हुए पैर पर पट्टी बांध रहा था, लेकिन वृद्ध का हाथ कांप गया और वह ठीक से पट्टी नहीं सम्हाल पाया, उसके लड़के ने उसे सहायता दी, और तब से उसके काम में हाथ बटाने लगा यद्यपि जो उपचार वह सुझाता उन पर और अपने पिता पर जो तुरन्त उन्हें उपयोग में लाता फबती कसताही रहा। किन्तु बैजारोव का उपहास वेसिली एवेनिचको किसी तरह बाधक नहीं होता था, बल्कि उलटा उसे प्रसन्न ही करते थे। अपने चोकट गाउनको अपने पेट पर दो उंगलियोंसे पकड़े हुए और पाइप पीते हुए उसने अपने बेटे की उपेक्षा पूर्ण टिप्पणियों की ओर अपने उत्फुल्ल कान फेरे, और जितनाही अधिक वे द्वेषपूर्ण होतीं उतना दिल खोलकर प्रसन्नता अपनी

सारे मैले बत्तीसों दाँत दिखाते हुए वह हंसता था। कभी कभी वह इन नीरस और बेसिर पैर की बातों को आनन्द लेकर दुहराता भी था; और मिसाल के लिए वह कई दिनों तक बिना किसी तुक या प्रयोजन के बराबर यह दुहराता रहा : "भूल कर दुश्मन से भी ऐसा मत कहना" सिर्फ इसलिए क्योंकि उसके बेटे ने यह बात यह जानकर कि वह सवेरे की प्रार्थना में शामिल हुआ था, कही थी। "ईश्वर की कृपा है वह थोड़ा सा प्रसन्न तो हुआ।" उसने अपनी पत्नी से फुसफुसाते हुए कहा; "उसने आज मेरे काम में हाथ बटाया, वास्तव में बड़ा ही सुन्दर है!" इस विचार ने कि उसके पास ऐसा सहायक है उसके दिल को एक उत्साह प्रदान किया और उसमें गर्व का अनुभव करने लगा। "हाँ, मेरी प्रिय," वह एक किसान औरत से जो आदमियों का ओवरकोट पहने होती और रूसी आदमी का टोप; उसे गलाई का घोल या हेनबेनें मरहम देते समय कहता, "तुम्हें अपने भाग्य को सराहना चाहिए, और भली महिला, कि इत्तफाक से आजकल मेरा लड़का मेरे साथ ठहरा हुआ है : तुम्हारा इलाज आधुनिकतम वैज्ञानिक ढंग से हो रहा है, क्या तुम यह अनुभव करती हो? फ्रांस के बादशाह नेपोलियन के पास भी ऐसा डाक्टर नहीं है।" और जो औरत आमतिसार की शिकायत लेकर आई थी (इस शब्द के अर्थ वह स्वयं नहीं जानती थी) आदर में झुकती और तौलिया में से अंडे निकाल कर फीस के तौर पर उन्हें देती।

एक बार बैज़ारोव ने एक कपड़े के सामान की फेरी करने वाले के दाँत निकाले, और यद्यपि वह एक साधारण दाँत था वेसिली इवेनिच ने उसे उत्सुकतावश रख छोड़ा और फादर एलेक्सी को उसे दिखाया और उसके सम्बन्ध में अनेक बढ़ा चढ़ा कर बातें बताईं।

"ज़रा इन सांप के से विषैले दाँतों को तो देखिए! एवजेनी में

बड़ी महान शक्ति है ! वह फेरी वाला बेचारा अपनी जगह से ऊपर उठ गया···मैं नहीं समझता कि एक बलूत का पेड़ भी उसे सहन कर पाता !···"

"बड़ा कमाल किया !" अन्त में फादर एलेक्सी ने कहा न जानते हुए कि क्या कहा जाय और उस गर्वीले बूढ़े से कैसे पिंड छुड़ाया जाय ।

\+ \+ \+

एक दिन एक किसान पास के गांव से अपने भाई को वेसिली एवेनिच के पास दिखाने को लाया जिसके शरीर पर लाल चकते से उछल आए थे और उसे बुखार था। वह बेचारा गरीब घास के गट्ठे पर औंधे मुंह लेटा था, उसका सारा शरीर काले चिकोतों से भरा पड़ा था और वह काफी देर से बेहोश था। वेसिली एवेनिच ने अफसोस प्रगट करते हुए कहा कि अब देर होगई और कोई आशा नहीं है। सच ही घर तक लौटते लौटते वह गाड़ी में ही मर गया।

तीन दिन बाद बैजारोव अपने पिता के कमरे में गया और पूछा कि क्या उसके पास थोड़ा ल्यूनर कास्टिक है।

"है तो, पर तुम्हें किस लिए चाहिए ?"

"जरूरत है ऐसे ही···घाव पर लगाने के लिए।"

"किसके ?"

"अपने।"

"अपने ? किस लिए ? किस घाव के लिए ? कहां है ?"

"यह, उंगली पर। आज मैं गांव गया था, जहां से वह चिकौते वाला बीमार किसान आया था। वे किसी कारण से उसका पोस्टमार्टम करना चाहते थे, और मुझे कुछ दिनों से उसका कोई अभ्यास न था।"

"अच्छा तो ?"

"मैंने एक स्थानीय डाक्टर से कहा कि मैं पोस्टमार्टम करूंगा, और उसमें मैंने अपनी उंगली काट ली।"

एकदम वेसिली एवेनिच का चेहरा पीला पड़ गया और बिना एक शब्द भी कहे तेजी से अपनी अध्ययनशाला की ओर दौड़ा और तुरन्त ल्यूनर कास्टिक का एक टुकड़ा लेकर वापस आया, बैजारोव उसे लेकर जाना चाहता था।

"ईश्वर के लिए," वेसिली एवेनिच ने कहा, "मुझे लगाने दो।"

बैजारोव तीखी हंसी हसा।

"आप जरा सी बात के लिए उतावले हो गए!"

"कृपया मजाक मत करो। जरा अपनी उंगली तो दिखाओ। कुछ ज्यादा घाव नहीं है। क्या दर्द होता है?"

"जोर से दबाइए, डरिए मत।"

वेसिली एवेनिच रुक गया।

"एवजेनी क्या तुम्हारी राय में इसे लोहे से झुलस दिया जाय?"

"यह पहले ही किया जाना चाहिए था, सच बात तो यह है कि ल्यूनर कास्टिक भी बेकार है। अगर मेरे अन्दर उसका जहर फैल चुका है तो अब काफी देर हो चुकी है।"

"कैसे...काफी देर....." वेसिली एवनिच मुश्किल से हकला कर कह सका।

"मेरा ऐसा ही ख्याल है। चार घंटे से ज्यादा बीत चुके हैं।"

वेसिली एवेनिच ने फिर से दागा।

"क्या जिला डाक्टर के पास ल्यूनर कास्टिक नहीं था?"

"नहीं।"

"बड़ी अजीब बात है कि एक डाक्टर के पास ऐसी जरूरी चीज नहीं थी।"

"आप जरा उसके चीर-फाड़ के औजार देखते," बैजारोव ने कहा और बाहर चला गया।

उस सारी शाम और दूसरे दिन वेसिली एवेनिच हर सम्भव बहाने से अपने बेटे के कमरे में जाता रहा, और यद्यपि एक बार भी उसने उस घाव के बारे में न पूछा और न कोई बात ही चलाई पर ऐसी उत्सुकता और जिज्ञासा भरी पैनी दृष्टि से उसकी आँखों में झांकता कि बैजारोव धीरज खो बैठा और उसने वहां से चले जाने की धमकी दी। वेसिली एवेनिच ने वायदा किया कि अब वह ऐसा नहीं करेगा। अरिना व्लासेवना ने भी जिसे उसने इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बताया था उसे तंग करना शुरू कर दिया, कि यह सोता क्यों नहीं और उसे हो क्या है। उसकी ऐसी ही स्थिति पूरे दो दिन तक रही। उसे अपने बेटे की उदास थकी दृष्टि बेचैन कर देती थी। तीसरे दिन भोजन के समय वह अपने को नहीं रोक सका। बैजारोव नीची आँख किए बैठा था। उसने खाना बिलकुल छूआ भी नहीं था।

"तुम खाते क्यों नहीं, एवजेनी ?" उसने व्यग्रता प्रगट करते हुए पूछा। "मैं समझता हूं कि खाना तो बड़ा ही स्वादिष्ट है।"

"मैं नहीं खा रहा हूं क्योंकि मैं नहीं चाहता।"

"क्या तुम्हारी भूख मारी गई है ? तुम्हारा सिर कैसा है ?" उसने सकुचाते हुए कहा, "क्या दर्द हो रहा है ?"

"हां। क्यों नहीं होगा ?"

अरिना व्लासेवना सतर्क हो बैठ गई।

"एवजेनी कृपया नाराज मत हो," वेसिली एवेनिच कहता रहा, "लेकिन जरा मुझे अपनी नाड़ी नहीं देखने दोगे क्या ?"

बैजारोव उठ खड़ा हुआ।

"मैं बिना नाड़ी देखे ही आपको बता सकता हूं कि मुझे काफी तेज बुखार है।"

"क्या तुम्हें जाड़ा भी लगा था ?"

"हां, मैं जाकर लेटूंगा। मुझे थोड़ी नींबू की चाय भिजवा दीजिएगा। शायद ठंड लग गई है।

"कोई ताज्जुब नहीं, मैंने पिछली रात तुम्हें खांसते हुए सुना था," अरिना व्लासेवना ने कहा।

"ठंड लग गई है," बैजारोव ने दुहराया और कमरे के बाहर चला गया।

अरिना व्लासेवना उसके लिए चाय बनाने में लग गई और वेसिली एवेनिच उठकर दूसरे कमरे में चला गया और मूक मानसिक वेदना से अपने बाल नोचने लगा।

उस सारे दिन बैजारोव बिस्तर पर पड़ा रहा और उसकी रात भी बेचैनी से कटी और अच्छी तरह से वह सो न सका। रात को करीब एक बजे उसने बड़ी कोशिश से आँखें खोलीं और लैम्प की मद्धिम रोशनी में अपने पिता का पीला चमकता चेहरा अपने ऊपर झुका हुआ देखा। उसने उसे चले जाने को कहा। वृद्ध ने उसकी आज्ञा का पालन किया और पंजों के बल लौट गया, किताब की आलमारी के पीछे जाकर छिप गया और विस्फारित नेत्रों से टकटकी बांधे अपने बेटे की ओर देखता रहा। अरिना व्लासेवना भी उठ गई थी और अधखुले दरवाजे में से उसने झांक कर देखना चाहा, "प्यारा एवजेनी कैसा है," और उसकी नजर वेसिली एवेनिच पर पड़ गई। वह जैसे तैसे उसकी अचल स्थिर झुकी हुई पीठ ही देख सकी, लेकिन उसे देखकर भी उसे चैन आया। सबेरे बैजारोव ने उठने की कोशिश की; पर उसके सामने धुंध छा गई और उसकी नाक से खून बहने लगा। वह फिर बिस्तर पर लेट गया। वेसिली एवेनिच ने चुप रहते हुए उसे सहारा दिया। अरिना व्लासेवना भीतर आई और उसने उसकी तबियत का हाल पूछा। उसने उत्तर दिया : "बेहतर है," और दीवाल की ओर मुंह

फेर लिया। वेसिली एवेनिच ने अपनी पत्नी को हाथ से संकेत किया, उसने अपनी चीख रोकने के प्रयास में अपने होंठ काट लिए, और बाहर चली गई। घर की हर चीज पर एकाएक कालिमा छा गई, हर एक के मुंह लटक गए, हर एक पर एक व्यथा भरी चुप्पी व्याप्त थी। मुर्गा जो बहुत शोर करता था गांव में भेज दिया गया था, वह इस व्यवहार पर बड़ा चकित था। बैजारोव दीवाल की ओर मुंह किए हुए ही लेटा रहा। वेसिली एवेनिच ने उससे कई प्रश्न करने की कोशिश की, लेकिन इससे बैजारोव थक गया और वृद्ध आराम कुर्सी पर जब तक अपनी उंगली चटकाता हुआ निश्चल बैठा रहा। वह कुछ क्षणों के लिए बाहर बाग में गया, एक पत्थर की मूर्ती की तरह खड़ा रहा जैसे मानो वह अवर्णनीय आश्चर्य से स्तम्भित हो गया हो (इन दिनों उसके चेहरे से स्थाई आश्चर्य का भाव प्रगट होता था) और फिर अपनी पत्नी की जिज्ञासा को टालता हुआ अपने बेटे के पास लौट आया। अरिना ने अन्ततः उसे पकड़ लिया और फुसफुसाते हुए व्यग्र और धमकी के स्वर में उससे पूछा : "उसे क्या हुआ है?" उसने उसका हाथ थामते हुए उत्तर में थोड़ा मुस्करा दिया, और भयानक आश्चर्य कि वह हंसने लगा। उसने सवेरे डाक्टर बुलवाया। उसने इस सम्बन्ध में इस डर से कि कहीं वह नाराज न हो जाय अपने बेटे को जता देना आवश्यक समझा।

बैजारोव एकाएक घूम पड़ा और उसने शिथिलता से अपने पिता की ओर घूरा और पानी मांगा।

वेसिली एवेनिच ने उसे थोड़ा पानी दिया, और उसका माथा छूने का अवसर पा लिया। उसे तेज ज्वर था।

"बापू," बैजारोव ने कहना आरम्भ किया, "मेरा जाने का समय आ गया है। मुझ में जहर फैल गया है, और कुछ ही दिनों में आपको मेरा अन्तिम संस्कार करना पड़ेगा।"

वेसिली एवेनिच लड़खड़ा गया। जैसे मानों नीचे से उसके पैरों को ठोकर मार दी गई हो।

"एवजेनी!" वह हकलाया, "तुम कैसी बात कर रहे हो? परमात्मा तुम पर रहम करे। तुम्हें थोड़ी ठंड लग गई है बस..."

"ठहरिए, ठहरिए," बैजारोव नें जल्दी से कहा। "एक डाक्टर को ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए। आप स्वयं जानते हैं कि जहर फैलने के सारे लक्षण स्पष्ट हैं।"

"कहाँ हैं लक्षण...एवजेनी?...तुम यों ही नाहक शक कर रहे हो।"

"और यह क्या है?" बैजारोव ने अपनी अपने पिता को शरीर पर निकल आए भयानक लाल चिकत्ते कमीज की बांह पलटकर दिखाते हुए कहा।

वेसिली एवेनिच को चक्कर आ गया और उसका खून ठंडा पड़ गया।

"इससे क्या," उसने अन्ततः कहा, "क्या हुआ अगर...अगर... कुछ—छूत लगने जैसी बात है—"

"खून विषैला हो गया है," उसके बेटे ने कहा।

"ऐ, हां—कुछ कुछ फैलने वाला रोग—"

"खून विषैला हो गया है," बैजारोव ने क्रूरता से स्पष्ट स्वर में दुहराया; "या आपका डाक्टरी का ज्ञान कुछ कुन्द पड़ गया है?"

"हाँ, हाँ, ठीक है, ऐसे ही समझ लो—खैर, हम तुम्हें हर सूरत से अच्छा कर लेंगे।"

"सम्भव नहीं है। लेकिन असल बात यह नहीं है। मुझे भी इतनी जल्दी मर जाने की आशा नहीं है; यह दुर्भाग्य है। आप और माँ अब अपनी धार्मिक भावनाओं और मान्यताओं को उपयोग में लाइए और उन्हें कसौटिए पर कसिए।" उसने कुछ और पानी पिया।

"मैं चाहता हूँ कि जब तक मेरा मस्तिष्क सही सलामत है, आप मेरी खातिर एक काम करें...कल या परसों आप जानते हैं कि मेरा मस्तिष्क जवाब दे जायगा। मुझे अब भी विश्वास नहीं है कि मैं काम की बात कर रहा हूं या नहीं। जब मैं यहाँ लेटा हुआ था तो मुझे ऐसा लगा कि लाल शिकारी कुत्ते चारों ओर से मेरा पीछा कर रहे हैं, और आप एक जगह मेरे पास आए हैं, मानों जैसे मैं जंगली मुर्गा होऊं। मैं पिए हुए लग रहा था। आप मुझे ठीक समझ रहे हैं न?"

"सच एवजेनी तुम बिलकुल स्वस्थ रूप से बोल रहे हो।"

"और भी अच्छा है; आपने मुझे बताया है कि आपने डाक्टर बुलवाया है—यह अब आपका थोड़ा सा मजाक रहा—मेरे खातिर एक कष्ट और कीजिए थोड़ा सा: एक आदमी भेज दीजिए खबर लेकर..."

"आर्केडी निकोलाइच के पास?" वृद्ध ने बीच में ही पूछा।

"कौन है आर्केडी निकोलाइच?" बैजारोव ने शंकित स्वर में बड़बड़ाया; "ओह, वह अनाड़ी! नहीं उसे परेशान मत कीजिए, वह अब कागा हो गया है। ताज्जुब मत कीजिए अभी मुझे चित्तभ्रम नहीं हुआ हैं। ओदिन्त्सोवा, अन्ना सर्जेवना के पास एक आदमी भेज दीजिए, इसी भाग में उसकी एक जागीर''क्या आप उसे जानते हैं?"–वेसिलि एवेनिच ने स्वीकृति में सिर हिलाया।–"कहला दीजिए कि बैजारोव उसे नमस्ते कहता है और उसने कहलाया है कि उसकी अन्तिम घड़ी आ गई है। क्या आप यह काम कर देंगे?"

"हाँ—लेकिन तुम मर नहीं सकते—नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता एवजेनी।—अब तुम्हीं सोचो कि—क्या यह ठीक होगा?"

"मैं कुछ नहीं जानता, लेकिन आप आदमी जरूर भिजवा दीजिए।"

"मैं अभी आदमी भेजता हूं और उसके लिए स्वयं एक पत्र भी लिख दूंगा।"

"नहीं, किस लिए? सिर्फ इतना कहला दीजिए कि मैं उसे नमस्ते भेजता हूं बस, और कुछ नहीं। अब मैं फिर अपने शिकारी कुत्तों के पास जाऊंगा। क्या मजाक है! मैं मृत्यु के विचार के चारों तरफ अपने विचारों को घेर कर लाने का प्रयास करता हूं, लेकिन कोई लाभ नहीं होता। मैं सिर्फ चिकत्ता देखता हूं—और कुछ नहीं।"

वह फिर भारी मन से दीवाल की ओर घूम गया; वेसिली एवेनिच कमरे के बाहर चला गया, और किसी तरह घिसटते—लड़खड़ाते अपनी पत्नी के सोने के कमरे में पहुँचा और पवित्र मूर्तियों के सामने जाकर घुटनों के बल गिर पड़ा।

"प्रार्थना करो अरिना, प्रार्थना करो!" उसने कराहा। "हमारा बेटा मर रहा है।"

× × ×

डाक्टर आया—वही जो बैजारोव को ल्यूनर कास्टिक देने में असफल रहा था—और परीक्षा करने के बाद प्रत्याशित इलाज की ही उसने सलाह दी और अच्छा हो जाने की आशा दिखाई।

"क्या आपने कभी मेरी स्थिति के लोगों को स्वर्ग जाते देखा है?" बैजारोव ने पूछा, और एकाएक सोफे के पास रखी भारी मेज के पाए को पकड़ कर उसे हिलाया और अपनी जगह से हटा दिया।

"अभी मेरे अन्दर शारीरिक बल है," उसने कहा, "फिर भी मुझे मरना होगा!—एक बूढ़े आदमी की जीवित रहने की अभिलाषा मर चुकी होती है, लेकिन मैं—उसके बाद भी मरने से इन्कार करने की कोशिश करता हूं। वह तुम्हें दुत्कारती है और बस यही वहां है! कौन चीख रहा है?" उसने थोड़ी देर बाद कहा। "माँ? बेचारी मां! अब वह किसे अपना स्वादिष्ट भोजन खिलाएगी? और आप वेसिली वैनिच, लगता है आप भी फवारा हो गए हैं क्या? अच्छा अगर ईसाइयत कुछ काम नहीं आती तो एक दार्शनिक बन जाइए या

फिर बैरागी बन जाइए! आप दार्शनिक होने की शेखी मारते थे, क्यों ठीक बात है न?"

"मैं क्या दार्शनिक हूँ भला?"वेसिली एवेनिच ने व्यथित स्वर से कहा। उसके गालों पर से आँसुओं की धारा बह चली।

\+ \+ \+

बैजारोव की दशा प्रतिक्षण बिगड़ती जा रही थी; बीमारी तेजी से बढ़ रही थी, जैसा कि आम तौर पर चीर-फाड़ के समय खून में जहर फैल जाने से होता है। अभी वह चेतना शून्य नहीं हुआ था; और जो कुछ बात कही जाती थी उसे समझ लेता था; वह अब भी संघर्ष कर रहा था। "मैं चेतना शून्य नहीं होना चाहता," उसने मुट्ठी भींचते हुए फुसफुसाया, "क्या बकवास है!" तब वह बोला: "आठ में से दस निकाल दो, क्या बचा?" वेसिली एवेनिच दृढ़ पुरुष की तरह एक के बाद एक उपाय का प्रयोग करते हुए इधर उधर टहलता रहा। उसने अपने बेटे के पैर ढक दिए थे। "ठंडी चद्दरों में लपेट दो"‥कै कराओ, सरसों का पेट पर लेप करो‥खून निकालो," उसने बार बार बुदबुदाया। डाक्टर को उसने रुकने के लिए राजी कर लिया था। वह भी हर बात में उसकी हां में हां मिलाता था और बीमार को लैमन दिया और अपने लिए पाइप सुलगाया, फिर 'प्रिय' वोडका ली। अरिना व्लासेवना एक नीची सी कुर्सी पर दरवाजे पर बैठी थी और जब तब बीच में उठ कर प्रार्थना करने जाती। कुछ दिन पहिले एक छोटा शीशा उसके हाथ से फिसल कर गिर गया था। वह उसे हमेशा अपशकुन मानती थी; अन्फिसुश्का उसे किसी तरह शान्त नहीं कर पा रही थी। तिमोफेच ओदिन्त्सोवा के पास घोड़े पर दौड़ कर गया था।

बैजारोव की रात बड़ी बेचैनी से कटी।‥तेज और अत्यन्त दुख-दायी बुखार ने उसे झिंझोड़ दिया था। सवेरा होते होते कुछ स्वस्थ

अनुभव करने लगा। उसने अरिना व्लासेवना से उसके बाल काढ़ देने को कहा, उसका हाथ चूमा और चाय की एक या दो चुस्की ली। वेसिली एवेनिच के कुछ दम में दम आया।

"ईश्वर का धन्यवाद है!" उसने बार बार दुहराया। "संकट आया···संकट बीत गया।"

"सोचे जाओ," बैजारोव ने कहा। "शब्दों में क्या धरा है, एक शब्द पर जोर दो कहो 'संकट' और बस तुम्हें शान्ति हो गई। ताज्जुब है अब भी आदमी शब्दों में कैसे विश्वास करता है। मिसाल के लिए उससे कहो कि तुम मूर्ख हो और उसे जवाब देने का अवसर न दो वह चौंक उठेगा; उससे बिना पैसा दिए कहो, तुम चतुर हो और वह प्रसन्न हो जाएगा।"

बैजारोव की पहिले जैसी ही इस हास्य-व्यंग पूर्ण बात ने वेसिली एवेनिच को प्रसन्न कर दिया।

"शाबाश! खूब कहा, खूब कहा," उसने चिल्लाते हुए हाथ ऐसे किए मानो ताली बजा रहा हो। बैजारोव के होठों पर व्यथित मुस्कान बिखर गई।

"तो, आप क्या सोचते हैं," उसने पूछा, "क्या संकट आया है या बीतगया?"

"मैं तो बस यह देख रहा हूँ कि तुम्हारी हालत पहले से बेहतर है, यही मुख्य बात है," वेसिली एवेनिच ने उत्तर दिया।

"बहुत अच्छा है, खुशी मनाइए—यह बात तो सदा ही अच्छी है। क्या आपने ओदिन्त्सोवा के पास आदमी भेजा?"

"हां।"

× × ×

बैजारोव स्वस्थ दीखने लगा था, पर यह स्थिति अधिक देर तक नहीं रही, उसकी हालत फिर गिरने लगी। वेसिली एवेनिच ।`आरोव

के बिस्तर की बगल में बैठा था। एक विशेष प्रकार की व्यथा से वह पीड़ित हो रहा था। उसने कई बार बोलना चाहा पर बोल न सका।

"एवजेनी," अन्त में वह बोला, "मेरे बेटे, मेरे प्रिय परम प्रिय बच्चे।"

स्वर में वेदना भरी पुकार थी। बैजारोव पर भी उसका प्रभाव पड़ा...उसने अपना सिर थोड़ा सा घुमाया और अपनी अवशता से संघर्ष करते हुए वह बोला: "यह क्या है मेरे प्रिय बापू ?"

"एवजेनी" वेसिली एवेनिच ने फिर कहा और बैजारोव के सामने घुटनों के बल बैठ गया, यद्यपि बैजारोव की आँखे बन्द थीं और वह उसे देख नहीं सकता था। "एवजेनी, अब तुम्हारी हालत अच्छी है; ईश्वर की दया से अब अच्छे हो जाओगे; लेकिन फिर भी इस अवसर से लाभ उठा कर अपनी माँ और मेरी खातिर अपना धार्मिक कर्तव्य पूरा कर दो! कितना दुखदायी है कि मुझे तुमसे कहना पड़ रहा है; लेकिन यह तो और भी दुखदायी होगा..., एवजेनी...जरा इसके ऊपर सोचो तो सही, आखिर इसके क्या..."

वृद्ध का स्वर टूट गया और उसके बेटे के चेहरे पर एक अजीब विलक्षण मुद्रा आ गई, यद्यपि वह अब भी आँख बन्द किए हुए ही लेटा था।

"मुझे कोई विरोध नहीं है, अगर इससे आपको चैन है मिलता तो मुझे कोई विरोध नहीं है; तो," उसने अन्ततः कहा; "लेकिन मैं नहीं समझता कि अभी ऐसी कोई जल्दी है। आपने ही तो कहा कि मेरी तबियत अब कुछ ठीक है।"

"हां, हाँ, सो तो है ही, एवजेनी, लेकिन कौन जानता है; सब ईश्वर की मर्जी है, और अगर तुम इस कर्तव्य को पूरा कर लेते हो...'

"नहीं, मैं इन्तजार करूंगा, "बैजारोव ने बीच में ही कहा, "मैं आप से सहमत हूं कि संकट आ गया है। और अगर हम भूल

कर रहे हैं, अच्छा ! —एक अचेत मनुष्य भी तो अपनी अन्तिम धर्म विधि पूरी कर सकता है !"

"लेकिन, प्रिय एवजेनी..."

"मैं इन्तजार करूंगा। और अब मैं सोना चाहता हूँ, मुझे छेड़ियेगा नहीं।"

और उसने अपना सिर पहले की स्थिति में ही कर लिया।

वृद्ध उठ खड़ा हुआ, और जाकर आराम कुर्सी पर बैठ गया और हथेली पर अपनी ठोढ़ी रख कर अपनी उंगलियाँ कुतरने लगा...

एक टमटम की आवाज, आवाज जो उस क्षेत्र की निस्तब्धता में बड़ी आसानी से सुनी जा सकती है, एकाएक उसके कानों में पड़ी। हल्के पहियों की घरघराहट पास, और पास औरपास आतीजा रही थी, अब घोड़ों की तेज सांस की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। वेसिली एवेनिच ने उठकर खिड़की से झाँका। दो आदमियों के बैठने वाली एक टमटम जिसमें चार घोड़े जुते थे हाते में भीतर घुसी। वेसिली एवेनिच एक दम प्रसन्न हो प्रवेश द्वार की ओर उसी क्षण भागा...एक वर्दीधारी चपरासी ने टमटम का दरवाजा खोला और उसमें काले कपड़े पहने एक महिला उतरी।

"मैं ओदिन्त्सोवा हूं," उसने अपना परिचय दिया और पूछा "क्या एवजेनी वेसिलिच अभी जीवित है? क्या आप उसके पिता हैं? मैं अपने साथ एक डाक्टर भी लाई हूँ।"

"मेरी रहम की अच्छी देवी!" वेसिली एवेनिच ने भावावेश में कहा और उसका हाथ थाम लिया और संक्षुब्धता से अपने ओंठ उस पर दबा दिये। इसी बीच उसके साथ आया डाक्टर जो चश्मा लगाए जर्मन आकृति का नाटा सा आदमी था, गाड़ी से आराम आराम से उतर रहा था। "वह अभी जीवित है, मेरा एवजेनी अभी जीवित है,

और अब वह बच जायगा! अरिना! अरिना! स्वर्ग से एक देवी हमारे पास आई हैं..."

"हे मेरे भगवान, यह क्या है!" बरामदे से तेजी से बाहर आते हुए वृद्धा ने हकलाते हुए कहा और नितान्त सकते की स्थिति में हो वह अन्ना सर्जेवना के कदमों पर गिर पड़ी और उसके गाउन के छोर को व्यग्र आवेश से चूमने लगी।

"ओह, यह आप क्या कर रही हैं!" अन्ना सर्जेवना कहती ही रह गई; पर अरिना व्लासेवना तो बहरी हो गई थी और वेसिली एवेनिच भावोन्माद से बार बार दुहराता रहा, "देवी! देवी!"

"ये सब लोग कौन हैं? मरीज किधर है?" अन्ततः डाक्टर ने थोड़ी सी घृणा के साथ पूछा।

वेसिली एवेनिच होश में आया

"यहां, यहाँ, इधर, इधर आइए कृपया," उसने कहा।

"ओह!" जर्मन ने रूखेपन से दाँत पीसते हुए कहा।

वेसिली एवेनिच उसे मरीज के कमरे में ले गया।

"अन्ना सर्जेवना ओदिन्त्सोवा के यहाँ से एक डाक्टर आया है," उसने अपने बेटे के कान पर झुक कर कहा। "और वह भी आई हैं।"

बैजारोव ने झटपट आँखे खोल दीं। "क्या कहा आपने?"

"मैंने कहा कि अन्ना सर्जेवना ओदिन्त्सोवा यहाँ आगई हैं और वह अपने साथ इन डाक्टर को लाई हैं।"

बैजारोव की आँखे कमरे में चारों ओर घूम गईं।

"वह यहाँ हैं!...मैं उन्हें देखना चाहता हूँ।"

"तुम देखोगे उन्हें एवजेनी; पहले जरा डाक्टर से बात कर ली जाय। मैं सिदोर सिदोरिच (यह जिला डाक्टर का नाम था) के जाने के बाद से सारा इतिहास बता दूंगा और हम थोड़ी सी सलाह करेंगे।"

बैजारोव ने जर्मन की ओर देखा। "अच्छा, जो कुछ करना हो जल्दी से कीजिए, लेकिन लेटिन मत बोलिएगा।

लेकिन उसने लेटिन में ही बोलना शुरू किया, जिस पर वेसिली एवेनिच ने उसे रोक कर कहा : "अच्छा हो, आप रूसी भाषा ही बोलें।"

"अचा ! ऐशा, ऐशा, बौल वेलर..."

और मरीज की जाँच पड़ताल शुरू हो गई ।

× × ×

आधे घन्टे बाद अन्ना सर्जेवना वेसिली एवेनिच के साथ मरीज के कमरे में आई। डाक्टर ने उसे पहले ही फुसफुसा कर बता दिया था कि मरीज के बचने की कोई आशा नहीं रही है।

उसने बैजारोव की ओर देखा...और चमकदार पर पीले चेहरे और अपनी ओर टकटकी बांधे निस्तेज आंखों को देख कर वह दरवाजे पर ही मुर्तिवत ठिठक कर खड़ी रह गई । उसे भयपूर्ण कंप हो आया और शरीर में ठंड की सुरसुरी सी दौड़ गई, एक मर्मान्तक भय उसमें समा गया, और यह विचार उसके दिमाग में कौंध गया कि अगर वह उसे प्रेम करती होती तो उसकी अनुभूति कुछ और ही होती ।

"धन्यवाद," उसने बड़े प्रयास से कहा। "मुझे यह आशा नहीं थी। यह तुम्हारी बड़ी कृपालुता है । तो हम फिर एक बार मिल ही गए, जैसा तुमने वायदा किया था।"

"अन्ना सर्जेवना इतनी अच्छी है..." वेसिली एवेनिच ने कहना आरम्भ किया।

"बापू, हम दोनों को जरा अकेले रहने दीजिए। अन्ना सर्जेवना, क्या तुम्हें इसमें कुछ आपत्ति है ? मेरा विश्वास है कि अब—"

उसने अपने सिर के इशारे से अपने लम्बे निर्जीव पड़े शरीर की ओर संकेत किया।

वेसिली एवेनिच कमरे से बाहर चला गया।

"धन्यवाद," बैजारोव ने दुहराया। "यह राजसी कृपा है। कहा जाता है कि मरने वाले को राजा भी देखने आता है।"

"एवजेनी वेसिलिच, मुझे आशा है—"

"ओहो! अन्ना सर्जेवना, हमें सत्य बोलना चाहिए। अब मेरा अन्त करीब है। मैं अब मौत के कराल चक्र में फंस गया हूँ। अब यह सिद्ध है कि भविष्य के बारे में हमारा सोचना कितना बेकार था। मौत एक पुरानी कहानी है, लेकिन फिर भी हर एक के लिए नयी है। मैंने अभी भी घुटने नहीं टेके हैं—लेकिन फिर एक शिथिलता घेरेगी और तब चिरनिद्रा!" उसने मर्मान्तिक उदास मुद्रा बनाई। "हूं, मैं तुमसे क्या कहूँ—यह कि मैं तुम्हें प्रेम करता था? पहले भी इसमें कोई बुद्धिमानी न थी और अब तो और भी नहीं। प्रेम का अपना एक रूप होता है और मेरा रूप नष्ट हो रहा है। आओ, मैं तुम्हें बताऊं कि तुम कितनी प्यारी हो, मोहक हो! कितनी सुन्दर हो—"

अन्ना सर्जेवना अनायास ही थर्रा गई।

"कोई बात नहीं है, घबड़ाओ नहीं—वहाँ बैठ जाओ—नजदीक मत आओ—मेरी बीमारी छूत की है, जानती हो न!"

अन्ना सर्जेवना तेजी से आगे बढ़कर बैजारोव के बिस्तर के पास जाकर बैठ गई।

"मेरी सम्मानित परोपकारिणी देवी!" वह फुसफुसाया। "इस भयावने कमरे में—कितने पास और कितनी सुन्दर जवान, निर्मल और पवित्र—!—अच्छा अलविदा! बड़ी उमर हो तुम्हारी; यही सब से अच्छा है—समय रहते बिगड़ी बना लो। जरा देखो तो सही—कैसा भयानक दृश्य है, एक अधमरा कीड़ा अपनी अन्तिम सांस के लिए भी

जूझ रहा है।···और मैं सोचा करता था कि जो मुझ से मरने की बात कहेगा मैं उसके मुंह पर ढेर सारी धूल डालूंगा? बहुत कुछ करने को सोचा था।···मैं अपने को शक्ति का राक्षस समझता था।···अब उस राक्षस की मुख्य अभिलाषा है—कैसे शान्ति से मरा जाय; यद्यपि कोई किसी की तिनका बराबर भी परवाह नहीं करता ··· सब एक ही बात है। मैं जरा भी चूं नहीं करूंगा।···"

बैजारोव चुप हो गया और गिलास टटोलने लगा। अन्ना सर्जेवना ने बिना अपने दस्ताने उतारे सांस रोक कर उसे गिलास थमा दिया।

"तुम मुझे भूल जाओगी," उसने फिर कहना आरम्भ किया, "जीवितों और मृतकों का कोई साथ नहीं है। इसमें सन्देह नहीं है कि मेरे पिता तुमसे कहेंगे कि रूस से कैसी महान हस्ती का बिछोह हो रहा है···वह सब बकवास है; लेकिन बेचारे वृद्ध की भावनाओं को ठेस मत पहुंचाना। तुम तो जानती ही हो–शान्ति और चैन के जीवन के लिए हर बात उचित है।···और माँ के प्रति भी कृपालु होना। तुम चिराग लेकर ढूंढोगी फिर भी ऐसे लोग तुम्हें नहीं मिलेंगे।—रूस को मेरी जरूरत है?···नहीं,...स्पष्टता नहीं! किसकी जरूरत है? मोची की जरूरत है; दर्जी, कसाई—वह गोश्त बेचता है—कसाई उधर देखो, ओह, सब गड़बड़ घुटाला—यहाँ एक जंगल है—"

बैजारोव ने अपने माथे पर हाथ रखा।

अन्ना सर्जेवना ने अपना शरीर आगे की ओर झुकाया।

"एवजेनी वेस्लिच, मैं यहाँ हूँ—"

उसने अचानक एक आकस्मिक साहस के साथ हाथ उठाया और कुहनी के बल उठकर बैठ गया।

"अलविदा," उसने सत्वर जोर लगाते हुए कहा और उसकी आंखों में अन्तिम आभा चमक उठी। "अलविदा···सुनो···उस बार"

मैंने तुम्हें नहीं चूमा था, याद है !···जरा बुझते हुए दीपक के काँपते अधरों पर एक सांस लो—और उसे अपनी साँस से बुझ जाने दो—"

अन्ना सर्जेवना ने अपने अधर उसके माथे पर रख दिए।

"बस !" वह बुदबुदाया और तकिए पर गिर पड़ा।

"अब···अन्धकार···"

अन्ना सर्जेवना बाहर चली गई।

"कहो, क्या हाल है ?" वेसिली एवेनिच ने उससे फुसफुसाते हुए पूछा।

"वह सो गया है," उसने अत्यन्त क्षीण स्वर में उत्तर दिया।

बैजारोव को अब जगना न था। शाम को वह बेसुध होगया और दूसरे दिन चल बसा। फादर एलेक्सी ने उसका धार्मिक संस्कार किया। अन्तिम उबटन संस्कार के समय जब उसके सीने पर पवित्र तेल मला गया तो उसकी एक आंख खुली और ऐसा लगा मानों लबादा पहिने पादरी, धूपदान में से उठ रहे सुवासित धूप और प्रतिमा के सामने, जलती मोमबत्तियों के दृश्य को देख कर मरते हुए मनुष्य के काले मुर्झाए चेहरे पर कुछ भय की सी एक लहर दौड़ गई।—उसकी अन्तिम सांस के साथ ही घर में कोहराम मच गया और घर मर्मान्तक चीख से भर गया। वेसिली एवेनिच को उन्माद हो गया, "मैंने कहा था कि मैं इसे सहन नहीं कर सकूंगा," उसने भर्राते हुए गले से चीख कर कहा। उसके चेहरे पर व्यथा की निर्जीवता व्याप्त थी; हवा में मुट्ठी घुमाते हुए जैसे मानों किसी की अवज्ञा कर रहा हो, वह बोला; "और मैं इसे सहन नहीं करूंगा, नहीं करूंगा !" लेकिन अरिना व्लासेवना ने रोते हुए उसकी गर्दन पकड़ ली और दोनों ही फर्श पर घुटनों के बल गिर पड़े।—बाद में अनफिसुश्का ने नौकरों से घटना बताते हुए बताया, "पास पास सिर झुकाए हुए जैसे दुपहर की तपन में दो कमजोर मेम ने सिर झुका देते हैं, वैसे उन्होंने प्रार्थना की···"

लेकिन दुपहर की गर्मी बीत जाती है, और सन्ध्या आती है,

और फिर रात;—फिर सुख-चैन का स्वर्ग लौटता है, जहां होती है श्रान्त, क्लान्त मधुर नींद—और यही सतत चक्र—

: २८ :

छः महीने बीत गए। बर्फानी शीत, बादल रहित तुषार की मूक क्रूरता, मरमर-मरमर शब्द करती बर्फ की मोटी पर्त, वृक्षों के सरसर सनसन संगीत, पीताभ सुहाने आकाश, चिमनियों में से निकलते घुंघराले धुएं के ढूह के ढूह खुले दरवाजों में से तेजी से निकलते, भाप के आवर्त, नीहार सिक्त चेहरे, और बछेड़ों की दुलकी लिए हुए हेमन्त आया। जनवरी मास में एक दिन दिवस विश्राम के लिए अपना प्रकाश समेट रहा था। सांध्य कालीन शीत ने अपने बर्फानी पंजे में शान्त हवा को जकड़ लिया था और सूरज की लालिमा शीघ्रता से धूमिल हो चली थी। मैरिनो में बत्तियां जला दी गई थीं। प्रोकोफिच काला छोटा कोट और सफेद दस्ताने पहिने बड़ी तत्परता के साथ मेज पर सात व्यक्तियों का भोजन लगा रहा था। एक सप्ताह पूर्व इस क्षेत्र के एक छोटे से गिर्जाघर में अत्यन्त सादे ढंग से दो विवाह—एक आर्केडी और कात्या का और दूसरा निकोलाई पैट्रोविच और फेनिच्का का-एक साथ सम्पन्न हुए थे; और इस दिन निकोलाई पैट्रोविच अपने भाई के सम्मान में जो मास्को जा रहा था, विदाई का प्रीति भोज दे रहा था। अन्ना सर्जेवना भी विवाह के तुरन्त बाद ही मास्को चली गई थी। उसने नव दम्पति को दिल खोल कर दहेज दिया था।

ठीक तीन बजे सब लोग मेज पर बैठ गए। मित्या को भी एक जगह दी गई थी। अब उसके लिए एक अलग आया रख दी गई थी। पैवेल पैट्रोविच कात्या और फेनिच्का के बीच में बैठा था। 'पति' अपनी अपनी पत्नियों की बगल में बैठे थे। हमारे इन मित्रों के चेहरों पर एक परिवर्तन आ गया था; सभी प्रौढ़ और सुन्दर लगते थे। केवल पैवेल पैट्रोविच ही दुबला हो गया था, लेकिन इससे उसकी

प्रभावशाली मुद्रा में चार चाँद लग गये थे। फेनो ने कई भाग बदली थी। वह नया रेशमी गाउन और मानभली टोपी पहिने, गले में सो की जंजीर डाले सगर्व बैठी थी। अपने प्रति तथा अपने आस-पास और अपने चारों ओर की चाजों के प्रति सम्मान भाव के अनुभव से उसके ओठों पर स्निग्ध मुस्कान झलक रही थी जो मानो कह रही हो "कृपया मुझे क्षमा कीजिए, यह मेरा दोष नहीं है।" सच बात तो यह है कि अन्य सब भी मुस्कुरा रहे थे और इसके लिए भी माफी सी मांगते प्रतीत हो रहे थे। सभी को थोड़ा सा भद्दा लग रहा था और थोड़ा दुख था, लेकिन वास्तव में सभी बड़े प्रसन्न थे। हर एक एक दूसरे को खाना परोसने में और खाने में सहायता कर रहा था और प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था, मानों सभी ने मूक स्वीकृति से एक निर्दोष सुखान्त नाटक खेलने की सहमति दे दी हो। कात्या औरों की अपेक्षा अधिक शान्त थी। वह अपने को सगर्व नेत्रों से देख रही थी और कोई भी आसानी से यह समझ सकता था कि वह निकोलाई पैट्रोविच की आँखों की पुतली हो गई है। भोज की समाप्ति पर वह उठ कर खड़ा हुआ और अपना गिलास उठाकर पैवेल पैट्रोविच की ओर घूमा।

"तुम हमें छोड़ रहे हो···तुम हमें छोड़ रहे हो प्रिय बन्धु," उसने कहना आरम्भ किया, "लेकिन निश्चय ही अधिक दिनों के लिए नहीं; फिर भी मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि मैं···कि हम···कैसे मैं कैसे हम···यही तो सारी मुश्किल है···भाषण करना मेरे बस की बात नहीं है! आर्कैडी तुम कुछ कहो।"

"नहीं···नहीं पापा, मैं भला···इस तरह एकाएक नहीं बोल सकता।"

"और तुम समझते हो कि क्या मैं बोल सकता हूँ! ओह, अच्छा भइया, मुझे जरा अपने गले से लग जाने दो—और मैं तुम्हारे लिए शुभकामना करता हूँ और मानता हूं कि तुम शीघ्र ही लौट कर फिर हम लोगों के बीच आ जाओ।"

पैवेल पैट्रोविच ने हर एक को चूमा, स्वभावतः मित्या को भी और साथ ही उसने फेनिच्का का हाथ भी चूमा, जिसे चूमने के लिए भेंट करने का ढंग अभी उसे नहीं आया था, और अपना पुनः भरा गिलास बड़े बड़े घूंट करके पीने लगा; और गहरी सांस भर कर बोला : "मेरे अच्छे बन्धुओ, तुम्हारा भाग्य बुलन्द हो, उज्वल हो, चमके !—अब अलविदा।" हरएक मर्माहत हो उठा।

"बैजारोव की याद में," कात्या ने अपने पति के कान में फुस-फुसाया और उसके गिलास से अपना गिलास छुआया। आर्केडी ने प्रति उत्तर में बस उसका हाथ दबा दिया। वह जोर से बैजारोव की याद में टोस्ट का प्रस्ताव करने और सम्मान प्रगट करने का साहस न कर सका।

× × ×

सम्भवतः कहानी का यही अन्त प्रतीत होगा! लेकिन सम्भवतः कुछ पाठक यह जानने को उत्कंठित होंगे कि कहानी के अन्य पात्र इस समय क्या कर रहे हैं? हम उनकी उत्कंठा को संतुष्ट करने के लिए उद्यत हैं।

अन्ना सर्जेवना ने रूस के एक सम्भावित नेता से अभी हाल में विवाह कर लिया, प्रेम की खातिर नहीं; सिर्फ इसलिए कि उसने विवाह करने का निश्चय कर लिया था और उसके पति के लिए रूस का बड़ा आदमी होने की आशा थी, वह एक बुद्धिमान वकील, दृढ़ निश्चयी और अच्छा बोलने वाला और साहित्यिक व्यक्ति था। उस का स्वभाव अच्छा था और वह अत्यन्त ही ठंडे दिमाग का व्यक्ति था। उनकी आपस में बड़ी अच्छी कट रही थी, और अन्ततः सम्भवतः वे सुख का आनन्द पा सकते, सम्भवतः प्रेम का—कौन जानता है? राजकुमारी की मृत्यु हो गई और मृत्यु के दिन ही सब उसे भूल भी गए। किर्सानोव बाप-बेटे मैरिनो में अच्छी तरह जम गए। उनकी गाड़ी ठीक ढर्रे पर चल निकली है। आर्केडी बड़ा अच्छा पति

हो गया है। उन्हें खेती से काफी लाभ हो रहा है। निकोलाई पैट्रोविच शान्ति का निर्णायक* हो गया है और उसके लिए जी तोड़ प्रयत्न करता है। वह लगातार अपने जिले का दौरा करता है, लम्बे लम्बे व्याख्यान देता है (उसका विश्वास है किसानों को सारी बात समझानी चाहिए और एक बात का बार बार उनके सामने डंका पीट कर उनकी जहालत दूर करनी चाहिए) यद्यपि वास्तविकता तो यह कि वह न तो शिक्षित कुलीनों को ही सन्तुष्ट कर पाता था। वे स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में या तो बड़े ही दिखाऊ व्यवहार करते थे (नाक से बोलते हुए) या फिर शोक प्रगट करते थे। और न अशिक्षित कुलीनों को ही सन्तुष्ट कर पाता था क्योंकि वे स्वतन्त्रता को 'बुरी तरह कोसते थे।' वह दोनों के लिए ही अत्यन्त उदार था। केट्रिना सर्जेवना के एक पुत्र जन्मा निकोलाई और मित्या अब अपने पैरों पर भागा फिरता था और खूब बोलने भी लगा था। फेनिच्का फिदोस्या निकोलेवना अपने पति और बेटे मित्या के बाद और किसी को भी इतना प्रेम न करती थी जितना अपने बड़े बेटे आर्केडी की बहू कात्या को। और जब कात्या पिआनो बजाने बैठती थी, तो वह सारा दिन विभोर होकर उसे सुनती रहती। प्योतर बड़ा नालायक हो गया था और अपने को बड़ा महत्वपूर्ण समझने लगा था। उसने इसी जंग में अपना उच्चारण ऐसा बिगड़ा था कि समझ में ही न आता था; लेकिन शादी उसने भी कर ली थी और दुलहिन के साथ साथ काफी सम्पन्न दहेज पर भी हाथ मारा था। उसकी दुलहिन एक माली की लड़की थी। माली ने दो दूसरे अच्छे-भले लड़कों को मना करके इसके साथ बेटी की शादी की थी क्योंकि उनके पास घड़ी न थी और प्योतर

---

* किसानों की मुक्ति के बाद रूस में किसानों और जमीदारों के बीच के झगड़े निपटाने के लिए शान्ति का निर्णायक या पंच का पद निर्धारित किया गया था।

के पास घड़ी थी और उसके अतिरिक्त अच्छे चमड़े का एक जोड़ा जूता भी था।

ड्रेस्डन में भूल के चौरस मैदान में तीसरे पहर दो और चार के बीच टहलने के समय आप लगभग पचास वर्ष की आयु के एक व्यक्ति से, जिसके बाल सफेद हो गए हैं; और जो गठिया का मरीज है लेकिन फिर भी खूबसूरत है, शानदार पोशाक पहिने और उस गर्व से जो ऊंची सोसायटी में अरसे से उठने-बैठने पर ही प्राप्त होती है, घूमते हुए मिल सकते हैं। यह पैवेल पैट्रोविच है। वह स्वास्थ्य की दृष्टि से मास्को से विदेश चला आया था और यहाँ ड्रेस्डन में रहने लगा था। यहां वह आमतौर पर अंग्रेजों और रूसी यात्रियों से मिलता है। अंग्रेजों के साथ वह बड़ी गम्भीरता, शाइस्तगी और आत्मगौरव से पेश आता है। वे उसे कुछ कुछ उबा देने वाला पाते हैं, फिर भी उसे बड़ा और सम्भ्रान्त सज्जन समझते हैं; और उसका सम्मान करते हैं। रूसियों के साथ वह अधिक खुला हुआ व्यवहार करता है और हंसी मजाक भी करता है, पर इसमें भी एक बड़प्पन और सौजन्यता होती है, एक आकर्षक ढंग होता है। वह पानस्लाविस्ट विचारों का पक्ष लेता है, जो, हर कोई जानता है, ऊंची सोसायटी में ही समझे जाते हैं। वह कोई रूसी किताब नहीं पढ़ता। उसकी मेज पर चांदी का एक एशट्रे रखा है जिसकी बनावट किसान की मूंज की चप्पल जैसी है। रूसी यात्री उसे बहुत पसन्द करते हैं। मेत्वीइलिच कोल्याजिन जो अस्थाई विरोधी दल में है बोहेमियन सागर जाते समय उससे बड़ी शान शौकत से मिला था। वहाँ के रहने वाले उसका सम्मान करते हैं। उतनी सरलता से कोई अन्य राजकीय नृत्य या थियेटर की टिकट नहीं प्राप्त कर सकता जितनी सरलता से और जल्दी वह प्राप्त कर सकता है। वह अपने भरसक अच्छे काम करने का भी प्रयास करता है। एक जमाना था जब वह महफिल का राजा

था !—लेकिन अब जीवन उसके लिए भार हो गया है...जितना वह समझता था उससे भी कहीं ज्यादा !...बस जरा एक रूसी गिर्जाघर में उस पर एक नजर डालने की देर है फिर सब स्पष्ट हो जायगा। वहाँ वह सबसे अलग दीवाल के सहारे झुका हुआ, विचारों में तल्लीन मूर्ति की तरह स्थिर मूक खड़ा होता है और होश आने पर लगभग अप्रत्यक्ष ढंग से अपने हाथ से क्रास बनाता है...

कुकशिना भी—विदेश में है, और हीडेलबर्ग में रह रही है। वह अब प्रकृति विज्ञान का अध्ययन नहीं कर रही है बल्कि स्थापत्य कला सीख रही है, जिसके योग्य वह नहीं है। उसने नए नियम खोज निकाले हैं। वह अब भी विद्यार्थियों की सोहबत करती है, विशेषकर रूसी नौजवान पदार्थविज्ञानियों और रसायनिकों की, जिनसे हीडेलबर्ग भरा हुआ है और जो चीजों के बारे में अपने गम्भीर विचारों से जर्मन प्रोफसरों को भौंचक्का कर देते हैं और एक दम आरम्भ में ही उन्हें चौंका देते हैं। वह साधारणतयः ऐसे ही दो या तीन रसायनिकों की सोहबत में रहती है जो औक्सीजन और नाइट्रोजन का फरक नहीं कर सकते लेकिन नकारता और घमंड से भरे हुए हैं और 'महान' येलिसिविच सिलिकोफ, जो सेंट पीटर्सबर्ग में समय बर्बाद करता था और अब हमें विश्वास दिलाता है कि वह बैजारोव के ध्येय को आगे बढ़ा रहा है के साथ महान बनने की कोशिश में हैं। सुना तो यह जाता है कि सिलिकोफ अभी हाल में बुरी तरह पिटा था, हाँ, प्रतिपक्षी की भी उसने अच्छी मरम्मत कर दी थी। एक छोटे से पत्र के छोटे से कालम में उसने अपने आक्रमणकारी को कायर भी लिखा था। वह इसे किस्मत की मार कहता है। उसका बाप अब भी उसे डाँटता-फटकारता है, और उसकी बीवी अब भी उसे जड़बुद्धि और साहित्यिक समझती है।

रूस के एक दूरस्थ कोने में एक देहाती कब्रिस्तान है। हमारे अन्य कब्रिस्तान की तरह वहाँ का दृश्य भी अत्यन्त ही व्यथापूर्ण है—चारों

और खाई खड्ड हैं जिन पर लम्बी घास उग आई है, कब्रों के सिरे पर लकड़ी के सलीब लगे हुए हैं जो छत के नीचे आज सड़ रहे हैं, जिस पर कभी सुन्दर पालिस हुई होगी। पत्थर की पट्टियां भी अपनी जगह से उखड़ गई हैं मानो जैसे कोई उन्हें नीचे से धक्का दे रहा था और इधर-उधर पड़ी हैं। दो तीन जीर्ण-शीर्ण पेड़ कंजूसों की तरह छाया प्रदान कर रहे हैं। कब्रों पर भेड़ें बिना किसी डर के और रोक-टोक के घूमती फिरती हैं।...लेकिन...वहां एक कब्र है जिसे कोई नहीं छूता और कोई जानवर उसे पैरों से नहीं रौंदता। केवल चिड़ियां वहां उतरती हैं और उषः बेला में वह गाती हैं। उसके चारों ओर लोहे के तार लगे हैं, और दोनों सिरों पर दो देवदार के पेड़ खड़े हैं।... इस कब्र में एवजेनी बैजारोव सो रहा है। पास के गांव से अति वृद्ध पति-पत्नि एक दूसरे को सहारा देते हुए किसी तरह लड़खड़ाते घिसटते यहां कब्र के पास आते हैं और घुटनों के बल बैठ कर देर तक विलाप करते रहते हैं, और देर तक उस पटिया को टकटकी बांधे देखते रहते हैं जिसके नीचे उनका लाड़ला बेटा सो रहा है। वे थोड़े से कुछ शब्द फुसफुसाते हैं पत्थर पर की धूल झाड़ते हैं, और देवदार की एक शाख को सीधा करते हैं और फिर एक बार प्रार्थना करते हैं। उनसे वह जगह छोड़ी नहीं जाती,—जहाँ वे अपने बेटे और उसकी स्मृतियों के अति निकट होते हैं।—क्या यह सम्भव है कि उनकी प्रार्थनाएं—उनके आँसू व्यर्थ जायं? क्या यह हो सकता है कि प्रेम, पवित्र भक्तिपूर्ण प्रेम सर्वशक्तिमान नहीं है? कदापि नहीं! जो इस कब्र में सोया पड़ा है वह चाहे जितना भी आवेशपूर्ण, जितना पापी और विद्रोही हृदय क्यों न हो; वहाँ जो फूल खिले हैं और जो अपनी भोली आँखों से तुम्हारी ओर प्रसन्नता से ध्यान पूर्वक देख रहे हैं, वे सिर्फ हमें शाश्वत शान्ति का ही सन्देश नहीं देते, उस महान 'मनोविकार शून्य' परम शान्ति का भी सन्देश देते हैं वे सन्देश देते हैं शाश्वत समाधान और शाश्वत जीवन